नीराजन

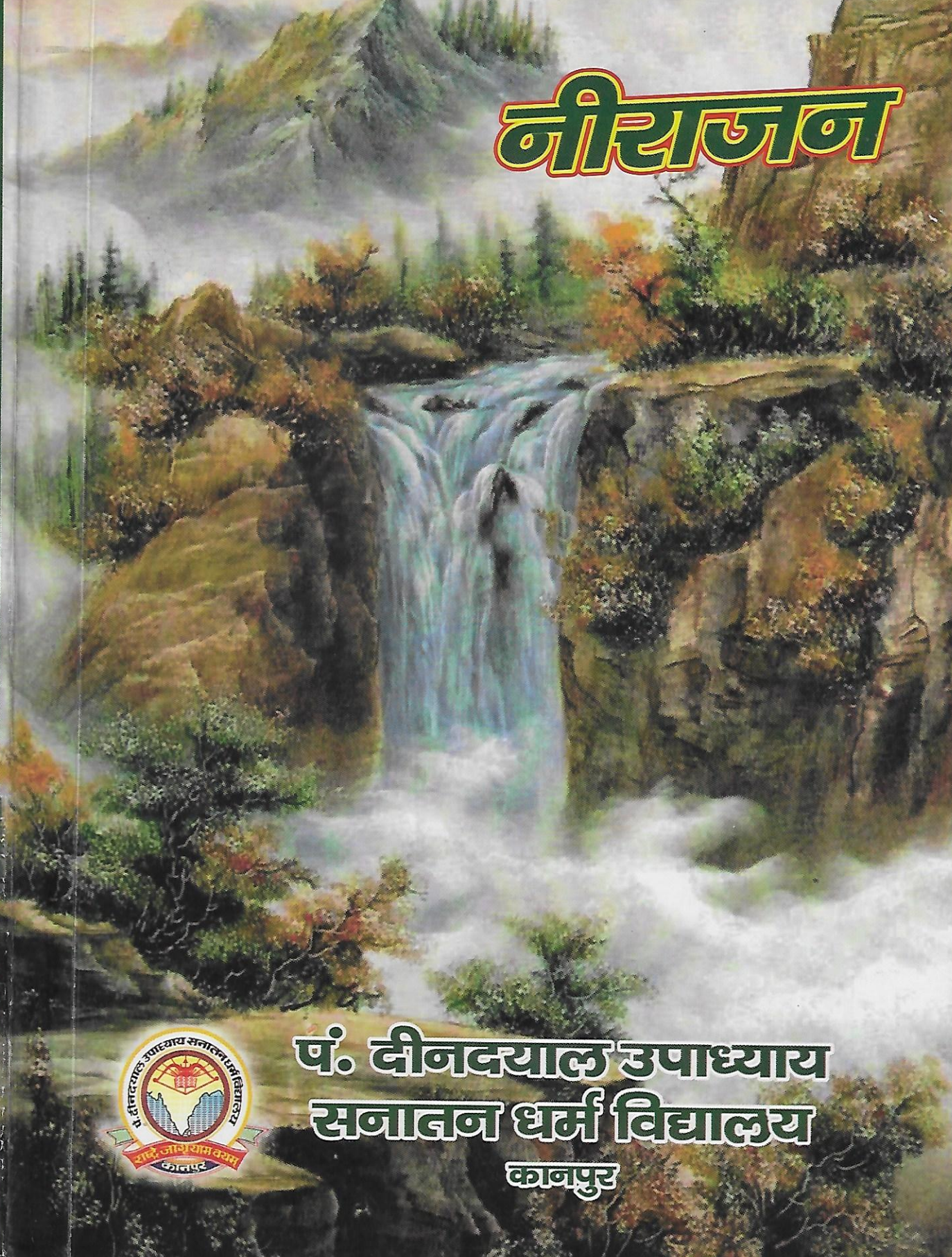

पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय
कानपुर

वर दे, वीणावादिनी वरदे!

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका

2013-14

संरक्षक:

श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव
(प्रधानाचार्य)

सम्पादक मण्डल:

श्री गणेश शंकर वाजपेयी
(संस्कृत)

डॉ0 मनोज शुक्ल
(हिन्दी)

श्रीमती शारदा राव
(अंग्रेजी)

श्रीमती तृप्ति प्रेम
(प्राइमरी)

राष्ट्र की आत्मा : चिति

राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। उसका एक शास्त्रीय नाम है, 'सिद्धान्त और नीति' में इसे चिति कहा गया है। मग्डूगल के अनुसार समूह की कोई मूल प्रकृति होती है। वैसे ही 'चिति' किसी समाज की वह प्रकृति है जो जन्मजात है तथा जो ऐतिहासिक कारणों से नहीं बनी। चिति तो मूलभूत होती है। चिति को लेकर तो प्रत्येक समाज पैदा होती है और उस समाज की संस्कृति की दिशा चिति निर्धारित करती है, अर्थात् जो चिति के अनुकूल होती है वह संस्कृति में सम्मिलित कर ली जाती है। 'चिति' वह मापदंड है, जिससे हर वस्तु को मान्य अथवा अमान्य किया जाता है। यही राष्ट्र की आत्मा है। इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र खड़ा होता है, और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।

-पं० दीन दयाल उपाध्याय

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,

प्रबल आत्मविश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता

एवं

निस्सीम भाव संपन्ना मनः शक्ति का

अर्जन कर,

अपने जीवन को निस्पृह भाव से

भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही

हमारा परम साध्य है।

38.	कमरतोड़ महँगाई/सरल और कठिन	निखल सिंह/आकाश गुप्त	74
39.	एक हिंदुस्तानी, जिसके सम्मान में झुकता है चीन	नमन मिश्र	75
40.	एक अनमोल रत्न - सचिन	शौर्य अवस्थी	76
41.	हमारा लोकतंत्र/महाराणा प्रताप	ऐश्वर्या मिश्रा/नमन मिश्र	77
42.	हमारी अनोखी यात्रा/जय श्री हनुमान	साधंजय चाकमा/राजदीप चौहान	78
43.	विश्व की प्रमुख गुप्तचर संस्थायें	निखिल कुमार सिंह	79
44.	नागरिकों के मूल कर्तव्य/मीठे नमकीन चुटकले	शेखर कुमार/आकाश गुप्त	80
45.	अमृत की रजत बूँदें/हँसते रहो	सचिन पाठक/अनुराग सिंह	81
46.	माँ/मेरा आदर्श / सतगुरु का प्यार लिख दे	अमर्त्य विधु/मनु कुमार	82
47.	मेरा विद्यालय / कश्मीर की तस्वीर भी नहीं देंगे	यथार्थ मिश्र	83
48.	युद्ध	शिवम सिंह	84
49.	बेटी / बेटियाँ / आजादी का मतलब	सौरभ शुक्ल/आकांक्षा श्रीवास्तव	85
50.	लिखो तो कुछ ऐसा लिखो	गौरव शुक्ल	86
51.	चुनावी ड्रामा 2014	गौरव शुक्ल	87
52.	सुमन/वर्षा ऋतु	गोविन्द सिंह गौर	88
53.	जी लो खुल के इन पलों को 'दोस्त'/जिन्दगी एक गीत है	हर्ष यादव	89
54.	प्रार्थना/पूजनीय शिक्षक	मयंक राज/अश्विनी शाण्डिल्य	90
55.	छली गधा/झूठ बोलने का फल/तितली	धनुर्धर त्रिपाठी	91
56.	देश गीत/मेरे सपने	अमरेश गुप्त/कुन्दन राज	92
57.	श्री हनुमान/नारी को सम्मान दिलाएँ	कंचन वर्मा	93
58.	नारद जी द्वारा प्रजापति दक्ष.../रिश्वत	अक्षत	94
59.	अभिनन्दन/मेरी आशा	अश्विनी शाण्डिल्य/अजीत विक्रम	95
60.	नजरें ठहरी उस आँगन पर/देश भक्ति गीत	अनुज शुक्ल/आशुतोष मिश्र	96
61.	ईश्वर की लीला/अनमोल वचन/तीन का महत्त्व	सुधांशु तिवारी	97
62.	मम हृदय गीता/पाँच का महत्त्व	सचिन पाठक/सुधांशु तिवारी	98
63.	समय की कीमत/अपनाने योग्य बातें/पढ़ो और हँसो	मिली श्रीवास्तव	99
64.	डरता नहीं जो अंधेरे से/चुटकुले	काजल/आयुष्मान साहू	100
65.	लोकोत्तरोऽयं महापुरुषः	गणेश शंकर वाजपेयी	101
66.	व्यायामः	हर्षित मिश्र	102
67.	एकलव्यस्य गुरुभक्तिः	दिव्या अधिकारी	103
68.	परोपकारः	जयन्त मिश्र	104
69.	सनातन धर्मस्य..... / महाकवि माघ	अभिषेक सोनी/आनन्द मिश्र	105
70.	संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्	प्राञ्जुल पुरवार	106
71.	हिमालयः / नव-नववर्ष....	सोनू कुमार/अक्षत	107
72.	वन्दना/राम-नाम जपु नीच!/राम स्तुति/राम महिमा वर्णन		108
73.	Editorial	Sharda Rao	109
74.	As desired by the president of India....	Dr. A.P.J. Abdul Kalam	110
75.	Hip Hip Hurray	Dr. Neeru Tandon	113
76.	IAS Rank-2 was less pleasurable....	Santosh K Mishra	116
77.	Revolutionary Seps for Abolition of.....	Niharika Tripathi	119

78.	Devi not Eve / Globalisation of Indian Economy	Seema Krishna/Komal Jain	120
79.	Tagore and Vivekanand	Sharda Rao	121
80.	Workshop for Teacher on... / Language Acquisition....	Prachi Ch. Srivastava	122
81.	Importance of Time Management in a Student's Life	Dipti Awasthi	123
82.	Tha Annual Cultural Programme	Sharda Rao	124
83.	Let us know more about CCE		125
84.	Student Life / The Value of Time	Prateek Mishra/Aditya Shukla	126
85.	Best Quotes forever / Facing competition	Gautam Jha/Gaurav Kumar	127
86.	Incedible India / Education these days	Ankit SHukla/Himanshu	128
87.	Discipline / Leadership / Mahatna Gandhi	Shubham Kumar/Sachin Singh/ Nitin Yadav	129
88.	The Mantra of Patience / Hail Martyrs / Life	Vaibhav Gupta/Gautam Jha/ Abhinav Patel	130
89.	Sweet are the Uses of.../Olympic Games	Abhinav Patel/Sumit Singh	131
90.	The Story of Martyr / Words of Wisdom	Ekagra Pandey/Sachin Pathak	132
91.	Child Labour / Sarojini Naidu / The Milk maid and...	Akshat/Himanshu/Suyash Patel	133
92.	Our Kanpur City / Last Supper of... / Jokes	Monesh/Kanishk/Naman Mishra	134
93.	Words of Wisdom / Teachers	Aditya Singh/Akash Singh	135
94.	Jokes to... / The clouds and .... / Relation between....	Shashank/Shekhar/Vibhav	136
95.	Wonders of Science / How should be... / Mother	Kratika/Harshit/Naman Mishra	137
96.	Sachin Tendulkar	Sekhar Kumar	138
97.	We al Love... / Try Try Again / Aim / Mistake	Naman/Suyush/Monesh	139
98.	Incredible India / Importance of Teacher in... / Here are Seven... / True Friendship	Hritik Pandey/Nishant Shukla Ayushman/Monesh K Agarwal	140
99.	वार्षिक रिपोर्ट प्राइमरी विंग	ज्योति मोहन	141
100.	अविस्मरणीय अवसर	हिमांशु तिवारी	143
101.	शिशु भवन / सत्य वचन	अक्षिता, सीमा, हिमांशी/कृष्णा	145
102.	हमारा विद्यालय / प्यारी दीदी / चन्दा मामा	प्रांशू/अक्षत/गौरांग सिंह	146
103.	एक अच्छी सीख / मैच फिक्सिंग / बहना हमारी / नया वर्ष	हिमांशी/संस्कृति/सूरज राणा	147
104.	घमंडी कुल्हाड़ा सिंह (चित्रकथा)	दिव्यांशु अधिकारी	148
105.	कौन क्या कहता है.... / कविता	कृष्णा त्रिवेदी/आदित्य खन्ना	149
106.	हंस और राजकुमारी / हँसते हँसते जीना	सीमा/दिव्यांशु	150
107.	नेत्रदान है महादान / नटखट भइया / जरा हँस लीजिये	अभय/सृष्टि/आरती कुमारी	151
108.	मालिक की सहानुभूति / पसीने की कमाई	सृष्टि दुबे/विजया सिंह	152
109.	How to Motivate Students	Tripti Prem	153
110.	Primary Wing Annual Report	Lalita Rastogi	154
111.	My Best Friend / Thank You Mom / Teachers / Holiday / Mother Dear	Kissna Trivedi/Abhay/ Harshit Thakur/Shubhra Mishra	156
112.	My Little Pussy / Trees / Thanks Ma / The Ganga...	Aksht Dubey/Arti Kumar	157
113.	Good Manners / Honesty / My Classroom The Evening is... / My Father	Vani Negi/Dhruv Singh/Harshit Harshit Thakur/Abhay Singh	158
114.	100% Discipline / Why children are... / My Motherland / Life is an.... / Dear Cow	Pranshu/Arsh/Abhay Vijaya/Akshat	159
115.	Awards for Academic Excellence		160
116.	Winners of the competitions held in the Primary Wing		161
117.	Congratulations to the Sports Champions		163
118.	हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित छात्रों के नाम तथा अनुक्रम		165
119.	इण्टरमीडिएट परीक्षा में सम्मिलित छात्रों के नाम तथा अनुक्रम		167
120.	आचार्य परिवार		170

त्याग और तितिक्षा की मूर्ति

प्रेरणापुंज बैरिस्टर साहब
(बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह)

समर्पण की परिभाषा

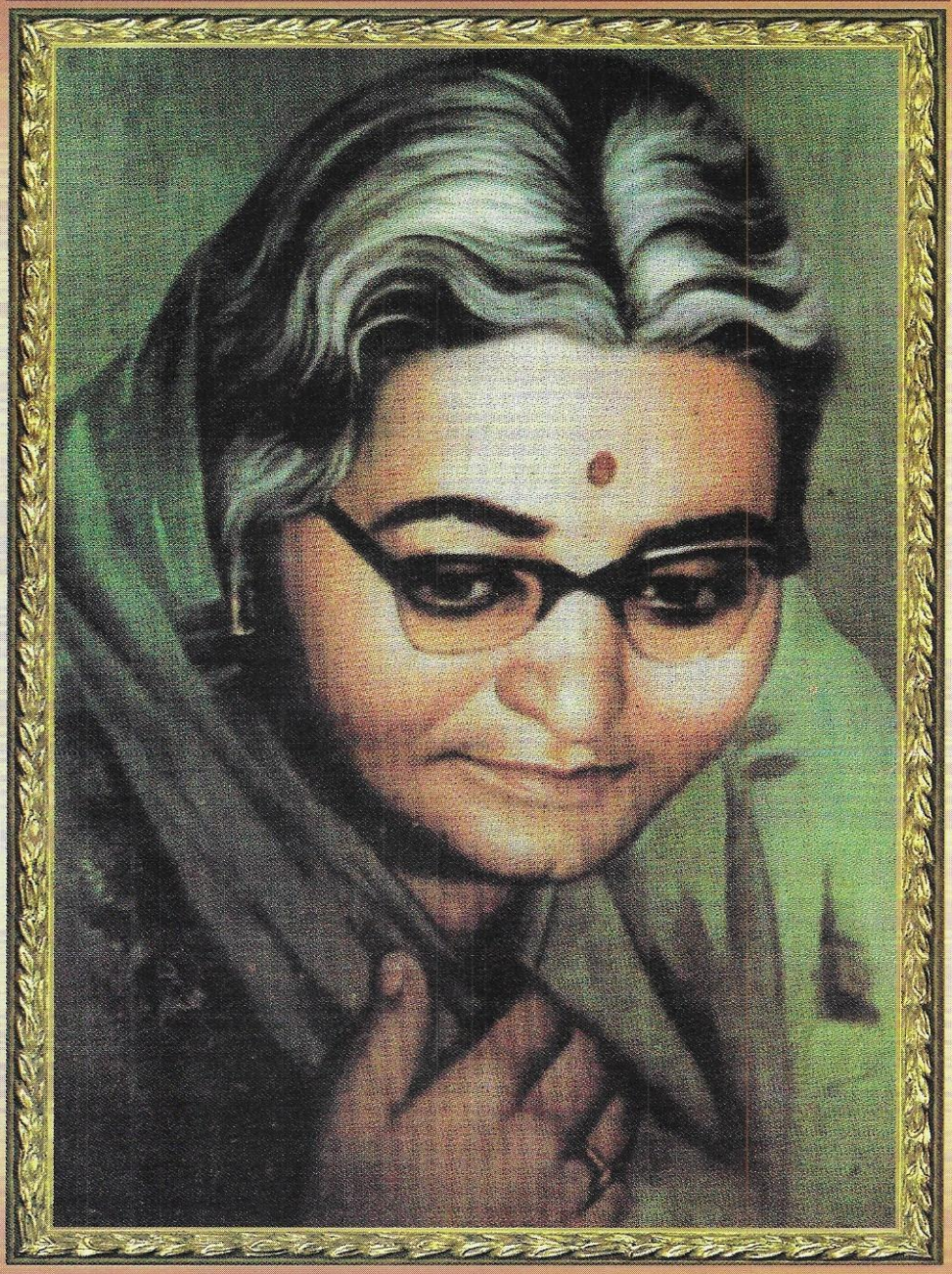

ममतामयी बूजी
(श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह)

आराध्य

एकात्म मानववाद के पुरोधा

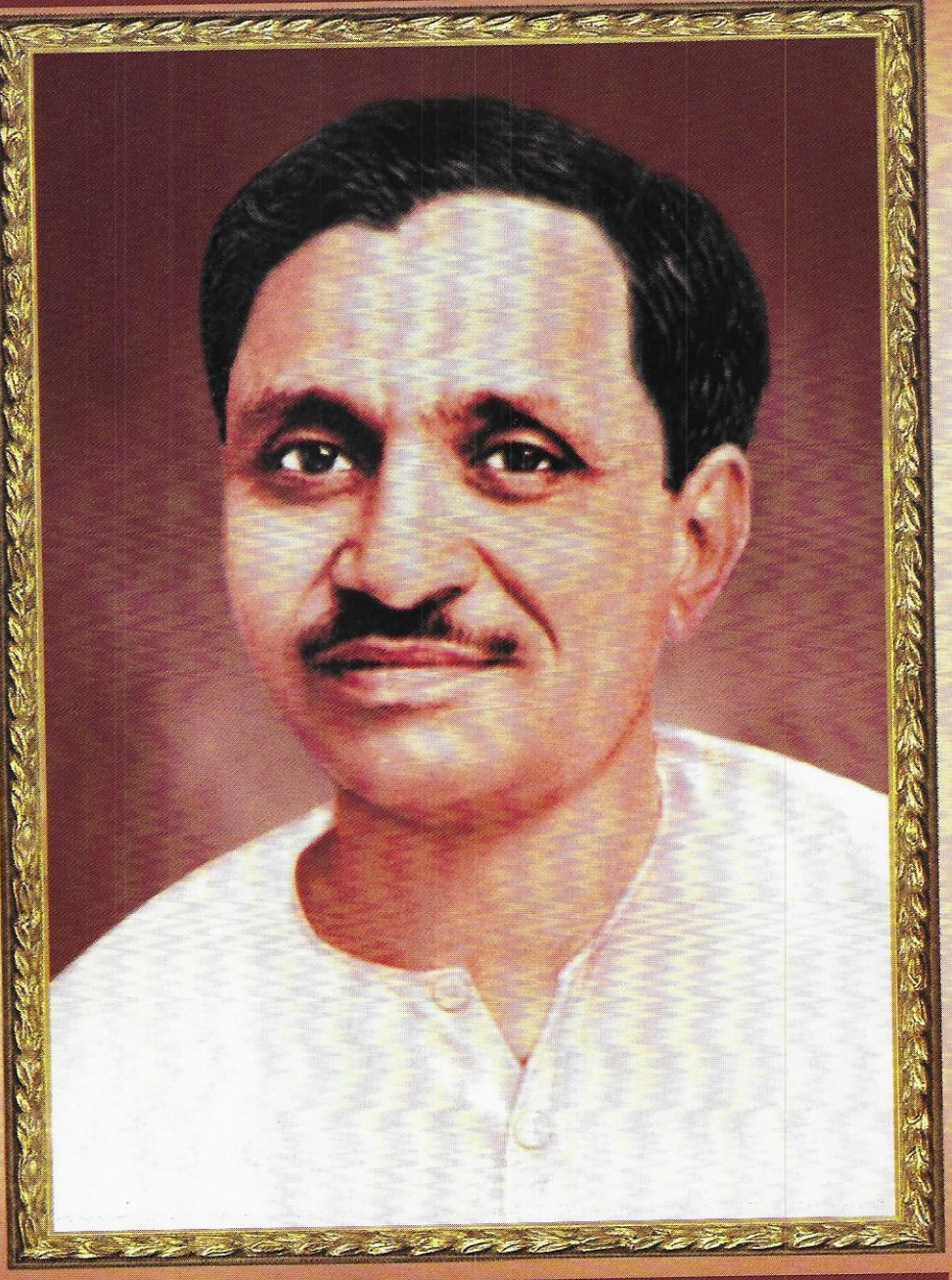

पंडित दीन दयाल उपाध्याय

डॉ0 मनोज अवस्थी
एसोसिएट प्रोफेसर,
वाणिज्य विभाग,
वी0 एस0 एस0 डी0 कालेज,
कानपुर

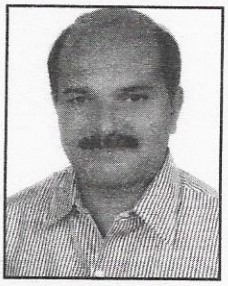

आदरणीय प्रधानाचार्य जी,

पं0 दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय,

कानपुर

महोदय,

पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय देश की एक अग्रणी शिक्षण संस्था है जिसने समाज और राष्ट्र ही नहीं वरन् अखिल विश्व की निर्मिति में अपने कोष से अनेक प्रातिभ-रत्नों का योगदान किया।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं सन् 1977 से 1980 ई0 तक यहाँ का विद्यार्थी रहा। इस दौरान मेरे व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास हेतु जो शिक्षा और संस्कार मिले वे सारे जीवन अनुकरणीय और मार्गदर्शक रहे। आदर्श प्रबन्धक और प्रबन्ध तंत्र, प्रधानाचार्य, शिक्षक और छात्र कैसे होने चाहिए, इस संस्था ने इस संदर्भ में सदैव शीर्षस्थ और उदात्त मानदण्ड स्थापित किए हैं।

मुझे गर्व है कि मैं छात्र जीवन से आज तक इस संस्था से जुड़ा हूँ और वर्तमान में अभिभावक प्रतिनिधि के रूप में प्रबन्धतंत्र में सम्मिलित हूँ।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'नीराजन'** के प्रकाशन पर शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ कि यह पत्रिका विद्यालय परिवार की अभिव्यक्ति का आदर्श माध्यम बने। अन्त में अपनी मातृ संस्था के प्रति प्रणाम निवेदित करता हूँ।

सादर।

भवदीय

मनोज अवस्थी

(डा0 मनोज अवस्थी)

दिनांक : 06.12.2013

संदेश

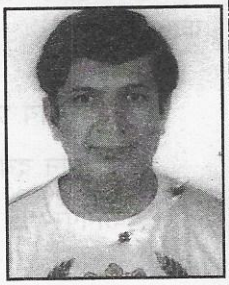

आदरणीय प्रधानाचार्य जी,

पं0 दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय,

कानपुर

विषय : वर्तमान बदलते परिदृश्य में, विद्यालय द्वारा किये गये, सकारात्मक-सोच के परिवर्तन! यू0पी0 बोर्ड से सी0बी0एस0सी0 बोर्ड! की सफलता की शुभकामना हेतु।

आचार्य जी,

मेरे दोनों पुत्र! चिरंजीव अक्षत कृष्णा-कक्षा एकादश 'ख' तथा अभिजय कृष्णा-सप्तम 'ग' आप के विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

इस परिवर्तन के दौर में, वर्तमान प्रतियोगी परीक्षाओं तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रचलित-पद्धतियों में सी0बी0एस0सी0 बोर्ड के पाठ्यक्रम को उचित पाते हुए, जिस प्रकार से विद्यालय प्रबंधन द्वारा, अथक-प्रयासों से अत्यंत कम समय में इस परिवर्तन को सहजता के साथ विद्यालय में लागू किया गया है, वह अभिनन्दन योग्य है।

हम अभिभावक रूप में, इस परिवर्तन के सकारात्मक-परिणामों के लिए, समस्त विद्यालय- कार्यकारिणी एवं आचार्य एवं आचार्याओं तथा सहयोगियों रूपी परिवार को; सफलता के लिए शुभकामनाएँ देते हैं। साथ ही आप सभी से यह अपेक्षा करते हैं कि विद्यालय के प्रारंभिक लक्ष्य कि समाज के लिए योग्य नागरिकों का निर्माण, सदैव ही विद्यालय परिवार की प्राथमिकता रहेगा।

भवदीय

मनीष कृष्णा

(पूर्व छात्र एवं सदस्य प्रबन्ध समिति)

दिनांक 14.09.2013

सम्पादकीय.....

सुख प्राप्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। उसकी सम्पूर्ण कामनाओं, सम्पूर्ण प्रयत्नों और सम्पूर्ण कर्मो के उद्देश्यों को देखा जाय तो पता चलेगा कि वह सुख ही चाहता है। सुख प्राप्त करने की इच्छा के लिए किसी को शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं होती। बच्चा जन्मता ही सुख प्राप्त करने की इच्छा रखता है। अपने साथियों से अधिक खिलौने एकत्र करने का प्रयत्न करता है। मिष्ठान्न के वितरण में अधिक बड़ा भाग पाने की चाह रखता है। वह किसी के कहने से ऐसा नहीं करता। यह उसकी सहज वृत्ति है।

सुख प्राप्ति की वृत्ति पशुओं में भी पाई जाती है। वे भी सुख के लिए ही दौड़ा-भागा करते हैं। भूख, प्यास और प्रजनन की तृप्ति में उन्हें सुख मिलता है इसलिए वे उनकी तुष्टि के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पशु और मनुष्य सभी में सुख की भावना मूल प्रवृत्यात्मक (Instinctive) है। इसके लिए विचार और बुद्धि की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य नितान्त पशु नहीं है उसके पास बुद्धि है, विचार शक्ति है। विचार के द्वारा मनुष्य भले-बुरे अनुकूल-प्रतिकूल, शुभ-अशुभ का निर्णय कर सकता है। इसे विवेक कहते है।

यदि कोई इस बात की गणना करने निकले कि संसार में कितने लोग सुख चाहते हैं और कितने दु:ख तो दु:ख चाहने वाला शायद एक व्यक्ति भी न मिलेगा। कई बार देखा गया है कि अपमानित होकर आराम और सुख का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा लोगों ने स्वाभिमान के साथ कष्ट भोगना अच्छा समझा है। शारीरिक कष्ट या दु:ख कितना भी हो किन्तु मानसिक सुख उससे उच्च वस्तु है। अन्ततः शरीर का सुख भी मन में ही अनुभूत होता है। यहाँ प्रश्न मूल्य का है। हम किस सुख को अधिक मूल्यवान समझते हैं? यदि हम शारीरिक सुख को अधिक मूल्य देते हैं तो बेशर्मी के साथ अपमान का दु:ख उठाते रहेंगे, उसके निवारण का प्रयत्न न करेंगे किन्तु यदि हम स्वाभिमान, यश, कीर्ति आदि के सुख को अधिक मूल्यवान समझते हैं तो उसकी रक्षा के लिए शारीरिक कष्ट हँसते-हँसते सह लेते हैं।

- डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल

वीरेन्द्रजीत सिंह

कार्या० : २३०६८८२
निवास : २३०४३२५, ३०१५४४४
फैक्स : २३०६५०८, २३३१९१४
ई-मेल : vpaditya@rediffmail.com
vpaditya123@yahoo.co.in
१५/१९८-अ, विक्रमाजीत सिंह मार्ग,
कानपुर - २०८ ००१

वर्ष प्रतिपदा सं0 2071

सन्देश

माननीय सम्पादक जी,

अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' सत्र 2013-14 अब शीघ्र प्रकाशित होने वाली है यह अत्यन्त आनन्द का विषय है। कृपया मेरी हार्दिक शुभकामना स्वीकार करें।

हम जानते हैं कि प्राचीन काल में हमारे देश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्रचलित थी जिससे अत्यन्त श्रेष्ठ दैवीगुणों से युक्त मनुष्यों का निर्माण होता था। सामाजिक परिस्थितियाँ बदलीं तथा यह पद्धति लुप्त हो गई। अंग्रेजी शासन में लार्ड मैकाले ने जिस शिक्षा पद्धति को हम पर थोपा वह हमारे राष्ट्रीय विकास को कुण्ठित करती थी। अतः 20वीं शताब्दी में राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग आरम्भ हुए। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग हुए, उनमें से सरस्वती शिशु मन्दिर योजना अत्यन्त विधायी सिद्ध हुई। पं0 दीनदयाल जी की असामयिक मृत्यु के फलस्वरूप उनकी स्मृति में शिशु मन्दिर की अगली कड़ी के रूप में विद्यालय की स्थापना हुई। जिन महापुरुषों, शिक्षाविदों के स्मरण, आशीष एवं मार्गदर्शन से यह विद्यालय आज की परिपक्व स्थिति को प्राप्त हुआ उनका हम श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। 'पुरानी नींव नया निर्माण' के मन्त्र को हृदय में रखकर विद्यालय के परिवेश में नित्य निरन्तर, नित्य नूतन परिवर्तन होते रहेंगे परन्तु अपने पूर्व पुरुषों से प्राप्त विचार सम्पदा हमारे विद्यालय की थाती है।

अपने पूर्व पुरुषों द्वारा शताब्दियों में स्थापित उज्ज्वल परम्परा का स्मरण कर हमारे विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी भारतीयता से ओत-प्रोत हो राष्ट्रपुरुष के चरणों में तन-मन-धन पूर्वक समर्पित हो। इस आकांक्षा के साथ।

आपका

(वीरेन्द्रजीत सिंह)
सचिव, प्रबन्ध समिति

From the Primary Coordinator's Desk

Mrs. Tripti Prem

I feel extremely proud in announcing that the Primary Wing has completed its fourth year of establishment. The formative years have been struggling ones but we have always endeavored and strived for the best.

At this juncture, I would like to thank my Staff and the Parent community without whose abundant effort and unstinted support, the journey to soar greater heights would not have been possible

What we are providing at Pt. Deen Dayal Vidyalaya is not just education based on facts. We also lay a lot of emphasis on the holistic development of the child.

As I pen down my feelings sitting in the vicinity of Lord Hanuman, I suddenly feel so blessed by him. The vision seems to be clearer, the clouds seem to perish and all inhibitions seem to disappear.

I am confident that we shall be successful in our mission to develop the intellect of each student as well as instil moral values by providing outstanding education.

विषय-सूची

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ
1.	पं. दीन दयाल विद्यालय : भावभूमि, प्रयास और परिणाम	महेश चन्द्र श्रीवास्तव	13
2.	श्रद्धांजलि : स्व. ओम प्रकाश भार्गव		15
3.	स्व. यतीन्द्रजीत सिंह – एक परिचय		17
4.	विद्यालय के विविध कार्यक्रमों की रिपोर्ट		19
5.	खेल कूद प्रतियोगितायें वर्ष 2013–14	अजय कुमार मिश्र	22
6.	मेरी बूजी तुम्हें प्रणाम...	कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्छल'	23
7.	जीवन के 60 वर्ष पर एक मध्यावलोकन	योगेन्द्र भार्गव	24
8.	मदीबा	डा. कमल किशोर गुप्त	26
9.	सत्यव्रत	डा. मनोज कुमार शुक्ल	30
10.	कर्मयोग के समर्थक – पं. राम बालक मिश्र	पवन कुमार पाण्डेय	33
11.	एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व – ठा. गुरुजन सिंह जी	पवन कुमार पाण्डेय	38
12.	चित्रकूट गिरि करहु निवासू	सुधीर अवस्थी	42
13.	जाग मुसाफिर जाग/मुक्तक (केदारनाथ त्रासदी)	सुभाष चन्द्र शर्मा	44
14.	पुस्तकालयों का इतिहास	श्रीमती वन्दनामणि त्रिपाठी	45
15.	मेरे लिये विद्यालय	प्रवीण पाण्डेय	48
16.	भारत रत्न	अभिषेक सोनी	49
17.	बदी छले, नेकी फले	दीपक सिंह	51
18.	गौहत्या : एक सामाजिक अभिशाप	श्याम जी यादव	53
19.	शतमन्यु	दिव्या अधिकारी	54
20.	आप भी जानिये विश्व की आदमखोर मछलियों के बारे में	मायावती	55
21.	पिछले 100 वर्षों के महत्त्वपूर्ण गैजेट्स	श्याम जी यादव	56
22.	किसी व्यक्ति के पैसों का पता लगाना	श्याम जी यादव	58
23.	वो युवा	वैभव पाण्डेय	59
24.	जब मक्खी और चिड़िया ने बचाई जान	आलोक कुमार	60
25.	आदि शंकराचार्य का जीवन परिचय	अभिजीत त्रिपाठी	61
26.	प्रश्न–उत्तर	सिद्धार्थ पोरवाल	62
27.	सामान्य ज्ञान	कार्तिकेय वर्मा	63
28.	संसद पर हमला	देवकी राणा	64
29.	गुरु की महिमा	सिद्धार्थ पोरवाल	65
30.	अकबर बीरबल की रोचक कहानियाँ	प्रखर मिश्र	66
31.	वीर बालक काका बिशन सिंह	राहुल गुप्त	67
32.	कविता / टमाटर की खोज	सोनू कुमार	68
33.	दान ही सबसे बड़ा कर्म है / प्रमुख देशों के शिक्षक दिवस	आकाश गुप्त/यश सिंह	69
34.	दो का पहाड़ा/अद्‌भुत पेड़	आयुष्मान साहू	70
35.	राष्ट्रीय एकता	रघुवर तिवारी	71
36.	अगले जनादेश में	मोनेश कुमार अग्रवाल	72
37.	स्वामी विवेकानन्द जी	अंश श्रीवास्तव	73

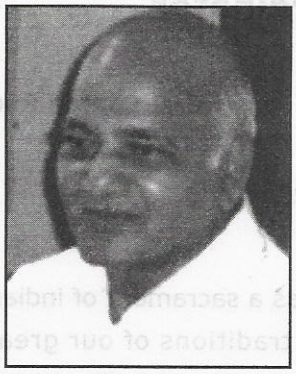

.... From the Principal's Desk

Greetings to one and all!

We are a forty three year old institution renowned for imparting quality education and instilling ethical values in the students. Our aim is to bring about the holistic development of our students and groom them into responsible citizens of the nation. Patriotism, Discipline and moral values are the hallmark of "Pt. Deendayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya"

This year we have been affiliated to the CBSE Board New Delhi. We hope we will come up to the expectations of the society and show spectacular results with the co-operation of one and all. I assure you that we shall preserve the glorious traditions of our ancient culture and the ideology of 'INTEGRAL HUMANISM" propounded by the great visionary Pt. Deendayal Upadhyaya shall continue to inspire us forever.

May the saga of success and glory continue.....

With Best Wishes

Mahesh Chandra Srivastava

PRINCIPAL

Message from the Academic Coordinator

Mrs. Sharda Rao

I extend a warm and hearty welcome to all readers!

We are a unique institution where education is imparted as a sacrament of indian culture and values. We at Vidyalaya believe in the ancient traditions of our great culture and strive to bring about the holistic development of our students. The school was established in the fond memory of the great visionary Pt. Deendayal Upadhyaya who believed that our ancient traditions should be observed but they should be adapted to the needs and requirements of the present generation.

Hence, in keeping with the rapid changes in the education scenario it was felt that a switch over to the CBSE Board was the need of the hour. To help our -students keep pace with the challenges of modern education the school has been affiliated to the CBSE Board from the current session. This year classes **1 to 9 and class 11** are following the CBSE Pattern of education .However next year onwards Vidyalaya will be a full-fledged co-educational school imparting education in Hindi and English medium from class 1 to class 12. The switch over To CBSE shall definitely open new vistas of knowledge and empower students with scholastic and co-scholastic skills to help him carve a niche for himself in this very competitive milieu.

I assure you that we will come up to the expectations of society and leave no stone unturned to develop Vidyalaya into one of the best CBSE Schools of the country. We have an excellent team of very dedicated teachers and hardworking students who will strive for excellence in all the fields of education and continue to cherish the noble values of our glorious nation.

पं० दीनदयाल विद्यालय :
भावभूमि, प्रयास और परिणाम

महेश चन्द्र श्रीवास्तव
प्रधानाचार्य

युगद्रष्टा पं0 दीनदयाल उपाध्याय के 97वें जन्मोत्सव पर हम विद्यालय परिवार की ओर से आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। हमारे विद्यालय की मूल भावना पंडित दीनदयाल जी के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

इस अवसर पर विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाउराव, इसकी आधारशिला रखने वाले परम पूज्य श्री गुरु जी, भवन को मूर्त रुप देने वाली ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी और इसकी कंचनकाया में प्राण संचरित करने वाले श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब, विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन श्री शिवशरण शर्मा एवं ब्रह्मलीन श्री इन्द्रजीत जैन जी को हम सभी श्रद्धा से स्मरण कर रहे हैं।

वर्ष 1970 की गुरु पूर्णिमा को षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज 12वीं कक्षा तक पूर्ण विकसित विद्यालय है। विद्यालय को उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद ने विशिष्ट कोटि की मान्यता प्रदान की। परन्तु शिक्षा के आधुनिकीकरण एवं शिक्षा प्रणाली में होने वाले निरन्तर सुधारों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय ने इस सत्र से **सी0बी0एस0ई0 की मान्यता** प्राप्त कर ली है। इस वर्ष कक्षा 1 से 11 तक के छात्र सी0बी0एस0ई0 पाठ्यक्रम के अनुरूप अध्ययनरत हैं। दशम तथा द्वादश कक्षा के छात्र इस वर्ष यू0पी0 बोर्ड की परीक्षा दे रहे हैं। सत्र 2014-15 से कक्षा 1 से 12 तक के सभी छात्र सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के अनुरूप अध्ययन करेंगे।

बालिकायें श्रेष्ठ शिक्षा से वंचित न रहें इस उद्देश्य से विद्यालय में सह-शिक्षा का प्रावधान किया गया तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यमों में शिक्षण की व्यवस्था की गयी है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय ऋणी रहेगा। विद्यालय परिसर में अर्द्ध चन्द्राकार दुमंजिला शैक्षिक भवन, विज्ञान-वीथी, भाउराव भवन, नरेन्द्र निवास (छात्रावास), आचार्य-कर्मचारी आवास, माधव स्मृति क्रीड़ा परिसर एवं प्रेक्षागार तथा 7500 वर्ग क्षेत्रफल का पंडित दीनदयाल सभागार है। इस समय प्रथम से द्वादश तक 12 कक्षाओं के 24 अनुभागों में (900) छात्र अध्ययनरत हैं, जिनमें 254 छात्रावासीय हैं जो विद्यालय के पीछे भाउराव भवन, नरेन्द्र निवास एवं विवेकानन्द भवन में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, बंगाल, मध्य प्रदेश के छात्र भी हैं। विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित 40 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय में आधुनिक उपकरणों से व्यवस्थित कम्प्यूटर, भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान

कर्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको नाप-जोखकर देखा जाए। - शरच्चन्द्र

प्रयोगशाला, संगीत कक्षा एवं स्मार्ट क्लास भी है। लगभग (20,0000) से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय एवं वाचनालय भी है।

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 तथा द्वादश कक्षा का 1981 में सम्मिलित हुआ था। परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से अत्युत्तम रहा। दशम कक्षा में 38 वर्षो में 99.5% छात्र सफल रहे तथा इण्टर के 31 वर्षो में 99.54% छात्र सफल रहे। इस वर्ष 2013 में दशम कक्षा में 118 छात्र सम्मिलित हुए जिसमें सभी छात्र ससम्मान उत्तीर्ण हुए। द्वादश कक्षा में 100 छात्र सम्मिलित हुए जिसमें 98 छात्र ससम्मान एवं 2 छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण रहे।

विद्यालय के छात्र राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी चयनित होकर विद्यालय को गौरवान्वित करते हैं। अभी तक 347 छात्र I.I.T. में, 1862 AIEEE में तथा 88 छात्र मेडिकल परीक्षाओं में चयनित हुए हैं। 31 छात्र I.A.S. की परीक्षा में सफल हुए हैं। इस वर्ष 13 छात्र I.I.T. में चयनित हुए हैं।

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है तथा सैनिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टि से N.C.C. की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं।

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व क्षमता छात्रों में विकसित हो इस हेतु विद्यालय में तीन संस्थायें कार्य करती हैं। अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम व दशम में किशोर भारती तथा एकादश व द्वादश में तरुण भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। इसी शृंखला में विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था है युग-भारती। युग-भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-सम्पर्क योजनाओं एवं विद्यालय के छात्रों को व्यक्तित्व विकास में कार्य करके समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

विद्यालय ने समाज के सुविधा वंचित शिशुओं की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था हेतु विद्यालय के पार्श्व में माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर प्रकल्प का भी प्रारम्भ किया है। विद्यालय के सह-सचिव श्री यतीन्द्र जीत सिंह जी ने इस पावन कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का संकल्प लिया है। यह प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 30 छात्र एवं छात्रायें शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं।

समाज के आर्थिक रूप से अभावग्रस्त परन्तु प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय में प्रतिभा प्रोत्साहन प्रकल्प के माध्यम से इस वर्ग के छात्र/छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ हुआ था। इस वर्ष इस योजना को और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से वंचित वर्ग के छात्रों को विद्यालय में प्रवेश देकर उन्हें नि:शुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था प्रारम्भ हो रही है। यह संख्या कुल छात्रों की लगभग 25% तक होगी।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

***

श्रद्धांजलि

स्व० ओम प्रकाश भार्गव

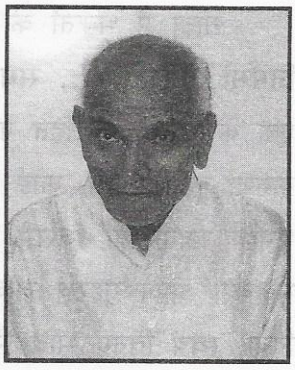

ओम प्रकाश जी का जन्म कानपुर के अत्यंत सम्भ्रान्त परिवार में 29.12.1929 को कलकत्ते में हुआ। आपके पर बाबा श्री द्वारिका प्रसाद जी, बाबा अयोध्या प्रसाद जी, पिता श्री कैलाश नाथ जी व माता श्रीमती शकुन्तला जी थीं। आपने प्रारम्भिक शिक्षा कानपुर में प्राप्त करते हुए बी.एन.एस.डी. कालेज से हाई स्कूल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया फिर बी.कॉम. करके 1951 में अपने पिता जी का प्रिन्टिंग व्यवसाय दि स्टार प्रेस ज्वाइन किया। 15 फरवरी 1955 को आपका विवाह चन्दौसी निवासी श्री राधेश्याम भार्गव की सुपुत्री सीता जी के साथ सम्पन्न हुआ। अपने तीन बेटों गोपाल, गोविन्द एवं अरविन्द व दो बेटियों रुचि व सुचि को सुसंस्कार व उच्च शिक्षा प्रदान की। 1977 में आपने टैक्सटाइल इन्डस्ट्री में एक बुक पब्लिश की जिसका विमोचन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने किया। 2005 में ईश्वर कृपा से आपने व श्रीमती सीता जी ने अपने वैवाहिक जीवन के 50 वर्ष पूरे किये व बड़ी धूमधाम से जयन्ती मनाई।

इस कार्यकाल में सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में कानपुर में आपने महान योगदान दिया। आर.एस.एस. के बाल स्वयंसेवक रहते, आपने उस संस्था में अनेक पदों, सह संचालक तक की जिम्मेदारी निभाई। विश्व हिन्दू परिषद की कानपुर शाखा की स्थापना व प्रथम बैठक आपके घर पर हुई, सनातन धर्म महामंडल के आप विशिष्ट सदस्य रहते हुए वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर आसीन थे। इन्हीं के विद्यालयों बी.एन.एस.डी. इण्टर कालेज, शिक्षा निकेतन, दीन दयाल विद्यालय की प्रबन्ध समिति में रह कर मार्गदर्शन दिया। इनके अलावा इण्डिया जापान सोसाइटी, योग क्षेम सेवान्यास, लायन्स क्लब, लॉज आर्यावर्त में कई वर्ष सक्रिय सदस्य रहे। अपने बाबा श्री अयोध्या प्रसाद जी द्वारा स्थापित पं. द्वारिका प्रसाद भार्गव धर्मार्थ ट्रस्ट के आप अध्यक्ष थे। आपके मार्गदर्शन में भार्गव ट्रस्ट ने विशेष सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं को दान दिया। विधवा व गरीब बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की। कानपुर भार्गव सभा में आप हमेशा से सक्रिय रहे तथा वर्ष 2002-03 में अध्यक्ष पद पर भी नेतृत्व प्रदान किया। प्रत्येक वर्ष परशुराम जयन्ती व ट्रस्ट के स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आपके सहयोग से सम्पन्न होते थे।

ओम प्रकाश जी अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे। प्रातः नित्य पूजा समाप्त करने के बाद ही

कुछ ग्रहण करते थे। अपने नियम, रीतिरिवाज व मूल्यों के प्रति पूर्ण समर्पित थे। ''चलता है'' शब्द जीवन में नहीं था। ईश्वर में अटूट विश्वास था अपने हाथ से ठाकुर जी की सेवा शृंगार नित्य करते थे।

गीता में भक्तों के वर्णित सद्गुण उनमें थे। **''अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च, निर्ममो, निरहंकारः, सम दुःख सुखः क्षमी।''** परिवार के प्रत्येक सदस्य, समाज, संस्था, हर एक के साथ द्वेष रहित प्रेम का संबंध था, मित्रता निःस्वार्थ थी। लम्बे समय के अनेक मित्र रहे, करुणा हृदय में थी, कोई भी महात्मा पंडित घर से खाली हाथ नहीं जाता था। अपना एक अलग धर्मार्थ खाता था जिससे अनेक पीड़ितों, संस्थाओं को सहायता देते थे। **निर्ममो :-** कभी भी मोहवश अपने गृहस्थ जीवन के कर्तव्यों से मुँह नहीं मोड़ा। **निरहंकारः-** हमेशा दूसरों को मान दिया, स्वयं विनम्र भाव से पीछे रहते थे। **सम दुःख सुखः-** व्यवसाय में, परिवार में जितने भी दुख, सुख आए, पत्नी का देहान्त हुआ, आप सम भाव से अपने कर्तव्य कार्य में लगे रहे। हिन्दू रीति रिवाज व तिथि से सारे कर्मकाण्ड करते थे।

31 दिसम्बर, 2013 प्रातः 7.30 बजे आपका गोलोक धाम प्रस्थान हुआ। परिवार में बेटे गोपाल/ऋतु, गोविन्द/दीपश्री, अरविन्द/सारिका व बेटी सुचि/राकेश, रुचि/अभय अपने अपने परिवार सहित सानन्द जीवन यापन कर रहे हैं। पौत्र राहुल पढ़ाई कर पारिवारिक फर्म सोलर प्रेस में पाँचवी पीढ़ी के हैं। पौत्री निकिता पढ़ाई में बी.बी.ए. करके के.पी.एम.सी. कम्पनी में है। संचिता, वरुण, सचिन व साक्षी पढ़ाई में रत हैं। नातिन/नाती राशि विवाह उपरान्त बम्बई में रणजीत के साथ अनुराधा नितिन के साथ न्यू जरसी में व वसुन्धरा एवं ऋषभ पढ़ाई उपरान्त मुम्बई व सैन-फ्रान्सिसको में कार्यरत है।

ऊँ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।

अपने विद्यालय के लाडले सह-सचिव

स्व० यतीन्द्रजीत सिंह - एक परिचय

हमारे प्रिय यतीन्द्रजीत सिंह का जन्म 5 जुलाई, 1968 को बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह के सुप्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। वे बैरिस्टर साहब के द्वितीय पुत्र श्री वीरेन्द्रजीत सिंह एवं श्रीमती नन्दिता सिंह की वरिष्ठ संतान थे। जीवन के प्रथम 20 वर्ष में इन्हें सेठ आनन्दराम जयपुरिया विद्यालय, पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय एवं विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कालेज में उत्तम शिक्षा और संस्कार प्राप्त हुए। अपने पितामह के सानिध्य में इन्हें अपनी किशोरावस्था से ही सामाजिक दायित्व निर्वाह करने की प्रेरणा मिली। फलतः 20 वर्ष की अल्प आयु में न केवल इन्होंने एक व्यापारिक प्रतिष्ठान की स्थापना की अपितु अनेक सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया। 26 वर्ष की आयु में इनका विवाह श्री सत्यदेव पचौरी की पुत्री कु0 नीतू से हुआ। दोनों परिवारों के राष्ट्रीय एवं सम-सामयिक चिन्तन का इन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा जिससे इनके बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास हुआ। इनका स्वाभाविक रुझान शैक्षणिक व सेवा कार्यों में था जिसे वे आजीवन अति लगन से करते रहे।

अपने सामाजिक दायित्व के निर्वाहन के लिए वे दीवानिनी वी. बद्रीनाथ एजूकेशनल ट्रस्ट एवं दीवानिनी वी. बद्रीनाथ रेलेजियस ट्रस्ट जम्मू के सचिव बने। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, नारायणी देवी ट्रस्ट एवं श्री रामलला ट्रस्ट के पदाधिकारी बने, पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, बी0एन0एस0डी0 शिक्षा निकेतन इण्टर कालेज एवं विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय की प्रबन्ध समितियों के सक्रिय सदस्य बने। इन सब संस्थाओं में रहते हुए उन्होंने अपनी पूँजी से ही सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह सेवा निधि की स्थापना की। इन सभी संस्थाओं के सहयोग एवं संरक्षण से उन्होंने कई उल्लेखनीय कार्य किए जैसे- कारिगल युद्ध से तथा आतंकी गतिविधियों से अभिशप्त परिवारों की कन्याओं के लिए जम्मू में वात्सल्य मन्दिर एवं समाज के निर्धन वनवासियों एवं जनजातीय बालिकाओं के लिए कानपुर में वात्सल्य मन्दिर की स्थापना। कानपुर देहात में तात्यागंज के ग्रामीण परिवेश में नारायणी देवी सनातन धर्म शिशु मन्दिर एवं बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह गौपालन केन्द्र की स्थापना इनके अथक परिश्रम से हुई।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के सह-सचिव के रूप में उनकी कई उपलब्धियाँ रहीं। 300 छात्रों के लिए पूर्ण सुविधा संपन्न सुसज्जित छात्रावास का निर्माण, प्राथमिक विभाग की स्थापना, छात्र-छात्राओं की सह शिक्षा की व्यवस्था एवं यू0पी0 इण्टरमीडिएट बोर्ड के स्थान पर विद्यालय को सी0बी0एस0ई0 बोर्ड की मान्यता दिलाना।

कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी के साथ-साथ कुशल खिलाड़ी के रूप में कबड्डी व खो-खो की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने भाग लिया। व्यवसाय में प्रतिष्ठित होने के पश्चात् भी नियमित रूप से

चिन्ता शहद की मक्खी के समान है। इसे जितना हटाओ उतना ही और चिपटती है। - सुदर्शन

प्रतिदिन बैडमिन्टन खेलने का क्रम उनका आजीवन चला। स्वयं खिलाड़ी होने के कारण खेलकूद के अध्यापकों के प्रशिक्षण के जो पाठ्यक्रम बी0पी0एड0 एवं एम0पी0एड0 विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय में चलाये गये उनके लिए सारी सुविधाएँ खेल का मैदान, कवर्ड बैडमिन्टन कोर्ट, स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के लिए सुसज्जित शताब्दी भवन आदि के निर्माण में उनका सक्रिय सहयोग रहा।

उनका असाधारण, कर्मनिष्ठ जीवन हम सबको विशेषकर युवाओं व नव उद्यमियों को प्रेरणा देता है। उनके द्वारा स्थापित प्रकल्पों के विकास एवं समुचित प्रबन्धन के लिए हम संकल्पित हैं। उनकी अलौकिक कर्तृत्व क्षमता को विद्यालय परिवार का नमन।

दृढ़ संकल्पी जीवन जिनका, कर्मसाधना रही लगन।

सेवापूर्ण विशाल हृदय था, उनको शत-शत बार नमन।।

निर्धनता प्रकट करना निर्धन होने से अधिक दुखदायी होता है। - प्रेमचन्द

नव चेतना की प्रतिमूर्ति

यतीन्द्र जीत सिंह 'यती' भैया

रंगमंचीय कार्यक्रम

पं0 दीनदयाल उपाध्याय एवं भाउराव देवरस जी के चित्रों पर माल्यापर्ण कर वापस मंच पर आतीं हुई मुख्य अतिथि श्रीमती वन्दना देवराय।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महोदया श्रीमती वन्दना देवराय को स्मृतिचिह्न प्रदान करते हुए प्रधानाचार्य श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव

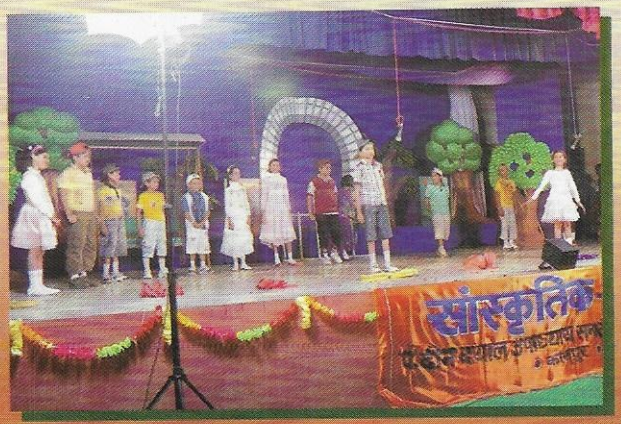

रंगमंचीय कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम में सम्बोधित करतीं हुई मुख्य अतिथि श्रीमती वन्दना देवराय।

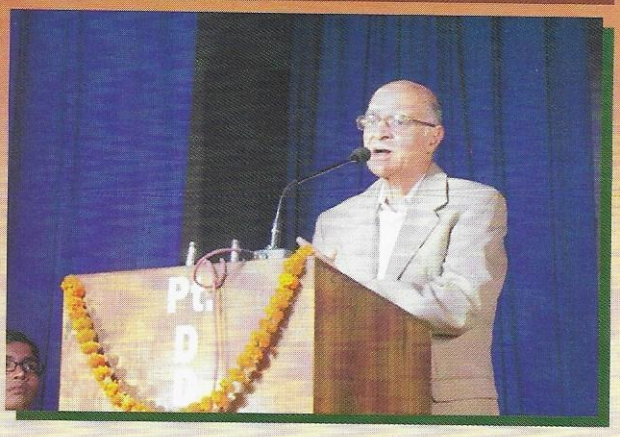

धन्यवाद ज्ञापन करत हुए विद्यालय के सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी।

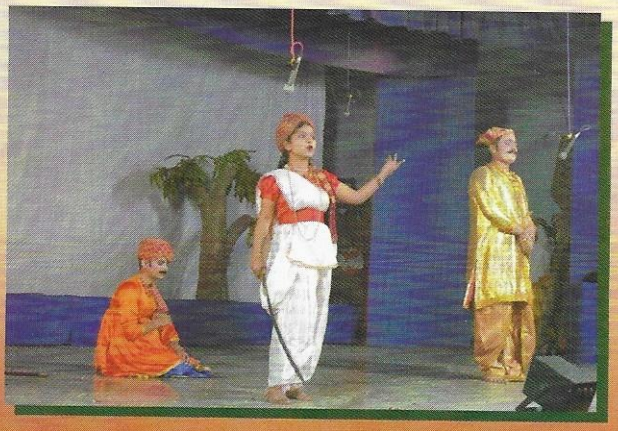

रंगमंचीय कार्यक्रम

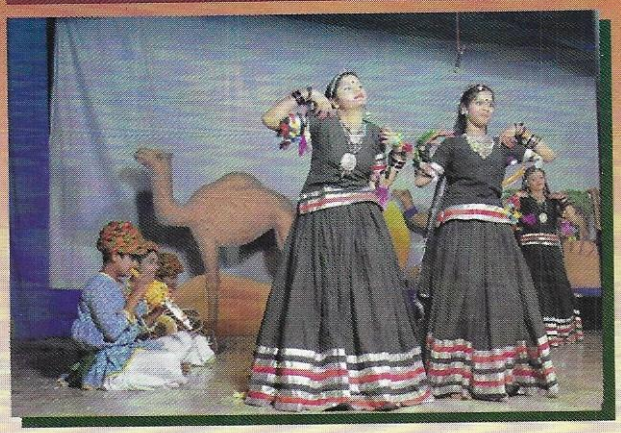

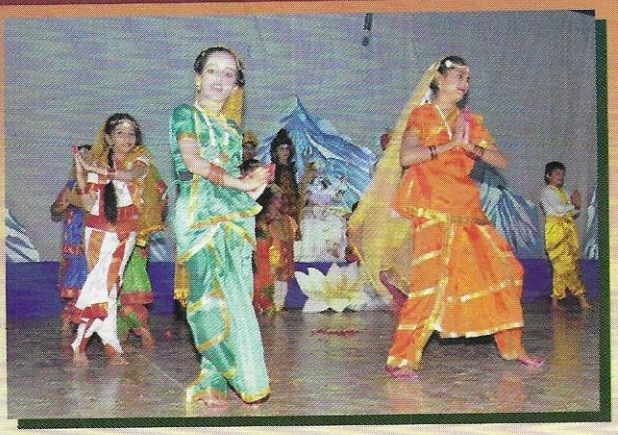

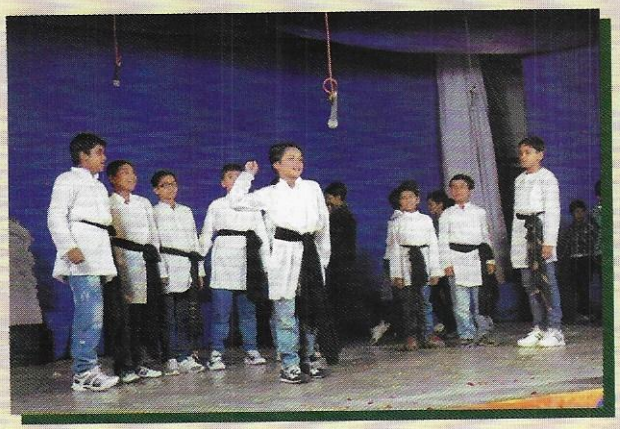

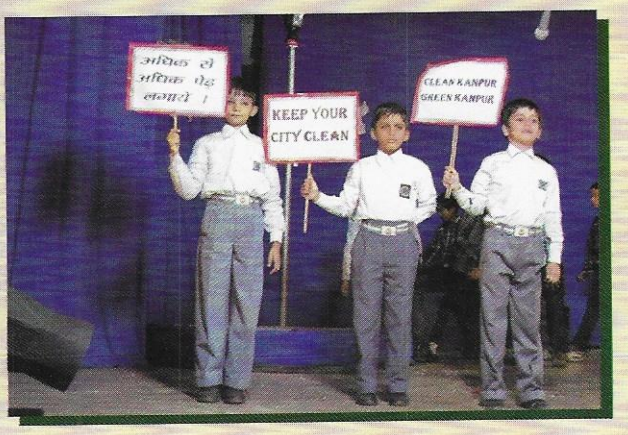

रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ देखते हुए प्रधानाचार्य श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. के.के. गुप्त, डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल एवं श्री योगेन्द्र भार्गव।

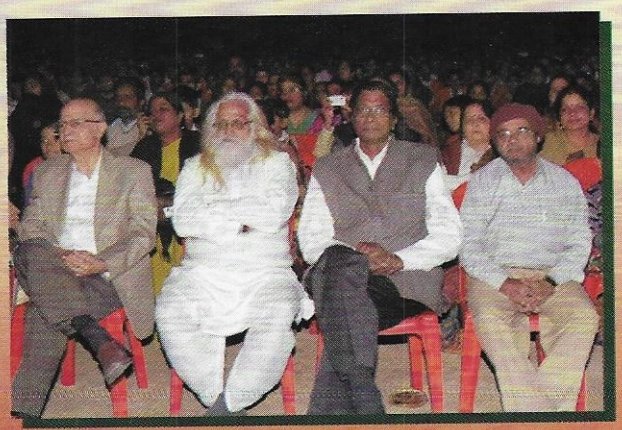

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारीगण श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी, श्री दीपक राजे, श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी आदि।

गुरुपूर्णिमा पर्व

दिनांक 22.07.2013 को महर्षि वेदव्यास जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में गुरुपूर्णिमा का उत्सव सम्पन्न हुआ। देव पूजन एवं प्रार्थना के पश्चात् प्रधानाचार्य जी ने मुख्य अतिथि ब्रह्मचारी जयदेव चैतन्य (प्रभारी चिन्मय मिशन, कानपुर) जी को शाल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत किया। माननीय श्री योगेन्द्र भार्गव जी ने मुख्य अतिथि जी का परिचय कराया। कु0 अदिति एवं कु0 अपूर्वा ने गुरुचरणों में भजन समर्पित किया। कु0 अनुकृति, कु0 श्रुति, कु0 अपूर्वा, कु0 अदिति एवं चि0 सौरभ शुक्ल आदि ने गुरु सम्बन्धित कबीरवाणी के दोहे गाये। मुख्य अतिथि जी ने गुरु महिमा पर बहुत ही सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। माननीय प्रधानाचार्य जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन वि0 शीतांशु भदौरिया एवं शगुन गुप्त ने किया।

तुलसी जयन्ती एवं वैचारिक प्रखरता

दिनांक 13.08.2013 को तुलसी जयन्ती कार्यक्रम के साथ-साथ वैचारिक प्रखरता का भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पुष्पार्पण एवं प्रार्थना के पश्चात् माननीय प्रधानाचार्य जी ने मुख्य अतिथि का स्वागतकर स्मृति चिह्न समर्पित किया। मुख्य अतिथि जी का परिचय डॉ0 के0 के0 गुप्त (पूर्व उप प्राचार्य वी.एस.एस.डी. कालेज, कानपुर) जी ने कराया। कु0 अदिति एवं अपूर्वा ने तुलसी जी के पद का गायन किया। कु0 श्रुति, कु0 अनुकृति, कु0 अदिति एवं कु0 अपूर्वा आदि बालिकाओं द्वारा श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों का गायन हुआ। तुलसी जयन्ती के उपलक्ष्य में उद्बोधन डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल जी ने दिया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि पूर्व मेजर जनरल श्री पी0 के0 सहगल जी ने छात्रों को विविध क्षेत्रों में अपने भविष्य को चुनने के विषय में बहुत ही सारगर्भित एवं प्रामाणिक जानकारियाँ प्रदान कीं। माननीय सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने सभी लोगों को धन्यवाद दिया। राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अंतरविद्यालयीय-गीतगायन प्रतियोगिता

ममतामयी बूजी की पावन जयंती के अवसर पर 24 अगस्त 2013 को अन्तरविद्यालयीय देश-भक्ति गीतगायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें नगर के 15 प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। छात्र और छात्राओं की प्रतियोगिता अलग-अलग सम्पन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता वी.एस.एस.डी. कालेज की अंग्रेजी विभाग की प्रवक्ता डा0 नीरू टण्डन ने की। आपने अपने उद्बोधन द्वारा प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन तो किया ही साथ ही बूजी के स्नेहिल एवं तपोनिष्ठ जीवन से भी परिचित कराया। निर्णायक मंडल के सम्मानित सदस्य के रूप में उपस्थित डा0 राजेश्वरी डौडियाल, श्रीमती माधुरी केन्दुलकर और श्री संजीव सिंह जी ने कार्यक्रम को और भी अधिक गरिमा प्रदान की। आपके कुशल निर्णय द्वारा छात्रा वर्ग में सनातन धर्म एजूकेशन सेन्टर कौशलपुरी की छात्रा तनविका कात्यायन को प्रथम, दिल्ली पब्लिक स्कूल की श्रेया अवस्थी को दूसरा तथा आक्सफोर्ड

बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्तव्य है। - महात्मा गांधी

माडल सी0 से0 स्कूल की आकांक्षा मिश्रा को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। छात्र वर्ग में दिल्ली पब्लिक स्कूल के छात्र राहुल श्रीवास्तव को प्रथम, पद्मपत सिंघानिया के आयुष को दूसरा तथा पं0 दीनदयाल उ0स0ध0 विद्यालय के सौरभ शुक्ल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ लेकिन विद्यालय की परम्परा का निर्वहन करते हुए तीसरा स्थान चौथे स्थान पर रहे जैन इंटरनेशनल के छात्र आदित्य को प्रदान कर दिया गया। भैया सौरभ विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किए गए।

भगवान् श्री कृष्ण षष्ठी उत्सव

दिनांक 02.09.2013 दिन सोमवार को आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र जी का षष्ठी उत्सव सम्पन्न हुआ। छात्र प्रस्तुतियों में सर्वप्रथम चि0 मनु कुमार, चि0 कार्तिकेय राज सिंह, वि0 अभिषेक सोनी आदि ने गीता पाठ किया। कु0 अपूर्वा मिश्रा ने 'नन्दभवन नन्दलाल...' भजन, कु0 अदिति तिवारी ने 'यशोमति मैया से....' भजन, कु0 श्रुति मिश्रा एवं कृष्णा त्रिवेदी ने 'नटवर नागर नन्दा....' भजन गाया तथा नटवर नागर श्रीकृष्ण जी की भूमिका निभाई चि0 अथर्व त्रिपाठी ने। चि0 सौरभ शुक्ल ने 'कजरारे मोटे मोटे नैन...' भजन, कु0 कंचन वर्मा ने 'यशोदा का नन्दलाला...' भजन तथा कु0 अनुकृति, कु0 अपूर्वा, कु0 अदिति आदि ने 'भए नन्द यशोदा के लाल बधाई बाज रही' बधाई गीत गाया। माननीय प्रधानाचार्य श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव जी ने मुख्य अतिथि जी का स्वागत किया। डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल ने मुख्य अतिथि जी का परिचय कराया। मुख्य अतिथि आचार्य पं0 पुरुषोत्तमदास त्रिवेदी जी ने आनन्दकन्द नटवर नागर नन्द नन्दन मुरली मनोहर घनश्याम श्याम सुन्दर की लीला कथाओं की पीयूष वर्षा कर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। माननीय सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह ने मुख्य अतिथि एवं अभ्यागतों का धन्यवाद ज्ञापन किया। पूजन एवं आरती का कार्य आचार्य श्री गणेश शंकर वाजपेयी जी ने करवाया। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

पं० दीनदयाल उपाध्याय जन्मोत्सव कार्यक्रम

दिनांक 25.09.2013 को पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मोत्सव विद्यालय के वार्षिकोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आनन्द मिश्र (सम्पादक राष्ट्र धर्म) जी थे। कार्यक्रम का आरम्भ एन.सी.सी. एवं घोष के छात्रों द्वारा पद संचलन से हुआ। एन.सी.सी. सीनियर डिवीजन के कमाण्डर भैया अरुण राय एवं जूनियर डिवीजन के कमाण्डर भैया परमवीर कुमार ने अपने साथियों सहित मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रार्थना के पश्चात् माननीय प्रधानाचार्य जी ने मुख्य अतिथि का स्वागत कर स्मृति चिह्न भेंट किया।इस कार्यक्रम में विद्यालय प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष माननीय डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, सचिव माननीय श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, डॉ. दिलीप सरदेसाई, श्री दीपक राजे, श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी, डॉ. के.के. गुप्त आदि गणमान्य उपस्थित रहे। भारतीय संस्कृति के प्रमुख पुरोधा की भाँति माननीय मुख्य अतिथि जी का अत्यन्त सारगर्भित उद्बोधन श्रवण का लाभ सभी को प्राप्त हुआ।

संचालन तरुण भारती के अध्यक्ष चि0 अलङ्कृत गुप्त एवं मन्त्री चि0 आयुष त्रिपाठी के द्वारा किया गया।

कलाकार के निर्माण में जीवन के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है। – महादेवी वर्मा

गीता श्लोक पाठ प्रतियोगिता

दिनांक 30.10.2013 एवं 31.10.2013 को विद्यालय में संस्थापक अध्यक्ष माननीय नरेन्द्रजीत सिंह 'बैरिस्टर' की स्मृति में गीता श्लोक पाठ प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। यह प्रतियोगिता तीन वर्गों में आयोजित हुई। जिसमें बाल वर्ग में षष्ठ एवं सप्तम के किशोर वर्ग में अष्टम से दशम तक के छात्रों ने एवं तरुण वर्ग में एकादश एवं द्वादश तक के कुल 38 छात्रों ने प्रतिभाग किया। जिसमें बाल वर्ग में चि0 मयंक वाजपेयी एवं प्रज्ञा विश्नोई षष्ठ ख को प्रथम स्थान, चि0 आदित्य शुक्ल सप्तम ग को द्वितीय स्थान तथा चि0 पीयूष त्रिपाठी षष्ठ ग को तृतीय स्थान मिला। किशोर वर्ग में कु0 अनुकृति शुक्ला एवं देवांग पटेल दशम क को प्रथम स्थान, चि0 मनु कुमार अष्टम ग एवं चि0 अक्षत अष्टम क को द्वितीय स्थान और कु0 कृतिका वाजपेयी अष्टम ख को तृतीय स्थान मिला। तरुण वर्ग में चि0 सचिन पाठक एकादश क को प्रथम स्थान, चि0 हर्षित वाजपेयी एकादश क को द्वितीय स्थान एवं चि0 वैभव पाण्डेय एकादश क को तृतीय स्थान मिला। प्रतियोगिता का संचालन आचार्य श्री पवन पाण्डेय ने किया। निर्णय का भार श्री गणेश शंकर वाजपेयी एवं डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल जी ने वहन किया। प्रधानाचार्य श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

अन्तर विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 18.11.2013 को प्रातः 10 बजे से मारुति मन्दिर में उक्त प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। जिसमें 15 विद्यालयों के 30 छात्रों ने सहर्ष भाग लिया। प्रतियोगिता का विषय 'बढ़ता जातिवाद और क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता में बाधक है' था। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. ए.के. वर्मा विभागाध्यक्ष राजनीतिशास्त्र क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर ने प्रतियोगी छात्रों का मार्गदर्शन किया। निर्णायक मण्डल में डॉ. पप्पी मिश्रा विभागाध्यक्षा राजनीतिशास्त्र डी.जी. कालेज कानपुर, डॉ. यतीन्द्र सिंह हिन्दी विभाग डी.ए.वी. कालेज कानपुर तथा श्री रामतीर्थ मिश्र पूर्व प्रवक्ता हिन्दी पं. दीन दयाल उपाध्याय स0ध0 विद्यालय कानपुर रहे।

प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा जिसमें व्यक्तिगत प्रस्तुति के आधार पर डी.पी.एस. आजाद नगर के चि0 उत्कर्ष शर्मा 198/300 अंक लेकर प्रथम स्थान पर रहे, द्वितीय स्थान पर सर पदमपत सिंहानिया एजूकेशन सेण्टर कमलानगर की कु0 स्तुति अग्रवाल ने 184/300 अंक पाये तथा पूर्णचन्द्र विद्या निकेतन बर्रा की कु0 उज्ज्वलिका यादव 183/300 अंक पाकर तृतीय स्थान पर रहीं। पक्ष एवं विपक्ष दोनों के अंकों के योग के आधार पर सर पदमपत सिंहानिया एजूकेशन सेण्टर कमला नगर 363/600 को शील्ड प्रदान की गई। पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के छात्रों ने भी प्रतिभाग किया। पक्ष में चि0 श्रवण तिवारी एकादश ख ने 190/300 अंक तथा विपक्ष में चि0 आयुष त्रिपाठी ने 215/300 अंक अर्जित किए। सराहना के साथ उन्हें विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

प्रतियोगिता के संयोजक आचार्य श्री गणेश शंकर वाजपेयी, श्रीमती शारदा राव, डॉ. मनोज कुमार शुक्ल एवं दुर्गेश वाजपेयी रहे। अन्त में आदरणीय प्रधानाचार्य श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा अतिथिगणों, विभिन्न विद्यालयों से पधारे आचार्य एवं आचार्यागणों के साथ-साथ प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

***

चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए - महात्मा गांधी

वर्ष २०१३-१४ में पं. दीनदयाल उ० सनातन धर्म विद्यालय में क्रियान्वित की गई विविध खेल-कूल प्रतियोगिताएँ

अजय कुमार मिश्र
क्रीड़ा प्रभारी

वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता

प्रथम स्थान - धैर्य कुंज द्वितीय स्थान - शौर्य कुंज तृतीय स्थान - शक्ति कुंज

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी

क्रम	नाम	अंक	कुंज	दल
01	रोबिन सिंह	23	सत्य कुंज	अभिमन्यु दल
02	अभिषेक राज रंजन	18	शक्ति कुंज	अभिमन्यु दल
03	पवन कुमार	22	धैर्य कुंज	एकलव्य दल
04	प्रणव प्रकाश	20	धैर्य कुंज	ध्रुव दल
05	अनुराग कुमार	18	शौर्य कुंज	ध्रुव दल

सहोदय स्कूल तैराकी प्रतियोगिता - सहोदय स्कूल तैराकी प्रतियोगिता में चि0 अभिषेक राज रंजन ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए नौ पुरस्कार अर्जित किये प्रतियोगिता जैन इण्टर नेशनल स्कूल में आयोजित की गई, जिसमें आठ रजत एवं एक स्वर्ण पदक प्राप्त किया। साथ ही डा0 उमराव सिंह मेमोरियल प्रतियोगिता में अण्डर 16 में प्रथम स्थान और तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

सहोदय स्कूल टेबल-टेनिस प्रतियोगिता - सर पद्मपद सिंहानिया एजूकेशन सेन्टर में आयोजित सहोदय स्कूल टेबल-टेनिस प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्रों ने सेमीफाइनल तक प्रतिभाग किया।

सहोदय स्कूल वाली-बॉल प्रतियोगिता - सुघर सिंह एकेडमी श्याम नगर द्वारा आयोजित सहोदय स्कूल वाली-बॉल प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्रों ने सेमीफाइनल तक अपनी प्रतिभा का सराहनीय प्रदर्शन किया।

फुटबॉल प्रतियोगिता - पूर्णचन्द्र विद्या निकेतन में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया साथ ही स्वामी विवेकानन्द सार्धशती के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिता में अपने विद्यालय ने फुटबॉल एवं टेबल-टेनिस में तृतीय स्थान प्राप्त किया और विद्यालय को ओवर आल चैम्पियनशिप के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

जिला स्तरीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता - कानपुर ग्रीन पार्क में आयोजित जिला स्तरीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता में 12 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

राज्य स्तरीय ऐथलेटिक्स प्रतियोगिता - सैफई इटावा में आयोजित राज्य स्तरीय ऐथलेटिक्स प्रतियोगिता में निम्न खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया-

01 गौरव कटियार कक्षा 12 02 अभिषेक राज रंजन कक्षा 11 03 पवन कुमार कक्षा 9

राज्य स्तरीय टेबल-टेनिस प्रतियोगिता - बरेली उ0प्र0 में आयोजित राज्य स्तरीय टेबल-टेनिस प्रतियोगिता में दीपांशु कटियार कक्षा 9 का चयन हुआ।

प्राणियों के लिये चिन्ता ही ज्वर है। - स्वामी शंकराचार्य

मेरी बूजी तुम्हें प्रणाम...

कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्छल'
(पूर्व आचार्य)

मुझे खिलाया कर कमलों से घर आँगन चौबारे में;
आप कहें दो शब्द कहूँ मैं, उन बूजी के बारे में?!
वह विराट व्यक्तित्व कि जिसके आगे बौना ये संसार।
सागर के जल से भी ज्यादा भरा हुआ था जिसमें प्यार।
ऊँच और नीच, धनी निर्धन का जिसने भेद कभी न जाना-
हर बच्चे पर, माता बनकर, रही लुटाती लाड़ दुलार।।
हम सबके ही लिये हर समय, सब कुछ था भण्डारे में।
आप कहें दो शब्द कहूँ मैं, उन बूजी के बारे में।।
तेजस्वी तन, ओजस्वी मन, सादा जीवन उच्च विचार।
हृदयस्पर्शी 'निश्छल' आँखें पढ़ लेती थीं मन का हाल।
युगों युगों के बाद विधाता, ऐसी रचना रचता है-
जिसके आगे झुक झुक जाता नीले अम्बर का भी भाल।।
ज्योति-स्तम्भ आपका जीवन पथ दिखलाये अंधियारे में।
आप कहें दो शब्द कहूँ मैं, उन बूजी के बारे में।।
आज जयन्ती के अवसर पर हो स्वीकार मेरा पगवन्दन।
बस स्मृति की धूल बनेंगी आज देवि माथे का चन्दन।
भाव नहीं हैं, शब्द नहीं हैं, कैसे हो गुणगान आपका-
अर्चन कर सकते 'बूजी' का, क्या ये मेरे शब्द-सुमन?
करूँ आपका निशिदिन दर्शन, सूरज-चन्दा-ध्रुवतारे में।
आप कहें दो शब्द कहूँ मैं, उन बूजी के बारे में।।

***

जीवन के ६० वर्ष पर एक मध्यावलोकन

योगेन्द्र भार्गव

आज हम सब महत्त्वाकांक्षी, धनोपार्जन व सामाजिक प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर पर पहुँचने का एकमात्र उद्देश्य जीवन के 60 वर्ष कब पूरे कर लेते हैं, पता ही नहीं रहता। यह एक रोमांचक पड़ाव है जहाँ अधिकतर लोग माँ-बाप व बच्चों के उत्तरदायित्व से निवृत्त होकर, पुनः पति पत्नी दो लोग रह जाते हैं।

मैं सोचता हूँ इस अवसर पर एक मध्य जीवन अवलोकन करना उपयुक्त होगा। पाश्चात्य सभ्यता **'धनोपार्जन, खाओ-पिओ व इन्द्रिय विषय उपभोग में लीन रहो'** या भारतीय संस्कृति **'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा।। साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।'** पर विचार कर, 'स्वयं' की शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक प्रगति पर चिन्तन करते हुए, निम्न विचार आपके सम्मुख रखना चाहूँगा।

शारीरिक : स्वस्थ एवं निरोग आनन्दपूर्वक जीवन यापन के लिये नितान्त आवश्यक है। पर हममें से अधिकतर लोगों ने जीवन में प्राथमिकताएँ रखी हैं- पहली नौकरी/कारोबार (career), दूसरा परिवार और अन्तिम 'स्वयं' (शारीरिक/मानसिक स्वास्थ्य)। इससे 60 वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते अधिकतर लोग उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदयरोग से पीड़ित दिखाई दे रहे हैं। अब प्राथमिकता बदलते हुए पहली 'स्वयं' (स्वस्थ शरीर व मन) और तीसरी नौकरी/व्यवसाय को रखना है। अन्य सुझाव हैं: गीता में भगवान् कृष्ण कहते हैं 'यह दुखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार, विहार, शयन तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है', अर्थात् नियमित जीवन, समय से उचित भोजन व शारीरिक व्यायाम (प्रातः टहलना, योग इत्यादि) नित्य अवश्य करें। अपना पारिवारिक डाक्टर तय करके, वर्ष में एक बार अवश्य दिखाएँ। उनकी सलाह से, वर्ष में एक बार Blood Sugar, Lipid Profile, Serum Creatinine, Urine Culture अवश्य test कराएँ। Prevention is better than cure.

मानसिक : साधारणतया हममें से अधिकांश लोगों का मन, अधिकतर जिम्मेदारियाँ पूरी हो जाने के उपरान्त भी, चिन्तित और अशान्त रहता है इस विचार सरिता में बाढ़ लाने वाली तीन मुख्य धाराएँ हैं- भूतकाल की बन्धनकारी स्मृतियाँ, भविष्य के स्तब्धकारी भय तथा वर्तमान में समस्याओं की चिन्तायें। दादा वासवानी कहते हैं

"Whatever has happened had to happen. Knowing this do not worry over the past, nor be concerned about the future. Cling to the lotus feet of the lord and there find true beauty, joy and peace."

जीवन में अनुकूल/प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद मन को प्रसन्न, शान्त, शुद्ध एवं ईश्वरोन्मुख रखने का प्रयत्न करें। कुछ और विचार करें। मैंने पत्नी की कब पिछली बार स्वादिष्ट

ईश्वर न काबा में है न काशी में है। वह तो घर-घर में व्याप्त है-हर दिल में मौजूद है। - महात्मा गांधी

भोजन की प्रशंसा/नई साड़ी की प्रशंसा या 'I love you darling' कहा। नीरस व शुष्क जीवन को पुनः प्रेम व प्रसन्नता से भरना है। क्या मैं आज स्वार्थ एवं अभिमानपूर्वक परिवार के सदस्यों पर (विशेषकर सास का बहुओं पर) शासन चलाते हुए सुख/गौरव का अनुभव करता हूँ? ईश्वर प्राप्ति के लिए अत्यन्त विनम्र, सरल व निरहंकारी स्वभाव बनाना है। क्या मैंने 60 वर्ष में अपने परिश्रम से जो अत्यन्त सफल वृहद् व्यवसाय स्थापित किया है, जिसमें अब परिवार के 30-32 वर्ष के बेटे कार्यरत हैं, और मैं ही C.E.O./मुख्य कर्त्ताधर्त्ता बना रहना चाहता हूँ? विचार करें अधिकतर बड़े पेड़ के नीचे छोटे पेड़ पूर्ण विकसित नहीं हो पाते हैं।

आध्यात्मिक : 'भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते' श्लोक शंकराचार्य जी हम सभी को भगवत् विचारों से अपने हृदय को भरने का आवाहन दे रहे हैं, न कि धन-दौलत या सांसारिक उपलब्धियों की प्राप्ति की चिन्ता से। भजन-पूजा करना केवल कर्मकाण्डीय कार्यक्रम को या भगवान् की मूर्त्ति पर नीरस भाव से फूल चढ़ाने को या बिन समझे कुछ मन्त्रों/स्तुतियों के पाठ को नहीं कहते। सच्ची भक्ति या सेवा तो 'भगवान् से अपना तादात्म्य/सम्बन्ध स्थापित करना है।' प्रारम्भ करने के लिए तुलसीदास जी कहते हैं **'प्रथम भगति सन्तन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा'**। विचार करें- हर समय ईश्वर को याद करें, केवल प्रातः सायं कुछ क्षण के लिये ईश्वर का ध्यान करना और शेष समय इन्द्रिय सुख का विचार करना आध्यात्मिक जीवन नहीं है।

*** *** ***

हमारी अंतस्थ गुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। - महात्मा गांधी

मदीबा

डा. कमल किशोर गुप्त

आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व यूरोप के देशों द्वारा चलाये जा रहे समुद्री यात्रा अभियानों का प्रमुख उद्देश्य होता था- भारत पहुँचना। ज्ञान और दर्शन की आधार-भूमि पर खड़ा संसार का सबसे शक्तिशाली देश और सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत उनको आकर्षित करता था। इन लोगों में पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज प्रमुख होते थे। इन्हें गोरे अथवा श्वेत के नाम से जाना जाता था। यात्रा अभियान के बीच में अफ्रीका का दक्षिणी भाग ऐसा था जहाँ ये लोग लंगर डालते थे। वहाँ की प्रकृति प्रदत्त सुन्दरता, वहाँ के मूल निवासियों की सरलता और खनिज सम्पदा विशेष कर सोने की खदानों का बाहुल्य श्वेत लोगों को भा गया वे वहाँ अपनी-अपनी कालोनी विकसित कर जबरन शासक बन बैठे। इधर भारत से कुछ मजदूरों को बंधुवा बना कर दक्षिण अफ्रीका ले गये। कृषि और पशुपालन वहाँ के प्रमुख संसाधन थे। भारतीय बंधुआ मजदूरों ने (जिन्हें गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था) वहाँ आम के पेड़, अन्य रसीले फलों के पेड़ तथा साग-सब्जी की पौध लगाकर कृषि उत्पाद में बढ़ोत्तरी की।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशाब्दी में भारतीय मूल के एक व्यापारी के मुकदमे की पैरवी हेतु भारत से मोहनदास करमचन्द गाँधी मई सन् 1893 ई. में दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। मुकदमे की पैरवी के साथ-साथ गाँधी जी ने क्रूर अमानवीय, श्वेत शासकों की रंगभेद, अन्याय एवं असमानतापूर्ण नीतियों के विरुद्ध अहिंसक व शान्तिपूर्ण आन्दोलन-सत्याग्रह चलाया। अनेक माँगों पर शासकों को झुकने हेतु मजबूर किया। सत्याग्रह से गिरफ्तार सभी सत्याग्रहियों को जब सम्मानपूर्वक रिहा करने, इण्डियाज रिलीफ बिल प्रकाशित होने पर 20 जुलाई 1914 ई. को गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका छोड़ा। 21 वर्ष के अनवरत सत्याग्रह की शुचिता, समर्पण और गाँधी जी के निर्भीक नेतृत्व ने दक्षिण अफ्रीकी लोगों में श्वेत शासकों के क्रूर, अमानवीय, अत्याचारों एवं रंग भेद की नीति के विरुद्ध संघर्ष करने का सशक्त बीजारोपण कर दिया था।

गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका छोड़ने के चार साल बाद वहाँ के ट्रान्सकेई क्षेत्र के उमताता जिले के म्वेजो (Mvezo) गाँव के मुखिया-गादला हेनरी फाकानिस्वा तथा उनकी तीसरी पत्नी नानक्वाफी नोसेकैनी फैनी को 18 जुलाई सन् 1918 ई. को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। जिसका नाम **रोलिहलाहला मंडेला** रखा गया। गाँव के मुखिया एवं स्थानीय थैम्बू कबीले के राजा के सलाहकार होने के नाते एक विवाद में श्वेत मजिस्ट्रेट की अनुमति के बिना निर्णय करने से उनको बेदखल कर दिया और वेतन, भत्ते आदि भी रोक दिए। अतः उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। तब मंडेला को लेकर उनकी माता अपने गाँव कूनू चली गई। मंडेला का बचपन वहीं बीता। पशुओं को चराना, मक्का की लपसी खाना, नदी में तैरना, बालू-मिट्टी से मूर्तियाँ बनाना आदि उनकी दिनचर्या बन गई। पिताजी कभी-कभी आते और मंडेला की रचनात्मक बुद्धि व उसकी प्रखरता देख अत्यन्त प्रसन्न होते थे। स्वयं अनपढ़ होने के कारण अपनी कमजोरी वे जानते थे। अतः मंडेला को पढ़ाने का निर्णय लिया।

जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते हैं। - मनु

कूनू गाँव के ईसाई मिशनरी के स्कूल में भर्ती कराया। स्कूल की अध्यापिका ने ईसाई परम्परानुसार मंडेला को यूरोपियन (ईसाई) नाम नेलसन दिया। अब वे **नेलसन मंडेला** हो गये।

9 वर्ष की आयु में मंडेला के पिता जी का देहान्त हो गया। उनकी माताजी काफी समझदार व मंडेला के भविष्य के प्रति सचेत थीं। अत: अपनी ममता को पीछे छोड़ उन्होंने अपने कबीले के राजा-जोंगिनताबा को मंडेला के पालन-पोषण व शिक्षा की जिम्मेदारी सौंप दी। जोंगिनताबा को राजा बनवाने में फाकानिस्वा की अहम-भूमिका से वे अत्यन्त अहसानमन्द थे। अत: राजा व रानी ने मिलकर मंडेला को अपने बच्चों की तरह स्वीकार कर लिया। राजा के पुत्र जस्टिस और पुत्री नोमाफू के साथ राजमहल में मंडेला खेलने-कूदने लगे। जोंगिनताबा ने मंडेला को उसी स्कूल, जिसमें जस्टिस पढ़ता था, में प्रवेश कराने स्वयं अपनी कार में बिठा कर ले गये। वह पहला दिन जब मंडेला ने नया सूट व बूट पहने थे। वे परिश्रम व लगन से पढ़ते और शेष समय में राजमहल के कार्यों में मदद करते।

मंडेला जब 16 वर्ष के हुए तो वहाँ की परम्परानुसार जस्टिस के साथ ही राजा साहब ने दोनों को 'मर्द' बनवा दिया अर्थात् 'सुन्नत' करा दी। अब 'सुन्नत' के बाद ही कोई पुरुष शादी करने, सम्पत्ति में अधिकार पाने, धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने का हक प्राप्त कर सकता है। अत: अत्यन्त कष्टदायक प्रक्रिया से गुजरने के बावजूद मंडेला ने कहा- Ndiyindoda (I am a man)।

सन् 1935 ई. में राजा साहब ने उन्हें बोर्डिंग स्कूल क्लार्कबरी इन्स्टीट्यूट में भर्ती करा दिया। और अगली शिक्षा के लिए सन् 1937 ई. में हीलटाउन, शहर के वैसलीन कालेज में प्रवेश कराया। वहाँ के प्रधानाचार्य अपने को अभिजात्यवर्ग का बताकर अश्वेतों का मज़ाक उड़ाते थे, अपमानित करते थे। उनकी रंगभेद की नीति को मंडेला समझने लगे थे। परन्तु 600 विद्यार्थियों की क्षमता वाले डायनिंग हाल के इस छात्रावास का वातावरण खुला था। कई भाषाओं, जातियों के छात्र मिल कर रहते थे। सबके प्रति समान व्यवहार का बीजारोपण मंडेला के मन मस्तिष्क पर यहीं पड़ा। इस बीच मंडेला ने वाद-विवाद प्रतियोगिता, फुटबाल, बॉक्सिंग, लम्बी दौड़ आदि में भी अपना स्थान बना लिया। दक्षिण अफ्रीका की अखण्डता का बीजारोपण भी उनके हृदय में हो चुका था।

सन् 1941 ई. में मंडेला जोहन्सबर्ग आ गये, यहाँ एक अनुभवी समाजसेवी और सन् 1912 ई. में स्थापित अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बाल्टर सिसुलू से उनकी मुलाकात हुई। सिसुलू ने वकालत की एक फर्म में मंडेला को क्लर्क की नौकरी दिलवा दी। यहाँ पर अश्वेतों के मुदकमों का कार्य देखते-देखते उनकी समस्याओं से वे अवगत हुए और यहीं पर उन्हें अच्छे वकील बनने की प्रेरणा मिली। मंडेला को 2 पौंड प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। इतने कम पैसे में मकान का किराया, आफिस जाने-आने का किराया और रात में पढ़ने के लिए मोमबत्तियाँ क्रय करने के बाद इतना कम बचता था कि भरपेट खाना नहीं मिलता था। वे अक्सर भूखे सो जाते। और 9 किमी. दूर ऑफिस पैदल जाने-आने से किराया बचाते थे। फर्म के मालिक ने उनके परिश्रम, समर्पण और वाक्चातुर्य से प्रभावित होकर वेतन बढ़ा दिया और पूछा कि बढ़े वेतन का क्या करोगे? मंडेला का जवाब था और अधिक मोमबत्तियाँ खरीद कर रात्रि में और देर तक पढ़ूँगा।

सन् 1943 ई. में सरकार ने बसों का किराया बढ़ा दिया। उसके विरोध में 20000 लोगों का विशाल प्रदर्शन एवं 9 दिन हाईवे जाम से सरकार ने बढ़ा किराया वापस ले लिया। संगठन में शक्ति है, इसका अहसास मंडेला को हुआ, तभी अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (ANC) के माध्यम से 'अफ्रीकियों को अपना अफ्रीका वापस लेना चाहिए' का विचार सबके सामने रखा। सन् 1945 ई. में ANC की वार्षिक बैठक में समान मताधिकार, रंगभेद की नीति की समाप्ति और सभी को समान अवसर की माँग का नेतृत्व लैम्बेडे एवं मंडेला ने किया। खान मजदूरों को 2 शिलिंग प्रतिदिन मजदूरी को 10 शिलिंग करने हेतु मजदूरों का ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। जिसमें सेना की गोलाबारी से 9 लोगों की मृत्यु और 1200 मजदूर घायल हुए। AsiaticLand Tenure Act. 1946 जो मूल अश्वेतों के साथ भारतीयों पर भी लागू था। उस समय वहाँ 1.5 लाख भारतीय रहते थे। अत: इसके विरोध में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रत्यावेदन दिया। इन्हीं आन्दोलनों से मंडेला गांधी जी के 'सत्याग्रह' से सीख लेकर दृढ़ता के साथ अन्याय, अत्याचार और असमानता के विरुद्ध खड़े हो रहे थे।

सन् 1950 ई. में ANC की युवा लीग का अध्यक्ष मंडेला को चुना गया। सन् 1952 ई. में अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत की। मंडेला व उनके साथी गिरफ्तार किए गये। इन्हीं दिनों मंडेला ने वकालत की अपनी फर्म खोल ली थी। परन्तु श्वेत मजिस्ट्रेट ने कोर्ट में मंडेला को अपमानित किया। वकालत हेतु पंजीकृत होने के बावजूद मुवक्किल की बात को मंडेला को रखने नहीं दिया और कोर्ट के बाहर जाने का आदेश दे दिया।

सन् 1955 ई. में ANC के वार्षिक अधिवेशन लुथुली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें रंग-भेद, जाति-भेद, लिंग-भेद एवं धर्म-भेद से निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक सरकार गठन हेतु पूरे दक्षिण अफ्रीका में जन जागरण करने का निर्णय हुआ। मंडेला ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

मंडेला पर महा राजद्रोह का मुकदमा चला। 2 अक्टूबर अर्थात् गाँधी जयन्ती से 13 दिसम्बर सन् 1952 ई. तक सही गलत आरोप लगाये गये। लम्बी सुनवाई चली और 10 मार्च सन् 1960 ई. को सरकारी सुनवाई पूरी हुई। तब बचाव पक्ष की सुनवाई शुरू हुई। शायद इतनी लम्बी न्यायिक प्रक्रिया से ऊब कर प्रदर्शन कर रहे 5000 लोगों पर सरकार ने गोलियाँ चलवा दीं, 69 अश्वेत मारे गये 186 अश्वेत घायल हुए। इस अमानवीय कृत्य ने भारत के जलियाँवाला बाग की याद जाती करा दी। पूरी दुनियाँ ने सरकार की घोर भर्त्सना की। पर सरकार बेशर्म बनी रही। 28 मार्च सन् 1960 ई. को राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया। मंडेला ने अपना पास सबसे पहले जला कर विरोध प्रकट किया। अश्वेतों हेतु आवश्यक इस पास को जलाने की होड़ लग गयी। अकेले केपटाउन में 5000 लोग एकत्रित हुए। घबराकर सरकार ने 30 मार्च सन् 1960 ई. को देश में आपातकाल लागू कर दिया। पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में मंडेला को राजद्रोह से मुक्त कर दिया गया। देश खुशियों से झूम उठा। दूसरी ओर ANC के प्रमुख **लुथुली को अहिंसक एवं शान्तिपूर्ण आन्दोलन हेतु नोबेल शान्ति पुरस्कार** से नवाजा गया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह निर्णय श्वेत शासकों पर कठोर हथौड़ा था।

मंडेला के जेल में रहते हुए एक और मुकदमा चला दिया गया। 'रिवोनिया ट्रायल' के नाम से प्रसिद्ध इस मुकदमे के सभी आरोपों को नकारते हुए मंडेला ने कोर्ट में कहा, "नहीं, श्रीमान्! इस अपराध को अस्वीकार करता हूँ। मेरा मानना है। कि जिस कटघरे में मैं खड़ा हूँ उसमें सरकार को खड़ा होना चाहिए"। उन्होंने आगे कहा

"During my life time I have dedicated myself to this struggle of the African people. I have faught against white and black domination....But if needs be, it is an ideal for which I am prepared to die."

12 जून सन् 1964 ई. को मंडेला को रोबिन आई लैण्ड जेल में डाल दिया गया, सन् 1964 ई. में गिरफ्तार कर जेल पहुँचने वालों में 466 नं. मंडेला का था। अत: **उन्हें कैदी नं. 466/64** से जाना जाने लगा। जेल की असहनीय यातनाओं, अनन्त अपमानों, दम घोंटू घुटन, तनहाई और भूख के साथ लगातार 27 वर्षों तक जेल के ही फटे कपड़ों में रहे। उनकी लगन और लक्ष्य से डिगाने में सरकार के सब कुकृत्य फेल हो गये। जेलावधि में माँ का निधन व एक पुत्र का निधन हो जाने पर भी सरकार ने दिवंगत आत्माओं के अंतिम संस्कार में सम्मिलित होने तक की अनुमति नहीं दी। इससे अधिक अमानवीय संवेदनहीन सरकार कोई और हो सकती है क्या?

अन्तत: **'सत्यमेव जयते'**। सत्य की ही जीत हुई और 15 फरवरी सन् 1990 ई. को 27 वर्ष बाद जेल से मंडेला अपनी पत्नी विनी का हाथ पकड़ कर जब जेल के गेट से बाहर आये तो स्वतन्त्रता प्रेमी, मानवतावादी न्यायप्रिय लोगों के मन में उत्साह, उमंग, खुशी, हृदय में कृतज्ञता आँखों में प्रेमाश्रु की धाराएँ बह रही थीं। धन्य है वे माता-पिता जिन्होंने इन्हें जन्म दिया धन्य है वह देश, वह धरती जहाँ मंडेला पले पुसे।

अहिंसक व शान्तिप्रिय आन्दोलन के सुखद संपादन हेतु दक्षिण अफ्रीका के तत्कालीन राष्ट्रपति डी. क्लार्क और आन्दोलन के नेता, स्वतंत्रता के अग्रदूत मंडेला को संयुक्त रूप से सन् 1993 के **नोबेल शान्ति पुरस्कार** से पुरस्कृत किया गया। उनके देशवासियों ने पहली बार मताधिकार प्राप्त कर मंडेला को अपना पहला अश्वेत राष्ट्रपति चुना। मंडेला ने सबके साथ समान व्यवहार श्वेत लोगों, जिन्होंने उन्हें प्रताड़ित व अपमानित किया था उन सभी को क्षमा कर हृदय की विशालता से परिचित कराया। वे सब उनके व्यक्तित्व के सामने नत मस्तक थे।

दुनियाँ के अनेक देशों ने अपने-अपने देश के सर्वोच्च पुरस्कारों, सम्मानों से उन्हें अलंकृत कर अपने को धन्य किया। भारत ने भी उन्हें अपना सर्वोच्च पुरस्कार **'भारत रत्न'** से सम्मानित किया। गांधी शांति पुरस्कार सहित अनेक मानद उपाधियों से भी उन्हें सम्मानित किया गया। अनेक देशों ने उनके नाम से स्मारक, सड़कें आदि बनवाकर उनके प्रति सम्मान व्यक्त किया है। राष्ट्रपति का कार्यकाल पूरा करने के बाद वे समाजसेवा में लग गये। अपने गाँव में रहकर बच्चों के कल्याणार्थ तीन ट्रस्ट बना कर सेवा करते हुए 5 दिसम्बर सन् 2013 ई. को वे अपनी स्मृतियाँ छोड़ सदा के लिये हम सबको छोड़ गये। बचपन में धार्मिक नाम **मदीबा** दिया गया था जिसका अर्थ होता है पिता। पिता की ही भाँति दक्षिण अफ्रीकी लोगों के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन उन्होंने अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता, समानता एवं शान्ति के ऐसे महा अग्रदूत को हमारा शत्-शत् नमन।

***

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर-उधर कहने से दान फलहीन हो जाता है। - मनु

सत्यव्रत

डॉ० मनोज कुमार शुक्ल

कोशल देश में देवदत्त नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। वह निःसन्तान था, इसलिए उसने पुत्रप्राप्ति के लिए विधिपूर्वक यज्ञ किया। तमसा नदी के तट पर पहुँचकर उसने उत्तम यज्ञ मण्डप बनवाया और वेदज्ञ तथा यज्ञ कर्म में निपुण ब्राह्मणों को आमंत्रित करके विधिपूर्वक पुत्रेष्टि यज्ञ आरम्भ कर दिया। उस यज्ञ में मुनिवर सुहोत्र को 'ब्रह्मा' याज्ञवल्क्य को 'अध्वर्यु' तथा बृहस्पति को 'होता' पैलमुनि 'प्रस्तोता' तथा गोभिल को 'उद्गाता' बनाया एवं अन्यान्य उपस्थित मुनियों को यज्ञ का सभासद बनाकर उन्हें विधिवत् प्रचुर धन प्रदान किया।

सामवेद का गान करने वाले श्रेष्ठ उद्गाता गोभिल मुनि सातों स्वरों से युक्त तथा स्वरित से समन्वित रथन्तर साम का गान करने लगे। बार-बार श्वास लेने के कारण गोभिल का स्वर भंग हो गया। तब देवदत्त को क्रोध आ गया और उसने तुरन्त गोभिल मुनि से कहा- हे मुनि मुख्य! तुम मूर्ख हो, तुमने आज मेरे द्वारा पुत्रप्राप्ति के लिए किए जाते हुए इस काम्यकर्म में स्वरभंग कर दिया। तब गोभिल मुनि अत्यन्त क्रोधित होकर देवदत्त से कहने लगे- तुम्हारा पुत्र मूर्ख, शठ और गूँगा होगा। हे महामते! सभी प्राणियों के शरीर में श्वास आता-जाता है। इसे रोकपाना बड़ा कठिन है। अतः ऐसी स्थिति में स्वर भंग हो जाने में मेरा कुछ भी दोष नहीं है।

महात्मा गोभिल का यह वचन सुनकर शाप से भयभीत देवदत्त ने अत्यन्त दुखी होकर उनसे कहा- हे विप्रवर! आप मुझ निर्दोष पर व्यर्थ ही क्यों क्रूद्ध हैं? मुनि लोग तो सदा क्रोध रहित और सुखदायक होते हैं। हे विप्र! थोड़े से अपराध पर आपने मुझे शाप क्यों दे दिया? पुत्रहीन होने के कारण मैं तो पहले से ही बहुत दुखी था, उस पर भी शाप देकर आपने मुझे और भी दुखी कर दिया। वेद के विद्वानों ने कहा है कि मूर्ख पुत्र की अपेक्षा पुत्रहीन रहना अच्छा है। उस पर भी मूर्ख ब्राह्मण तो सबके लिए निन्दनीय होता है। अतएव हे गोभिल मुने! आपने यह क्या कह दिया। इस संसार में मूर्ख पुत्र का पिता होना तो मृत्यु से बढ़कर कष्टप्रद होता है। ऐसा कहकर देवदत्त अत्यन्त दीनहृदय तथा असहाय होकर नेत्रों में आँसू भरकर स्तुति करता हुआ मुनि के पैरों पर गिर पड़ा।

तब उस दीनहृदय को देखकर गोभिल मुनि को दया आ गयी और उन्होंने उससे कहा- तुम्हारा पुत्र मूर्ख होकर भी बाद में विद्वान हो जायेगा।

कुछ समय बीतने पर देवदत्त की पतिव्रता तथा रूपवती भार्या रोहिणी ने रोहिणी नक्षत्र युक्त शुभ दिन में पुत्र को जन्म दिया। देवदत्त ने बालक का नाम जातकर्म संस्कार किया तथा यथासमय 'उतथ्य' नाम रखा। आठवें वर्ष में शुभ योग तथा शुभ दिन में पिता देवदत्त ने अपने उस पुत्र का विधिवत् उपनयन संस्कार सम्पन्न किया। ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित उतथ्य को आचार्य वेद पढ़ाने लगे, किन्तु वह एक शब्द का भी उच्चारण नहीं कर सका। उसके पिता ने उसे अनेक प्रकार से पढ़ाने

सभी छुपे हुए दोषों का उपाय ढूँढ़ना कठिन होता है। - महात्मा गांधी

का प्रयत्न किया, किन्तु उस मूर्ख की बुद्धि उस ओर प्रवृत्त नहीं होती। इस प्रकार निरन्तर वेदाभ्यास करते हुए वह बालक बारह वर्ष का हो गया, किन्तु भलीभाँति सन्ध्यावन्दन करने तक की विधि भी न जान सका।

इस प्रकार जब सभी लोग, माता-पिता या भाई-बन्धु उसकी निन्दा करने लगे तब उस बालक के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह वन में चला गया। गंगा के किनारे पर्णकुटी बनाकर वह वनवासी का जीवन व्यतीत करते हुए एक निष्ठ होकर वहीं रहने लगा। "मैं असत्य नहीं बोलूँगा" ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करके ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए वह उसी सुन्दर आश्रम में रहने लगा।

वह उतथ्य वेदाध्ययन, जप, ध्यान तथा देवताओं की आराधना आदि कुछ नहीं जानता था। वहाँ निवास करता हुआ वह ब्राह्मण सदैव सत्य भाषण करता था और झूठ कभी नहीं बोलता था। लोगों ने उसका नाम 'सत्यतपा' रख दिया। वह न तो कभी किसी का अहित करता था और न अविहित कार्य ही करता था। वह यही सोचता हुआ निडर होकर उस कुटी में सोता था कि मेरी मृत्यु कब होगी? मैं इस वन में दुःखपूर्वक जी रहा हूँ। मुझ मूर्ख के जीवन को धिक्कार है, अतः अब मेरा शीघ्र मर जाना ही उत्तम है। दैव ने ही मुझे मूर्ख बनाया है, इसके अतिरिक्त कोई अन्य कारण मुझे नहीं जान पड़ता। उत्तम कुल में जन्मग्रहण करके भी मैंने अपना जीवन व्यर्थ गँवा दिया। अब वह ब्राह्मण सर्वथा विरक्त हो गया और उस निर्जन वन में स्थित रहता हुआ शान्तचित्त होकर समय बिताने लगा। इस प्रकार उस वन में रहते हुए उस ब्राह्मण के चौदह वर्ष बीत गए, न उसने कोई जप किया, न आराधना की और न कोई मन्त्र ही जान सका। वहाँ के लोग केवल उसके इस प्रसिद्ध व्रत को जानते थे कि वह मुनि सदा सत्य बोलता है। अतः सब लोगों में उसका यह सुयश फैल गया कि वह सदा सत्यव्रती है और मिथ्याभाषी नहीं।

एक दिन आखेट करता हुआ एक महान् मूर्ख निषाद हाथों में धनुष बाण लिए हुए उसी गहन वन में आ पहुँचा। उसने एक सूकर को लक्ष्य करके बड़े जोर से खींचकर बाण चलाया। तब बाण में बिंधा हुआ वह सूकर भयभीत होकर भागता हुआ उस मुनि के समीप जा पहुँचा। जब वह सूअर आश्रम परिधि में पहुँचा तो भय से काँप रहा था और उसका शरीर रक्त से लथपथ था उसे देखकर सत्यव्रत मुनि अत्यन्त दयार्द्रचित्त हो गए। रक्त से सराबोर शरीर वाले उस आहत सुअर को अपने आगे से जाते देखकर दया के अतिरेक से काँपते हुए मुनि ने बिन्दु रहित सारस्वत बीज मन्त्र -ऐ-ऐ' का उच्चाण किया। दैवयोग ही यह मन्त्र उनके मुख से निकल पड़ा।

इसी बीच बाण की पीड़ा के कारण अत्यन्त सन्तप्त चित्त वह सूअर कोई दूसरा मार्ग न पाकर सत्यव्रत के आश्रम मण्डल में प्रविष्ट होकर कहीं झाड़ी में छिप गया। थोड़ी देर बाद वह व्याध उस सूअर को खोजता हुआ मुनि के निकट आ पहुँचा और पूछने लगा- हे द्विजराज! वह सूअर कहाँ गया? आप सत्यव्रत हैं, अतः मुझे अब सच-सच बता दीजिए। मेरा सारा कुटुम्ब भूख से व्याकुल है। अतः आप मुझे शीघ्र बता दें।

निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब हमारी जीभ बंद हो जाती है। - सुदर्शन

उस व्याध के इस प्रकार बार-बार पूछने पर महात्मा सत्यव्रत मुनि बड़े असमंजस में पड़ गए और मन में सोचने लगे कि "अब मैं क्या करूँ? जिससे मेरा सत्यव्रत नष्ट न हो और मुझे यह भी न कहना पड़े कि मैंने उसे नहीं देखा है।" 'तुम्हारे बाण से घायल वह सूअर भाग गया है।' यह मिथ्या मैं कैसे कहूँ? और यदि सच बता देता हूँ तो सूअर को मार डालेगा वह बोला-

सत्यं न सत्यं खलु यत्र हिंसा, दयान्वितं चानृतमेव सत्यम्।
हितं नराणां भवतीह येन, तदेव सत्यं न तथान्यथैव।।

(श्रीमद् देवीभागवत पुराण 3/11/36)

अर्थात् वह सत्य वास्तविक सत्य नहीं है जिससे किसी जीव की हिंसा होती है तथा वह असत्य भी सत्य ही है, जो दया से युक्त हो। जिसके द्वारा प्राणियों का कल्याण हो, वही सत्य है और जो इसके विपरीत है वह असत्य है।

इन परस्पर विरोधी प्रसंगों में मेरा हित कैसे हो? मैं क्या उत्तर दूँ जिससे मेरी बात झूठी न हो। धर्म संकट में पड़े हुए सत्यव्रत मुनि व्याध को यथोचित उत्तर नहीं दे सके। बाण से आहत सूअर को देखकर मुनि सत्यव्रत के द्वारा जो करुणायुक्त 'ऐ-ऐ' शब्द उच्चरित हो गया थ, उस अपने बीज मन्त्र से शिवा ने उन्हें दुर्लभ विद्या दे दी। तत्पश्चात् सत्यकाम, धर्मात्मा तथा दयालु ब्राह्मण ने अपने सामने खड़े हुए व्याध से एक श्लोक इस प्रकार कहा-

या पश्यति न सा ब्रूते या ब्रूते सा न पश्यति।
अहो व्याध स्वकार्यार्थिन् किं पृच्छसि पुनः पुनः।।

(श्रीमद् देवीभागवत पुराण 3/11/41)

जो (आँख) देखती है, वह बोलती नहीं और जो (वाणी) बोलती है, वह देखती नहीं। अतः अपने प्रयोजन की सिद्धि में तत्पर हे व्याध! तुम बार-बार क्यों पूछ रहे हो?

उस मुनि के ऐसा कहने पर वह व्याध उस सूअर से निराश होकर अपने घर लौट गया। इस प्रकार वे सत्यव्रत नाम के ब्राह्मण समस्त लोकों में प्रख्यात हो गए। तत्पश्चात् उन सत्यव्रत ब्राह्मण ने सारस्वत बीजमन्त्र का विधिपूर्वक जप किया और वे पृथ्वीतल पर पण्डित के रूप में अत्यधिक विख्यात हो गए। उनका महान यश सुनकर उनके परिवार के वे ही लोग, जिन्होंने उन्हें पहले त्याग दिया था, उनके आश्रम में आकर विशेष आदर सम्मान के साथ उन्हें घर ले गए। जगत् की कारणस्वरूपा परादेवी की सदा भक्तिपूर्वक सेवा तथा पूजा करनी चाहिए।

***

कर्मयोग के समर्थक - पण्डित रामबालक मिश्र जी

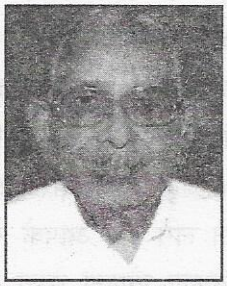

आविर्भाव - 18 अगस्त 1919
तिरोभाव - 08 जून 2013

पवन कुमार पाण्डेय

कर्मयोग के समर्थक, जीवन की अन्तिम श्वाँस तक जीवमात्र के कल्याण के लिए समर्पित जीवन जीने वाले, शिक्षण और वकालत को अपना कर्तव्य मानकर उसके प्रति श्रद्धावनत, प्रख्यात एवं यशस्वी विधिवेत्ता, धर्मानुरागी, मृदुभाषी, स्वनामधन्य पण्डित रामबालक मिश्र जी के मन में हमेशा एक हूक उठती रहती थी कि धनाभाव के कारण कोई छात्र शिक्षा से वंचित न रहे, इसी प्रयास में श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में सदैव नैतिकता को प्रोत्साहन देने और भारतीय संस्कृति को आत्मसात करने के लिए देश के भविष्य छात्रों की सेवा हेतु अहर्निश लगे रहते थे। मैंने पहली बार उन्हें वी0एस0एस0डी0 कालेज में संस्कृत-विभाग द्वारा आयोजित- "सनातनो धर्मः विश्वधर्मः" विषयक संगोष्ठी के अध्यक्षीय पद से गूढ़ आध्यात्मिक सम्भाषण करते हुए सुना था। गौरवर्ण उन्नत ललाट, लम्बा-चौड़ा शरीर, विशाल भुजाएँ इनके महान व्यक्तित्व को प्रकाशित करती थीं। इसके साथ ही इनका परिधान भी नेत्राकर्षण होता था। पण्डित जी सदैव ही श्वेत खादी की कमीज पहनते थे। उनके परिधान तथा शारीरिक संरचना को देखते ही ज्ञात होता था कि ये कोई असाधारण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हैं। व्यक्तित्व की विवेचना करने वाले विद्वानों ने इसका विश्लेषण करते हुए इसमें पाँच विकारों का होना आवश्यक बताया है-

वेशेन, वपुषा, वाचा, विद्यया, विनयेन च।
वकारैः पंचभिर्युक्तो, नरः प्राप्नोति गौरवम्।।

व्यक्तित्व की इस निकष पर कसने पर पण्डित जी का व्यक्तित्व अत्यन्त खरा उतरता है। वेशेन - सदैव ही श्वेत स्वच्छ वस्त्र धारण करते थे। वपुषा - गौर वर्ण और सुन्दर कांचन युति। वाचा - पण्डित जी वक्ता ही नहीं वाग्मी थे। विद्यया - वेद, पुराण, गीता, साहित्य और दर्शन शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् होने के साथ वे विद्या के भण्डार भी थे। विनयेन - आपमें विनम्रता की भी कोई कमी नहीं थी। आप मूल रूप से कलम और करवाल के धनी देश बैसवारे (रायबरेली) के दौलतपुर ग्राम के निवासी तथा रीतिकालीन कवियों (आचार्य पं0 शुकदेव मिश्र व उनके पुत्र शीतलादीन मिश्र) के वंशज थे। पण्डित जी के प्रपितामह श्री गंगाप्रसाद मिश्र जी दौलतपुर में ही रहते थे। पितामह पं0 दुर्गाप्रसाद मिश्र का विवाह कानपुर जनपदान्तर्गत-अकबरपुर कस्बे के समीपस्थ ग्राम-गुलौली (गिरसी)

में हुआ और वे अपने पुत्र भैरवप्रसाद मिश्र को लेकर वहीं रहने लगे। पं0 भैरवप्रसाद मिश्र का विवाह सरवनखेड़ा के पास शहजहाँपुर-निनायाँ में हुआ आपके दो पुत्रियाँ तथा दो पुत्र थे- शिवबालक और रामबालक। पं0 रामबालक जी का जन्म भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (स्मार्त कृष्ण जन्माष्टमी) संवत्- 1976 तदनुसार 18 अगस्त सन्-1919 ई0 में सोमवार को हुआ था। आपके पिता नहरगंग में पेटी कान्ट्रेक्टर थे। परिवर्तन के असामयिक प्रवर्तन से आपको मात्र तीन वर्ष की अल्पवय में ही पितृ स्नेह से वंचित होना पड़ा। अब उन्हें माँ भाई और बहनों के साथ 'तिलौंची' में रहना पड़ा। जहाँ उनके संरक्षण के लिए आपके मातामह अपने पैतृक गाँव शाहजहाँपुर-निनायाँ को छोड़कर रहने लगे थे। आपके नाना जी आपको 'लाल' कहकर पुकारते थे। बचपन में आपको कंचे, गेंद और बल्ला खेलना बहुत प्रिय था। तिलौंची में ही रहने वाले मिश्र सूरदास जी के द्वारा नाना के लाल का पाटी-पूजन कराकर दो कक्षाओं का पाठ्यक्रम पूरा कराया गया। इसके बाद पास के ही गाँव पतरासड़वा की प्राथमिक पाठशाला में आपका प्रवेश कराया गया। कर्मयोगी जीवन जीने की शिक्षा उन्हें यहीं पर चौथी कक्षा तक अध्ययन के समय उस विद्यालय के प्रधानाचार्य सैथा निवासी श्री राम भरोसे सिंह से प्राप्त हुई और चौथी कक्षा प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई के लिए अकबरपुर आ गये वहाँ से वर्नाक्युलर मिडिल परीक्षा अंग्रेजी और गणित विषयों में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। अध्ययन के प्रति उत्कृष्ट लगन पर पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ को हावी होता देख कानपुर आकर पी.पी. एन. हाईस्कूल में सातवीं कक्षा में प्रवेश ले लिया और आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई 10/- रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कलक्टरगंज की एक आढ़त फर्म-पूरन मल-महू सिंह में उन्हें निवास की सुविधा उपलब्ध हो गई थी। जहाँ वे अपना भोजना स्वयं बनाते थे। सन् 1937 में नवीं कक्षा में अध्ययन के समय ही आपके नाना जी ने ग्राम-बेवन (अकबरपुर) निवासी पं0 रामप्रसाद शुक्ल की पुत्री शिवकली से आपका विवाह कर दिया। 1938 में उन्होंने इन्ट्रेन्स (हाईस्कूल) परीक्षा प्रथम श्रेणी छठे स्थान में उत्तीर्ण की जिसमें कि संस्कृत, अंग्रेजी और गणित में उनकी विशेष योग्यता थी। अब उन्हें 16/- रुपये प्रतिमाह छात्रवृत्ति मिलने लगी थी। विवाहोपरान्त उन्हें जनरलगंज पचकूचा में मकान नं. 55/131 में 7 रुपये 50 पैसे प्रतिमाह किराया देकर सन् 1940 से 1952 तक रहना पड़ा। यहाँ रहते हुए ही उन्होंने डी.ए.वी. इण्टर कालेज से इण्टरमीडिएट परीक्षा सन् 1940 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1942 में 60/- रुपये प्रतिमाह की छात्रवृत्ति प्राप्त करते हुए उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तम अंकों के साथ उत्तीर्ण की। इस प्रकार क्रमशः सन् 1944 में एल. एल.बी. और 1945 में एम.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। आपकी बहन जानकी वैधव्यावस्था के कारण अपनी पुत्री के साथ रामबालक जी के साथ ही रहने आ गयी थीं। तभी आपकी पत्नी क्षयरोग से ग्रस्त हुयीं। उन दिन यह रोग असाध्य था अतः परिवार के भरण पोषण और पत्नी की चिकित्सा हेतु आपको 6 जुलाई 1943 से 30 जून 1944 तक भारतीय विद्यालय कानपुर में 60/- रुपये मासिक की नौकरी करनी पड़ी। वहाँ आप गणित और अंग्रेजी विषय का अध्यापन करते थे। तभी सन् 1943 में नाना जी भी अपने लाल के गालों से सदा के लिए हाथ हटाकर चले गये। पण्डित जी पर

जिम्मेदारियों का असमय बोझ आ पड़ा स्थितियाँ सामान्य नहीं हो पाई थीं कि 1 अप्रैल 1940 को उन्हें एक और वज्राघात सहना पड़ा-वह था था उनके जीवन की वास्तविक निर्माता, मूकसाध्वी पत्नी शिवकली का निधन। यह कष्ट अपरिहार्य था उन दिनों आपके एक मात्रपुत्र श्री रमाकान्त मिश्र जी मात्र 2 वर्ष 6 माह के थे। पुत्र के पालन पोषण की जिम्मेदारी आपकी माता जी ने सम्हाली।

ईश्वर शायद हम लोगों की मदद के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रतिपल उपस्थित नहीं हो सकता इसीलिए वह माँ के रूप में सदैव साथ रहता है। पं0 रामबालक जी के जीवन में ईश्वर का कोई प्रत्यक्ष वरदान था तो वह थीं उनकी माँ - श्रीमती रजनी मिश्रा। पण्डित जी के पितामह की पूर्व इच्छा थी कि उनका दौहितृ सफल वकील बने। माँ और नाना की इच्छापूर्ति के लिए उन्होंने लाला अम्बाप्रसाद गुप्त सीनियर एडवोकेट के जूनियर के रूप में जुलाई 1944 से वकालत शुरू की। 1947 में उन्होंने 150/- रुपये में बस्ता खरीद कर स्वतंत्र रूप से प्लीडर के रूप में वकालत शुरू की। दीवानी के वकील होते हुए भी उन्हें पहला मुकदमा फौजदारी का मिला और उनके मुअक्किल की जीत हुई।

इसी बीच उनके द्वितीय विवाह के अनेक प्रस्ताव आये और ग्राम भाऊपुर औरैया निवासी पं0 मन्नालाल मिश्र की पुत्री तीर्थरानी के साथ उनका विवाह अप्रैल 1945 में सम्पन्न हुआ। पण्डित जी की द्वितीय पत्नी भी पूर्णतः उनकी मनोवृत्तियों का अनुसरण करने वाली थीं। उनके आते ही घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया। तीर्थरानी जी ने पण्डित जी के बड़े पुत्र (रमाकान्त जी) पर स्नेह का ऐसा अपरिमित कोष न्यौछावर किया कि उसे यह आभास ही नहीं हुआ कि वह उनकी विमाता हैं। वकालत प्रारम्भ होने के कुछ वर्षों बाद पण्डित जी ने धनकुट्टी कानपुर में मकान क्रय किया और वहीं निवास करने लगे। आपकी पत्नी ने सात आदर्श पुत्रों- रमाकान्त, कृष्णकान्त, श्रीकान्त, शिवाकान्त, विष्णुकान्त, हरीकान्त, विजयकान्त तथा पुत्री पुष्पा का पालन पोषण कर सुशिक्षित और संस्कारित बनाया। वर्तमान में आपके यशस्वी पुत्र श्री रमाकान्त मिश्र जी आपके पदचिह्नों का अनुगमन करते हुए दीवानी व माल के वरिष्ठ अधिवक्ता, सनातन धर्म महामण्डल के संयुक्त मंत्री होने के साथ-साथ कई शैक्षिक संस्थाओं में भी पदस्थ हैं।

पण्डित जी ने कानपुर बार एसोसिएशन एवं लायर्स एसोसिएशन की सदस्यता सन् 1948 में ग्रहण की। पण्डित जी कानपुर लायर्स एसोसिएशन के लम्बे समय तक महामंत्री रहे और वर्ष 1975-76 में वे बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। आपके कार्यकाल में ही बार एसोसिएशन की प्लेटिनम जुबली (हीरक जयन्ती) बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुई थी। आप 1974 से 1994 तक उ0प्र0 बार काउन्सिल में सदस्य, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष भी रहे। श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह एवं श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के पूर्व महामंत्री, वी.एस.एस.डी. कालेज के पूर्व विधि विभागाध्यक्ष, कालेज प्रबन्ध समिति के पूर्व अध्यक्ष, कानपुर बार एसोसिएशन के पूर्व मंत्री और दो बार अध्यक्ष रहे पं0 बाबू लाल मिश्र तथा प्रदेश के प्रसिद्ध अधिवक्ता बाबू रामनाथ सेठ और श्री नारायण निगम आदि श्रेष्ठ अधिवक्ताओं के आप स्नेह पात्र थे। बैरिस्टर साहब के साथ आपका दीर्घकालिक साहचर्य था।

बैरिस्टर साहब और बाबू लाल मिश्र जी ने पण्डित जी को महामण्डल में साधारण सदस्य में मंत्री पद पर चयनित कराया। पं0 बाबू लाल का स्वर्गवास हो जाने पर उनके स्थान पर पं0 रामबालक जी को महामंत्री बनाया गया। उनकी ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के कारण श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के निधनोपरान्त महामण्डल में उन्हें वर्ष 1993 में अध्यक्ष बना दिया गया। पण्डित जी को अनेक बार विधायक और सांसद के चुनाव लड़ने के प्रस्ताव आये पर उन्होंने साफ मनाकर दिया क्योंकि वे दल के दलदल से बाहर रहकर ही समाज की सेवा करना चाहते थे। शिक्षा प्रसार एवं गुणवत्ता बढ़ाने हेतु उन्होंने अनेक इण्टर कालेजों, बालिका इण्टर कालेजों और महाविद्यालयों को स्थापित कराया साथ ही कई विद्यालयों का प्रबन्धन एवं समितियों की अध्यक्षता भी की पण्डित जी के द्वारा समाज हित में किये गये कार्यों की संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है-

शैक्षिक संस्थाएँ-

श्री विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय कानपुर, विश्वम्भर नाथ सनातन धर्म इण्टर कालेज, विश्वम्भर नाथ सनातन धर्म शिक्षा निकेतन इण्टर कालेज कानपुर, विश्वम्भर नाथ सनातन धर्म शिक्षा निकेतन बालिका विद्यालय मेस्टन रोड कानपुर, सनातन धर्म विद्यालय भवन विभाग मेस्टन रोड कानपुर, पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय कानपुर, सेठ मोतीलाल खेड़िया सनातन धर्म इण्टर कालेज विष्णुपुरी कानपुर, दुर्गावती दुर्गाप्रसाद सनातन धर्म विद्यालय बाईजी क्वाटर्स नवाबगंज कानपुर, अकबरपुर इण्टर कालेज अकबरपुर कानपुर देहात, अकबरपुर बालिका विद्यालय इण्टर कालेज अकबरपुर कानपुर देहात, अकबरपुर महाविद्यालय अकबरपुर कानपुर देहात, श्री रामजानकी संस्कृत महाविद्यालय गौरियापुर अकबरपुर कानपुर देहात, श्री ब्रह्मावर्त सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय परमठ कानपुर, श्री ओमर वैश्य प्रबन्ध समिति के अन्तर्गत श्री एम0एस0 मन्नी लाल सरयू प्रसाद ज्ञान भारतीय इण्टर कालेज, बिरहाना रोड कानपुर आदि।

धार्मिक संस्थाएँ एवं न्यास-

श्री राम धाम बिठूर, श्री हरिधाम बिठूर, श्री सद्गुरू धाम बिठूर, श्री प्रेम पुजारी (कामदगिरि मुख्य द्वार चित्रकूट), संकीर्तन भवन झूँसी प्रयाग (श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी), छोटी छावनी अयोध्या (महन्त नृत्यगोपालदास जी), श्री सोमेश्वर दण्डी आश्रम खेरेश्वर काकूपुर कानपुर, श्री राघवाश्रम मठ कबाड़ी मार्केट सरोजनी नगर कानपुर (स्वामी मुनीशाश्रम), शंकराचार्य मठ जूही, नारायणी देवी धर्मार्थ औषधालय ट्रस्ट चुन्नीगंज कानपुर, उद्बोधन समिति नेहरू नगर कानपुर, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, रामजन्म भूमि, गो रक्षा, स्वामी नारदानन्द अध्यात्म पीठ नैमिषारण्य आदि।

सामाजिक संस्थाएँ -

बालसेवा - बालकन जी बारी, बालसेवक बिरादरी, भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, सिद्धि विनायक गणेश मन्दिर घण्टाघर कानपुर, हिन्दी विधि प्रतिष्ठान, भारत विकास परिषद्, आल इण्डिया काउन्सिल आफ इन्टलेक्चुअल्स, अध्यक्ष-शिक्षा सुधार समिति नैमिष, अध्यक्ष-उद्बोधन

समिति नैमिष, अध्यक्ष-भारत भक्त समाज नैमिष, अध्यक्ष-संस्कृत नव प्रभाव न्यास तथा अनेक साहित्यिक संस्थाएँ आदि।

सम्मान-

आल इण्डिया काउन्सिल फार इण्टलेक्चुअल्स द्वारा "कानपुर रत्न", भारतीय शिक्षण मण्डल द्वारा "कानपुर सेवा रत्न" ब्रह्मानन्द महाविद्यालय-कालेज कन्वोकेशन द्वारा- "ब्रह्मानन्द गौरव", महामहिम विष्णुकान्त शास्त्री-राज्यपाल उ0प्र0 द्वारा (अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन में) "विद्यावाचस्पति", अखिल भारतीय श्री गीता मेला में उ0प्र0 के तात्कालिक राज्यपाल महामहिम श्री बी0एल0 जोशी द्वारा "प्रज्ञा भारती" सम्मान आदि।

इन संस्थाओं के प्रबन्धकों, स्वामियों, वैरागियों से पण्डित जी के निजी सम्बन्ध उनकी निश्छल सेवाओं के कारण प्रगाढ़ बन गये थे। स्वामी नारदानन्द सरस्वती जी ने मिश्र जी के घर जाकर उनको दीक्षा दी और अपना प्रिय शिष्य घोषित किया। कुछ अन्य सन्त भी थे जिन्होंने पण्डित जी को हार्दिक आशीर्वाद दिया इनमें महन्त नृत्य गोपालदास जी, स्वामी भजनानन्द सरस्वती, प्रकाशानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ जी, मेरे दादा गुरू स्वामी रामस्वरूप दास जी, व्यास प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी, स्वामी वेद व्यासानन्द जी, स्वामी सत्यमित्रानन्द जी, स्वामी असंगानन्द जी, महन्त रामरूप दास जी, महन्त स्वरूपानन्द जी, सर्वदानन्द जी आदि उल्लेखनीय हैं।

यह सत्संग का ही प्रभाव था कि पण्डित जी गृहस्थ संत थे। प्रातः काल की पूजोपासना के पश्चात् वे 93 वर्ष की उम्र में भी प्रतिदिन कचहरी जाते हुए अनेक सामाजिक धार्मिक एवं शैक्षिक संस्थाओं का मार्गदर्शन करते थे। हम सभी को पण्डित जी का पावन सानिध्य अन्तिम बार 18 मई 2013 को श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह जी के जन्मोत्सव एवं विद्यालय के वार्षिक परीक्षा परिणाम वितरण के समय प्राप्त हुआ। 8 जून 2013 को 93 वर्ष 09 माह 20 दिन की उम्र में प्रातः काल 9 बजे मरियमपुर अस्पताल कानपुर में लम्बी बीमारी के पश्चात् पण्डित जी ब्रह्मलीन हो गये। उसी दिन सायंकाल 4 बजे गंगातट भैरवघाट की उनकी अन्तिम यात्रा में सैकड़ों अधिवक्ता, न्यायिक अधिकारी, शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र के लोग तथा परिजनों ने भाग लिया। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं के समक्ष उनकी काया पंचतत्व में विलीन हो गयी। आज उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है। परन्तु उनकी कर्मठता सद्व्यवहार और जीवनशैली नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करती और प्रेरणा देती रहेगी। ऐसे महापुरुष का हमारे बीच से उठ जाना निश्चित रूप से मानवता के कोष का ह्रास होना है। ऐसे ऋषिकल्प जीवन जीने वाले कर्मयोगी के श्री चरणों में हमारा शत् शत् नमन। अन्त में ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ - प्रभु उन्हें चिर शान्ति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवारीजनों को यह दारुण दुःख सहन करने की शक्ति और साहस तथा शान्ति प्रदान करें।

***

एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व - ठाकुर गुरुजन सिंह जी

पवन कुमार पाण्डेय

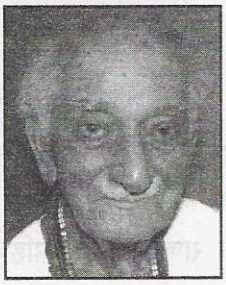

आविर्भाव - 20 नवम्बर 1918
तिरोभाव - 28 नवम्बर 2013

इस ब्रह्माण्ड में यदि कुछ भी स्थाई है तो वह एक मात्र 'ब्रह्म', जिससे प्रकृति और जीव दोनों की ही उत्पत्ति हुई है। प्रकृति अपना स्वरूप बदलती रहती है और जीव भी कालान्तर में कर्मफलानुसार नवीन योनियाँ ग्रहण करता रहता है। परब्रह्म से पृथक् हुए जीव का (जन्म लेकर) परब्रह्म में लय होना (मृत्यु को प्राप्त करना) ही भारतीय अध्यात्म का सार और जीव का साफल्य है। विगत 28 नवम्बर 2013 को 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के वरिष्ठ स्वयं सेवक तथा 'विश्व हिन्दू परिषद्' के वरिष्ठतम कार्यकर्ता माननीय ठाकुर गुरुजन सिंह जी ने शिवसायुज्य को प्राप्त किया। आपका जन्म 20 नवम्बर 1918 तदनुसार मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष त्रयोदशी संवत्-1975 को ग्राम खुरुहुँजा (बबुरी बाजार) जिला-चन्दौली उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपके पिता जी का नाम शिवमूरत सिंह तथा बाबा का नाम भृगुनाथ सिंह था। ठाकुर साहब का बचपन का नाम दुर्जन सिंह था। संघ का सक्रिय कार्यकर्ता होने पर श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर 'गुरूजी' ने उनका नाम बदलकर 'गुरुजन सिंह' रख दिया था।

ठाकुर साहब की प्रारम्भिक शिक्षा वाराणसी के जयनारायण इण्टर कालेज में हुई। परन्तु उनका मन पढ़ाई में अधिक नहीं लगा। वाराणसी में ही उनके परिवार की 'शीला रंग कम्पनी' थी आप उसी में काम देखने लगे, जिस मुहल्ले में रंग कम्पनी थी उसके पास ही एक हाते में संघ शाखा लगती थी। ठाकुर साहब नित्य शाखा जाने लगे। तभी 1933 से 1935 के मध्य आपका परिचय श्री भाउराव देवरस जी से हुआ। मित्रता इतनी बढ़ती गई कि दोनों लोग एक ही साइकिल पर बनारस घूमते थे। धीरे-धीरे संघ के कार्यों में इतना व्यस्त होते गये कि एक दिन उन्हें रंग फैक्ट्री का कार्य छोड़ना पड़ा। वर्ष 1948 में संघ पर लगे प्रतिबन्ध के समय वाराणसी में गंगा स्नान कर लौटते हुए ठाकुर साहब को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उस समय आप श्री भाउराव देवरस, अशोक सिंहल, दत्तराज कालिया आदि के साथ काशी जेल में ही बन्द रहे।

वर्ष 1955-56 में बनारस के नगर कार्यवाह थे। कालान्तर में संघ के प्रचारक हुए और वर्ष 1964 में बनारस के विभाग प्रचारक का दायित्व संभाला। ठाकुर साहब अच्छी खासी पैतृक जमीन वाले किसान थे। लेकिन जीवन में कभी भी न ही इसकी ओर ध्यान दिया और न ही किसी से कोई

पाप एक प्रकार का अंधेरा है जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट जाता है। - कालिदास

चर्चा ही की। वे पूर्ण विरक्त हो चुके थे समय के साथ संघ के कार्यों की जिम्मेदारियों में इतने तल्लीन होते गये कि अपने इकलौते पुत्र-नरेन्द्र के विवाह में भी समय पर नहीं पहुँचे। उनके बड़े भाई डॉ0 बब्बन सिंह और एक घनिष्ठ सहयोगी सोमनाथ सिंह ने ही नरेन्द्र के विवाह की सारी जिम्मेदारियाँ निर्वाह कीं। बनारस में ठाकुर साहब का सम्बन्ध क्रान्तिकारी श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल से हुआ तथा बीमारी के समय उनकी सेवा भी की। सुभाष चन्द्र बोस जब कांग्रेस से निष्कासित कर दिये गये, तब वे बनारस आये। बनारस का कोई भी व्यक्ति उन्हें अपने घर में ठहराने के लिये तैयार नहीं था। तब ठाकुर साहब ने ही उन्हें ठहराने की जिम्मेदारी स्वीकार की और रामकृष्ण मिशन में ठहरने का प्रबन्ध किया। बनारस से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'आज' के सम्पादक शिवप्रसाद गुप्त को जब यह जानकारी मिली तो उन्होंने सुभाष को अपने घर में ठहराने के लिए ठाकुर साहब से आग्रह किया और अपने आवास पर ठहराया।

ठाकुर साहब कई संगठनों में रहकर देश की सेवा करते रहे। उन्होंने सन् 1971 से 1978 तक किसानों के संगठन का कार्य किया। 'भारतीय किसान संघ' के गठन के पूर्व ही वे किसानों के बीच जाकर काम करने लगे थे। वर्ष 1979 में उन्होंने 'विश्व हिन्दू परिषद्' का दायित्व संभाला। जनवरी 1979 में प्रयागराज में संगम तट पर सम्पन्न हुए द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मेलन की तैयारियों के वे स्तम्भ थे। विश्व हिन्दू परिषद् में उनका केन्द्र प्रयागराज हो गया। प्रयाग के कीटगंज मुहल्ले में विश्व हिन्दू परिषद् के पास कार्यालय के रूप में भार्गव जी का एक पुराना भवन था। ठाकुर साहब यहीं रहते थे और नित्य गंगा स्नान करने जाते थे। वे किसी को भी अपने पैर नहीं छूने देते थे। उनका मानना था कि जब एक ही ब्रह्म सभी शरीरधारियों में समाहित हैं तो फिर पैर छूना क्यों? ठाकुर साहब गौ सेवा प्रेमी थे वे विगत 20 वर्षों से निरन्तर गौशाला चला रहे थे। आपके पास जो भी व्यक्ति मिलने के लिए आता था ठाकुर साहब स्वयं भोजन पकाकर उसे खिलाते थे तभी सोने देते थे। वर्ष 2010 में एक बार मुझे भी उनके हाथ की बनी खिचड़ी खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बीमार लोगों की सेवा वे स्वयं सारी-सारी रात जागकर करते थे। आपने अशोक सिंहल जी के गुरू त्रिपाठी जी की सेवा बड़ी तन्मयता से उनकी आयु पर्यन्त की। ठाकुर साहब सदैव मोटी खादी का तीन चौथाई बाहों का कुर्ता तथा ऊँची बँधी मोटी खादी की धोती पहनते थे। सर्दियों और गर्मियों में उनके वस्त्र एक समान रहते थे। अनेक विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए अनुकुल परिस्थिति का निर्माण कर योग्य शिक्षा की प्रेरणा दी। परन्तु उसके पीछे कोई कामना नहीं कोई इच्छा नहीं। वे स्वयं आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, जड़ी बूटियों के रोग निवारक गुणों के अच्छे जानकार थे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सर संघचालक परमपूज्य श्री गुरू जी के पास एक कमण्डलु रहता था। एक बार उसकी मरम्मत की आवश्यकता थी। बनारस आने पर श्री गुरुजी ने ठाकुर गुरुजन सिंह से पूछा- "ठाकुर ये क्या है"? ठाकुर साहब ने उत्तर दिया- "है तो यह लौकी की तम्बूड़ी परन्तु महत्त्व इसका है कि यह किसके हाथ में है।" तब श्री गुरूजी बोले- "अच्छा तो तुम इस कमण्डलु की मरम्मत कर दो।" श्री गुरूजी ने एक बार उनका परिचय कराते हुए कहा था

कि- "यह महात्मा है, महात्मा।" बनारस में गोदौलिया चौराहे पर घटाटेराम मन्दिर में संघ कार्यालय प्रारम्भिक दिनों से है। ठाकुर साहब उन दिनों वहीं रहा करते थे। कार्यालय के सामने एक मुसलमान बैठा रहता था। ठाकुर साहब उसे भूखा देखकर नित्य ही भोजन दे दिया करते थे। जब श्री गुरूजी बनारस आये तो कुछ स्थानीय कार्यकर्ताओं ने शिकायत के लहजे में यह बात गुरू जी से कही। श्री गुरूजी ने पूछा- "कहो ठाकुर क्या बात है?" ठाकुर साहब ने उत्तर दिया- गरीब है, अशक्त है, चल फिर नहीं सकता।" श्री गुरूजी बोले- "ठीक है ठीक है।"

वर्ष 2000 के आस पास ठाकुर साहब को फेफड़े की बीमारी ने घेर लिया। माननीय अशोक जी उन्हें इलाहाबाद के कीटगंज कार्यालय से अपने पैतृक भवन 'महावीर भवन' में ले आये। नैनी निवासी बजरंगदल के युवा कार्यकर्ता मिथिलेश पाण्डेय 1990 से कीटगंज कार्यालय पर आते थे। उनका ठाकुर साहब से विशेष लगाव था। मिथिलेश के प्रयास और अशोक जी के विशेषाग्रह पर इलाहाबाद मेडिकल कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ0 एस0के0 जैन ठाकुर साहब को अपने हॉस्पिटल ले गये। 6 माह में ही ठाकुर साहब पूर्ण स्वस्थ हो गये और वापस आकर महावीर-भवन में रहने लगे। तब से नित्य डॉ0 जैन के द्वारा भेजा गया एक प्रतिनिधि डाक्टर ठाकुर साहब के चिकित्सकीय परीक्षण हेतु आता था। डॉ0 जैन ठाकुर साहब की देखभाल अपने पिता के समान करते थे। ठाकुर साहब दिन भर एक कापी पर लाल पेन से राम-राम लिखा करते और श्रीरामचरित मानस का पारायण करते थे। मैंने स्वयं देखा है उनका पूजन स्थल सम्पूर्ण पूजा सामग्री मात्र एक मेज पर व्यवस्थित- जिसमें दो चित्र (एक उनके गुरू का और दूसरा दादागुरू का) और एक रामचरित मानस जो कि उन्हें- कानपुरजनपदान्तर्गत ग्राम-मैथा में जन्में विश्व प्रसिद्ध सन्त स्वामी भास्करानन्द सरस्वती जी महाराज के अन्यतम प्रिय शिष्य एवं श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह तथा उनके भाई रंजीत सिंह के मित्र प्रयाग निवासी बलराम उपाध्याय (न्यायाधीश-उच्च न्यायालय) के पिता राय बहादुर रामवरण उपाध्याय जी (संन्यासस्थनाम स्वामी सीता राम आश्रम) से प्राप्त हुई थी। अन्तिम दो वर्षो से ठाकुर साहब की सेवा उनके पुत्र नरेन्द्र स्वयं करने लगे थे तथा वे ही ठाकुर साहब को मानस पाठ सुनाते थे।

ठाकुर साहब के उदार और सेवाधर्मी जीवन के अनेक संस्मरण सँजोए हुए हैं विद्यालय के आचार्य श्री जगपाल जी जिन्होंने अपने अध्ययनकालएवं संघसेवा के समय में कई बार ठाकुर साहब का सान्निध्य प्राप्त किया। विद्यालय में भौतिक विज्ञान के पूर्व आचार्य श्री ज्ञानेन्द्र शर्मा जी ने भी वर्ष 1977-78 में जिन दिनों वे प्रयाग के प्रचारक थे ठाकुर साहब के साथ उनका कई वर्षो का साहचर्य है जब वे प्रयाग के कीटगंज में संघ कार्यालय में रहते थे। कीर्तिशेष श्री निहाल जी तनेजा ने ठाकुर साहब से ही गौसेवा की प्रेरणा लेकर सहार (औरैया) में गौशाला प्रारम्भ की। इस प्रकार संघ के कई श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का ठाकुर साहब के साथ साहचर्य था। जिनमें से- प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह उर्फ रज्जू भैया, दिनेश जी, डॉ0 अमर सिंह जी, स्वान्त रंजन जी, भाउराव देवरस जी एवं अशोक सिंघल जी आदि कुछ प्रमुख हैं।

ठाकुर साहब से मै पहली बार जून-2010 में मिला उनके शारीरिक स्वरूप को देखकर

ग्राम-निगोहा चौबेपुर के विद्वान् श्री महादेव शुक्ल 'शंकर' के द्वारा उनके दादागुरू पर लिखी गई इन पंक्तियों का स्मरण हो आया-

कृशं सुन्दरं ह्रस्थिशेषं विवस्त्रं निरीहं जगत्पूज्यमान्यं वदान्यम्।
परब्रह्म रूपं दयातीर्थ भूतं भजे भास्करानन्दमानन्दकन्दम्।।

शारीरिक संरचना और व्यावहारिकता में ठाकुर साहब स्वामी जी जैसे ही थे। पूर्णतः निस्पृही तथा सेवा भाव और उदारता तो उन्हें गुरू परम्परा से ही मिली थी। मैंने उनसे कई बार दादागुरू की जन्म-भूमि-मैथा परिभ्रमण के लिए आग्रह किया किन्तु आने की प्रगाढ़ इच्छा होते हुए भी शारीरिक शिथिलता के कारण उन्होंने आने में निराशा व्यक्त की। फिर कई बार भेंट हुई प्रत्येक बार वे अपने गुरू जी के जीवन की कोई घटना बताते और मुझसे अपने दादा गुरू के जीवन की घटनाएँ सुनते-सुनते उनके नेत्र अश्रुपूरित हो जाते थे। परास्नातक कक्षा में मेरे द्वारा लिखा गया लघु शोध प्रबन्ध उन्होंने दो बार पढ़ा और कुछ घटनाओं पर वार्ता भी की क्योंकि उक्त लघु शोध प्रबन्ध उनके दादागुरू के जीवन चरित्र पर था। तभी उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने अपने विद्यालय के माननीय सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी को उनकी अल्पवय में गोद में खिलाया है।

ठाकुर साहब ने आजीवन कभी भी किसी को अपना जन्मदिन नहीं बताया। इस बार काफी आग्रह पर आपके बेटे नरेन्द्र ने गाँव के पुराने कागजों से आपकी जन्मतिथि पता की जो थी 20 नवम्बर अतः 10 दिन पूर्व पता हो जाने पर निश्चय किया कि इस बार ठाकुर साहब की उम्र 95 वर्ष पूर्ण हो जायेगी। 20 नवम्बर 2013 को ठाकुर साहब के जन्मदिन पर महामृत्युंजय जप, हवन तथा परिचित व्यक्तियों कार्यकर्ताओं को बुलाकर सहभोज किया गया।

28 नवम्बर 2013 की रात्रि में लगभग 9 बजे नित्य की भाँति भोजन किया। रोज की तरह डॉ0 एल0 के0 जैन के चिकित्सालय का व्यक्ति अमित उनका रक्तचाप नापने के लिए उनके पास आया। ठाकुर साहब के मुँह से लार गिर रही थी उसे कपड़े से साफ किया गया। ठाकुर साहब को आवाज दी गई, जब कोई उत्तर नहीं मिला, उन्हें हिलाया गया और यह अनुभव किया गया कि ठाकुर साहब अब नहीं रहे। ठाकुर साहब जीवन भर जिसकी उपासना करते आये थे आज 95 वर्ष 8 दिन की उम्र में उसी में विलीन हो चुके थे। ईश्वर ठाकुर साहब की आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को यह दारुण दुःख सहन करने की शक्ति एवं साहस प्रदान करें।

***

'चित्रकूट गिरि करहु निवासू'

श्री सुधीर अवस्थी
प्रवक्ता– रसायन विज्ञान

चित्रकूट की भूमि में कण-कण में राम जी रमे हुए हैं। उन्होंने अपने वनवास काल के चौदह वर्षों में से साढ़े ग्यारह वर्ष की अवधि इसी स्थान पर व्यतीत की। सम्प्रति भी आध्यात्मिक सुख, रामरस की औषधि (राम रसायन) की प्राप्ति, कलियुग के प्रभावों से छुटकारा पाने तथा अशान्त मन से निजात पाने का एक मात्र उपाय चित्रकूट दर्शन से ही साधक को प्राप्त होता है। तुलसीदास जी प्रायः भ्रमण करते हुए चित्रकूट आ जाया करते थे। किसी साधक के द्वारा इस विषय में पूछने पर उन्होंने इसका कारण स्पष्ट करते हुए कहा–

भव भुवंग तुलसी नकुल, ऊसत ज्ञान हर लेत।
चित्रकूट एक औषधि, चितवत होत सचेत।।

गोस्वामी जी ने विभिन्न ग्रन्थों में चित्रकूट के विशिष्ट प्रभाव का कई जगह उल्लेख किया। वाल्मीकि ऋषि से श्री राम जी ने अपने निवास स्थान के विषय में पूछा, जो अयोध्याकाण्ड में वर्णित है। वाल्मीकि जी ने हँस कर कहा कि–

पूछेहु मोहिं कि रहउँ कहँ, मैं पूछत सकुचाउँ।
जहँ न होउ तहँ देउँ कहि, तुम्हहि दिखावउँ ठाउँ।।

मानव शरीर के विविध अवयवों का उल्लेख करते हुए वाल्मीकि ऋषि ने कई स्थान दिखाए। गोस्वामी जी लिखते है- 'एहि विधि मुनिबर भवन देखाए।' लेकिन भौतिक दृष्टि से उन्होंने श्रेष्ठ एवं सुखद स्थान चित्रकूट को ही बताया–

चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।।
सैल सुहावन कानन चारू। करि केहरि मृग बिहग बिहारू।।

गोस्वामी जी ने स्थान के विशिष्ट प्रभाव को दर्शाते हुए लिखा है कि–

नदी पुनीत पुरान बखानी। अत्रि प्रिया निज तप बलआनी।।
सुरसरि धार नाउँ मन्दाकिनि। जो सब पातक पोतक डाकिनि।।

अर्थात् अत्रि ऋषि की पत्नी अनसूया जी के तपबल द्वारा लाई गई प्राणदायिनी मन्दाकिनी गंगा जो कलियुग के पापों को खाने वाली डाइन हैं।

राम जी द्वारा चित्रकूट को सुख निवास की संस्तुति का प्रमाण है–

अस कहि लखन ठाउँ दिखरावा। थल बिलोकि रघुबर सुख पावा।।

राम जी यहाँ नित्य निवास करते हैं, यहाँ साधक को साधना करने पर राम जी का सान्निध्य प्राप्त होता है। गोस्वामी जी दोहावली में लिखते हैं–

चित्रकूट सब दिन बसत, प्रभु सिय लखन समेत।
राम नाम जप जापकहिं, तुलसी अभिमत देत।।

यहाँ निवास करने से "सच्चा स्नेह" तथा "त्याग की कला" (Art of leaving) प्राप्त होती है। गोस्वामी जी कवितावली में लिखते हैं-

तुलसी जो राम सों सनेह साँचों चाहिये।
तो सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट को।।

मेरा अपना भी अटूट विश्वास है कि वर्ष में कम से कम एकबार चित्रकूट दर्शन तथा कामदगिरि की परिक्रमा से मनुष्य को जीवन के विषाद जन्य कष्टों से छुटकारा प्राप्त होता है। विनयपत्रिका में गोस्वामी जी ने लिखा भी है-

अब चित चेति चित्रकूटहिं चलु।

*** *** ***

विविध

सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

बड़ी उम्मीद और हसरत में दुनियाँ नाप डाली है।
आस्था ऐसा उपवन है कि जिसका एक माली है।
फलों की आस में भटके, बाँस और बेंत के वन में,
मेरे जीवन की ये झोली, कई जन्मों से खाली है।

कहना हो तो मुझे शौक से शूल कहो त्रिशूल कहो।
या मार्थ का चन्दन कह लो या मरघट की धूल कहो।
संत चरण रज ढूँढ़ रहा हूँ, बर्फीले तूफानों में,
कहना हो तो इसे मेरे जीवन की सुन्दर भूल कहो।

धर्म धरा की कर्म भूमि पर, ऋषियों का आगमन हो गया।
महक उठी जीवन की बगिया, मन बासंती पवन हो गया।
महा पर्व की इस वेला में, वरदानों से भरी हैं झोलीं,
ज्ञान-बुद्धि प्रज्ञा संगम में, अमृत का आचमन हो गया।

धरती पर परम तत्त्व ज्ञानी, अध्यात्म शक्ति रत्नाकर है।
जो है वाणी का अमर पुत्र, वो दीपक नहीं दिवाकर है।
सत्कर्म मार्ग का अनुगामी, पंचों की शाला का मालिक,
जिसकी सत्ता शाश्वत अनन्त, आचार्य उसी का चाकर है।

क्या खोया? क्या पाया हमने, उम्र घटा कर जोड़ रहा हूँ।
स्मृतियों से भरे घड़ों को, मार कंकड़ी तोड़ रहा हूँ।
दिल के बाँगर-बीराने में, बरस रही है नेह बदरिया,
आदर्शों की धूप छाँव में, सत्य-असत्य निचोड़ रहा हूँ।

जाग मुसाफिर जाग

सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

जीवन की अनमेल घड़ी है, घूँघट खोले रात खड़ी है।
झिलमिल चूनर त्याग। जाग मुसाफिर.....

प्राची के माथे पर रोली, सुमन सुगन्धित पुरवा डोली।
पंछी छेड़ें राग। जाग मुसाफिर.....

धर्म धरा के रूप निराले, मंदिर-मस्जिद और शिवाले।
बाँट रहे अनुराग। जाग मुसाफिर.....

अनुनादित ध्वनि है मंत्रों की, प्रेम सुधा वाणी संतों की।
भटके ना बैराग। जाग मुसाफिर.....

मोह रही मन माया नगरी, जीवन पनघट रूप की गगरी।
मोती चुगता काग। जाग मुसाफिर.....

भेदभाव जीवन के सपने, गैर न कोई सब है अपने।
व्यर्थ की भागम भाग। जाग मुसाफिर.....

धर्म-कर्म के रूप निराले, कलियुग के सब ढंग है काले।
लग न जाये दाग। जाग मुसाफिर.....

***

मुक्तक (केदारनाथ त्रासदी)

सुभाष चन्द्र शर्मा
आचार्य

त्रासदी इतिहास में जीवित अलकनंदा रहेगी। आस्था के हाशिये पर, शाब्दिक निन्दा रहेगी।
हर तरफ से हाथ उठे थे मदद के वास्ते, नेकी नियामत के लिए, इंसानियत जिन्दा रहेगी।

वरदान की वो शुभ घड़ी, अगले ही पल आपदायी थी। अलकनन्दा के आँगन में, चारों तरफ तबाही थी।
इंसानियत थर्रा उठी, लाशों का मंजर देख कर, जल-प्रलय अविनाशी का, अभिषेक करने आयी थी।

कुदरत का ये कहर है; या प्रगति में खोट है। बेर की गुठली जहाँ थी, अब वहाँ अखरोट है।
मालिक मेरे तू ही बता, बैठा कहाँ किस वेश में, विश्वास के बादल फटे, ये आस्था पर चोट है।

मृत हुई संवेदनाएँ जिस्म पत्थर का हुआ। चल बसी मौसी के संग माँ, खो गयी बहना बुआ।
लाशों से बातें कर रहीं, अब दूर तक खामोशियाँ, जलजले ने भर दिया अब मौत का अंधा कुआँ।

क्या लिखूँ? कैसे लिखूँ? कुछ भी समझ आता नहीं। आपदाओं का अंधेरा दिल से अब जाता नहीं।
संवेदना की कलम से, हर व्यथा कैसे लिखूँ? दर्द-ए-जिगर सावन मेरा, आँखों से अब जाता नहीं।

सत्कारपूर्वक दान दो, स्वहस्त से दान दो, मन से दान दो, ठीक तरह से दोषरहित दान दो। - महात्मा बुद्ध

पुस्तकालयों का इतिहास

(एक संक्षिप्त परिचय)

श्रीमती वन्दनामणि त्रिपाठी
(पुस्तकालयाध्यक्षा)

सभ्यता के आदि से ही मानव को ज्ञान एवं विद्या से प्रेम रहा है। पाश्चात्य पंडितों के मतानुसार पूर्व में मानव अपनी भावनाओं को चित्रों एवं रेखाओं से दर्शाता था जिन पर वह लिखता था-पत्थर, भोजपत्र एवं ताड़-पत्र इत्यादि ही उसकी पुस्तकें होती थीं। सन् 1850 ई. में लेयार्ड को 'निनेभा' (Nineveh) की खुदाई के समय चित्रों से सुशोभित पत्थरों का संग्रहालय मिला। विद्वानों के अनुसार यह असीरिया के शासक असुरबानी पाल का पुस्तकालय था। माना जाता है कि भूमध्यसागर के उत्तरी प्रदेशों में पहले लिपि का आविष्कार हुआ तथा सबसे पहली लिखने की भाषा चालडियन है।

"Mandoes not live by bread alone" अर्थात् मनुष्य केवल रोटी के लिये ही नहीं जीता है। मानव में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक सौन्दर्य एवं आदर्शो को पाने की नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है जिसके द्वारा वह अपने जीवन को उच्च शिखर की ओर ले जाना चाहता है। उसे अपने आराम के क्षणों में भी स्वच्छ मनोरंजन की आवश्यकता होती है। जब तक ये सुविधायें उसे प्राप्त नहीं होंगी उसका ध्यान स्वतः ही तोड़-फोड़ एवं बुराइयों की ओर चला जाता है। हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि हर मनुष्य एक सुसंस्कृत एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करे जो मूलभूत मूल्यों पर आधारित है। समाज की यह सामूहिक जिम्मेदारी है कि इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक सूचनायें उपलब्ध कराये। इन्हीं सुविधाओं को उपलब्ध कराने हेतु समाज ने शैक्षणिक संस्थाओं को बनाया है, जैसे- विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, शोध एवं सांस्कृतिक संस्थायें, संगीत एवं कला तथा व्यापारिक संस्थायें इत्यादि कुछ सामाजिक संस्थायें उदाहरण हैं।

यूनान देश में बड़े-बड़े पुस्तकालय थे। इस देश में प्रथम पुस्तकालय का संस्थापक 'पिसिस्ट्रेटस' था। प्लेटो, अरस्तू तथा यूक्लिड इत्यादि के निजी पुस्तकालय थे। रोम देश का राजा 'अगस्टस' सार्वजनिक पुस्तकालय का जन्मदाता कहलाता है। रोम के धर्माचार्यो ने भी अच्छे पुस्तकालय खोले तथा उधार पुस्तकें लोगों को दी जाने लगीं।

भारत में जहाँ वेद एवं उपनिषदों इत्यादि ग्रंथों की रचना हुयी जो विद्या, सभ्यता तथा संस्कृति का प्राचीनतम केन्द्र रहा है। तब पुस्तकालयों का अभाव नहीं था। जगप्रसिद्ध विश्वविद्यालय-नालन्दा, विक्रमशिला, तक्षशिला, ओदन्तपुर के पुस्तकालयों की पुस्तके मंदिर तथा मठों की पुस्तकें वर्गीकृत रूप से रखी हुयी पायी जाती हैं। प्राचीन समय में छापाखाना न होने के कारण यह अवश्य ही था राजा, महाराजा एवं धनी लोग ही पुस्तकों की प्रतिलिपि पर्याप्त धन के द्वारा तैयार करवाते थे। किन्तु उनका उपयोग वे स्वयं ही करते थे।

1452 ई. में गूटनबर्ग ने मुद्रण मशीन का आविष्कार किया। इस महत्त्वपूर्ण घटना ने पुस्तकालय के इतिहास में एक नवीन परिवर्तन ला दिया है। शनैः-शनैः पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। धीरे-धीरे सार्वजनिक स्थानों पर पुस्तकों का एकत्रीकरण आरम्भ हुआ। बाद में कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सामाजिक संगठनों ने पुस्तकालयों की स्थापना में अपना योगदान दिया। अपनी निजी पुस्तकें पुस्तकालयों को उपहार स्वरूप भेंट कर दीं। नये-नये पुस्तकालय खुलने शुरू हो गये। कहीं-कहीं इस प्रकार राज्य सरकारों तथा नगर निगमों इत्यादि ने इस कार्य के लिये वित्तीय सहायता प्रदान की। फलस्वरूप पश्चिम में इस प्रकार कई पुस्तकालयों का जन्म हुआ।

भारत में व्यवस्थित रूप से पुस्तकालय का आरम्भ 1835 में अंग्रेजी शासन में कलकत्ता से हुआ। 1850 तक बम्बई, मद्रास इत्यादि बड़े शहरों में पुस्तकालय खुले। देश की समग्र जनता में व्यापक रूप से शिक्षा-प्रसार हेतु अब तक जितने साधन काम में लाये गये हैं उनमें पुस्तकालय एक प्रधान उपाय है। पुस्तकालय शिक्षा-प्रसार के केन्द्र हो रहे हैं। अनेक भ्रांत पथिकों को विश्व के दुर्गम पथ में अपना मार्ग निर्धारित करने का संकेत पुस्तकालय से मिला है तथा मिल रहा है।

सुप्रसिद्ध अमेरिकी साहित्यिक विद्वान् शल्फ वाल्डो इमर्सन ने लिखा है- बहुत बार ऐसा देखा गया है किसी एक पुस्तक के पढ़ने से मनुष्य का भविष्य बन गया है।

इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञ एवं लेखक बेंजामिन डिजरेली के अनुसार एक पुस्तक युद्ध की तरह महत्त्व रख सकती है। पुस्तकालय के इतिहास में ग्रेट ब्रिटेन अगुवा रहा है। सन् 1928 में 'सोसायटी फॉर दी डिफ्युजल ऑफ नॉलेज' की स्थापना की गयी जो पुस्तकालय आन्दोलन की दृष्टि से एक आवश्यक सामाजिक जाग्रति का सर्वप्रथम स्पष्ट चिह्न था। सन् 1850 में वहाँ पर प्रथम पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया जिसके अन्तर्गत वहाँ नगरपालिकाओं को सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित करने का आदेश दिया गया। 1917 में जब पुस्तकालय आन्दोलन की समीक्षा की गयी थी तब यह पाया गया कि उसमें ग्रामीण पुस्तकालय उन्नति की अवहेलना की गयी है। 1921 में 'पुस्तकालय अधिनियम' पारित किया गया जिसके अनुसार प्रत्येक जिले को यह अधिकार दिया कि वे ग्राम पुस्तकालय की स्थापना करें एवं वाहनों द्वारा पुस्तकें सभी ग्रामों तक पहुँचायें।

संयुक्त राज्य अमेरिका के पुस्तकालय के इतिहास में 1876 को एक महत्त्वपूर्ण वर्ष माना जाता है। इसी वर्ष 'अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना की गयी थी जिसके प्रमुख प्रवर्तक मेलवील डीवी थे जिनको आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान का जनक माना जाता है। इस संघ का उद्देश्य यह घोषित किया गया कि किसी भी प्रकार जनता को अल्पतम व्यय से अधिकतम लोगों को श्रेष्ठतम ज्ञान मिले। अमेरिका में पुस्तकालय सेवा प्रदान करने के लिये कई उपायों को प्रयोग में लाया गया तथा उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रत्येक राज्य में पुस्तकालय अधिनियम बनाया गया। आज विश्व में अमेरिका ही सबसे उन्नत एवं समृद्धिशाली देश माना जाता है। सर्वप्रथम मेलवील डीवी ने कहा था कि पुस्तकें उपयोग के लिये हैं तथा हर प्रजातांत्रिक सरकार का यह दायित्व है कि जनता को उत्कृष्ट साहित्य को कम से कम शुल्क में उपलब्ध कराये।

जापान में शिक्षा को व्यापक बनाने के लिये वहाँ के सम्राट ने सन् 1872 में अपने आज्ञापत्र में यह घोषण की कि कोई भी ग्राम ऐसा न रह जाय जहाँ एक भी कुटुम्ब अशिक्षित रहे तथा न ही कोई भी ऐसा कुटुम्ब रहे जिसका एक भी व्यक्ति अशिक्षित रहे। इस घोषणा पत्र से जापान में पुस्तकालय हेतु अनुकूल वातावरण बना। सन् 1899 में प्रथम पुस्तकालय अधिनियम पारित किया गया। 1912 में

अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। - महात्मा बुद्ध

जापानी पुस्तकालय संघ की स्थापना हुयी।

भारत में पुस्तकालय जाग्रति का इतिहास प्राचीन नहीं है। आज से 50 वर्ष पूर्व एस.आर. रंगनाथन ने कल्पना की थी कि स्वतंत्रता के पश्चात् 30 वर्षों में एक केन्द्रीय पुस्तकालय, 24 प्रांतीय पुस्तकालय, 154 नगर केन्द्रीय पुस्तकालय तथा 321 ग्राम पुस्तकालय खोले जायेंगे। लेकिन इस दौरान केवल दक्षिण राज्यों को छोड़कर कहीं भी पुस्तकालय अधिनियम पारित नहीं हो सके। पिछले पन्द्रह वर्षों में केवल पश्चिम बंगाल, मणिपुर, हरियाणा, मिजोरम तथा गोवा राज्य में ही पुस्तकालय अधिनियम पारित किये गये हैं।

हमारे देश में पुस्तकालय का इतिहास सही अर्थों में स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। किन्तु स्वतंत्र भारत में समय की गति के साथ पुस्तकालय की व्यवस्था और स्वरूप में जो परिवर्तन हुआ उनका व्यापक प्रभाव बाद में पुस्तकालय पर पड़ा। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक पुस्तकालय विज्ञान के डां0 रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित आधारभूत सिद्धान्तों के कारण बदलते युग की माँग के अनुरूप पुस्तकालयों का स्वरूप भी बदला और वे नि:शुल्क सेवा प्रदान करने वाली सामाजिक संस्थाओं के रूप में परिवर्तित हो गये। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में निम्नलिखित प्रकार से पुस्तकालयों का विकास हुआ-

1. इम्पीरियल लाइब्रेरी, कलकत्ता को देश का राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित करना।
2. तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम पारित करना।
3. अधिक से अधिक विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में शोध संस्थाओं एवं पुस्तकालयों का भी विकास।

27 अक्टूबर से 1951 को भारत सरकार तथा यूनेस्को के सहयोग द्वारा दिल्ली पुस्तकालय की स्थापना हुयी। जो अब भारत के विशाल सार्वजनिक पुस्तकालयों में से एक है इस पुस्तकालय में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो किसी भी एक आदर्श सार्वजनिक पुस्तकालय में होने चाहिये।

***

मेरे लिये विद्यालय

प्रवीण पाण्डेय
पूर्वछात्र

आज 25 वर्ष बाद उसी विशालकक्ष में खड़ा हूँ, जहाँ पर आचार्यों के उद्‌बोधनों ने सदा ही आगे बढ़ने को प्रेरित किया था। उसी विशालकक्ष में खड़ा हूँ, जहाँ पर अतुलित बलधाम, हेमशैलाभदेह अंजनिपुत्र से नित कर्मरत रहने की शक्ति माँगता था। उसी विशालकक्ष में खड़ा हूँ, जहाँ अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने के मन्त्रों का जाप हमारे गुणसूत्रों में पिरोया गया था। उसी विशालकक्ष में खड़ा हूँ, जिसमें आदरणीया बूजी के त्याग और स्नेह के स्पंद गूँजते थे और जिनकी स्नेहिल दृष्टि आज भी बच्चों को आशीर्वाद से पोषित करती हैं। उसी विशालकक्ष में खड़ा हूँ, जहाँ हम नित एकत्र होते थे, दिन के आकार को समेटने के लिये, भविष्य के विस्तार को समेटने के लिये, ज्ञान के आगार को समेटने के लिये।

25 वर्ष बीते गये हैं यहाँ से गये हुए, पर स्मृतियों में आज भी एक-एक दृश्य स्पष्ट दिखता हैं। 25 वर्ष के कालखण्ड में स्मृतियाँ बिसरा जाती हैं, उनका स्थान न जाने कितने नये घटनाक्रम ले लेते हैं, न जाने कितने नये व्यक्तित्व ले लेते हैं। पता नहीं क्या बात है यहाँ की स्मृतियों में कि वे हृदय से जाने का नाम ही नहीं लेती हैं। मेरे लिये स्मृतियों के रंग औरों की तुलना में कहीं गाढ़े हैं, मैंने सात वर्ष का समय यहाँ के छात्रावास में व्यतीत किया है। मेरी स्मृति में सुबह पाँच बजे उठने से लेकर रात दस बजे सोने तक के हजारों अनुभव एक स्थायी स्थान बना चुके हैं।

मेरा बेटा पृथु 13 वर्ष का है और बिटिया देवला 10 वर्ष की। उनको सदा ही अपना काम करने के लिये उकसाता रहता हूँ। बहुधा वे कहना नहीं टालतेहैं, विशेषकर इस तथ्य को जानने के बाद कि छात्रावास में मैं अपना सारा कार्य स्वयं ही करता था, कपड़े धोने से लेकर कमरे में झाड़ू लगाने तक। स्वयं को ही नियम करना होता था कि कितना पढ़ना है, कब पढ़ना है और कैसे पढ़ना है? स्वयं को ही यह विचारना होता था व्यक्तित्वों से भरी भीड़ के इस विश्व में आपका नियत स्थान क्या है, और उस स्थान तक पहुँचने के लिये आपको क्या साधन आवश्यक हैं? स्वावलम्बन और अपने निर्णय स्वयं लेने के प्रथम बीज इसी विद्यालय के परिवेश की देन हैं।

अनुभव बहुत कुछ सिखाता है, कभी वह शिक्षा व्यवस्थित और मध्यम गति में होती है, कभी समय के थपेड़े आपको विचलित कर जाते हैं। हर अनुभव के बाद आप उसका विश्लेषण करते हैं, भले ही पेन पेपर लेकर न करते हों या कम्प्यूटर पर कोई एक्सेल शीट न तैयार करते हों पर मन में विश्लेषण इस बात का अवश्य होता है कि उस अनुभव में हुई आपकी क्षति, लाभ आपकी स्थिरता और सीखने योग्य बातें क्या क्या रहीं? कौन सी वह दृढ़ता थी जिसने आपको सहारा दिया, कौन सी वे बातें थीं जिन्होंने आपको निराशा के तम में जाने से बचाया, कौन सी वे बातें थीं जो सदा आपको उछाह देती रहीं। मुझे हर बार इस बात की संतुष्टि रहती है कि उन सभी विश्लेषणों के उजले पक्षों के स्रोत इसी विद्यालय से उद्‌गमित होते हैं। मेरी कृतज्ञता आनन्दित हो जाती है, मेरा यहाँ बिताया हुआ एक-एक वर्ष अपनी सार्थकता के गीत गाने लगता है, मेरा विद्यालय मेरे जीवन का आधार स्तम्भ बन कर खड़ा हो जाता है, मेरा विद्यालय मेरे जीवन के शेष मार्ग का प्रकाश स्तम्भ बन खड़ा हो जाता है।

मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्तन कराता है। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आज उसी कृतज्ञता का उत्सव मनाने के लिये हम सभी मित्र एकत्रित हैं। हम सबके बच्चे अभी उसी आयु के होंगे जिस आयु में हम पहली बार इस विद्यालय में आये थे। उनकी गतिविधियों में हमें अपना विद्यालय याद आता है, उनकी गतिविधियों में हमें हमारा वह समय याद आता है जो हमने यहाँ पर आकर साथ-साथ बिताया था। सब कहते हैं कि मैं 41 वर्ष का हो गया हूँ, पर अभी भी 10 वर्ष का एक छोटा बच्चा मन में बसा हुआ है। वह बच्चा जो उत्साह से भरा है, वह बच्चा जो स्वप्न देखना चाहता है, वह बच्चा जिसको किसी बात का भय नहीं है, वह बच्चा जिसे प्रकृति के साथ रहना अच्छा लगता है, वह बच्चा जिसके मन में कोई भेद नहीं, वह बच्चा जो निश्छल है, जो निर्मल है, जो प्रवाहयुक्त है, जो चिन्तामुक्त है। हम सभी मित्र अपने अन्दर रह रहे उसी बच्चे को उसके विद्यालय घुमाने लाये हैं, यह हम सबके लिये उसी कृतज्ञता का उत्सव है।

कुछ तो बात रही होगी हम सबके भाग्यों में कि हमें यह परिवेश मिला। हो सकता है कि यहाँ पर उतनी सुविधायें न मिली हों जो आज कल के नगरीय विद्यालयों में हमारे बच्चों को उपलब्ध रहती हैं, हो सकता है कि यहाँ पर अंग्रेजी बोलना और समझना न सीख पाने से विश्वपटल से जुड़ने में प्रारम्भिक कठिनाई आयी हो, हो सकता है कि कुछ विषय अस्पष्ट रह गये हों, हो सकता है कि प्रतियोगी परीक्षाओं का आधार यहाँ निर्मित न हो पाया हो। यह सब होने के बाद भी जो आत्मीयता, जो गुरुत्व, जो विश्वास, जो गाम्भीर्य हमें मिला है वह तब कहीं और संभव भी नहीं था, और न अब वर्तमान में कहीं दिखायी पड़ता है। मेरे लिये वही एक धरोहर है। जो व्यक्तित्व यहाँ से विकसित होकर निकलता है, वह एक ठोस ढाँचा होता है, वह अपने शेष सभी रिक्त भरने में सक्षम होता है।

जीवन विशिष्ट है, जीवन विविधता से भरा है, हम सभी मित्र विविध क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे हैं। प्रकृति ने सबको भिन्न कार्य दिया है, सबको भिन्न स्थान दिया है। वही हमारा मान है, वही हमारा प्राकृतिक साम्य है, वही हमारा वैशिष्ट्य है। किसी भी प्रकार की तुलना इस वैशिष्ट्य का अपमान है। हम जब इस शरीर में दो जीवन नहीं जी सकते हैं तो दूसरे से अन्यथा प्रभावित होकर अपने अन्दर रिक्तता का भाव क्यों लायें? अपने व्यक्तित्व, परिवार, परिवेश में जो भी सुन्दर परिवर्तन संभव हैं, उनका सुखद आधार बनें। यह विद्यालय भी विशिष्ट है, जैसा है, वैसा ही प्रिय है, इसके मूलभूत गुण ही इसकी आत्मा है, यदि कुछ बदलाव आवश्यक लगें तो वे केवल बाह्य ही वैशिष्ट्य बचा रहेगा, प्रकृति प्रसन्न बनी रहेगी।

जन्म के समय हम शून्य होते हैं, मृत्यु के समय हम पुनः शून्य हो जाते हैं। बीच का कालखण्ड जिसे हम जीवन कहते हैं, एक आरोह और अवरोह का संमिश्रण है। आरोह मर्यादापूर्ण और अवरोह गरिमा युक्त। एक पीढ़ी दूसरे का स्थान लेती है और उसे आने वाली पीढ़ियों को सौंप देती है। अग्रजों का स्थान लेने में मर्यादा बनी रहे और अनुजों को स्थान देने में गरिमा। अग्रजों के अनुभवों से हम सीखते हैं, अनुजों को स्वयं से सीखने देते हैं। यही क्रम चलता रहता है, प्रकृति बढ़ती रहती है। आज जो बच्चे इस विद्यालय में पढ़ रहे हैं, वे भी 25 वर्ष बाद आयेंगे और इसी विशालकक्ष में अपने विद्यालय को और उसके ग्रहण किये गये तत्त्वों को याद करेंगे।

शून्य से शून्य की इस यात्रा में जुटाया हुआ हर तत्त्व किसी न किसी के उपयोग का होता है। यदि हम उसे सीने से चिपकाये बैठे रहे तो सब व्यर्थ हो जायेगा। हम सब संभवतः उस आयुक्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं कि हमें अपनी उपयोगितानुसार अपने परिवेश को अपने संग्रहणीय तत्त्व वापस करने

है। वही हमारा योगदान है। जीवन को उसके निष्कर्ष में पहुँचाने के क्रम में जीवन भारहीन हो जाना चाहता है। अर्जित ज्ञान, अनुभव, विवेक, सामाजिकता, धन, श्रम, सब का सब समाज के ही कार्य आना होता है। यह वह समय है जब हमें विवेकशीलता से यह विचार करना प्रारम्भ कर देना चाहिये कि हमारे योगदान का स्वरूप क्या रहेगा? कोई अपने शब्दों से परिवेश में प्राण भरेगा, कोई अपने शौर्य से उसका नेतृत्व करेगा, कोई आधारभूत संरचनायें तैयार करने में अपना योगदान देगा, कोई अपने समाज में व्याप्त समस्याओं से दो-दो हाथ करेगा। करना सभी को है। शून्य से शून्य तक की यात्रा आरोह के शिखर छुयेगी, आने वाली पीढ़ी को अपने कर्मो से अनुप्राणित करेगी और अन्ततः उन्हें अपना स्थान सौंप कर गरिमा के साथ अवरोह पर निकल पड़ेगी।

आचार्यो का आशीर्वाद रहा है हम पर, जो भी हम बन सके। आशीर्वाद की वह तेजस्वी ऊर्जा ही हमारा विश्वास है, हमारा अभिमान है। हमारे कर्म उन्हें भी ऐसे अभिमान से भर सकें, वही हमारी गुरुदक्षिणा है। ईश्वर हम सबको इतनी शक्ति दे और हमारी उपलब्धियों को उत्कृष्टता दे, जिससे हम अपने गुरुजनों का मस्तक ऊँचा और सीना चौड़ा रख सकें।

*** *** ***

भारत रत्न

अभिषेक सोनी
अष्टम 'ग'

यह पुरस्कार हमारे देश का उच्चतम नागरिक सम्मान है, जो कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण सेवा के लिए तथा उच्चतम स्तर की लोक सेवा को मान्यता देने के लिए प्रदान किया जाता है। इस सम्मान के तहत 35 मिमी व्यास वाला स्वर्ण पदक दिया जाता है। पीपल के पत्ते के आकार वाले इस पदक के ऊपरी हिस्से में सूर्य और नीचे हिन्दी भाषा में 'भारत रत्न' लिखा होता है। इसके पीछे की ओर शासकीय संकेत और आदर्श-वाक्य लिखे होते हैं। इसे सफेद फीते में डालकर गले में पहनाया जाता है। 13 जुलाई 1977 से 26 जनवरी 1980 के बीच यह पुरस्कार लंबित रहा।

इतिहास – भारत रत्न पुरस्कार की परम्परा 1954 में शुरू हुई थी। सर्वप्रथम यह पुरस्कार प्रसिद्ध वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकटरमन को दिया गया था। इस पुरस्कार को पाने वाले गैर भारतीय भी हैं क्योंकि इसका कोई लिखित प्रावधान नहीं है कि यह केवल भारतीय नागरिकों को ही दिया जाए। पूर्व में यह सम्मान भारतीय नागरिक बन चुकीं मदर टेरेसा, खान अब्दुल गफ्फार खाँ, एवं नेल्सन मंडेला (1990) को मिल चुका है।

खास बातें

1. 43 में 11 लोगों को यह सम्मान मरणोपरान्त दिया गया।
2. साल 2001 और 2009 के बीच पहली बार सात सालों के दौरान कोई भारत रत्न पुरस्कार नहीं दिया गया।
3. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को मरणोपरान्त दिया गया भारत रत्न सम्मान उनके परिवार वालों द्वारा अस्वीकार कर दिया।
4. किसी साल विशेष में दिए जा सकने वाले भारत रत्न पुरस्कारों की संख्या-3

बदी छले, नेकी फले

दीपक सिंह
अष्टम 'ग'

पुराने जमाने की बात है कि एक आदमी था। वह नेक और दयालु था। धन-माल सब तरह का उसके पास खूब था और बहुत से गुलाम थे। गुलाम लोगों को भी अपने इस नेक मालिक पर अभिमान था।

वे कहते थे, "इस धरती पर तो हमारे मालिक जैसा कोई दूसरा होगा नहीं। हमें अच्छा खाने-पहनने को देते हैं और काम भी हमारे सामर्थ्यानुसार लेते हैं। मन में मैल नहीं रखते। न कभी किसी को सख्त लफ्ज निकालते हैं और मालिकों की तरह वह नहीं है, जो गुलामों से ऐसा व्यवहार करते है जैसे जानवर। जो कसूर-बेकसूर उन्हें पीटते रहते हैं और कभी कोई मीठा बैन मुँह से नहीं निकालते। हमारे मालिक हित चाहते हैं, हमारी भलाई में ही रहते हैं और सदा मीठी वाणी बोलते हैं। हमें तो सब सुख हैं और इससे बढ़कर इस हालत की जिन्दगी में हमें और चाहना भी क्या ही सकती है?"

इस तरह के वचनों से नौकर लोग मालिक की बड़ाई किया करते थे। पर पाताल लोकवासी शैतान को इस पर बड़ी खीझ होती थी। कि देखो, ये नौकर-मालिक दोनों कैसे आपस में हिल-मिलकर रहते हैं। इसलिए नौकरों में से उसने आलिब नाम के एक नौकर को फुसलाया। एक दिन सब के सब जमा थे और और मालिक की बड़ाई की बातें कर रहे थे, उस समय आलिब ऊँची आवाज में बोला-"मालिक की नेकी की इतनी बड़ाई क्यों करते हो, जी? हमीं बेवकूफ हैं, नहीं तो और क्या। देखो सुनो! अगर पाताल लोकवासी का सब लोग कहा करो तो वह हम पर भी कृपा करने को कहते हैं। अब तो हम अपने मालिक की खिदमत में रहते हैं और सब कामों में उसकी मर्जी निहारा करते हैं। मन में उनके कुछ आया नहीं कि झट दौड़कर पूरा कर देते हैं। इसलिए वह हमारी तरफ नेक नहीं होंगे, तो क्या होंगे। बात तो तब देखी जाए कि हम उनका कहा न करें और नुकसान करके रख दें। तब देखना है कि वह क्या सोचते हैं। उस समय औरों की तरह गाली का बदला गाली से न दें, तब बात है। देख लेना कि जैसे बेरहम और मालिक होते हैं, वैसे ही बेरहम हमारे-तुम्हारे मालिक भी निकलेंगे।"

पर और नौकरों ने आलिब की बात नहीं मानी। बोले कि नहीं जी, यह झूठी बात है। सो मतभेद पड़ा और बहस होने लगी। आखिर उनमें एक शर्त ठहरी। आलिब ने कहा अच्छी बात है, मैं उनको गुस्सा लाकर दिखला दूँगा नाकाम रहा तो मेरी पोशाक तुम्हारी। और जो जीत गया, तो तुम सबको अपनी पोशाकें हमारे हवाले करनी होंगी। यह भी ठहरा कि जीतने पर सब फिर उसकी हिमायत करेंगे और उसका कुछ बिगाड़ने नहीं देंगे। सजा मिलेगी तो बचा लेंगे। जो कहीं पाँव में बेड़ी डालकर हवालात में डाल दिया गया तो खोलकर रिहा कर दोगे। शर्त पक्की हो गई और आलिब ने अगले ही दिन मालिक में अविवेक ला दिखाने का वायदा किया।

आलिब के जिम्मे चराई का काम था। भेड़े उसके सुपुर्द थीं। उनके बाड़ें में कुछ बड़ी ही कीमती जाति की भेड़ें भी थीं। मालिक उन्हें बहुत चाहते थे। उन भेड़ों पर उन्हें नाज था।

अगले दिन सवेरे के वक्त मालिक के साथ कुछ मेहमान भेड़ों के बाड़े में आए। असल में

मालिक उन्हें ऊन देने वाली भेड़ दिखाने को साथ लाए थे। उनके आने पर आलिब ने साथियों की तरफ आँख मटकाकर इशारा किया कि अब देखो, क्या होता है देखना मालिक झल्लाते हैं कि नहीं? नौकर-चाकर लोग बाड़े के इधर-उधर घिरकर खड़े थे। कोई बाड़े की जाली में से देख रहा था। कोई ऊपर से ही उझककर। और पाताललोक से शैतान महाराज भी आकर पेड़ पर चढ़कर बैठ गए थे कि देखें, हमारा सेवक अपना काम कैसे करता है।

मालिक बाड़े के अन्दर चलते हुए आए। मेहमानों को मुलायम बालों वाले मेमने दिखाते जाते थे। एक उनमें सबसे ही आला किस्म का था, उसे खास तौर से दिखाना चाहते थे। बोले कि यों तो ये भेड़ें भी कम कीमती नहीं हैं, लेकिन यह तो बेशकीमती ही है इसके सींग पास-पास हैं और ऐसे पेंचदार और पैने कि बड़े खूबसूरत लगते हैं यह जानवर क्या है, मेरी आँख का तो रूकन है।

बाड़े में अजनवी सूरत को देखकर भेड़ें और उनके बच्चे इधर-उधर छूट-छूटकर भागते थे। सो मेहमान गौर जमाकर उस बेशकीमती जानवर को नहीं देख पाते थे। वह कहीं एक जगह खड़ा होता कि आलिब अनजान बना नागहानी रेवड़ को चल-विचल कर देता था। सो फिर भेड़ें आपस में रल जाती और किसी खास पर निगाह रखना मुश्किल हो जाता था। ऐसे मेहमान लोग ठीक-ठीक नजर में ही नहीं ला सके कि, आला किस्म का जानवर उनमें है कौन-सा। आखिर मालिक भी इससे परेशान हो गए। बोले, "भैया आलिब, मेहरबानी करके उस मेमने को पकड़कर तो जरा सामने लाओ। हाँ, वही पेंचदार सींग का गौहर। देखो होशियारी से पकड़ना और क्षण दो-एक को उसे हाथ में थामें भी रखना ऐसी झोंक और झटके के बाद किया कि पतली टहनी की तरह उस बेचारे की टाँग मोच खा गई। बाई टाँग तकलीफ के मारे मुड़कर लटक गई थी। कि आलिब ने दाई टाँग से पकड़ लटकाया। मेहमान आस-पास घिरे नौकर-चाकर उस समय दर्द से और सहानुभूति के मारे जैसे चीख ही पड़े। मगर ऊपर पेड़ पर चढ़कर बैठा शैतान अपने सेवक आलिब की चतुराई पर प्रसन्न हुआ। मालिक गुस्से के मारे ऐसे काले पड़ गए जैसे बिजली भरा बादल। भौंहें उनकी जुड़ आई पर वह सिर लटकाकर रह गए और एक शब्द भी नहीं बोले। मेहमान भी और नौकर-चाकर भी चुप्पी बाँधे रह गए थे। सब शान्त थे कि अब जाने क्या होगा। कुछ देर गुम-सुम रहकर मालिक ने सिर झटका, जैसे कोई बोझ ऊपर से अलग किया हो। वह आलिब की तरह देखकर मुस्कराहट के साथ बोले- "ओ आलिब, तुम्हारे मालिक का तुम्हें हुक्म था कि मुझे गुस्सा दिलाओ। पर मेरे भगवान् तुम्हारे मालिक से जबर्दस्त हैं मैं तुम पर गुस्सा नहीं करूँगा। उल्टे तुम्हारे मालिक को गुस्सा करना पड़ जायेगा। तुम डरते हो कि मैं तुम्हें आज सजा दूँगा। तुम्हारे मन में मुझसे छूटने की मर्जी है तो अपने मेहमानों के सामने मैं तुम्हें आजाद करता हूँ जहाँ चाहो जाओ, पोशाक और जो पास हो सब साथ ले जाओ।"

लेकिन शैतान दाँत पीसता हुआ पेड़ से धरती पर आ गिरा और गिरकर पाताल में समा गया।

*** *** ***

गौहत्या : एक सामाजिक अभिशाप

श्याम जी यादव
द्वादश 'ख'

हम सभी भारतवासी हैं, उस भारत के जहाँ गाय को माता कहा गया है, जिसके शरीर में तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास माना गया है। गाय के विषय में कहा गया है - *मातरः सर्वभूतानाम्, गावः सर्वसुखप्रदाः।* परन्तु वर्तमान समय में हमारी माँ के साथ अत्याचार पर अत्याचार होते जा रहे हैं। वर्तमान युग में गौहत्या निरन्तर बढ़ती जा रही है और इसका प्रमुख कारण विरोध न करना है। हमारे लोगों का गाय के प्रति मातृत्व भाव समाप्त होता दिखायी दे रहा है। उसी गाय के लिए आज हम सभी शांत हो गए हैं जिसके कण-कण में परोपकार भरा है। गाय यदि कोई विषैला पदार्थ खा जाए तो भी उसका दूध निरापद और शुद्ध रहता है। गाय की महानता के बारे में चाहे जितना भी कहा जाए, कम ही होगा। हम सभी बचपन से ही गाय को माता कहते रहते हैं क्योंकि माँ शब्द गौवंश से ही मिलता है। गाय के बछड़े को संस्कृत में वत्स कहा जाता है। माँ की ममता के लिए प्रचलित शब्द 'वात्सल्य' इसी शब्द से निर्मित हुआ है। गाय सभी प्रकार से हमारे लिए हितकारी है। गाय का दूध स्मरणशक्ति वर्धक होता है तभी तो गाय का बछड़ा 50 गायों के झुण्ड में भी दौड़ता हुआ अपनी माँ को पहचान लेता है, जबकि भैंस का पाड़ा लातें खाते हुए भी अपनी माँ तक नहीं पहुँच पाता है। गाय के द्वारा प्रदत्त इतनी सारी सुविधाओं के बाद भी क्या हम अपनी गाय माता की सुरक्षा नहीं कर सकते हैं? क्या हम केवल अपना ही स्वार्थ सिद्ध करना जानते हैं?

भारतीय गाय अपनी निःश्वास में ऑक्सीजन देती है तथा एक तोला गाय के घी से यज्ञ करने पर एक टन ऑक्सीजन पैदा होती है अतः अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त विष का शमन कर पर्यावरण शुद्धि का अमोघ साधन गाय है। आज हम सभी को गाय माता की सुरक्षा के लिए कोई ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। घर-घर में गौपालन ही गौरक्षा का एक मात्र सरल उपाय है।

जब विदेशी आक्रान्ता हमारे वीर योद्धाओं से हारने लगते थे तब वे गायों को आगे रखकर युद्ध करने लगते थे। ऐसी स्थिति में हमारे वीर सैनिक हथियार डाल देते थे अर्थात् गायों की रक्षा को राज्य की रक्षा से भी बड़ा माना जाता था। वास्तव में हमारा अतीत कितना गौरवशाली था।

गाय के प्रति प्रेम प्रकट करने वाले महापुरुषों ने अपना जीवन सार्थक कर लिया इनमें महर्षि वशिष्ठ, छत्रपति शिवाजी, वीर तेजाजी, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, पं0 श्रीराम शर्मा, परम पूज्य श्री गुरुजी आदि प्रमुख हैं परन्तु वर्तमान युग में इनकी कमी को पूरा करने के लिए अभी तक कोई भी गौभक्त दिखायी नहीं देता है। परमपूज्य श्री गुरुजी ने गाय के प्रति अपने भाव प्रकट किये थे - **"जिसके रोम-रोम में अपने राष्ट्र की एकता प्रस्फुटित होती है, यदि उसका संरक्षण नहीं हुआ तो इस देश का उत्थान कैसे होगा? वस्तुतः गौमाता ही हममें एकता ला सकती है। गौमाता हमारे राष्ट्रजीवन की आधार स्तम्भ है।" - परम पूज्य श्री गुरु जी**

क्या आज हम सभी में गाय माता के प्रति संवेदनशीलता समाप्त हो गयी है? हम सभी देशवासियों को यह प्रयास करना चाहिए कि हमारी गाय माता को, जो हमें सभी प्रकार से सुख देती है, किसी प्रकार का कष्ट न हो।

गायों के हित, जो जीता है। गायों के हित, जो मरता है।।
उसका हर आँसू रामायण, प्रत्येक कर्म ही गीता है।

भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परन्तु परिणाम अत्युत्तम है। - दयानंद सरस्वती

शतमन्यु

दिव्या अधिकारी
नवम 'क'

सतयुग की बात है। एक बार देश में दुर्भिक्ष पड़ा। वर्षा के अभाव से अन्न नहीं हुआ। पशुओं के लिए चारा नहीं रहा। दूसरे वर्ष भी वर्षा नहीं हुई। विपत्ति बढ़ती गई। नदी, तालाब सूख गये। मार्तण्ड की प्रचण्ड किरणों से धरती रसहीन हो गई। तृण भस्म हो गये। वृक्ष निष्प्राण हो चले। मनुष्यों और पुशओं में हाहाकार मच गया।

दुर्भिक्ष बढ़ता गया। पूरे बारह वर्षों तक अनावृष्टि रही। कहीं अन्न नहीं, जल नहीं, तृण नहीं, वर्षा और शीत ऋतु नहीं। धरती से उड़ती धूल और अग्नि में सनी लू। पशु-पक्षी ही नहीं, कितने मनुष्य काल के गाल में समा गये। नर-कंकाल को देखकर करुणा भी करुणा से भींग जाती, किन्तु एक मुट्ठी अन्न किसी को कोई कहाँ से देता। परिस्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती ही चली गयी। प्राणों के लाले पड़ गए।

किसी ने बतलाया कि नरमेध किया जाए तो वर्षा हो सकती है। लोगों को बात तो जँची; पर प्राण सबको प्यारे हैं।

विशाल जन-समाज एकत्र हुआ था, पर सभी चुपचाप थे। अचानक नीरवता भंग हुई। सबने दृष्टि उठाई, देखा बारह वर्ष का अत्यन्त सुन्दर बालक खड़ा है। उसने कहा- "उपस्थित महानुभावो! असंख्य प्राणियों की रक्षा एवं देश को संकट की स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिए मेरे प्राण सहर्ष प्रस्तुत हैं। इसी बहाने विश्वात्मा प्रभु की सेवा इस नश्वर काया से हो जायेगी।

'बेटा शतमन्यु! तू धन्य है।' चिल्लाते हुए उसके पिता ने उसे हृदय से चिपका लिया। 'तूने अपने पूर्वजों को अमर कर दिया।' शतमन्यु की जननी भी समीप आ गई। उन्होंने झरती आँखों से शतमन्यु को अपनी छाती से चिपका लिया, जैसे कभी नहीं छोड़ेगी।

नियत समय पर यज्ञ प्रारम्भ हुआ। शतमन्यु को अनेक तीर्थों के जल से स्नान कराकर नवीन वस्त्राभूषण पहनाये गये। सुगन्धित चन्दन लगाया गया। पुष्प मालाओं से अलंकृत किया गया।

बालक यज्ञ मंडप पे लाया गया। यज्ञ-स्तम्भ के समीप खड़ा होकर वह देवराज इन्द्र का स्मरण करने लगा। बालक सिर झुकाये बलि के लिए तैयार था। उसी क्षण शून्य में विचित्र बाजे बज उठे। सहसा मेघध्वनि के साथ वज्रधर सुरेन्द्र प्रकट हो गये। शतमन्यु के मस्तक पर अत्यन्त प्यार से अपना वरद हस्त फेरते हुए सुरपति बोले- "वत्स! तेरी भक्ति और देश की कल्याण-भावना से मैं संतुष्ट हूँ। जिस देश के बालक देश की रक्षा के लिए प्राण अर्पण करने को प्रतिक्षण प्रस्तुत रहते हैं, उस देश का कभी पतन नहीं हो सकता। तेरे त्याग से संतुष्ट होकर मैं बलि के बिना ही यज्ञ-फल प्रदान कर दूँगा।

दूसरे दिन इतनी वृष्टि हुई कि धरती पर जल-ही-जल दीखने लगा। सर्वत्र अन्न-जल आदि का प्राचुर्य हो गया। एक देश-प्राण शतमन्यु के त्याग की भावना ने सर्वत्र पवित्र आनंद की सरिता बहा दी।

***

जो आप से दिल से बात करता है उसे कभी दिमाग से जवाब नहीं देना।

आप भी जानिए विश्व की आदमखोर मछलियों के बारे में

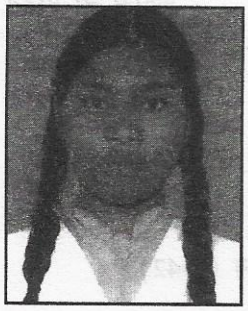

मायावती
सप्तम 'क'

डीमन फिश – जैसा कि नाम है। यह दैत्याकार मछली है। यह दुनिया की सबसे खतरनाक मछलियों में से एक है। यह बड़े से बड़े जीव को निगल जाती है। डीमन फिश अफ्रीका की काँगो नदी में पाई जाती है।

डेथ रे – थाईलैण्ड की मीकांग नदी में जेरेमी ने दुनिया की सबसे बड़ी मछलियों में से एक डेथ रे को खोज निकाला इसका वजन लगभग 7 सौ पाउंड है। इसके शरीर पर एक जहरीली और काँटेदार पूँछ होती है। जिसके प्रहार से इंसान की जान भी जा सकती है।

किलर स्नेकहेड – मछली से ज्यादा गैंगस्टर लगने वाली यह मछली हवा में साँस लेती और जमीन पर भी रंक लेती है। अपनी ही प्रजाति के जीवों को यह शौक से खाती है। यह एशिया की मुख्य रूप से चीन और दक्षिण कोरिया में पाई जाती है।

काँगो किलर – अफ्रीका की काँगो नदी में पाई जाने वाली मछली काँगो किलर के खतरनाक होने का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि अफ्रीका में इसकी लोक कथा है। जिसमें कहा गया है कि यह मछली एक आत्मा के रूप में मछुआरों को ललचाकर उन्हें मौत की तरफ ले जाती है।

अलास्कन हॉरर – अलास्का की बर्फीली झील में मिलती है। महाकाय अलास्कन हॉरर। इसके बारे में प्रचलित लोकथाओं में इसे आदमखोर माना जाता है।

रिक्ट वैली किलर – अफ्रीका की रिक्ट वैली में एक विशालकाय जीव रहता है। एम्पुटाया नाइल पार्च यह अफ्रीका के ताने पानी की सबसे बड़ी मछली है।

पिरान्हा – वर्ष 1976 में यात्रियों से भरी बस अफ्रीका के अमेजन नदी में गिर गई और कई लोगों की जान चली गई जब शवों को बाहर निकाला गया तो उनमें से कुछ पिरान्हा मछलियों ने इतनी बुरी तरह खा लिए थे कि उनकी पहचान उनके कपड़ों से हुई।

किलर कैटफिश (गूंथ) – यह हिमालय की तलहटी में मिलने वाली मछली है। यह एक विशालकाय नरभक्षी कैटफिश प्रजाति है।

एलिगेटर गार – यह सफेद पानी की ऐसी मछली है, जो इंसानों पर आक्रामक हमले करती है। यह शार्क की तरह खतरनाक और मगरमच्छ की तरह विशाल है।

यूरोपियन मैनईटर – यूरोप की ताजे पानी वाली नदियों में अपनी थूथन उठाये घूमती रहती है। आक्रामक वैल्थ कैटफिश इंसानों को भी अपना शिकार बना सकती है।

अमेजन क्लेश ईटर्स – यह अफ्रीकन मछली इंसानों को निगल सकती है। यह जब हमला करती है, तो शरीर पर छुरा घोंपने जैसा निशान बन जाता है।

***

नम्रता पत्थर को भी मोम कर देती है। – प्रेमचन्द

पिछले १०० वर्षों के महत्त्वपूर्ण गैजेट्स

श्याम जी यादव
द्वादश 'ख'

1. जिप (1913)
2. मोटरचालित मूवी कैमरा (1914)
3. पायरेक्स काँच (1915)
4. इलेक्ट्रिक पॉवर ड्रिल (1916)
5. रेडियो ट्यूनर (1917)
6. सुपर हिथरोडाइन रेडियो सर्किट (1918)
7. पोप अप टोस्टर (1919)
8. हेयर ड्रायर (1920)
9. लाई डिटेक्टर मशीन (1921)
10. इलेक्ट्रिक केतली (1922)
11. सेल्फ वाइडिंग वॉच (1923)
12. लाउडस्पीकर (1924)
13. कैन ओपनर (1925)
14. टेवीलोक्स रोबोट (1926)
15. एरोसोल कैन (1927)
16. बेयर्ड टेलीविजन (1928)
17. कार रेडिया (1929)
18. जेट इंजन (1930)
19. इलेक्ट्रिक रेजर (1931)
20. बिजली का कैन ओपनर (1932)
21. चाय बनाने की मशीन (1933)
22. जीपो लाइटर (1934)
23. रडार (1935)
24. आवाज पहचानने वाली मशीन (1939)
25. वैक्यूम क्लीनर (1937)
26. बॉलपेन (1938)
27. हेलीकॉप्टर (1939)
28. कलर टीवी (1940)
29. कृत्रिम हृदय (1941)
30. हवाई जहाज का इंजन (1942)
31. *सिंलकी (1943)
32. किडनी की डायलसिस मशीन (1944)
33. क्लॉक रेडिया (1945)
34. डिस्पोजेबल नेप्पी (1946)
35. कैनवुड फूड मिक्सर (1947)
36. पहला पेजर (1948)
37. फोटो पैक डिस्पोजिबल कैमरा (1949)
38. एल्काइन बैटरी (1950)
39. पॉवर स्टीयरिंग (1951)
40. सैग मॉडम (1952)
41. प्लेन का रिकार्डर 'ब्लैक बॉक्स' (1953)
42. रीजेंसी पॉकेट रेडिया (1954)
43. *ब्रेथलाइजर (1955)
44. सुनने की मशीन (1956)
45. कैसियो डिजिटल घड़ी (1957)
46. पेसमेकर (1958)
47. तारविहीन ड्रील (1959)
48. हाई फिस (1960)
49. कोडेक इस्टामैटिक (1961)
50. एल.ई.डी. (1962)
51. माउस 'टेलीफंकन' (1963)
52. प्लाज्मा टेलीविजन (1964)

मुक्ति का चरम लक्ष्य प्रेम है। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

53. *हैथोन पैडोमीटर (1965)
54. फरारी की रेडियो चालित कार (1966)
55. पोलराइड (1967)
56. स्मोक डिटेक्टर (1968)
57. इंटरनेट (1969)
58. डिजिटल थर्मामीटर (1970)
59. हैंडी पॉकेट कैलकुलेटर (1971)
60. मल्टीसॉकिट प्लग (1972)
61. *इथरनेट (1973)
62. सैंडविच मेकर (1974)
63. कोडेक डिजीटल कैमरा (1975)
64. लीथियम बैटरी (1976)
65. मैटेल इलेक्ट्रॉनिक फुटबॉल (1977)
66. वी.एच.एस. रेकॉर्डर (1978)
67. स्पीक एण्ड स्पेस इंस्ट्रूमेंट (1979)
68. सोनी वॉकमैन (1980)
69. इपसोन एच.एक्स. 20 (1981)
70. सोनी-सी.डी. प्लेयर (1982)
71. सोनी कोमोडार 64 (1983)
72. सोनी डिस्कमैन (1984)
73. द लेदरमैन (1985)
74. कैनसलिंग हेडफोन (1986)
75. कैमकोरडर (1987)
76. डिजीटल मोबाइल फोन (1988)
77. वर्ल्ड वाइड वेब (1989)
78. नाइटेंडो गेम बॉय (1990)
79. नाइटेंडो एस.एन.ई.एस. (1991)
80. पॉम पायलट (1992)
81. डायसन (1993)
82. कार्डलैस टेलीफोन (1994)
83. प्लेस्टेशन-1 (1995)
84. एम.पी. 3 प्लेयर (1996)
85. स्टार टेक (1997)
86. पोर्टेबल डी.वी.डी. प्लेयर (1998)
87. टीवी की डीवीआर (1999)
88. आईबीएम का फ्लैश ड्राइव (2000)
89. एप्पल आई पैड (2001)
90. प्ले-स्टेशन-2 (2002)
91. ब्लैकबेरी (2003)
92. सैमसंग का ओलेड टी.वी. (2004)
93. एक्स बॉक्स 360 (2005)
94. सैनडिस्क माइक्रो एसडी (2006)
95. एप्पल आईफोन (2007)
96. बीट्स बाई ड्री (2008)
97. ट्विटर (2009)
98. एप्पल आईपैड (2010)
99. किंडल फायर (2011)
100. नेक्सस-7 (2012)
101. प्ले-स्टेशन-4 (2013)

नोट : (i) *(31) सिलंकी (1943) - गोल छल्ले वाला एक प्रकार का खेल है।
(ii) *(43) ब्रेथलाइजर (1955) - साँस से शराब की मात्रा पकड़ने वाला यंत्र है।
(iii) *(53) हैथोन पैडोमीटर (1965) - कदम की गणना करने वाला यंत्र है।
(iv) *(61) इथरनेट (1973) - कम्प्यूटर नेटवर्किंग में इस्तेमाल होने वाला एक प्रकार का प्लन है।

***

बुद्धि की स्थिरता के बिना कोई भी आदर्श पूरा नहीं होता। - विनोबा भावे

किसी व्यक्ति के पैसों का पता लगाना

श्याम जी यादव
द्वादश 'ख'

इस तकनीक की सहायता से हम किसी भी व्यक्ति की जेब में कितने रुपये है, का पता लगा सकते हैं। इसे निम्न पदों में करते हैं-

(1) उस व्यक्ति से उसके कुल रुपयों की संख्या मन में लेने को कहें (केवल रुपये, सिक्के इत्यादि नहीं)

(2) फिर, उसमें 5 जोड़ने को कहें।

(3) इसके उत्तर को 5 से गुणा करने को कहें।

(4) अब इस उत्तर को 2 से गुणा करने को कहें।

(5) अन्त में, उससे उसका मनपसंद अंक (0 से 9 तक) जोड़ने को कहें।

अन्तिम उत्तर सुनते ही आपको तुरन्त उसकी जेब में रखें पैसों का पता चल जायेगा।

पता लगाने का तरीका

व्यक्ति द्वारा बताये गए अन्तिम उत्तर में से-

* इकाई के अंक को छोड़ दीजिये।

* शेष संख्या में से 5 घटा दें, घटाने पर जो संख्या आती है, वही उस व्यक्ति के रूपयों की संख्या को निरूपित करती है।

उदाहरण - मान लीजिए अभिषेक की जेब में 80 रुपये हैं। आप कुछ इस तरह से उसके पैसों का पता लगाएंगे-

(क)	अपने कुल रुपयों को मन में लो	$=80$
(ख)	उसमें 5 जोड़ो	$=80+5\Rightarrow 85$
(ग)	उसमें 5 से गुणा करो	$=85\times 5\Rightarrow 425$
(घ)	उसमें 2 से गुणा करो	$=425\times 2\Rightarrow 850$
(ङ)	मनपसंद अंक जोड़े (माना, 5)	$=850+5\Rightarrow 855$

इस तरह से अभिषेक का अन्तिम उत्तर 855 होगा, अब हमें उसके पैसों का पता लगाने के लिए वही कार्य करने होंगे। सबसे पहले इकाई के अंक को छोड़ देंगे (5), अब शेष संख्या 85 बची है। अब हम नियमानुसार 85 (शेष संख्या) में से 5 घटाते हैं तो उत्तर 80 प्राप्त होता है। यही अभिषेक के रुपयों की संख्या है।

इसी तरह अगर अन्तिम उत्तर 1052, 53 या 160 होता तो नियमानुसार (इकाई के अंक को छोड़ने के बाद शेष संख्या में से 5 घटाने पर) क्रमशः 100, 0 तथा 11 उत्तर प्राप्त होता है।

बड़ी संख्या होने पर आप सामने वाले व्यक्ति को कॉपी-पेन का सुझाव दे सकते हैं, जिससे गुणा कराने इत्यादि में व्यक्ति को जटिलता महसूस नहीं होगी।

***

धर्म का दान सब दानों में बढ़कर है। धर्म का रस सब रसों से बढ़कर है। - महात्मा बुद्ध

वो युवा

वैभव पाण्डेय
एकादश 'क'

मै वो युवा हूँ जो हृदय में अंगार चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो संसद में स्थान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो नर में फिर राम चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो फिर सीता का सम्मान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो सम्पूर्ण विश्व एक चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो गुरू में फिर द्रोण चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो छात्र में फिर एकलव्य चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो सूरज में फिर तेज चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो फिर दुःशासन का वध चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो स्वच्छ भागीरथी का अवतरण चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो इंडिया में भारत का स्थान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो आदि का भी अंत चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो गज की मस्त चाल चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो सिंह सा साम्राज्य चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो बच्चे-सी निश्छलता चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो चाणक्य की कूटनीति चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो शंकर-सा क्रोध चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो शीशे से पत्थर तोड़ना चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो रम्भा में सीता का प्रतिरूप चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो लोकतंत्र का सम्मान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो रावण की अट्टहास हँसी चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो निःस्वार्थ प्रेम चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो लघुत्व का भी प्रभुत्व चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो ब्राह्मण का सम्मान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो कुबेर-सा धनी होना चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो हरियाली की मादक-मुस्कान चाहता हूँ।

निराशा चारों ओर अंधकार के रूप में दिखाई देती है। - जैनेन्द्र कुमार

मै वो युवा हूँ जो अपवित्र गंगा की निर्मलता चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो कलि-गीता का उपदेश चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो पुत्र में श्रवण का बिम्ब चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो इच्छाओं का सागर चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो अपराजेय ब्रह्मास्त्र चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो दीप से सूर्य को निस्तेज चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो नेता में ईमान चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो स्व-नाश का भी नाश चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो दीनदयाल विद्यालय से हजारों दीनदयाल चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो रक्त से दीप जलाना चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो माँ की गोद में मिटना चाहता हूँ।
मै वो युवा हूँ जो फिर एक प्रतिशोध चाहता हूँ।

*** *** ***

जब मक्खी और चिड़िया ने बचाई जान

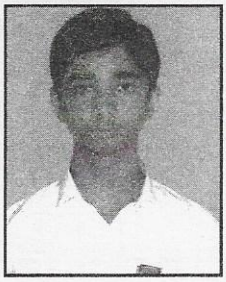

आलोक कुमार
अष्टम 'ग'

एक राजा था। एक बार वह अपने दरबार में बैठा था। तभी उसने अपने दरबारियों से पूछा, 'बताओ, इस संसार में ऐसे कौन-से जीव-जन्तु हैं, जो किसी काम के नहीं हैं। सभी दरबारियों ने अलग-अलग जवाब दिये। लेकिन राजा को किसी का भी जबाब उचित नहीं लगा। राजा ने इस बारे में खोज-बीन करने का आदेश दिया। सभी सैनिकों ने खोज शुरू कर दी। बहुत दिनों के बाद दो सैनिक राजमहल आए और बोले, 'महाराज इस पूरे संसार में सिर्फ दो ही ऐसे जीव हैं, जो किसी काम के नहीं हैं। वे हैं जंगली मक्खी और मकड़ी।' उसी समय उस राजा के राज्य पर किसी दूसरे राजा ने आक्रमण कर दिया। दोनों राजाओं में युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में राजा हार गया और वहाँ से भाग गया। दुश्मन सैनिक उसका पीछा करने लगे। भागते-भागते राजा जंगल में पहुँचा। वह पेड़ के नीचे बैठ गया और उसे नींद आ गई। तभी उसे एक जंगली मक्खी ने डंक मारा। राजा की नींद खुल गई और उसे ध्यान आया कि सैनिक ढूँढ़ते हुए कभी भी यहाँ आ सकते हैं। वह जल्दी से वहाँ से उठा और गुफा में छिप गया। राजा के अंदर जाते ही मकड़ियों ने जाल बुन दिया। जब सैनिक वहाँ पहुँचे तो उन्होंने मकड़ी का जाल देखकर सोचा कि अगर राजा अंदर आता तो जाल टूट जाता। यही सोचकर सैनिक चले गये। तब राजा को समझ आया कि संसार में हर प्राणी और वस्तु की अपनी उपयोगिता है। किसी भी चीज को निरुपयोगी नहीं कहा जा सकता।

पुण्यात्मा जहाँ कहीं भी जाता है, सब जगह सफलता एवं सुख पाता है। - महात्मा बुद्ध

आदि शंकराचार्य का जीवन परिचय

अभिजीत त्रिपाठी
अष्टम 'ग'

जीवन परिचय – आदि शंकराचार्य, जिन्हें शंकर भगवदपादाचार्य के नाम से भी जाना जाता है। ये अद्वैत वेदान्त के प्रणेता हैं। इनका जन्म 509 से 477 ई0पू0 केरल के कलड़ी नामक स्थान में हुआ था। इनके गुरू का नाम भगवत्पाद था। स्मार्त सम्प्रदाय में आदि शंकराचार्य को शिव का अवतार माना गया है।

वह अपने ब्राह्मण माता-पिता की एकमात्र संतान थे। बचपन में ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। शंकर की रुचि आरम्भ से ही संन्यास की तरफ थी। अल्पआयु में ही आग्रह करके माता से अनुमति लेकर गुरू की खोज में निकल पड़े। वेदान्त के गुरू गोविन्द पाद से ज्ञान प्राप्त करने के बाद सारे देश का भ्रमण किया काशी के प्रमुख विद्वान् मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में हराया परन्तु मण्डन मिश्र की पत्नी भारती द्वारा पराजित हुए। दुबारा फिर रति विज्ञान में पारंगत होकर भारती को पराजित किया।

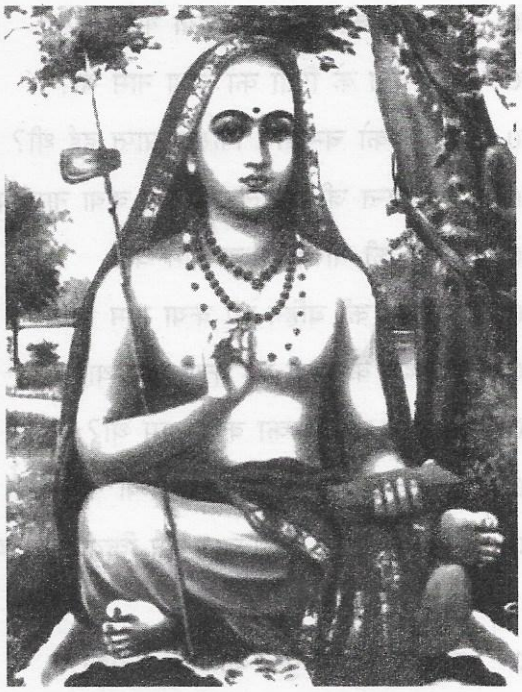

उन्होंने तत्कालीन भारत में व्याप्त धार्मिक कुरीतियों को दूर कर अद्वैत वेदान्त की ज्योति से देश को आलोकित किया सनातन धर्म की रक्षा हेतु उन्होंने भारत में चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की तथा शंकराचार्य पद की स्थापना की और उस पर चार प्रमुख शिष्यों को आसीन किया। 32 साल की अल्पायु में पवित्र केदार नाथ धाम में शरीर त्याग दिया।

आदि शंकराचार्य की प्रमुख रचनाएँ

भज गोविन्दम्
विवेक चूड़ामणि
भवान्यष्टकम्

*** *** ***

पाप अग्नि का वह कुण्ड है जो आदर और मान, साहस और धैर्य को क्षणभर में जलाकर भस्म कर देता है। – प्रेमचन्द

प्रश्न-उत्तर

सिद्धार्थ पोरवाल
दशम 'ख'

प्र0 रावण की नानी का क्या नाम था? उ0 **ताड़का**

प्र0 कुबेर (धन के देवता) किसके भाई थे? उ0 **रावण के**

प्र0 रावण की माता का क्या नाम था? उ0 **कैकशी**

प्र0 रावण के पिता का क्या नाम था? उ0 **विश्वश्रवा**

प्र0 रावण ने पुष्पक विमान किससे प्राप्त किया था? उ0 **कुबेर से**

प्र0 श्रीकृष्ण की कितनी रानियाँ थीं? उ0 **सोलह हजार एक सौ आठ**

प्र0 बलदाऊ जी की माँ का क्या नाम था? उ0 **रोहिणी**

प्र0 मेघनाद की पत्नी का क्या नाम था? उ0 **सुलोचना**

प्र0 सुलोचना के पिता का क्या नाम था? उ0 **शेषनाग (लक्ष्मण)**

प्र0 रावण को चन्द्रहास किससे प्राप्त हुई थी? उ0 **भगवान् शिव से**

प्र0 जाम्बवन्त जी की लड़की का क्या नाम था? उ0 **जाम्बवती**

प्र0 गरुड़ की माँ का क्या नाम था? उ0 **विनता**

प्र0 श्रीकृष्ण की बहिन का क्या नाम था? उ0 **सुभद्रा**

प्र0 शनिदेव के पिता का क्या नाम था? उ0 **सूर्य देवता**

प्र0 शनिदेव की माँ का क्या नाम था? उ0 **छाया**

प्र0 जाम्बवन्त जी के पिता का क्या नाम था? उ0 **ब्रह्मा जी**

प्र0 समुद्र मंथन में किसका प्रयोग किया गया था? उ0 **मंदराचल पर्वत, वासुकि नाम सर्पराज**

प्र0 हनुमान जी के गुरू का नाम बताइए? उ0 **सूर्य देवता**

प्र0 श्रीकृष्ण के नाना का क्या नाम था? उ0 **उग्रसेन**

प्र0 यशोदा की वह बेटी जो कृष्ण से वसुदेव बदल ले गऐ थे, कंस के द्वारा मारने पर उसका क्या हुआ?

उ0 **विन्ध्याचल पर्वत पर गिरी और विन्ध्यवासिनी माँ कहलायी।**

प्र0 शूपनखा यह क्यों चाहती थी कि रावण की मृत्यु हो जाए?

उ0 **क्योंकि रावण ने शूपनखा के पति की हत्या कर दी थी।**

प्र0 रावण के कितने पुत्र व कितने नाती थे? उ0 **एक लाख पुत्र सवा लाख नाती।**

सामान्य ज्ञान

कार्तिकेय वर्मा
षष्ठ 'ख'

1. भारत की सर्वप्रथम विश्व सुन्दरी - **कु0 रीता फारिया।**
2. भारत के किस प्रधानमंत्री की मृत्यु विदेश में हुई - **लाल बहादुर शास्त्री (रूस में)।**
3. भारत में कौन-सा प्रधानमंत्री हुआ, जिसका जन्मदिन चार साल में एक बार आता है - **मुरारजी भाई देसाई (जन्म 29 फरवरी)।**
4. भारत, चीन की सीमा को निर्धारित करने वाली लाइन को क्या कहा जाता है - **मैक मोहन लाइन।**
5. भारत में पहली बार टेलीविजन का प्रसारण कब प्रारम्भ हुआ - **15 सितम्बर 1959 से आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से।**
6. भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई - **1935 में।**
7. भारत में महलों का शहर कौन सा है? और उनकी स्थापना किसने की? **कलकत्ता, जाबचार्नक द्वारा।**
8. प्रथम भारतीय फिल्म कौन सी थी - **राजा हरिश्चन्द्र।**
9. विश्व का सबसे बड़ा टी.वी. टावर कहाँ है - **लेह में (भारत - ऊँचाई 3,440 मीटर)।**
10. विश्व में कौन ऐसा देश है जो कभी किसी का गुलाम नहीं हुआ - **नेपाल।**
11. वह कौन सा प्राणी है? जो अपने साथी के वियोग में प्राण त्याग देता है - **सारस।**
12. पक्षी कितनी ऊँचाई तक उड़ सकता है- **8848 मीटर।**
13. कौन सा जीव पानी नहीं पीता है - **अमेरिका का कंगारू रेट।**
14. कौन सी मछली करंट पैदा करती है - **तारपीडो, इलैक्ट्रिक ईल मछली।**
15. वह कौन सा जानवर है जिसे हर वस्तु दुगुनी बड़ी दिखाई पड़ती है - **हाथी।**
16. संसार में सबसे बड़ा कछुआ कहाँ पाया जाता है - **आस्ट्रेलिया।**
17. ऐसा कौन सा जीव है जिसका सिर कटने के बाद जीवित रह सकता है - **उकाब पक्षी।**
18. कौन सी मछली है, जो पानी के बिना कुछ दिनों तक जीवित रह सकती है - **एशिया की मेंढक मछली।**
19. विश्व में सर्वाधिक गति से उड़ने वाला कीट कौन सा है - **डिपर फ्लाई।**
20. विश्व में सबसे तेज रफ्तार वाला पक्षी कौन सा होता है - **डाक हाक।**

***

मृत्यु भी धर्मनिष्ठ प्राणी की रक्षा करती है। - कौटिल्य

संसद पर हमला

देवकी राणा
अष्टम 'ख'

13 दिसम्बर 2001। आज से 12 साल पहले। हमारे लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद बनी आतंकियों का निशाना। बेखौफ आतंकियों का अब तक का सबसे बड़ा दुस्साहस। यह घटना देश पर हमला करने जैसा मामला।

तारीख : 13 दिसम्बर, 2001

समय : 11:40 बजे (दिन दहाड़े)

आतंकी - पाकिस्तान स्थित और समर्थित आतंकी संगठनों लश्कर-ए-तोयबा और जैस-ए-मुहम्मद के पाँच आतंकी अंबेस्डर कार डीएल-1 सीजे-1527 से संसद के अहाते में प्रवेश कर गेट संख्या-12 की तरफ बढ़ते हैं। इस कार में गृह मंत्रालय और संसद के स्टीकर लगे थे।

संदेह - गेट संख्या 11 पर खड़ी उपराष्ट्रपति की कारों के काफिले से इनका सामना होता है। संसद के वाच एंड वार्ड स्टाफ जगदीश प्रसाद यादव को आतंकियों की कार पर संदेह होता है। वे तुरन्त कार की तरफ दौड़ते हैं। आतंकियों द्वारा कार को पीछे ले जाने के क्रम में वह उपराष्ट्रपति की कार में टक्कर मारते हैं। वहाँ मौजूद सुरक्षा बलों द्वारा चुनौती देने पर सभी आतंकी कार से बाहर निकलकर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर देते हैं। ड्यूटी पर तैनात दिल्ली पुलिस के जवान, सीआरपीएफ और आईटीबीपी के जवान जवाबी फायरिंग करते हैं।

जान की बाजी - संसद के वाच एंड वार्ड स्टाफ मातबर सिंह किसी गोलीबारी की आवाज से गेट संख्या-11 को बन्द कर देते हैं। इनको गोली भी लग जाती है।

खतरा - अलार्म बजते ही संसद भवन के सभी गेट बन्द कर दिये जाते हैं। आतंकी गेट संख्या 12 से एक की तरफ भागते हैं।

ढेर - सुरक्षा बलों की गोली से गेट संख्या एक पर एक आतंकी ढेर हो जाता है। शरीर पर बाँधे विस्फोटकों से उसके चीथड़े उड़ जाते हैं। बाकी चार आतंकी पीछे मुड़ते हुए गेट संख्या नौ पर पहुँचते हैं। तीन आतंकी यहीं पर मारे जाते हैं। पाँचवाँ आतंकी गेट संख्या पाँच की तरफ भागता है, जहाँ उसे निशाना बनाया जाता है।

बरामद - घटनास्थल पर आतंकियों के पास से कई जिंदा हैंड ग्रेनेड, हथियारों का जखीरा और विस्फोटक बरामद किए गए।

साजिश - पाकिस्तान समर्थित इस आतंकी घटना का सूत्रधार अफजल गुरु था। जैश-ए-मुहम्मद के गाजी बाबा ने उसे यह जिम्मा सौंपा था। इससे पहले अफजल मुजफ्फराबाद में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. द्वारा संचालित आतंकी शिविर में प्रशिक्षण भी ले चुका था। दिल्ली में इन पाँच फिदायीन आतंकियों के रहने का इंतजाम शौकत हुसैन गुरु ने मुखर्जी नगर और तीमारपुर इलाके में किया था।

***

मृत्यु से नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नहीं जानते वे जीना भी नहीं जानते। - जवाहरलाल नेहरू

गुरु की महिमा

सिद्धार्थ पोरवाल
दशम 'ख'

द्वापर युग में चन्द्रविजय नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी इन्द्रमती बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। सन्त महात्माओं का बहुत आदर किया करती थी। उसने भी एक गुरुदेव बना रखा था। उनके गुरुदेव ने बताया था कि बेटी! साधु-सन्तों की सेवा करनी चाहिए। सन्तों को भोजन कराने में बहुत लाभ होता है। गुरुदेव ने बताया था कि सन्तों को भोजन खिलाया करेगी तो आगे भी रानी बन जायेगी और आगे भी स्वर्ग की प्राप्ति होगी। उसने यह प्रतिज्ञा मन में ठान ली कि मैं खाना बाद में खाया करूँगी पहले सन्त को खिलाया करूँगी। वर्षो तक यही क्रम चलता रहा। एक समय हरिद्वार में कुम्भ के मेले का संयोग हुआ। इस कारण रानी को भोजन कराने के लिए कोई संत नहीं मिला। रानी इन्द्रमती ने स्वयं भी भोजन नहीं किया चौथे दिन अपनी दासी से कहा कि देख ले कोई सन्त मिल जाए नहीं तो रानी चल बसेगी। दासी ने ऊपर अटारी पर चढ़ कर देखा कि एक सन्त आ रहे थे। दासी नीचे आयी और रानी को बताया। रानी ने साधु को बुलाया तो साधु ने कहा मेरा और रानी का क्या सम्बन्ध जो रानी मुझे बुला रही है दासी ने पूरी बात बतायी। तो साधु ने कहा यदि रानी को आवश्यकता पड़े तो वह स्वयं यहाँ आ जाये मैं यहीं खड़ा हूँ। रानी साधु के पास गयी दासी के कथनानुसार और वहाँ जाकर दण्डवत् प्रणाम किया और प्रार्थना की आप भोजन ग्रहण कर लें। साधु ने कहा मैं भोजन ग्रहण नहीं करता। रानी ने कहा मैं भी खाना नहीं खाऊँगी यह सुनकर साधु ने भोजन ग्रहण कर लिया। साधु ने पूछा यह करने के लिए तुम्हें किसने बताया तो रानी ने कहा यह करने के लिए मेरे गुरुदेव ने बताया है। साधु ने कहा ऐसा करने से जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक अथवा 84 लाख योनियों से मुक्त नहीं हो सकती। रानी ने कहा महाराज जितने भी सन्त हैं, सब अपनी प्रभुता अपने आप ही बनाते हैं। मेरे गुरुदेव के बारे में कुछ नहीं कहिये। मैं अपने गुरुदेव नहीं बदलूँगी। मैं चाहे मुक्त होऊँ या न होऊँ। तो साधु ने कहा कि पुत्री एक वैद्य से दवाई न लगे तो क्या दूसरे से नहीं लेते? साधु ने कहा कि आज से तीसरे दिन तेरी मृत्यु हो जायेगी। रानी ने कहा वैसे तो मैं नहीं मानती परन्तु मृत्यु दिखने लगी और सन्त कह रहा है तो कहीं बात न बिगड़ जाए। साधु ने कहा आज से तीसरे दिन तुम्हारा काल मेरा रूप धारण कर तुम्हारे सामने आयेगा तुम उसके सामने देखना भी नहीं, मैं एक मन्त्र दे रहा हूँ उसका जाप करना तो काल चला जाएगा। यही क्रिया हुई और काल चला गया। रानी बहुत प्रसन्न हुई। जब रानी ने राजा को बताया तो राजा ने कहा तू अन्धविश्वास पर विश्वास करती है, ऐसा हो नहीं सकता कि काल आए और चला जाए। रानी लेटी हुई थी काल सर्प का रूप रख कर आया और रानी को डस लिया। रानी की मृत्यु हो गयी। राजा ने उसी साधु को बुलाया और जीवित करने के लिए कहा। साधु ने लोगों को दिखाने के लिए मंत्र जपे और रानी को जीवित कर दिया। जीवित होते ही रानी से कहा कि मैंने ऐसा इसलिए किया कहीं तू यह न सोंचती मेरे ऊपर आपत्ति आनी ही नहीं थी। मैं चाहूँ तो काल को घुसने भी न दूँ। कहीं तू यह न सोंचे कि गुरू जी ने बहकाकर नाम दे दिया इसलिए थोड़ा सा झटका दे दिया है।

धर्मदास यहाँ घना अँधेरा, बिन परिचय जीव जम का चेहरा।

गरीब दास जी कहते हैं-

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश।

शिक्षा- इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें अपने गुरुओं पर विश्वास करना चाहिए।

***

अकबर और बीरबल की रोचक कहानियाँ

प्रखर मिश्र
सप्तम 'ख'

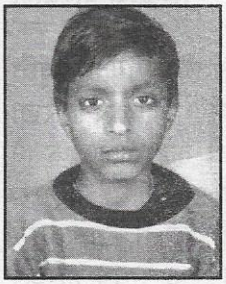

दाढ़ी की आग

अकबर बादशाह ने एक रोज सभी दरबारियों से सवाल किया- "अगर सबकी दाढ़ी में आग लग जाए, जिसमें मैं भी शामिल होऊँ, तो पहले किसकी दाढ़ी की आग बुझायेंगे?" "हुजूर की दाढ़ी।" सबने चापलूसी में भरकर एक स्वर में कहा। बादशाह को लगा जैसे सब झूठ बोल रहे हैं। उन्होंने बीरबल से पूछा- "बताओ, सबसे पहले किसकी दाढ़ी की आग बुझाओगे?"

"हुजूर, सबसे पहले मैं अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊँगा, फिर किसी और की दाढ़ी की ओर देखूँगा।" बीरबल ने उत्तर दिया। बीरबल के उत्तर से बादशाह बहुत खुश हुए और बोले- "मुझे खुश करने के लिए आप सब लोग झूठ बोल रहे थे। सच बात तो यह है कि हर आदमी अपने बारे में पहले सोचता है।"

विधवा हो जाएगी

जैसा कि मशहूर है, मुल्ला दो प्याजा और बीरबल में छत्तीस का आँकड़ा था। मुल्ला दो-प्याजा की काफी उम्र हो चुकी थी, पर अभी तक वे अविवाहित थे। एक दिन बादशाह ने मुल्ला से पूछ लिया- "आप शादी क्यों नहीं करते...?" मुल्ला दो-प्याजा ने कहा- "मैं किसी विधवा से शादी करना चाहता हूँ, ताकि विवाह भी हो जाए और पुण्य भी कमा लूँ।" बीरबल ने झट से कहा- "अमां! आप विवाह तो करें। कुछ दिनों बाद वह खुद ही विधवा हो जाएगी।

जी मेहरबान

एक दिन बादशाह ने बीरबल के सामने अपने विचार प्रकट किए- "क्यों बीरबल, जिन लोगों के नाम व पदवी के आखिर में 'वान' या 'बान' लगा होता है, वे ज्यादातर कम अक्ल और छोटा काम करने वाले होते हैं न! जैसे कि कोचवान, दरबान, पहलवान। ठीक कहा न मैंने?"

"जी मेहरबान।" बीरबल ने बड़े अदब से कहा। बादशाह बीरबल के उत्तर से चौंके और हँसने लगे।

सब बह जाएँगे

एक बार बादशाह अकबर और बीरबल घूमते-घूमते गाँव की ओर पहुँच गए। रास्ते में एक आदमी से मुलाकात हो गई। दोनों ही उसका और उसके घरवालों का परिचय लेने में लग गए। बादशाह अकबर ने उससे पूछा, "तेरे भाई का क्या नाम है और तेरा क्या नाम है?" उस आदमी ने जवाब दिया मेरे भाई का नाम 'नर्मदा' और मेरा नाम 'जमुना' है।" अकबर ने उस आदमी से पूछा- "तेरी माँ का क्या नाम है?" उस आदमी ने उत्तर दिया- "सरस्वती।" अब तो बीरबल से बिल्कुल न रहा गया- उन्होंने तुरन्त कहा "रुको, पहले मुझे नाव का इंतजाम करने दो वरना सब बह जाएंगे। उनका उत्तर सुनकर बादशाह और वह आदमी खूब हँसे।

माँ के ममत्व की एक बूँद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है। - जयशंकर प्रसाद

नहले पे दहला

एक बार बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा, "बीरबल, सूरज पूर्व से निकलकर पश्चिम में क्यों डूबता है?" बीरबल ने झुँझलाकर कहा, "हुजूर यह सवाल आप किसी भी बेवकूफ से पूछकर जवाब पा सकते हैं।" बादशाह अकबर ने कहा, "बीरबल तभी तो मै तुमसे पूछ रहा हूँ.....।"

माला दो, बहन दो

बादशाह अकबर और बीरबल नाव में बैठकर नदी की सैर कर रहे थे उनमें हँसी-मजाक चल रहा था। बादशाह को हँसी करने की सूझी। उन्होंने अपने गले में पहनी फूलों की माला नदी में फेंक दी और कहा- "माला दो" बीरबल समझ गए कि बादशाह हँसी कर रहे हैं। उन्होंने कहा (बीरबल ने) "बहन दो.....।" बादशाह को गुस्सा आया "उन्होंने कहा तुम मेरी बहन क्यों माँग रहे हो?"

बीरबल ने नरम लहजे में कहा- "आप ने मा लाने की बात कही पर मैं तो नहीं चिढ़ा।" बादशाह ने कहा- "मैंने तो माला लाने की बात कही थी।" बादशाह ने शब्दजाल में फँसाना चाहा। पर बीरबल के सामने उनकी कहाँ चलती। बीरबल बोले- "मैंने भी कब बहन की बात कही- मैंने तो, कहा बहन दो अर्थात् माला को बह जाने दो। इसमें नाराजगी वाली क्या बात है?"

बादशाह बीरबल की नोंक-झोंक पर मुस्कुराकर रह गए।

*** *** ***

वीर बालक 'काका बिशन सिंह'

राहुल गुप्त
अष्टम 'ख'

दिनांक 15 जनवरी 1872 ई0 की रात को गुरु रामसिंह जी एवं नामधारियों की टोली पंजाब के मलेरकोटला में एक बूचड़खाने के समीप से निकली तो उन्होंने कुछ गायों को बुरी तरह जकड़े हुए तड़पते देखा और बूचड़ों को उन्हें कत्ल करने की तैयारी में पाया। यह देखते ही नामधारी वीरों का खून खौल उठा। और क्षणों में ही कई बूचड़ों के सिर धड़ से अलग भूमि पर लोटने लगे। एक भी वहाँ उपस्थित बूचड़ जीवित न बच पाया। अंग्रेज पहले ही गुरु रामसिंह को समाप्त करने के बहाने ढूँढ़ रहे थे। इसी कारण अंग्रेज मासूस प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे। इससे गुरु रामसिंह बहुत दु:खी थे। उन्होंने घोषणा कर दी कि जिन वीरों ने गऊ-माताओं को बचाया, उन्हें भीरु बन छिपना नहीं चाहिए।

गुरु की यह घोषणा होते ही 49 वीर नामधारी कुके प्रकट हो गये। उन्हें जब तोप के मुख पर बाँध कर उड़ाया जा रहा था तो 49 वीरों में एक दस-बारह वर्ष का बालक 'काका बिशनसिह' भी था। उसकी लम्बाई तोप के मुँह तक नहीं पहुँच रही थी। यह नजारा देख रही अंग्रेज कमिश्नर की पत्नी ने मासूम बच्चे को छोड़ देने का आदेश दिया। मासूम काका बिशनसिंह भाग कर कुछ ईटें उठा लाया और उस पर खड़ा हो तोप चलाने को ललकारने लगा। काफी समझाने का प्रयत्न किया गया परन्तु वह वीर बालक गाय-माता की जय, गुरु रामसिंह की जय के जयकारे बोलता रहा और अंग्रेजी सरकार को चुनौती देता रहा। अन्तत: कमिश्नर के हुकुम से तोप चली और बीर बालक बिशन सिंह के अधूरे जयकारे "गऊ-माता की....." के साथ शरीर के टुकड़े हवा में उड़ गये। वाहरे भारतमाता, तूने कैसे-कैसे लाल पैदा किये।

***

शत्रु का लोहा गरम भले ही जो जाय पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है। - सरदार पटेल

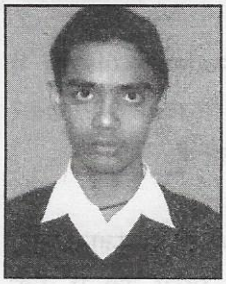

कविता

सोनू कुमार
अष्टम 'ख'

चींटी ने जो मारा मुक्का, हाथी दादा गिरे जा दूर।
नीम के पेड़ पर चढ़कर कछुआ, तोड़-तोड़ खा रहा खजूर।
चीता, शेर, भेड़िया मिलकर, रेगिस्तान में चरते घास।
बिल्ली मौसी बड़ी प्रेम से, रहती चूहे जी के पास।
कक्षा में एक टीचर जी, दसवीं बार हुए हैं फेल।
एक माह के एक बच्चे को, सौंवी बार हुई है जेल।
गधा बोला म्याऊँ-म्याऊँ, मैं तो पेड़ों पर चढ़ जाऊँ।
नदी के जल में तैरे बकरी, बोली, सारी मछली खाऊँ।

❁ ❁ ❁

टमाटर की खोज

बात 1820 के अमेरिका की है, डेविड नाम के एक व्यक्ति ने कुछ टमाटर खाए ते पुलिस ने उसे पकड़ लिया इल्जाम था कि उसने आत्महत्या की कोशिश की। जी हाँ, टमाटर खाने के जुर्म में ही उसे कैद कर लिया गया था।

दरअसल उन दिनों टमाटर को एक जहरीला पदार्थ माना जाता था। कुछ लोग यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि इतना खूबसूरत टमाटर जहरीला हो सकता है डेविड जॉनसन भी इनमें शामिल थे। उसने ठान लिया कि वह साबित करके रहेगा कि टमाटर खाने से कोई नुकसान नहीं होता है। डेविड ने यह घोषणा कर दी कि सार्वजनिक रूप से टमाटर खाकर दिखाएगा। इस घोषणा से अमेरिका वासियों को बहुत आश्चर्य हुआ आखिरकार वह दिन आ ही गया। डेविड के इस कार्य के लिए खास तौर पर स्थान तैयार किया गया। इस कारनामे को देखने के लिए काफी लोग पहुँचे।

डेविड अभी टमाटर खाने वाला ही था कि चारों ओर पुलिस-पुलिस का शोर मच गया।

दरअसल पास के थाने में किसी ने इस बारे में रिपोर्ट दर्ज करायी कि डेविड जॉनसन खुदकुशी करना चाहता है। चूँकि खुदखुशी एक अपराध है, इसलिए पुलिस का आना स्वाभाविक था। डेविड ने जैसे ही शोर सुना, उसने कई टमाटर बारी-बारी से निगल लिया। चारों ओर से पुलिस डेविड को पकड़कर जबरन डाक्टरों के पास ले गई पर डाक्टरों ने उसे पूरी तरह तन्दुरुस्त घोषित कर दिया अखबारों में डेविड का नाम गूँजने लगा।

लोगों के मन से टमाटर के जहरीले होने का डर निकल गया जनता टमाटरों पर टूट पड़ी टमाटरों की कीमत आसमान छूने लगी और टमाटर की खेती शुरू कर दी गई।

बहरहाल, डेविड जॉनसन ने लोगों का एक बहुत ही स्वादिष्ट सब्जी (टमाटर) से परिचय करा दिया।

***

दान ही सबसे बड़ा कर्म है

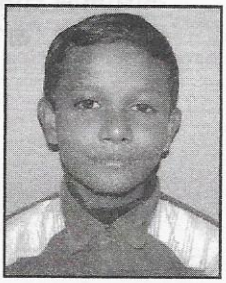

आकाश गुप्त
अष्टम 'ग'

एक बार की बात है बजरंगपुर नाम के एक गाँव में राजा रहता था। वह बहुत अमीर व्यक्ति था। उसी गाँव में एक कंजूस सेठ रहता था। जिसके पास भी बहुत धन था लेकिन वह उस धन में से कुछ भी खर्च नहीं करता था। एक दिन राजा को बहुत अजीब सा सवाल मन में आया। उन्होंने सोचा कि जब व्यक्ति मर जाता है तो उसके शरीर को जमीन में गाड़ दिया जाता है परन्तु उसके बाद क्या होता है। जब राजा ने यह सवाल प्रजा से पूछा तो इसका जवाब किसी को नहीं पता था। तभी राजा के मंत्री ने राजा से कहा कि यदि हम यह घोषणा कर दें कि जो व्यक्ति मरे हुये इंसान की तरह एक रात कब्र में लेटा रहेगा उसे सौ सोने की मुद्राएँ दी जायेंगी। यह सुनते ही राजा ने घोषणा करवा दी। तभी उस कंजूस सेठ ने कहा कि वह ऐसा करेगा। राजा ने कहा- "तो फिर ठीक है कल इस सेठ को दफनाया जायेगा।" अगले दिन फिर उसको श्मशान घाट ले जाया गया तभी उसे रास्ते में एक बूढ़ा व्यक्ति मिला। वह बहुत गरीब था। उसने जब सेठ से कुछ धन माँगा तो सेठ ने रास्ते में पड़े कुछ अखरोट के छिक्कल उठाये और उसे दे दिये। बचे हुये छिक्कल जेब में रख लिये। फिर उसे वहाँ दफना दिया गया। उसी क्षण वह जब अपनी कब्र में लेटा था तभी वहाँ एक बिच्छू एक छोटे से छेद से आने की कोशिश कर रहा था। सेठ डर गया। तभी उसकी जेब से छिक्कल गिर पड़े और उसने इन छिक्कलों से उस छेद का भर दिया। जिससे बिच्छू उसके पास नहीं पहुँच सका। फिर सुबह उसे निकाला गया। तब राजा ने पूछा कि रात में क्या हुआ। उस सेठ ने राजा को पूरी बात बता दी। तब राजा ने उसे सौ सोने की मुद्राएँ दे दीं। तभी सेठ भाग कर गया उसने वह सारी मुद्राएँ उस गरीब व्यक्ति को दे दीं। तबसे वह दान करना कभी नहीं भूला।

सीख - हमें दान करना नहीं भूलना चाहिये क्योंकि दान ही सबसे बड़ा कर्म है।

*** *** ***

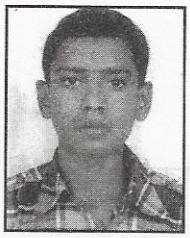

प्रमुख देशों के शिक्षक दिवस

यश सिंह
एकादश 'ख'

जिस प्रकार भारत में अध्यापक दिवस 5 सितम्बर को मनाया जाता है उसी प्रकार दुनिया के कई देशों में अलग-अलग तारीख में टीचर्स डे मनाया जाता है।

वर्ल्ड टीचर्स डे	5 अक्टूबर	ब्राजील	15 अक्टूबर
चीन	10 सितम्बर	मलेशिया	16 मई
न्यूजीलैंड	2 अक्टूबर	श्रीलंका	6 अक्टूबर
आस्ट्रेलिया	अक्टूर का आखिरी शुक्रवार	अमेरिका	मई के पहले हफ्ते में
जर्मनी	5 अक्टूबर	अर्जेन्टीना	11 सितम्बर

ऐसी कोई महान प्रतिभा नहीं है जिसमें लगन का संमिश्रण न हो। - अरस्तू

दो का पहाड़ा

आयुष्मान साहू
षष्ठ 'ख'

एक गाँव में थे दो चोर। चोरी करते चारों ओर।
छः किलो पीते थे दूध। आठ किलो खाते अमरूद।
दस गाँव में थे बदनाम। बारह थानों में था नाम।
चौदह थानेदार आए। सोलह बेत उन्हें लगाए।
अठारह मील दिया ढकेल। बीस साल की हो गई जेल।

अद्भुत पेड़

1. अमेरिका में एक ऐसा पेड़ पाया जाता है जिससे दूध निकलता है। यह दूध लोग खाने में प्रयोग करते हैं।
2. जापान के कुछ वृक्ष सूर्यास्त के बाद धुआँ देते हैं।
3. असम के जंगलों में ऐसी बेलें पायी जाती हैं जिनसे पानी निकलता है।
4. क्यूबा नामक वृक्ष भूकम्प आने से पहले अपना रंग बदल लेता है।
5. वर्मा में एक पादी नामक पौधा है जिसमें फूल खिलने पर वर्षा अवश्य होती है।
6. जल जलमी नामक पेड़ की पत्तियों का रस यदि पानी में डाल दिया जाए तो वह जम जाता है।

पहेलियाँ

1. पाँच अक्षर का नाम बताओ जो उल्टा सीधा एक समान।
2. इतना मोटा मेरा पेट, लेता सारा जगत समेट। रोज सबेरे आता हूँ, सबके मन को भाता हूँ।।
3. धन दौलत से बड़ी है यह जो पाए पंडित बन जाये।
4. हर रंग का घर है मेरे अंदर सफेद पुताई। काले रंग के बल्ब लगे हैं लाल रोशनी जगमगाई।
5. कद में छोटे, कर्म के हीन। बीन बजाने के शौकीन।।
6. एक हाथ का प्राणी अचल। हाथ मिलाओ पाओ जल।
7. केरल से आया टिंग काला। चार कान और टोपी वाला।।
8. झुकी कमर का बूढ़ा जहाँ ठहर जाए, वहीं पर भाषा रुके, सवाल उभर जाए।

(उत्तर : 1. नवजीवन, 2. अखबार, 3. विद्या, 4. तरबूज, 5. मच्छर, 6. हैण्डपम्प, 7. लौंग, 8. प्रश्नवाचक चिह्न)

बहुत अनोखी है, इनकी दुनियाँ

1. हाथी मनुष्य की गन्ध 300 फुट की दूरी से पहचान जाता है।
2. चींटी अपने वजन से तीन गुना अधिक वजन उठा सकती है।
3. छिपकली कभी पानी नहीं पीती।
4. तोता 60 तरह के शब्द बोल सकता है।
5. बिल्ली अपनी जिन्दगी का आधा समय सोकर बिताती है।
6. कोबरा साँप का जहर इतना खतरनाक होता है उसके दंश से 1500 व्यक्ति मर सकते हैं।

कर्तव्य का पालन ही चित्त की शांति का मूल मंत्र है। – प्रेमचन्द

राष्ट्रीय एकता

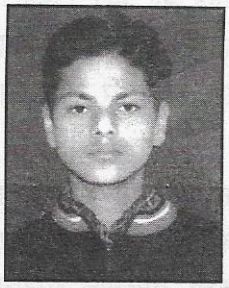

रघुवर तिवारी
अष्टम 'क'

राष्ट्रीय एकता का भावात्मक अर्थ है, राष्ट्र के सभी व्यक्तियों के द्वारा एक साथ मिल-जुलकर अपने राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना। राष्ट्र तब ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। जब उस राष्ट्र के निवासी एक साथ मिल-जुलकर अपना योगदान दें। भारत में अनेकता में एकता है। भारत एक विविधताओं का देश है। जब किसी राष्ट्र के निवासी एकजुट होकर के अपना योगदान देश को उन्नति के मार्ग पर लाने के लिये करेंगे तब ही यह सम्भव है कि वह राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जाएगा।

जिनको न निज गौरव तथा निज देश पर अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा औ मृतक समान है।।

अर्थात् जिस व्यक्ति को अपने देश की समृद्धि तथा गौरव पर अभिमान नहीं है वह व्यक्ति नर नहीं है पशु की तरह है, तथा वह व्यक्ति मृतक अर्थात् भावनाहीन है जिसको अपने देश से कोई लगाव नहीं है वह व्यक्ति अपने आप को व्यक्ति नहीं कह सकता तथा वह मृतक के सदृश है।

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय – भारत एक विशाल देश है। विकासशील देशों के अन्तर्गत आता है। राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय है कि किसी राष्ट्र के व्यक्तियों का सामूहिक रूप से अपने देश को विकास के पथ पर अग्रसर करना। राष्ट्रीय एकता के कारण ही देश सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकता है लेकिन अगर किसी राष्ट्र के व्यक्तियों में आपस में एकता नहीं है तो वह राष्ट्र अवनति के मार्ग पर भी अग्रसर हो सकता है। इसलिये अगर राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर बढ़ाना है तो राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिये।

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले को मन्दे।।

गुरु नानक जी ने कहा है कि ईश्वर ने ही सभी व्यक्तियों का निर्माण किया है इसी नूर से पूरे संसार का निर्माण हुआ है तथा उसको पता है कि कौन पुरुष कुशल बुद्धि के है तथा कौन मन्द बुद्धि के हैं।

राष्ट्रीय एकता का आधार – राष्ट्रीय एकता प्रमुख आधार इसलिये माना गया है क्योंकि राष्ट्रीय एकता न होने पर देश किसी भी मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता है। राष्ट्रीय एकता का प्रमुख आधा एकता है। एकता के कारण ही देश में सभी व्यक्ति एक साथ मिलकर भ्रष्टाचार का समूल नाश कर सकते हैं। एकता के कारण ही राष्ट्र के व्यक्तियों में विश्व बन्धुत्व की भावना से आपस में प्रेम से रहकर राष्ट्रीय एकता को प्रेरित कर सकते हैं। अगर राष्ट्र के व्यक्तियों में विश्व बन्धुत्व की भावना हो तो वह पूरे संसार के व्यक्तियों को अपने भाई के सदृश मानकर सभी व्यक्तियों के साथ भाईचारे की भावना रखता है।

राष्ट्रीय एकता से लाभ – किसी भी राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के लिये राष्ट्रीय एकता सबसे महत्त्वपूर्ण है। बिना राष्ट्रीय एकता के देश या राष्ट्र का उन्नति के मार्ग पर बढ़ना असंभव है।

जो अंतर को देखता है बाह्य को नहीं, वही सच्चा कलाकार है। – महात्मा गांधी

राष्ट्रीय एकता वह शक्ति है। जिसके कारण किसी भारी शक्ति वाले राष्ट्र से सामना कर सकते हैं तथा उनसे विजय भी प्राप्त कर सकते हैं। हम संगठित होकर किसी भी कठिनाई का हल निकाल सकते हैं। राष्ट्रीय एकता के उत्पन्न होने से हमें अपने देश के प्रति भी उत्पन्न होने लगता है। अपने राष्ट्र के प्रति एकता के साथ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। जिसके कारण ही हमारे राष्ट्र का उत्थान होना प्रारम्भ हो जायेगा।

राष्ट्र द्रोह से मुक्ति – सरकार को चाहिए कि राष्ट्रद्रोही लोगों को पहचाने तथा किसी भी दबाव में आकर उन्हें खुले नहीं घूमने देना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितने भी उच्च पद पर आसीन हो, उसे देशद्रोह पर क्षमादान नहीं देना चाहिए। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रभाषा तथा संविधान राष्ट्रीय सम्मान के प्रतीक हैं। इनका अपमान और उपेक्षा राष्ट्रद्रोह मानी जानी चाहिए। इस प्रकार हम राष्ट्रीय एकता का विकास कर सकते हैं। जब तक जन-जन में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत नहीं की जाएगी, तब तक राष्ट्रीय एकता को खतरा बना रहेगा।

उपसंहार – देश में एकता स्थापित करना अति आवश्यक है। देश व नागरिकों का विकास एकता के माध्यम से ही हो सकता है। हमें अपने देश में एकता के उदाहरण मिल जाते हैं। भारत के वर्तमान राष्ट्रपति हिन्दू, उपराष्ट्रपति मुसलमान प्रधानमंत्री सिक्ख व रक्षामंत्री ए.के. एण्टनी इसाई हैं। हमें इन तथ्यों से सीख लेकर एकता स्थापित करने में सहायता करनी चाहिए। कवि इकबाल ने कहा है- "राष्ट्रीय एकता देश प्रेम व सर्वधर्म समभाव का वह पुलिन्दा है। जिसके कारण हमारा देश आज भी जिन्दा है।"

साधना की मुट्ठियों में धरतियाँ सिमटी हुई। और फिर भी फासला ही फासला चारों तरफ?।।

*** *** ***

अगले जनादेश में.....।

मोनेश कुमार अग्रवाल
अष्टम 'ग'

बढ़ती जरूरतें हैं, आबादी के साथ में,
साधन भी हो रहे हैं, सीमित सब हाथ में,
नृशंसता है कर रही, दोस्ती को खाक में,
नेता बना रहे हैं जमीं, अपनी ही धाक में।।1।।
लचर होती जा रही है, व्यवस्था देश की,
खतरे में पड़ रही है, सुरक्षा देश की,
प्रश्नों के घेरे में है, आस्था देश की,
भ्रष्टाचारी खा रहे हैं, उन्नति इस देश की।।2।।
खोता जब जनता का, विश्वास देश में,
कहता है नेताओं को, जागो इस भेष में,
खोयेगी सत्ता अब, आपस के द्वेष में,
कब्जा हट जायेगा तब, अगले जनादेश में।।3।।

कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक मानव बन जाता है। - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

स्वामी विवेकानन्द जी

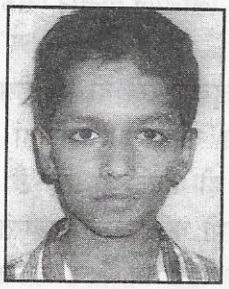

अंश श्रीवास्तव
सप्तम 'क'

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म उन दिनों हुआ, जिस समय हिन्दुस्तान पर ब्रिटिश शासकों का परचम लहरा रहा था और भारतवासी अंग्रेजों की गुलामी करने के लिये बाध्य था। 12 जनवरी, सन् 1863 ई0 को सुबह इस महापुरुष का जन्म हुआ।

कोलकाता में कायस्थ वंश के दत्त परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके परदादा श्री राममोहन दत्त कोलकाता के सुप्रीम कोर्ट के नामी वकील थे। श्री राममोहन के इकलौते पुत्र दुर्गाचरण जी हुए। वे भी अच्छे वकील थे। किन्तु धनलोलुप न होकर वे धर्मानुरागी बन गये। तब उनकी पत्नी की गोद में एक मात्र पुत्र विश्वनाथ थे। उन्होंने भी वयस्क होकर वकालत का पैतृक धंधा अपनाया। इन्हीं विश्वनाथ जी की पत्नी भुनेश्वरी देवी ने स्वामी विवेकानन्द जैसे पुत्र को जन्म दिया। स्वामी जी के बपचन का नाम 'बिले' था परन्तु उनकी माँ उन्हें 'वीरेश्वर' के नाम से पुकारती थी। जब इनका दाखिला विद्यालय में हुआ तो इन्हें 'नरेन्द्र' कहा जाने लगा। स्वामी जी की बड़ी बहनों का नाम हरमोहिनी व स्वर्णमयी था।

स्वामी जी का जन्म भगवान् शिव की कृपा से हुआ था। स्वामी जी ने श्रीरामकृष्ण परमहंस को अपना गुरू मान लिया। स्वामी जी के घर पर एक बार अधिक परेशानियों का दौर भी चला जब उनके पिता विश्वनाथ दत्त जी का हृदयरोग के कारण देहान्त हो गया तो मानो उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा हो। स्वामी जी का भूख के मारे बहुत बुरा हाल था। वे नौकरी हेतु एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर तक नंगे पैर ही भागा-दौड़ा करते थे। कुछ दिनों बाद मैट्रोपोलियन स्कूल की एक शाखा धोपातला मुहल्ले में खुली। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी की सिफारिश द्वारा उन्हें वहाँ नौकरी प्राप्त हो गयी। उसके बाद उनके घर की आर्थिक स्थिति सुधर गयी। फिर उन्होंने सम्पूर्ण भारत वर्ष का भ्रमण किया। उसके बाद उन्होंने 11 सितम्बर 1893 में आयोजित धर्मसभा में वे हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में शिकागो गये। शिकागो में उन्होंने हिन्दू धर्म पर भाषण दिया जिनसे उनकी ख्याति हुई तथा वे शिक्षित वर्ग द्वारा सम्मान की दृष्टि से देखे जाने लगे। उनके इन सभी भाषणों को सुनकर भगिनी निवेदिता उनकी शिष्या बन गयीं। स्वामी जी की महासमाधि 4 जुलाई, 1902 ई0 में शुक्रवार को 9 बजकर 10 मिनट पर हुई। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी शिक्षा हमारे साथ है।

कर्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता। - प्रेमचन्द

कमरतोड़ महँगाई

निखिल कुमार सिंह
अष्टम 'ग'

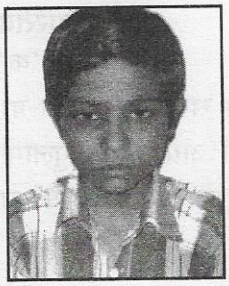

हाय महँगाई। इसने आम आदमी की तो कमर ही तोड़कर रख दी हैं। इस निरन्तर बढ़ रही महँगाई का चक्कर कहाँ जाकर रुकेगा कोई नहीं जानता। सब्जियाँ हाथ नहीं लगाने देतीं। घी-तेल तो जैसे सपना ही होते जा रहे हैं। बच्चों को दूध तक पिलाना मुश्किल होता जा रहा है। आदमी की पहली जरूरत होती है- घर, कपड़ा, खाना, पानी लेकिन आम आदमी की सारी आमदनी खाना खरीदने में लग जाती है। वास्तव में आज महँगाई ने आम आदमी की कमर तोड़कर रख दी है। उसकी चेतना, उसकी सारी गतिविधियाँ गोल रोटी के आस-पास ही सिमटकर रह गई हैं। आम आदमी को और कुछ सोचने-करने का समय और साधन ही नहीं मिल पाते। जो बड़े और संपन्न लोग हैं, उनके पास अधिक-से-अधिक कमाई करने से ही फुरसत नहीं है। वास्तव में कमरतोड़ देने की सीमा तक महँगाई बढ़ाने का कारण भी ये संपन्न लोग ही हैं न फिर उन्हें क्या और कैसी चिंता? अगर हर प्रकार से इस ओर प्रयत्न न किया गया, तो आने वाला समय और भी बुरा होगा। महँगाई हमारा कचूमर निकाल देगी। अतः हमारी सरकार को तत्काल सावधान हो जाना आवश्यक है।

सरल और कठिन

आकाश गुप्त
अष्टम 'ग'

सरल		कठिन
खर्च करना सरल है	–	कमाना कठिन है
शत्रु बनाना सरल है	–	मित्र बनाना कठिन है
विवाह करना सरल है	–	निर्वाह करना कठिन है
कहना सरल है	–	करना कठिन है
रिश्ते तोड़ना सरल है	–	रिश्ते बनाना कठिन है
जान लेना सरल है	–	जान देना कठिन है
नकल करना सरल है	–	याद करना कठिन है
दोषी ठहराना सरल है	–	दोष स्वीकार करना कठिन है
काम बिगाड़ना सरल है	–	काम बनाना कठिन है
नष्ट करना सरल है	–	बनाना कठिन है

पुस्तकें जाग्रत देवता हैं, उनकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है। - राम प्रताप त्रिपाठी

एक हिंदुस्तानी, जिसके सम्मान में झुकता है चीन

नमन मिश्रा
षष्ठ 'ख'

कोटनिस की कहानी

(डॉक्टर कोटनिस के जीवन पर साल 1946 में बॉलीवुड में फिल्म भी बनी थी। इस फिल्म में उनके जीवन के संघर्ष और मानवता के लिए किए गए कामों को दर्शाया गया था। फिल्म का नाम था डॉ कोटनिस की अमर कहानी)

1. युद्ध के दौरान डॉ0 कोटनिस के योगदान के आज भी मुरीद हैं चीन के नेता।

2. चीन के हबेई प्रोविंस में बनी है डॉ0 कोटनिस की प्रतिमा।

1938 में गए थे चीन

1937–1945 के बीच चीन और जापान के बीच युद्ध हुआ था। बात 1938 की है जब भारत सरकार से चीन ने मदद माँगी और डॉक्टर्स की टीम भेजने को कहा। इसके बाद भारत ने चीन की मदद के लिए पाँच डॉक्टर्स की टीम भेजी। इनमें डॉ0 कोटनिस भी थे। उस वक्त उनकी उम्र महज 28 साल की थी।

पाँच साल तक की सेवा

चीन में पहुँचने के बाद डा0 कोटनिस को आठवीं रूट के साथ तैनात किया गया और उन्होंने लगभग पाँच साल तक मोबाइल हॉस्पिटल में काम किया क्रिटिकल कंडीशंस में डॉक्टर कोटनिस के योगदान को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता आज भी उतना ही सम्मान देते हैं। माना जाता है कि डॉ0 कोटनिस उस समय चीन और भारत मित्रता के प्रतीक बन गए थे।

जब संभाल ली सारी जिम्मेदारी

कोटनिस का 1942 में निधन हो गया था। गंभीर बीमारी के कारण वो सिर्फ 32 साल तक जिन्दा रहे, लेकिन उनका नाम आज भी मानवता और भारत-चीन दोस्ती के लिए याद किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स में आई खबरों की मानें तो डॉक्टर कोटनिस युद्ध के दौरान 22 घंटे तक काम किया करते थे और वहाँ की सारी जिम्मेदारी भी संभाल ली थी।

हुबेई में कोटनिस की प्रतिमा

कोटनिस जब चीन में सेवा दे रहे थे तब ये अफवाह उड़ी थी कि उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना की मेम्बरशिप ले ली है। शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि तब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का शायद ही कोई ऐसा शीर्ष नेता होगा जिसने उनसे मुलाकात न की होगी और वह उनसे प्रभावित न रहा हो सिर्फ इतना ही नहीं चीन के हुबेई प्रोविंस में डॉ0 कोटनिस के योगदान में एक मूर्ति भी बना हुआ है।

***

निराशा में प्रतीक्षा अंधे की लाठी है। – प्रेमचन्द

एक अनमोल रत्न-सचिन

शौर्य अवस्थी
षष्ठ 'ख'

सचिन तेन्दुलकर का जन्म 24 अप्रैल 1973 ई0 में हुआ था। इनका पूरा नाम सचिन रमेश तेन्दुलकर है। इनकी माँ का नाम रजनी तेन्दुलकर है। इनका विवाह 1991 में अंजलि के साथ हुआ था। इनके पिता का नाम रमेश तेन्दुलकर है। इनके भाई का नाम अजीत तेन्दुलकर है।

सचिन की उपलब्धियाँ

सचिन का करियर 14 नवम्बर 1989 से 16 नवम्बर 2013 तक रहा। इन्हें 2013 में भारत रत्न मिलने की घोषणा हुई थी। इन्हें **"क्रिकेट का भगवान्"** कहा जाता है। इन्होंने 16 साल की उम्र से क्रिकेट खेलना शुरू किया था। इन्होंने 773 अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में 100 शतक 164 अर्द्धशतक बनाये हैं। इनका टेस्ट में 248 नाबाद, वनडे में 200 नाबाद, आईपीएल में 90 सर्वश्रेष्ठ है। इन्होंने दो सौ टेस्ट में 15921 रन बनाए हैं जिनमें 18426 रन 154 विकेट 2016 चौके 199 छक्के तथा 154 कैच लपके हैं। इन्होंने टेस्ट में 51 तथा वनडे में 49 शतक बनाए हैं। इनका आखिरी विकेट वेस्टइंडीज के नरसिंह देवनारायण ने लिया था।

सचिन को 1997 में विस्डन क्रिकेटर ऑफ द ईयर 1997/1998 में राजीव गांधी खेल रत्न, 1994 में अर्जुन पुरस्कार, 1999 में पद्मश्री, 2008 में पद्मविभूषण तथा 2010 में आईसीसी प्लेयर ऑफ द ईयर और 2013/2014 में भारत रत्न मिला है।

सोलह की उम्र में उसने तीस वालों का काम कर दिया है।
हर गेंद को बल्ले पर लगाकर उसने चौका जड़ दिया है।

परमात्मा अपने प्रेम में परिमित को ग्रहण करता है और मनुष्य अनंत को। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हमारा लोकतंत्र

ऐश्वर्या मिश्रा
दशम 'ग'

हर बार चुनाव आते हैं और नेताओं का मेला सा लग जाता है। हर कोई वोट माँगने के लिए घर के बाहर खड़ा नजर आता है, आजकल चुनाव में भाग लेना, प्रचार करना और जीत जाना आम बात है। नेता, जनता को तरह-तरह के प्रलोभन देकर अपने जाल में फँसा लेते हैं और हम लोग फँस जाते हैं। आजकल यदि हम समाचार पत्र उठा कर देखें तो हमें क्या मिलता है- इस पार्टी के नेता ने उस पार्टी के नेता को भ्रष्ट बताया, दूसरी पार्टी के नेता ने अपनी पार्टी छोड़ दूसरी पार्टी में शरण ले ली। बस इसी सब से हमारा समाचार पत्र पूरा भरा होता है, एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते-उछालते नेता शायद यह भूल जाते हैं कि उस कीचड़ के छीटें उन पर भी पड़ते हैं। कोई भी मुद्दा हो उसका समाधान करने के बजाय उसके लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराना और हर कार्य अपने फायदे के लिये करना ये सब एक दिन नेताओं को तो उच्च शिखर अर्थात् जिस पद पर वे पहुँचना चाहते हैं वहाँ तक पहुँचा देगा परन्तु इससे हमारे देश पर क्या असर पड़ेगा अर्थात् हमारा देश अवनति की ओर चला जायेगा। हम लोगों ने कभी एक बात सोची है कि जब किसी छोटे बच्चे से पूछो कि तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो तो उसका जवाब होता है- डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि परन्तु कोई ये क्यों नहीं कहता कि मैं बड़ा होकर नेता बनना चाहता हूँ क्योंकि हमारे देश में नेताओं की छवि उतनी खराब है जितनी कि आतंकवादियों की, ये अलग बात है आतंकवादी बाहर से आकर आतंक फैलाते हैं पर नेता ये तो आंतरिक रूप से हमारे लोकतंत्र को खोखला बना रहे हैं कुछ नेता जो थोड़ा बहुत अच्छा काम करने की कोशिश भी करते हैं तो उन पर झूठे आरोप लगा दिये जाते हैं, और कुछ पैसे और ताकत के दम पर अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को झूठा साबित कर देते हैं मैं पूछती हूँ कि हमारे देश की दुर्दशा का जिम्मेदार कौन है उत्तर है कोई नहीं या शायद हम सब। अब यह हम सब पर निर्भर करता है कि हमें अपने देश को खोखला बनाना है या ताकतवर? मेरे जैसे कई लोग ऐसे लेख लिखते हैं, लोग उन्हें पढ़ते हैं और पढ़कर के भूल जाते हैं पर मैं समझती हूँ कि ये समय पढ़कर भूलने का नहीं उस पर अमल करके दिखाने का है क्योंकि हमारे देश में लोकतंत्र है, और लोगों को अपनी ताकत पहचाननी ही होगी।

*** *** ***

महाराणा प्रताप

नमन मिश्र
षष्ठ 'ख'

झूम झूम बादल बादल, बस उसका राग सुनाता था।
उस बालक के कदमों को, पर्वत भी रोक न पाता था।
मेवाड़ की धरती का हर कण, जिसे अपना लाल बुलाता था।
वो महाबली, वो महावीर वो महाराणा कहलाता था।
माँ के चरण कमल में, वो अपना शीश झुकाता था,
अपने पिता की आज्ञा को ईश्वर की वाणी बताता था।
जिसकी तलवार की झलक से, दुश्मन का दिल घबराता था।
वो अजर अमर, वो शूरवीर, वो महाराणा कहलाता था।

विचार-हीन मनुष्य ही मूर्ख है। - शंकराचार्य

हमारी अनोखी यात्रा

साधंजय चाकमा
अष्टम 'ग'

यह बात चौदह अक्टूबर की है जब दशहरा बीत जाने के पश्चात् हमलोग पता न होने के कारण दशहरा देखने छात्रावास से 9 बजे रात्रि बाहर निकले। कक्षा अष्टम एवं नवम के छात्रों को ग्रुप बनाकर छात्रावास से छुट्टी दी गई। उसके बाद हम सब सीनियर तथा जूनियर ग्रुप में बाहर घूमने निकले। मेरे ग्रुप में भी छः छात्र थे। हमसब पहले आजाद नगर के रावण का पुतला देखने निकले। जाते समय आधे रास्ते पर पता चला कि रावण कल ही जल गए हैं। तब हम सब निराश होकर लौटने लगे। तभी हम सबने निर्णय लिया, कि रावतपुर चलते हैं, वहाँ से खा-पीकर टैम्पो में बैठकर रावतपुर पहुँचे। वहाँ से हमलोग रेवमोती गये। वहाँ हम-सब आधा-घण्टे घूमे, खाये-पिए। तत्पश्चात् हम-सब वापस लौटने के लिए फिर टैम्पो स्टैण्ड पहुँचे। तब-तक ग्यारह बज चुके थे। वहाँ हम सब वाहन का इंतजार करने लगे। दस मिनट बीत गये। फिर भी कोई टैम्पो नहीं दिखाई दिया, तब साथियों ने यह निर्णय लिया कि हम सब पैदल चलते हैं। मै चलने को तैयार नहीं था, फिर साथियों के कहने पर राजी हो गया। फिर क्या हम सब रावतपुर से अपने विद्यालय (छात्रावास) आने लगे। थोड़ा चलते थोड़ा दौड़ते पुलिस के दिखाई देने पर धीमा हो जाते। हमारा एक मित्र सत्यांक थोड़ा शरीर से सुस्त था। उसके लिए भी हम सबको थोड़ा रुक-रुक कर चलना पड़ रहा था। चलते-दौड़ते हम सब कम्पनी बाग पहुँचे, फिर भी टैम्पो नहीं दिखाई दिया। नवाबगंज पहुँचते-पहुँचते एक टैम्पो दिखाई दिया जोकि हर तरफ से भरा हुआ था। छात्रावास पहुँचने तक बारह बज चुका था। हम सब चुपके से छात्रावास में गये क्योंकि थोड़ी देर हो गई थी। फिर भी हम सबको श्री शिवमोहन आचार्य जी मिले। देर होने का कारण बताकर छात्रावास में सो गए। इस अनोखी यात्रा में मेरे अलावा बिहार के पाँच विद्यार्थी थे, जो ऋतेश कुमार, राजीव कुमार, सत्यांक, साकेत, शुभम कुमार, विश्वजीत कुमार तथा मै अरुणाचल प्रदेश का था। इस यात्रा को मैं शायद कभी नहीं भूलूँगा। इस यात्रा को अनोखा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अपने प्रदेशों से आने के बाद हम लोगों ने पहली बार इतनी लम्बी पैदल यात्रा की थी।

*** *** ***

जय श्री हनुमान

राजदीप सिंह चौहान
एकादश 'ख'

जय हनुमान! श्री भगवान! दया करो हे कृपानिधान।
तेरे द्वारे पर मैं आया, हो जाए धन्य ये जीवन प्रान।
जय हनुमान.....
हर पल तेरे ही गुण गाऊँ, याद करूँ बस तुमको ध्याऊँ।
बस एक वर मैं चाहूँ तुमसे, चरण-शरण लग जाये ध्यान।
जय हनुमान.....
तुम्हारा ही है ये जग सारा,मैं तो हूँ प्रभु दास तुम्हारा।
इस धरती पर रहूँ मैं जब तक, मुख पर रहे राम का नाम।
जय हनुमान.....

विश्व की प्रमुख गुप्तचर संस्थाएँ

निखिल कुमार सिंह
अष्टम 'ग'

देश	–	गुप्तचर संस्थाएँ
भारत	–	रिसर्च एण्ड इनालिसिस विंग (रॉ)
		इण्टेलीजेंसी ब्यूरो (आईबी)
		सेन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (सीबीआई)
पाकिस्तान	–	इण्टर सर्विसेज इण्टेलीजेंस (आई.एस.आई.)
चीन	–	सेन्ट्रल एक्सटर्नल लेजा डिपार्टमेण्ट
आस्ट्रेलिया	–	आस्ट्रेलिया सिक्योरिटी एण्ड इण्टेलीजेंस ऑर्गनाइजेशन
जापान	–	नाइचो
अमेरिका	–	सेण्ट्रल इण्टेलीजेंस एजेंसी, फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन
ब्रिटेन	–	एम.आई. (मिलिट्री इण्टेलीजेंस)– 5 एवं 6 स्पेशल ब्रांच, अल्ट्रा
कनाडा	–	सिक्योरिटी इण्टेलीजेंस सर्विस
जर्मनी	–	बी.एन.डी. (Bundes Nachrichten Dienst)
इराक	–	अल मुखबरात
रूस	–	केजीबी (कोमितेत गोसुदरस्तवेन्नोई)
फ्रांस	–	एस.डी.ई.सी.ई. (Director General Securite Extericur)

*** *** ***

जन्म जाति से नहीं ...

विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

जन्म जाति से नहीं जगत् में, कोई पूजा जाता ।
उच्च वंश ही बस मनुष्य को, नहीं महान बनाता ।।
गुण समूह पर ही आधारित, है सर्वथा महत्ता ।
होता बड़ा काम करने पर, ही शुभ यश की सत्ता ।।

मौन ज्ञानियों की सभा में अज्ञानियों का आभूषण है। – भर्तृहरि

नागरिकों के मूल कर्तव्य

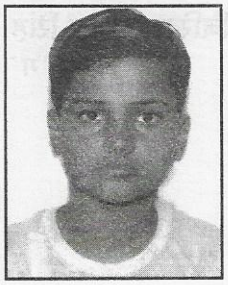

शेखर कुमार
सप्तम 'ख'

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह–

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो;

(च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाईयों को छू सके;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छः वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु चाले अपने यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

*** *** ***

मीठे-नमकीन - चुटकले

आकाश गुप्त
अष्टम 'ग'

1. एक बार एक आदमी कहता है कि अगर मेरे हाथ में कांग्रेस की सरकार हो तो मैं पूरे भारत को सीधा कर दूँगा। पत्नी – पहले अपना पतलून सीधा कर लो सुबह से उल्टा पहन रखा है।
2. एक बार एक आदमी डूब रहा था तो उसने कहा गणेश जी बचाओ। तो गणेश जी उसके सामने आकर नाचने लगे। आदमी – आप नाच क्यों रहे हैं? गणेश जी – जब मेरा विसर्जन हो रहा था तब तुम नाच रहे थे। अब मैं तेरे विसर्जन में नाचूँगा।
3. एक बार एक बरात में दूल्हें के मुँह पर पट्टी बाँध रखी थी तो राहगीर ने पूछा– "इसके मुँह पर पट्टी क्यों बाँध रखी है। बाराती – यह बगल की गली का नेता है यदि भीड़ देखेगा तो भाषण देना चालू कर देगा।
4. एक लड़की साइकिल से आ रही थी। रास्ते में गोबर पड़ा था उसने उसके ऊपर साइकिल चढ़ा दी। एक लड़का – केक कट गया। लड़की लौटकर आई। तो लड़का भागने लगा। लड़की – अरे केक कट तो गया अब आकर खा भी तो लो।

माता अपने कुरूप बालक को भी सुंदर समझती है। – प्रेमचन्द

अमृत की रजत बूँदे

सचिन पाठक
एकादश 'क'

- मूर्ख व्यक्ति दीपक तले अंधेरा देखते हैं, उद्घोषक दीपक के चमकते प्रकाश को तथा विद्वज्जन इस प्रकाश में स्वयं का अवलोकन करते हैं।
- विशिष्ट तथा महान व्यक्तित्व के लोग दीपक की भाँति स्वयं जलकर दुनिया में प्रकाश फैलाते हैं।
- कृष्ण इतना कृष्ण है कि उसका ध्यान करते ही तुम्हारे समस्त दोषों का हरण कर तुम्हें सूर्य की भाँति बना देगा।
- कभी किसी को छोटा मत समझो। पैर मारते समय धूल का कण यद्यपि नेत्र में प्रविष्ट कर जाये तो अत्यन्त कष्ट देता है।
- सत्य को सदैव अपना कवच और हथियार समझो। इसे अपने से दूर मत करना, हर रणक्षेत्र में तुम्हारी ही विजय पताका फहरायेगी।
- क्षमा, दया, दान और क्रोध न करना ये चार गुण ही बड़प्पन और महानता के लक्षण प्रदर्शित करते हैं।
- ज्ञानियों की सभा में अज्ञानियों का भूषण मौन है, जो इसे धारण करता है उसे ज्ञानियों की सभा में भी सम्मान मिलता है।
- नकारात्मक विचारों को पोषण मत दो, ये स्वतः नष्ट हो जायेंगे।
- अनजान होना उतनी लज्जा की बात नहीं जितनी सीखने के लिए तैयार न होना।
- तुम जानते हो कि तुम क्या हो, परन्तु तुम ये नहीं जानते कि तुम क्या बन सकते हो।
- सफलता जीवन में दो बार आती है : एक बार मस्तिष्क में और एक बार वास्तविकता में।
- महान व्यक्तित्व के बिना व्यक्ति महान नेतृत्वकर्ता नहीं बन सकता।

*** *** ***

हँसते रहो

अनुराग सिंह
षष्ठ 'ख'

1. **संता** – मैंने आपकी दुकान से मुर्गी दाना खरीदा था। **दुकानदार** – तो क्या उसमें कोई खराबी निकली? **संता** – महीना हो गया मुझे खेत में बोये अब तक मुर्गी नहीं उगी।
2. **चिंटू** की रोटी पर से चूहा गुजर गया। **चिंटू** अब मैं ये रोटी नहीं खाऊँगा। **पप्पू** – खा ले यार, चूहे ने कौन सी चप्पलें पहने हुई थीं।
3. **संता** – यार अच्छा हुआ मैं इंण्डिया में पैदा हुआ, अमेरिका में नहीं। **बंता** – क्यों अमेरिका में होता, तो क्या होता? **संता** – तू भी न बस यार मुझे इंग्लिश नहीं आती है।
4. **संता** – आज टीवी पर 30 फुट का साँप दिखने वाला है। **बंता** – अच्छा पर मैं नहीं देख पाऊँगा। **संता** – ऐसा क्यों? **बंता** – मेरा टीवी 21 इंच का है।
5. **एक** बार संता को रास्ते में पत्थर मिला उस पर लिखा था– पत्थर को पलट लो कुछ बन जाओगे। जैसे ही उसने पलटा, दूसरी तरफ लिखा था 'बेवकूफ बन गया'।

हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान होते हैं। – रवीन्द्रनाथ ठाकुर

माँ

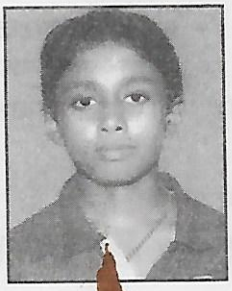

अमर्त्य विधु
षष्ठ 'ख'

माँ कहते ही एक संबल का एहसास होता है, जो किसी भी परिस्थिति में ध्वस्त नहीं होगा। दुनिया का सबसे भरोसा देनेवाला शब्द है यह। 'माँ' यह एक ऐसा शब्द है, जिसकी महत्ता ना तो कभी कोई आँक सका है और ना कोई आँक सकेगा। माँ का उच्चारण अलग-अलग देशों में, प्रांतों में और इलाकों में भले ही अलग-अलग है, पर इसका भाव एक ही होता है। माँ शब्द में ही जो प्यार, दुलार और अपनापन है, उतना शायद किसी अन्य शब्द में नहीं है। माँ वह जो अपने बच्चों को प्यार, दुलार से बड़ा करती है, पालती-पोसती है। अपनी परवाह न करते हुए बच्चों की खुशियों के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहती है, प्रार्थना करती हैं और इस माँ के लिए अपने बच्चों की खुशियों से ज्यादा कोई चीज नहीं है। माँ के ही आँचल में पूरा संसार है।

मेरा आदर्श

मेरा आदर्श भारत का वह गरीब किसान है, जो चिलचिलाती धूप में, पसीने से लथपथ, कड़कड़ाती सर्दी में काँपते हुए, बारिश में भींगते हुए भी अपने हल से खेत जोत रहा होता है। मेरा आदर्श भारत की वे गरीब माताएँ और बेसहारा बहनें हैं; जो तार-तार होती हुई धोती को पहन कर पेट की आग बुझाने के लिए घर-घर जाकर बर्तन माँज रही होती हैं। मेरा आदर्श किसी भारतीय विधवा माँ का वह मासूम लाड़ला है, जो कड़कतीं सर्द हवाओं के बीच तन पर पर्याप्त कपड़ों से विचलित न होकर सड़क पर खड़ा मूँगफली और समाचार पत्र बेच रहा होता है। अपने घरों से हजारों कि.मी. की दूरी पर हजारों फीट की ऊँचाई पर आग उगलती हुई तोपों के सामने हाथ में बन्दूक थामे भूख और प्यास की परवाह किए बिना सियाचिन की सीमा पर तैनात भारतीय सेना का वह वीर सिपाही जिसके मन में देश के लिए हजार बार मर-मिटने का जज्बा है, **"वह मेरा आदर्श है।"**

*** *** ***

सतगुरु का प्यार लिख दे

मनु कुमार
अष्टम 'ग'

लिखने वाले तू होकर दयाल लिख दे, मेरे हृदय अन्दर सतगुरु का प्यार लिख दे।
माथे पर लिख दे ज्योति गुरु की, नयनों में उनका दीदार लिख दे।।मेरे०।।
जिह्वा पर लिख दे नाम गुरु का, कानों में शब्द झंकार लिख दे।
हाथों पर लिख दे सेवा गुरु की तन, मन, धन उनपे वार लिख दे।।मेरे०।।
पैरों पर लिख दे जाना गुरु के द्वारा, सारा ही जीवन उनके साथ लिख दे।
इक मत लिखना गुरु का बिछड़ना, चाहे तू सारा संसार लिख दे।।मेरे०।।

कर्मशक्ति तथा इच्छाशक्ति प्राप्त करो, कठोर परिश्रम करो और तुम निश्चित लक्ष्य पर पहुंच जाओगे। - विवेकानन्द

मेरा विद्यालय

यथार्थ मिश्र
अष्टम 'क'

पं0 दीनदयाल विद्यालय हमारा, कितना अच्छा कितना प्यारा।
जनपद में विद्यालय यह न्यारा, हमको लगता सबसे प्यारा।
शिक्षक मेहनत से हमें पढ़ाते, सच्ची राह सदा बतलाते।
बड़ी-बड़ी कठिनाई आतीं, पलभर किन्तु रुक नहीं पातीं।
सभी पढ़ाते सभी लिखाते, आगे-आगे हमें चलाते।
तभी हमारे साथी भाई, मेरिट में स्थान हैं पाते।
सदा उत्तम परिणाम हमारा, पं0 दीनदयाल विद्यालय हमारा।
हमको लगता सबसे प्यारा।।

कश्मीर की तस्वीर भी नहीं देंगे

भारत महान था और आज भी महान है। इसलिये विश्व में भारत का सम्मान है।।
हमने सभी से दोस्ती को हाथ बढ़ाया है। लेकिन हमारे पड़ोसी ने दोस्ती पर दाग लगाया है।।
शुरू करायी थी बस-सेवा उनसे दोस्ती का हाथ बढ़ाकर।
जवाब दिया दोस्ती का उसने कारगिल में घुसपैठ कराकर।।
दे दी खुली शह आतंकवाद को, मौत का तांडव करा दिया।
इसी जमीं की जन्नत कश्मीर में, भाई से भाई को लड़ा दिया।।
कारगिल में पाकिस्तान ने चोरी से घुसपैठ कराई। भारत के सीने पर उसने फिर अपनी बंदूक चलाई।।
लेकिन भारत के वीरों ने, जाकर अपना लहू बहाया। मार भगाया पाकिस्तानियों को, दूध छटी का याद दिलाया।।
ख्वाबों में भी भूल जाओ, हम कश्मीर नहीं देंगे।
अरे काफिरो! कश्मीर तो क्या कश्मीर की तस्वीर भी नहीं देंगे।।
आँख उठाकर यदि देखा तो, आँख फोड़ रख देंगे।
अभी तो बाँग्लादेश बना है, टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।।
भूल गया सन् पैंसठ को, क्या आया इकहत्तर याद नहीं।
बंग्ला मोर्चे पर मुँह की खाई, क्या ये सब कुछ याद नहीं।।
बाज नहीं आया पाकिस्तां, तो उसका अंत समय आयेगा। सच कहते हैं शान तिरंगा, लाहौर में फहरायेगा।।
जमींदोज करके रख देंगे, फिर तुझको वीरान करेंगे। भारत माँ के सच्चे सैनिक, तेरा काम तमाम करेंगे।।
यदि उबाल आया लहू में, फिर रुकने का नाम न होगा।
हिन्दुस्तान की कसम फिर इस धरती पर, पाकिस्तान का नाम न होगा।।

• • •

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष शुद्ध किया हो

- स्वामी शंकराचार्य

मृत्यु सारे प्राणियों को भगवान की दी हुई देन है। फर्क सिर्फ समय और तरीके का है। - महात्मा गांधी

युद्ध

शिवम सिंह
एकादश 'क'

युद्ध आरम्भ हो चुका था। सीमा की ओर बड़े-बड़े ट्रकों का ट्रैफिक बिना रुके चल रहा था। एक जगह ऊबड़-खाबड़ रास्ते में एक ट्रक को जोर का उछाला लगा। उसमें से दो डिब्बे बाहर सड़क के किनारे आ गिरे। एक डिब्बे में से एक बन्दूक बाहर निकल आई। दूसरे में से खून से भरी एक बोतल। दोनों ने अपने आप को संभाला, दोनों की नजर एक-दूसरे पर पड़ी। बंदूक ने तुरन्त खून से भरी बोतल पर से नजर हटा ली और छलांग लगाकर युद्धक्षेत्र की ओर चल पड़ी।

खून की बोतल ने भी कदम बढ़ाते हुये कहा, "अरे भाई तुम्हें इतनी जल्दी क्या है? मुझे भी तो वहीं जाना है।" बन्दूक ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। तेजी से आगे बढ़ते हुये बोली, "पहले मै वहाँ पहुँच कर अपना काम करूँगी तभी तो तुम्हारी जरूरत पड़ेगी। मुझे बहुत जल्दी है।"

योग्यता की कोई सीमा नहीं होती

ऐसी मान्यता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य की स्मरण शक्ति क्षीण होती जाती है। 40 की उम्र के बाद व्यक्ति के दिमाग के न्यूरांस खत्म होना शुरू हो जाते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि न्यूरॉन की संख्या में यह कमी इतनी मामूली होती है कि इसका व्यक्ति की स्मरण शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यदि प्रभाव पड़ता भी है तो इसका कारण यह होता है कि मनुष्य ऐसा मान चुका होता है।

अपनी स्मरण शक्ति पर अविश्वास होने के कारण कई बार मनुष्य स्मरण करने का प्रयास ही नहीं करते। वर्तमान के कृत्रिम स्मरण शक्ति उपकरण मनुष्य की स्मरण शक्ति को क्षीण करते हैं।

संभवत: आपका परिचय एक ऐसे छात्र से हो, जो अधिकतर समय किताब पढ़ने में व्यतीत करता है। वह अन्य कामों को बिल्कुल समय नहीं देता हो लेकिन साल के अन्त में जब उसकी अंक तालिका मिलती है तब उसके अंक सबसे कम होते हैं। तब यह समझना मुश्किल हो जाता है कि ऐसा क्यों हुआ? इसका जवाब बिल्कुल सीधा-सा है। प्रश्न यह नहीं है कि आपने किताबों के साथ कितना समय बिताया बल्कि सवाल है कि आपने कितनी एकाग्रता से पढ़ाई की है। आशय यह है कि -

दिमाग को भी आराम चाहिये क्योंकि-

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

बच्चे का वर्तमान शैक्षिक स्तर कैसा भी हो लेकिन उसकी बौद्धिक क्षमता को विकसित करने और उसे उन्नत बनाने के लिये उसे हर हाल में पाठ्येत्तर गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

दुर्भाग्य से बहुत से विद्यार्थी इस बात में विश्वास रखते हैं कि उनका शैक्षिक स्तर एक सीमा के बाद नहीं बढ़ सकता। लेकिन सच्चाई यह है कि किसी भी योग्यता की सीमा नहीं होती। **आपकी सीमा वही बन जाती है जिसे आप मान लेते हैं, जिससे आगे बढ़ना आपके लिये नामुमकिन हैं।**

***

बेटी

(विद्या की अधिकारी)

सौरभ शुक्ल
दशम 'ग'

एक बालिका, घर के बाहर खड़ी
अम्बर को देख रही है।
वो नन्हीं सी जान,
अम्बर में ऊँची-ऊँची
उड़ाने भरना चाहे।
धरती पर अच्छे कर्मों के,
सौ बीज बोना चाहे।
अंदर से आवाज आई,
बेटी के सपने टूट गए।
माता अनामिका पकड़ कर,
घर के भीतर खींच लाई।
वो विद्या की अधिकारी,
सकल ताड़ना की है मारी।
काम-काज का बोझ है,
पिता पड़े-पड़े सोता है।
बेटी का वजूद,
कोने में पड़ा रोता है।
अरे सज्जन! तेरे दिमाग में हैं फैले,
कुबुद्धि के कीड़े दर्जन।
सिर्फ नौ वर्ष में ही,
बेटी क्यों करी बिदा?
ज़रा सोच.....
क्या तू खुश रह पाएगा सदा?
अपनी न सही, बेटी की तो सोची होती।
आज तेरी बेटी, अपने कदमों पे खड़ी होती।
बालविवाह की अग्नि में जलकर,
भस्म हो गई तेरी बेटी।
बेटी की आशा पर फिर गया पानी
बता-क्या बेटी थी तेरी परेशानी?
क्या यही है बेटी की कहानी?

बेटियाँ

आकांक्षा श्रीवास्तव
नवम 'ख'

फूल की पंखुरी सी होती है बेटियाँ।
बाबुल के होठों की बाँसुरी ये बेटियाँ।।
पराई कहलाकर भी अपनी रहती हैं, बेटियाँ।
हीरा हैं बेटे अगर तो मोती हैं ये बेटियाँ।।
हक चाहे बिना कर्तव्य निभाती हैं बेटियाँ।
दो-दो कुलों की लाज निभाती हैं बेटियाँ।।
रहें भले महलों में, सुख के झूलों में झूले।
बाबुल के दुःख में मुरझा जाती हैं बेटियाँ।।
सामाजिक परम्परा कहें या विधि का विधान।
आँगन संग दिल भी खाली कर जाती हैं बेटियाँ।।

आजादी का मतलब

पूर्व से पश्चिम तक
काश्मीर से कन्याकुमारी तक
आजादी मिली है
जब से, आज तक
एक ही सवाल
क्या है
आजादी का मतलब?
आजादी का मतलब
तोड़फोड़, निरंकुशता नहीं
आजादी का मतलब
अधिकारों का दुरुपयोग नहीं
आजादी का मतलब
सबल और निर्बल की
लड़ाई नहीं
आजादी प्रश्नवाचक चिह्न नहीं
आजादी पूर्णविराम भी नहीं
आजादी है-
प्रगति का अल्पविराम
ईमानदारी के साथ काम

लिखो तो कुछ ऐसा लिखो

गौरव शुक्ल
द्वादश 'ख'

लिखो तो कुछ ऐसा लिखो, कलम रोने को मजबूर हो जाए
आज आसमाँ भी जमीं से मिलने को मजबूर हो जाए।।
ख्वाब मेरे भी यूँ तेरे ख्वाबों में खो जाएँ
ये दिल भी अब रो रहा उस मातृभूमि के लिए
शहादत दे दी न जाने कितनों ने उसकी रक्षा के लिए
लिखो तो कुछ.....
सोचता हूँ बात मैं ये न जाने क्यों इतनी
क्या होगा अब देश की दयनीय हालत है जितनी
खंजर भोंक दिया सीनें में तुमने चंद पैसों के खातिर
हो गये नंग सरे बाजार तुम चंद शोहरत के खातिर
लिखो तो कुछ.....
सारा जमाना तेरी अच्छाई में यूँ मशगूल हो जाए
पूछता हूँ उनसे भी मैं क्यों खण्डित कर दिया देश को
कर दूँ उनके भी यूँ टुकड़े तो क्यों न तड़पे वो भी ऐसे
माँ को तूने माँ न समझा द्रौपदी की तरह बाँट दिया
अब न होते कृष्ण साँवरिया, जिसने चीर हरण उसका बचा लिया।
लिखो तो कुछ.....
देता हूँ चेतावनी उनको परवाह नहीं माँ की जिनको
कहता हूँ संभल जाओ अभी भी मौका न मिलेगा फिर कभी भी।
रावण का भी अहं टूटा था उस राम के सामने
तुम तो फिर भी मच्छर हो जनताजनार्दन के सामने
लिखो तो कुछ.....
अब साहस नहीं बचा कलम में, ये तो तूफान के पहले की शान्ति है आलम में।
उबल रहा है देश पड़ चुकी है इन्सानियत की मिठास
बन के तैयार हो जायेगा एकता का नया इतिहास
अब विराम लेता हूँ मैं लौटूँगा फिर नये जोश के साथ
लिखने आऊँगा मैं फिर भारत का नव्य इतिहास
लिखो तो कुछ.....

दो धर्मों का कभी झगड़ा नहीं होता। सब धर्मों का अधर्मों से ही झगड़ा है। - विनोबा भावे

चुनावी ड्रामा २०१४

गौरव शुक्ल
द्वादश 'ख'

आ गया मौसम चुनावी, शुरू हुई नेताओं की बयानबाजी
कहते हैं लोग, है ये सबसे बड़े चुनाव भारत के इतिहास का
कहता हूँ, मैं ये तो शुरुआत है पंजे के सत्यानाश का
हर तरफ लहर है, सिर्फ मोदी के नाम की
कहीं-कहीं बूँद पड़ जाती है, राहुल और मुलायम की।

....

सब सिर्फ बयान दे के जाते हैं
फिर पाँच साल जनता को बजाते हैं
छोटी-मोटी रैलियों में ही, करोड़ों खर्चा हो जाता है
जाँच करवाओ तो मालूम पड़ा ये तो दान से आते हैं।

....

न मोदी न राहुल कोई न हमें बचाएगा
आपका आत्मविश्वास ही आपको न्याय दिलाएगा
ये सब तो सिर्फ मेंढ़क चुनावी, बस अभी ही टर्राते हैं
बाकी पाँच साल सुअरों की तरह खाते हैं-
विकास के नाम पे झूठी ढपली बजाते हैं।

....

इनके काम तो सिर्फ दंगे कराना है
बाद में पीड़ितों के घर पहुँच जाना है।
फिर शुरू हुई बयानबाजी, मीडिया भी करता है मेहमाननवाजी
चार दिन चलती है जाँच, सबूत मिटाने की।
भाई ये तो पुरानी तरकीब है, जनता को बेवकूफ बनाने की।

....

धर्म के नाम पे जाति के नाम पे वोट मत करना
नहीं तो पाँच साल सिर्फ पानी भरना,
कोई अच्छा नहीं है राजनीति में, कोई सच्चा नहीं है राजनीति में
बता दो इनको हे भइयो, कोई बच्चा भी नहीं, अब आवाम नीति में
जय हिंद-जय भारत का करता हूँ गुणगान
बता दो अब इनको, अब नहीं हम नादान

सुमन

गोविन्द सिंह गौर
एकादश 'क'

कितना अनुपम सुन्दर है खिला,
सुवासित कान्तियुक्त सुमन।
सुगन्धित हो रहा है इससे,
बाग-बगिया और चमन।।

करते हैं मधुर ध्वनि भ्रमर
बैठे हैं जो सुमन पर।
ग्रहण कर मकरन्द को वे,
चलते हैं राह अमन पर।।

भगवान भास्कर की किरण से,
कान्तियुक्त होता सुमन।
झुला रहे हैं झूला जिसको,
प्राणदायक श्री पवन।।

कवि की अमिट गिरा में तू,
सहज है सुन्दर सुमन।
हो रहा उपयोग तेरा,
करने प्रभु का मन प्रसन्न।।

है न तेरा वास्ता,
मजहब और जाति से।
प्रसन्न करना है सभी को,
हर तरह हर भाँति से।।

हे मनुज सीख तू भी,
कहता है क्या पावन सुमन।
चल राह पर तू प्रेम की,
और चल पथ पर अमन।।

वर्षा ऋतु

गोविन्द सिंह गौर
एकादश 'क'

वर्षा ऋतु का है अभिनन्दन
मेघों का हो रहा है गर्जन
काली घटा गगन में छायी
पूरब से चले पुरवायी।
हुआ आनन्दित कृषक का मन
जल बूँद गिरी जब उसके तन
बो रहा मक्का बो रहा धान
खेतों में पहुँचा है किसान
बालक वृद्ध और नर-नारी
बाग बगीचों की फुलवारी
खुशी से सब फूल रहे हैं
बच्चे झूला झूल रहे हैं
हर्षित हुए हैं मोर-मोरनी
वसुन्धरा ने ओढ़ी ओढ़नी
हरी-भरी हो गयी है धरती
प्रतीक जो समृद्धि का होती
बच्चों ने है नाव बनायी
फिर उसको जल में तैरायी
देख सभी हो रहे मगन
ईश्वर को कर रहे नमन
जल की चाह सभी को होती
बिन बारिश सूनी है खेती
करो संरक्षण सदा ही जल का
है जीवन यही हमारे कल का
वृक्षों के पत्तों पर यह जल
मोती सम है प्रतीत होता
अमिट गिरा में कवि की यह जल
अमृत से भी बढ़कर होता।

जी लो खुल के इन पलों को 'दोस्त'

हर्ष यादव
दशम 'ग'

एक दिन जिन्दगी ऐसे मुकाम पर पहुँच जाएगी,
दोस्ती सिर्फ यादों में रह जाएगी,
हर एक कप कॉफी याद दोस्तों की दिलाएगी,
और हँसते-हँसते आँखें नम हो जाएंगीं,
ये दोस्ती की बारिश फिर से न आएगी,
चाहने पर भी यादें दिल से न जाएँगी,
ऑफिस के चेम्बर में क्लास रूम नजर आयेंगे,
पैसा तो होगा, पर खुशियाँ इतनी शायद न होंगी
जी लो खुल के इन पलों को 'दोस्तो'
जिन्दगी इन पलों को फिर से न दोहराएगी,
क्या इन पलों की कोई कीमत हो सकती है?

जिन्दगी एक गीत है

जिन्दगी एक गीत है, इसमें हार है, जीत है, एहसास है, प्रीत है,
जिन्दगी एक गीत है, इसमें प्यार है, तकरार है, इकरार है, इनकार है,
यही तो सच्ची मीत है, जिन्दगी एक गीत है।
इसमें आस है, विश्वास है, हिम्मत है, साहस है,
यही तो अपनी जीत है, जिन्दगी एक गीत है।।
इसमें रंग है, उमंग है, लहर है, तरंग है, यह तो एक पतंग है,
जिसमें अपनों का संग है, मिलना बिछड़ना एक रीत है,
यही जीवन संगीत है, जिन्दगी एक गीत है।

"मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, पवित्र है या अपवित्र"।

– वाल्मीकि

"मैं तो शुरू से ही यह मानता आया हूँ कि अहिंसा ही धर्म है, वह जिन्दगी का एक रास्ता है"

– महात्मा गाँधी

"जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फूलता-फलता है जितने वर्षों तक वह वृक्ष फूलता-फलता है।

– पद्मपुराण

प्रार्थना

मयंक राज भदौरिया
अष्टम 'ग'

आओ करें ये कामना, संसार सब सुख में रहे।
संसार का हर आदमी, कभी न दुख में रहे।।
हो हर तरफ नई जिन्दगी, और सुखों का संचार हो।
चेहरे खिले मौज मने, सुख की हरेक बौछार हो।।
प्रीत की पींगें बढ़ें, न दुखों का संसार हो।
नव उमंग और चेतना का जीवन में संचार हो।।
कामना संसार की न, इस जीव के वश में रहे।
संसार का हर आदमी, कभी न दुख में रहे।
हर कामना की पूर्ति, ईश्वर सदा करता रहे।
कर्म हो सत्कर्म मेरे, और ज्ञान की चर्चा रहे।।
इस जिन्दगी का मूल्य क्या, कीमत मुझे मिलती रहे।
मैं मान जीवन का करूँ, चाहे उम्र ये ढलती रहे।।
लक्ष्य मेरा है यही, यह जिन्दगी चलती रहे।
संसार का हर आदमी, कभी न दुख में रहे।।

*** *** ***

पूजनीय शिक्षक

अश्विनी शाण्डिल्य
अष्टम 'ग'

मिला है प्यार बरसों से हम कभी न भूल पाएँगे।
विद्या मिली जो आपसे हम कभी न किसी से पाएँगे।
हम तो कच्ची माटी के बने थे, आपने हमें पक्के खिलौने बनाया,
जिन्दगी के कठोर पथ पर, अच्छी तरह से चलना सिखाया।
आप और हम ही नहीं दोस्तो, सारा जमाना कर्जदार है उनका।
आपने जो कर्ज दिया है कभी न चुका पाएँगे हम।
अमूल दीप वरदान का यूँ ही लुटाते रहना।
अगर आप न होते इस जहाँ में तो यहाँ अज्ञानता का बोल बाला होता,
परमात्मा के बाद कर्जदार हैं आपके। आपने हमें जीना सिखाया।
"उच्च शिक्षा में ठेकेदारी, बिकती नहीं दो चारों से।
जैसे गंगा में एक मछली, गंदा न करे किनारों को।।"
साक्षरता अभियान चलाकर हम पर्वत से ऊँचे बन जाएँ।
सब मिल आगे बढ़कर निरक्षरता के तूफानों से टकराएँ।।

छली गधा

धनुर्धर त्रिपाठी
सप्तम 'ख'

गधा एक था चरता वन में। बड़ा कपट था उसके मन में।।
कहीं सिंह का चमड़ा पाया। उससे उसने रूप बनाया।।
सबको डर दिखलाता था वह। अच्छे मजे उड़ाता था वह।।
चर जाता था सबके खेत। सब डरते थे उसको देख।।
कहता था- 'मैं वन का राजा'। खूब हुआ था मोटा ताजा।।
वन-पशुओं को आँख दिखाता। सब पर जमकर रोब जमाता।
रात एक उजियारी आयी। खूब गधे के मन में भायी।।
चरने लगा खेत में जाकर। रखवाले सब भागे डरकर।।
कोई गधा कहीं चिल्लाया। बस, इसने भी कान उठाया।।
लगा रेंकने मुख ऊपर कर। भेद खुल गया उसका सब पर।।
रखवालों ने लट्ठ उठाया। मार मारकर खूब छकाया।।
जो देता औरों को धोखा। वह पाता ऐसा फल चोखा।।

*** *** ***

झूठ बोलने का फल

एक गड़रियेका था बाल। बड़ी बुरी थी उसकी चाल।।
भेड़ चराने जंगल जाता। झूठ-मूठ वह था चिल्लाता।।
'दौड़े अरे भेड़िया आया। उसने मेरा भेड़ उठाया'।।
लोग दौड़कर थे जब आते। उसे मजे से हँसते पाते।।
सचमुच एक भेड़िया आया। तब वह मूर्ख बहुत चिल्लाया।।
पर उसको सब झूठा जान। रहे बैठ बिलकुल चुप तान।।
भेड़ भेड़िया लेकर भागा। पछताया वह बाल अभागा।।
झूठ बोलते हैं जो बच्चे। लोग न कहते उनको अच्छे।।
हैं खोते सबका विश्वास। पछताते सब खोकर आस।।

*** *** ***

तितली

"तितली क्यों खूबसूरत होती है?" एक बच्चे ने पूछा।
"इसलिये कि वह खूबसूरत फूलों के साथ रहती है।"
"और फूल क्यों इतने खूबसूरत होते हैं?"
"इसलिये कि उन्हें काँटों से भी निबाह करना आता है।

ईश्वर बड़े-बड़े साम्राज्यों से विमुख हो जाता है, किन्तु छोटे-छोटे पुष्पों से कभी खिन्न नहीं होता। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

देश गीत

अमरेश गुप्त
सप्तम 'ग'

भारत के वीर बाल हम इन्सान बनेंगे।
राणा शिवा गोविन्द की पहचान बनेंगे।।
बलिदान दिये लाख तब आया ये जमाना।
इसको बड़ी तेजी से है आगे को बढ़ाना।।
गाँधी के सपने पूर्ण करो तुमको कसम है।
भारत के चमन में अब नए पौध लगाना।।
दो दिन से ही ईमान से मेहमान बनेंगे।
राणा शिवा गोविन्द की पहचान बनेंगे।।

... ...

गंगा जी कहो धरती कहो केसरी प्यारी। सोने की द्वारिका पूरी दुनिया से न्यारी।।
कण-कण में नए रूप नए रंग नए हैं। रत्नों से भरी धरती अपनी जान से प्यारी।।
विद्या का वरदान ले तूफान बनेंगे। राणा शिवा गोविन्द की पहचान बनेंगे।।

... ...

आलस्य ही सिखाए कि यह धर्म तेरा नहीं है। बेचे जो देश को वह कर्म तेरा नहीं है।।
जिसमें न देश प्रेम हो वो मंदिर नहीं तेरा। बुजदिल हो आदमी कर्म तेरा नहीं है।।
भारत के वीर बाल हम इन्सान बनेंगे। राणा शिवा गोविन्द की पहचान बनेंगे।।

*** *** ***

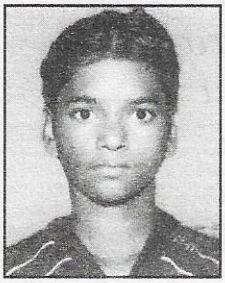

मेरे सपने

कुन्दन राज
षष्ठ 'क'

जब कदम ठिठकने लगते हैं, तब सपने ही देते हैं बल।
उत्साह पूर्ण जीवन करते, देखे जो सपने थे पल-पल।
जब देखे थे मैंने सपने, कुछ आशा कुछ विश्वास था मन में,
उसमें मेहनत का रस जो डला मिला ध्येय सम्बल जीवन में।
सपने अम्बर को छूते हैं, सागर को भी करते अपना,
जिससे मिलता है मुझे सुकून, ऐसा ही है मेरा सपना।
सपने तो ध्येय दिखाते हैं, करते हैं उत्साहित ये मन।
जैसे फूलों से बना है, सुरक्षित मधुमय सम्पूर्ण चमन।

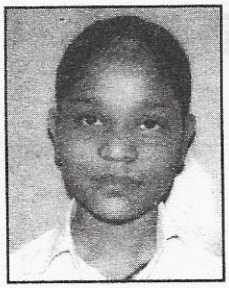

श्री हनुमान

कंचन वर्मा
नवम 'ख'

श्रीराम के भक्त थे हनुमान,
हनुमान थे अत्यधिक शक्तिमान।
सब करते थे हनुमान को प्रणाम,
हनुमान करते थे राम को प्रणाम।
श्री राम थे, विष्णु के अवतार, हनुमान थे, शिव के अवतार।
वे रखते थे सुरक्षितराम दरबार, राम राज्य था धनवान।
हनुमान भी थे अत्यधिक महान, जिससे चिन्तामुक्त रहते थे श्री राम।
राम के दूत अत्यधिक बलवान, नाम था पवनसुत हनुमान।
थे अंजनी माता की संतान, हर वेदों का था उनको ज्ञान।
थे पवन देव की प्रिय संतान, हनुमान हमें दो राम भक्ति रसखान।

• • •

नारी को सम्मान दिलाएँ

संसार की अबलाएँ जायें तो कहाँ जाएँ, यह प्रेम की प्रतिमाएँ जाएँ तो कहाँ जाएँ
इनके तो जन्म से ही पहले सजें चिताएँ, जन्में तो बाप माँ घर पर खुशियाँ नहीं मनाएँ
कैसा समाज ये कैसी हैं मान्यताएँ, यह.....
ससुराल में गई तो, होली गई जलाई, बाजार में गई तो, बोली गई लगाई
अब आप ही बताएँ जाएँ तो कहाँ जाएँ, यह.....
माँ बहन और बेटी, पत्नी कभी सहेली, बाँटे खुशी सभी को, फिर भी रहे अकेली
कैसा अजीब प्रचलन कैसी है ये प्रथाएँ, यह.....
दुश्चक्र चल रहा है, संसार छल रहा है, जागो जगाओ सबको, अब युग बदल रहा है
आओ हम एक होकर आवाज ये उठाएँ, यह.....
अब नहीं अबलाएँ, नारी की शक्ति जानो,
इस मर्म को पहचानो इस बात को भी मानो,
हकदार हैं ये जिसकी सम्मान वह दिलाएँ,
यह प्रेम की प्रतिमाएँ, अब हैं नहीं अबलाएँ।

• • •

कलाकार का आरंभ ही शैशव के पुनरुत्थान से होता है। = रामधारीसिंह 'दिनकर'

नारद जी द्वारा प्रजापति दक्ष के पुत्रों से किए गुए कुछ प्रश्न

1. वह कौन सी स्त्री है जो अनेक रूप धारण कर सकती है–

- अपनी बुद्धि ही बहुरूपिणी स्त्री है जो गुणों के अनेक रूप (सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी) धारण कर सकती है।

2. वह कौन सी नदी है, जिसका प्रवाह दोनों ओर है?

- माया दोनों ओर बहने वाली नदी है यह सृष्टि भी करती है और प्रलय भी।

3. पच्चीस पदार्थों का बना वह कौन सा मकान है?

- मनुष्य ही पच्चीस पदार्थो का बना वह मकान है जो उसका आश्चर्यमय आश्रय है।

4. विचित्र कहानियों वाला हंस कौन सा है?

- भगवान् का स्वरूप बतलाने वाला शास्त्र, हंस के समान नीरक्षीर विवेकी है।

5. छुरे और वज्र से भी कठोर वह कौन सा चक्र है जो अपने आप घूमता है?

- काल ही वह चक्र है जो निरंतर घूमता रहता है। इसकी धार वज्र और छुरे से भी कठोर और तीखी है। इसको रोकने वाला कोई नहीं है।

6. कौन सा पथ है जिस पर चलकर पुनः लौटना नहीं पड़ता?

- मोक्ष के मार्ग पर चलकर पथिक को पुनः लौटना नहीं पड़ता।

*** *** ***

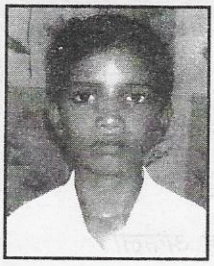

रिश्वत

अक्षत
अष्टम 'क'

महाभ्रष्ट कहकर उनको, हम फूले नहीं समाते हैं
काम बनाना हो, जब अपना पास उन्हीं के जाते हैं
ले-देकर जैसे भी हमको काम करना आता है
खुद को साफ और सुथरा उनको भ्रष्ट बताना आता है
हैं दोनों ही भ्रष्ट आचरण रिश्वत का लेना-देना
क्यों याद नहीं रहता हमको अनुचित है रिश्वत देना
चौराहे पर खड़े सिपाही ने जब हमको रोका था
हेलमेट कहाँ है तुम्हारा? कहकर उसने टोका था
दस-दस के थे दस नोट जो उसकी ओर बढ़ाए थे
इनके बल पर ही हम आगे बढ़ पाए थे
यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो हम सबको आगे आना होगा
शुद्ध आचरण अपनाकर हमको खुद को स्वच्छ बनाना होगा।

सच्चे कवि तो वे माने जाते हैं, जो मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देख सकें। — महात्मा गांधी

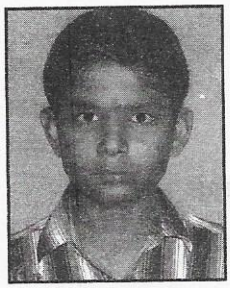

अभिनन्दन

अश्विनी शाण्डिल्य
अष्टम 'ग'

हमारे दीन दयाल का सदा उज्ज्वल रहे यौवन।
इसकी पद प्रतिष्ठा को हमारा कोटि अभिनन्दन।।
सदा जलता रहे दीपक यहाँ, ज्ञान का फैले प्रकाश,
उजाला हो न केवल इस धरणी पर, चूमे ये आकाश।
न हो इसकी प्रतिष्ठा में, कभी कोई कमी भगवान।
सदा हो अग्रसर पथ पर, न हो इसका कभी मन्दन।।
हमारे दीन दयाल का सदा उज्ज्वल रहे यौवन।
इसकी पद प्रतिष्ठा को हमारा कोटि अभिनन्दन।।
जहाँ पर ज्ञान पाकर के, अँधेरा दूर होता है,
जहाँ नैतिक विचारों का मिलन भरपूर होता है।
जहाँ पर ज्ञान और विज्ञान का हो सर्वसम्मेलन,
ऐसे दीन दयाल का चलो हम सब करें वन्दन।।
हमारे दीन दयाल का सदा उज्ज्वल रहे यौवन।
इसकी पद प्रतिष्ठा को हमारा कोटि अभिनन्दन।।
जहाँ पर ज्ञान पाकर के, मिले आगे की दिशा हमको,
जहाँ का लक्ष्य हो कि मिल सके, हर ज्ञान इस जग को।
जहाँ पर ज्ञान का ही नित्य होता है सदा अर्चन,
जहाँ का मारुति मन्दिर सदा, जग में रहे पावन।।
हमारे दीन दयाल का सदा उज्ज्वल रहे यौवन।
इसकी पद प्रतिष्ठा को हमारा कोटि अभिनन्दन।।

*** *** ***

मेरी आशा

अजीत विक्रम सिंह

मैं उमंगों के आसमान पर होकर सवार, चला जाना चाहता था दुनिया के उस पार
दमकते सितारों की पंगत देख हर बार, खो जाना चाहता था इनमें बार-बार
आज मैं समुद्र के किनारे खड़ा हूँ, अपनी उस मूर्खता पर हँस पड़ा हूँ,
दुनिया की बंदिशों से बँध चुका हूँ, अपने सपनों को न चाहकर भी खो चुका हूँ
फिर भी एक आशा की किरण थामें है मेरा हाथ, कह रही है मुझसे कि कट जायेगी ये रात
आज मैं अपनी मूर्खता दोहराना चाहता हूँ, दमकते हुये इन सितारों में खोना चाहता हूँ
उमंगों के आसमान पर हो सवार, जाना चाहता हूँ फिर से उस पार।

चरित्रों से मनुष्य नहीं बनते। मनुष्य चरित्रों का निर्माण करते हैं। - उदयशंकर भट्ट

नजरें ठहरी उस आँगन पर

अनुज शुक्ल
एकादश 'ख'

नजरें ठहरी उस आँगन पर, श्वेत वस्त्र न जिनके तन पर।
और भीतर यूँ काली छाया, सूरज जैसे हो शरमाया।।

... ...

खिड़की, दरवाजे, चौखट, द्वारे पूछ रहे हैं सब बेचारे।
जाते देखा क्या मेरे मन को, छोड़ गया जो अपने तन को।।

... ...

क्या उसको भी मेरी याद न आई,
जिसके आँचल ने हर दीवार सजाई।
वो भी क्या मुझको भूल गया,
मेरी खातिर जिसका कण-कण फाँसी पे झूल गया।
और वो बच्चे जिनका बचपन लगता था मेरा बचपन है,
छोड़ गये, मुझसे उनकी क्या अनबन है।

... ...

ढुत्कार दिया है, तो अब रह लेंगे एकाकी,
पर मकान के घर बनने की आशा रहेगी बाकी।
सोच रहा हूँ मेरी चौखट पर भी कोई दीप जलाये,
इस जलते तन को थोड़ी सी तो आँच दिखाये।

*** *** ***

देश भक्ति गीत

आशुतोष मिश्र
षष्ठ 'क'

बहुत याद करते हैं, शहीदों को हम।
वीरों ने साहस का उठाया कदम।। बहुत याद करते हैं.....
खातिर वतन के सिर हैं कटाये।
सदा देशभक्ति के गीत गुनगुनाये।।
वीरों ने खाई थी माँ की कसम। बहुत याद करते हैं.....
शहीदों की यादों को नहीं हम हैं भूले।
गोलियों को झेला और फाँसी पे झूले।।
चाहत तो वीरों की हुई थी न कम। बहुत याद करते हैं.....
सदा याद वीरों की करते रहेंगे। राहों पे उनकी चलते रहेंगे।।
सदा मुस्करायेंगे भुला करके गम। बहुत याद करते हैं.....

ईश्वर की लीला

जन्में जब हम खुशी की लहर थी, अब अश्कों के सागर बहे जा रहे हैं।
बढ़े जब पहले कदम हमारे बेसहारा थे, अब सहारे के लिए लोग बढ़े आ रहे हैं।
भूखे पेट काटी रातें हैं हमने, अब मुँह में घी भरे जा रहे हैं।
साथ चलने को परिंदा भी राजी न हुआ, अब डोली में बिठाकर लिए जा रहे हैं।
फटे कपड़े पहन कर रह गए हम, अब फूलों से सजाकर लिए जा रहे हैं।
देखकर हमको मुँह फेर लेते थे, अब तारीफों के पुल बाँधे जा रहे हैं।
जीवन में अंधकार मिटाने कोई न आया, अब श्रद्धाजलि पर दिए जले जा रहे हैं।
गंदी सी चादर पर काटी रातें सारी, अब अगरबत्ती के डिब्बे जले जा रहे हैं।
अन्न का दाना पूछा न किसी ने, अब दान-पुण्य के नाम पर समर्पित किए जा रहे हैं।
छत और चहार-दीवारी का सहारा न था, अब समाधि के लिए ईंटे गिरे जा रहे हैं।
यह है महिमा उस ईश्वर उस परमात्मा की,
जिसकी हम सच्चे दिल से आराधना किए जा रहे हैं।

*** *** ***

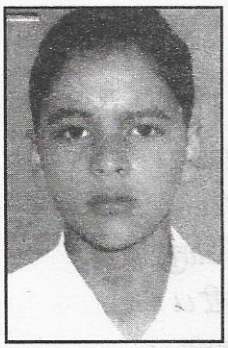

अनमोल वचन

सुधांशु तिवारी
सप्तम 'ग'

1. एक पल का क्रोध आपका पूरा भविष्य बिगाड़ सकता है।
2. मानवता सबसे बड़ा धर्म है।
3. सत्य बहुत कड़वा होता है। परन्तु इसका पालन अत्यन्त मीठा होता है।
4. मेहनत का अंत आराम है।
5. आत्महत्या करना कायरता है।

तीन का महत्त्व

तीन के लिए लड़ो	–	**स्वतन्त्रता, सत्य, न्याय**
तीन का आदर करो	–	**माता, पिता, गुरु**
तीन के गुण गाओ	–	**ज्ञान, दान, सद्‌गुण**
तीन से दूर भागो	–	**आलस, चापलूसी, असत्य**
तीन पर नियंत्रण रखो	–	**जबान, बुरी आदत, क्रोध**
तीन के लिए मर जाओ	–	**आनबान, वतन, इज्जत**

उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो परंतु दूसरो पर दोष मत लगाओ। - स्वामी रामतीर्थ

मम हृदय गीता

सचिन पाठक
एकादश 'क'

गीता परम रहस्यमय जानी। मुख से होय न जोई बखानी।।
सब देवन को सार समंता। हरि, हर, विधि औ भगवंता।।
सब ग्रंथन मय परम पुनीता। तन मन लाई सुनहुँ श्री गीता।।
कह धृतराष्ट्र सुनहुँ सुत संजय। हाल बताय तजहु मम संसय।।
धर्मक्षेत्र में बड़े दोऊ। कहहु तात करत का कोऊ।।
प्रेम सहित संजय तब कहेऊ। द्रोण समीप दुर्योधन गयऊ।।
देख पाण्डव सेना भारी। दुर्योधन तब कहेहु पुकारी।।
तुम प्रिय शिष्य धृष्टद्युम्न देखा। द्रुपदपुत्र अति निपुन विवेका।।
पाण्डुपुत्र सेना अतिभारी। व्यूहाकार करी सब ठाढ़ी।।
सेना बड़-बड़ तीर-कमाना। सूरवीर अस भीम समाना।।
गुडकेश और द्रुपद समेता। काशिराज सहित अन्य विजेता।।

... ...

चलेउ धनुर्धर कपिध्वज, सहित सैन्य अति वीर।
युधामन्यु अभिमन्यु सहित पुरुजित से रणधीर।।
सुन अस वचन दुर्योधन, द्रोण समीप बुलाई।
ज्ञान हेतु तुम्हारे सुत, सेनापति देहुँ बतलाई।।

... ...

कर्ण विकर्ण और भीष्मपितामह। कृपा, द्रोण और अस्वत्थामा।।
भूरिश्रवा सहित औरहु वीरा। सूरवीर सुन्दर मतिधीरा।।
सब के सब रण महि अति चातुर। रण में प्राण तजन कौं आतुर।।
भीष्मपितामह रक्षक ममपारी। सबविधि सेना अजेय हमारी।।
कह 'पाठक' दुर अस अकुलाना। पाण्डु सैन्य अब होइ बखाना।।

(गीता गीत से)

*** *** ***

पाँच का महत्त्व

सुधांशु तिवारी
सप्तम 'ग'

पाँच का पालन करो	–	ब्रह्मचर्य, सत्य, अहिंसा, धर्म, और कर्तव्य
पाँच से दूर रहो	–	स्वार्थी, जुआरी, शराबी, पागल और घूसखोर
पाँच की सेवा करो	–	माता, पिता, गुरू, देश और मनुष्य
पाँच पर मत हँसो	–	विधवा, भिखारी, पंगु, अन्धा और दुखी
पाँच जैसे बनो	–	संयमी, देशभक्त, त्यागी, कर्मठ और स्वरूप

प्रशंसा वह हथियार है जिससे शत्रु भी मित्र बनाया जा सकता है। – दयानन्द सरस्वती

समय की कीमत

मिली श्रीवास्तव
नवम 'ग'

समय की कीमत बहुत अधिक है, व्यर्थ न इसको खोयें हम।
जैसा समय, चलें हम वैसा, दुःख के बीज न बोयें हम।
सदुपयोग करें हम हरदम, समय की गति को पहचानें।
चाल चलें न उल्टी सीधी, काँटे कभी न बोयें हम।
कभी नहीं वह हार मानता, समय पे करता है जो काम।
समय पे सोना समय पे उठना, नियम कभी न तोड़ें हम।
बीत गया जो कभी नहीं वह, समय लौट कर आयेगा।
दुःख है आज तो कल सुख होगा, धीरज कभी न खोयें हम।

अपनाने योग्य बातें

लेने की कोई चीज है तो	–	**ज्ञान**
करने के लिए कोई चीज है तो	–	**दया**
कहने के लिए कोई चीज है तो	–	**सत्य**
पीने के लिए कोई चीज है तो	–	**क्रोध**
रखने के लिए कोई चीज है तो	–	**इज्जत**
फेंकने के लिए कोई चीज है तो	–	**घृणा**
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो	–	**मोह**

पढ़ो और हँसो

1. एक आदमी ट्यूब लाइट की ओर मुँह करके बैठा था। **पत्नी** – ऐसे क्या कर रहे हो?
पति – डाक्टर ने मुझे कहा है कि आज 'लाइट डिनर' करना।

2. **जेल में एक कैदी दूसरे से :** भई झड़झेड़ामल, तुम जेल से बाहर निकल कर क्या करोगे?
झड़झेड़ामल : मैं बाहर जाते ही सबसे पहले एक टॉर्च खरीदूँगा। **पहला कैदी :** वो किसलिए? **झड़झेड़ामल :** वो इसलिए कि पिछली दफा जब मैं चोरी करने के लिए घर में घुसा था तो अंधेरे में तिजोरी की मूठ की बजाय रेडियो का बटन घुमा दिया था।

3. आ जाओ कुत्ते से डरो नहीं। – एक व्यक्ति ने घर आये मेहमान से कहा। – क्यों क्या यह काटता नहीं? मेहमान ने पूछा। – यही तो मैं देखना चाहता हूँ। मैंने इसे आज ही खरीदा है।

4. **डाक्टर** – (मरीज से) दो गोलियाँ सुबह और दो गोलियाँ शाम को खानी है।
मरीज – गोलियाँ तो खा लूँगा डाक्टर साहब पर बन्दूक कहाँ से लाऊँगा।

5. **विद्यार्थी** – सर, हम कभी कोई काम न करें तो आप हमें दण्डित करोगे?
सर – नहीं। **विद्यार्थी** – तब तो ठीक है, आज मैंने होमवर्क नहीं किया।

***

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावों का शांत, स्थिर, उद्गारहीन समावेश है। – प्रेमचन्द

डरता नहीं जो अंधेरे से

काजल
अष्टम 'ख'

जिस प्रकार अंधेरे के बाद उजाला आता, रात के बाद दिन, दु:ख के बाद सुख उसी प्रकार कठोर मेहनत करने से सफलता भी अवश्य आती। अंधेरा ऐसे ही नहीं मिट पाता जिस प्रकार अंधेरे को दीपक के प्रकाश से दूर किया जाता उसी प्रकार मस्तिष्क को ज्ञान के उजाले से प्रकाशित किया जाता है और उसी से मस्तिष्क का अंधेरा मिट सकता और उसी प्रकार मेहनत करने में अनेक कठिनाइयाँ आतीं लेकिन जब सफलता प्राप्त होती तो उसमें कोई भी बाधा नहीं आती जो लोग अंधेरे से डरते नहीं वही आगे निकल सकते प्रकाश कौन नहीं चाहता लेकिन जब आप अंधेरे से लड़ नहीं सकते तो प्रकाश भी कैसे पा सकते। जिसके दिल में अंधेरा है वही आत्मविश्वास न होने से कतरा जाते अंधेरा भी यही सोचता है कि मुझसे इन्सान न डरे और मुझसे टक्कर ले लेकिन हम सब दूर से ही अंधेरा देखकर भागते हैं लेकिन आगे बढ़ने वाले हमेशा उसमें प्रकाश डालने की कोशिश करते।

आज हर इन्सान को अपने लक्ष्य से सबसे ज्यादा प्रेम होना चाहिए और अपनी मेहनत पर गर्व भी। जिसे इन दो चीजों से प्यार हो जाये वह कभी भी निराश नहीं हो सकता और न कभी हार सकता क्योंकि वह हार को हार नहीं अपनी एक गलती की वजह मानता इस कारण वह जीतने के लिए कठोर संघर्ष करता। वह मेहनती व्यक्ति अपने रास्ते में आने वाले हर अंधेरे को चीरता चला जाता जहाँ प्रकाश खुद उसका स्वागत करता।

अंधेरे को चीरने के लिए और अपने अरमानों को पूरा करने के लिए सपनों की जरूरत होती है। सपने वे नहीं होते जो आपको चैन की नींद सुलायें सपने वे होते हैं जो आपको चैन से सोने न दें। और सोते में जगा और चाहने पर भी न सोने दें।

*** *** ***

चुटकुले

आयुष्मान साहू
षष्ठ 'ख'

1. छगम हलवाई जलेबियाँ बेच रहा था पर बोल रहा था- आलू ले लो आलू।
   पृथु बोला- पर ये तो जलेबियाँ हैं। छगम हलवाई बोला चुप रहो वरना मक्खियाँ सुन लेंगी।
2. पति पत्नी में किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ। पति- अब अगर तुमने एक शब्द भी और कहा, तो मेरे अन्दर का जानवर जग जाएगा। पत्नी- ठीक है! तुम्हारे अन्दर जो जानवर बैठा है, उसे जाग जाने दो। चूहे से भी कोई डरता है क्या?
3. संता बंता के घर जाता है और उसकी मम्मी से पूछता है कि संता कहाँ गया है? बंता की माँ - वो तो क्रिकेट खेलने गया है। संता घर जाने लगता है उसे रास्ते में बंता मिलता है। संता - कितने रन बनाये? बंता - बस शतक पूरा होने में 100 रन बाकी थे।
4. पति - आज तुम्हारी माँ के घर से खाना आया है। पत्नी - तुम्हें कैसे पता? पति - जब तुम खाना बनाती हो तब खाने में काले बाल होते हैं। लेकिन आज खाने में सफेद बाल हैं।
5. चिंटू (मिनी से) - मन्दिर के बाहर चप्पल छोड़ने में और किसे मिस कॉल देने में क्या कामन है। मिनी - कोई उठा न ले।

आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लोकोत्तरोऽयं महापुरुषः

गणेश शंकर वाजपेयी
आचार्य

वदनं प्रसादसदनं सुधामुचो वाचा।
करणं परोपकरणं, येषां केषां ते न वन्द्याः।।

अद्भुतोऽयं महापुरुषः यस्य दर्शनमात्रेण जनानां चेतांसि मोदन्ते, यस्य वाक् दुःखतप्तानामपि दुःखानि अपनयति, यस्यकार्याणि तु परोपकाराय एव आसन्। विनम्रता तु एतादृशी यत् करौ संयोज्य सर्वदा प्रथमम् एव यस्य अभिवादनक्रमः सर्वान् आत्मीयान् करोति स्म। धर्मे, नीतौ नियमपालने च यः वज्रादपि कठोरः स्यात् व्यवहारे च कुसुमादपि सुकोमलः सरलः चासीत्।

तस्य जीवने चरितार्थमिदम्-

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।

अजातशत्रुः, सत्यनिष्ठः, परहितरतः, सरलतमः महापुरुषः एवासीत् मा0 बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह महोदयः। बैरिस्टर नरेन्द्रजीत महोदयस्य जन्म एकादशोत्तर नवदशशततमे खिस्ताब्दे मईमासस्य अष्टादश दिनाङ्के (18 मई 1911 ई.) कर्णपुरे एकस्मिन् वैभवशालि सुप्रतिष्ठिते कुले अभवत्। अस्य जनकः स्व0 रायबहादुर विक्रमाजीत सिंह महोदयः तादृशेषु देशभक्तेषु एकतमः आसीत् येन स्वकीयेन अवदानेन समाजं राष्ट्रं च सुप्रतिष्ठितं कृतम्। अधिवक्तृषु सः श्रेष्ठतमः आसीदेव सहैव सः कर्णपुर नगरपालिकायाः 'चेयरमैन', अखिल भारतीय हिन्दूसाभायाः अध्यक्षः, ब्रह्मावर्तसनातनधर्ममहामण्डलस्य सूत्रधारः चासीत्।

त्यागः, तपः, सत्यम्, अहिंसा, आत्मीयता, प्राणिमात्रं प्रतिदया सहिष्णुता, सरल-शुद्ध सात्विकजीवनम्, उच्चआदर्शचिन्तनम्, आत्मसंयमः, समबुद्धिः मनसा वाचा कर्मणा एकरूपता इत्यादयः अनेकेगुणाः मा0 बैरिस्टर महोदयस्य जीवने रूपायितासन्। एषः सर्वगुणोपेतः एकः महान् हिन्दूराष्ट्रभक्तः आसीत्। राग-द्वेषरहितः, दैवीसम्पद्युक्तस्य कारणात् एषः सर्वेषां प्रियः आसीत्। तस्य दृढविश्वासः आसीत् यत् "सर्वस्यचाहंहृदि सन्निविष्टः" अर्थात् परमात्मा सर्वेषां प्राणिनां हृदये स्थितः अस्ति, अस्मिन् जीवलोके ईश्वरस्यैव एकांशः जीवोऽस्ति। अतः मा0 बैरिस्टर महोदयः मानवमात्रमेव न सर्वेषु जीवेषु परमात्मस्वरूपस्य एव दर्शनं करोतिस्म। सर्वैःसह आत्मीयभावेन व्यवहरतिस्म। एषा तस्य स्नेहभावना पशु-पक्षिषु वृक्षेषुलतासु चापि व्याप्यासीत्। एतादृशी व्यक्तित्वस्य विलक्षणता सर्वत्र दरीदृश्यते।

मा0 बैरिस्टर महोदयेन निष्काम कर्मम् एव स्वजीवनस्य लक्ष्यंनिर्धारितम्, आजीवनं कर्मयोगस्यैव पालनं कृतम्। 'योगः कर्मसु कौशलम्' तस्य जीवने रूपायितमासीत्। एषः श्रेष्ठतमः सनातनधर्मी आसीत्। इयमुक्तिः च तस्मिन् चरितार्थमेवासीत्-

"सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नाऽनृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।

एषः सात्विक श्रद्धासमन्वितः, पूतः शान्तिसमन्वितः निर्मलः निर्विकारश्च महापुरुषः आसीत्। उद्वेगरहिता सत्यसंवलिता, मृदुला, हितप्रदा च वाणी तस्य व्यवहारे आचरणे च एकरूपायिता अभवत्।

एवं बहुवर्णिकं, गरिमामण्डितं, सामाजिकं, लोकतान्त्रिकं जीवनं सर्वेषां कृते कल्याणकारि प्रेरणास्पदं चाभूत्। त्रिनवत्युत्तर नवदशशततमे खीष्टाब्देऽक्टूबरमासस्य एकत्रिंशे दिनांके (31 अक्टूबर 1993) बैरिस्टर नरेन्द्रजीत महोदयस्य पार्थिवं शरीरं वैश्वानरं प्राविशत्। अद्यापि तस्य आदर्श जीवनं स्रोतस्विनी इव सततमस्मान् अनुदिनं प्रेरयति।

कथितञ्च -

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।

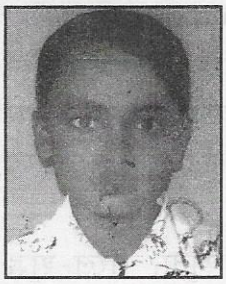

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्।।

*** *** ***

व्यायामः

हर्षित मिश्र

अष्टम 'ग'

अस्मिन् संसार-सागरे शरीरमेव सुखस्वर्गयोः साधनमस्ति। सुखं तदैव भवति यदा शरीरं निरोगं भवेत्। आरोग्यप्राप्त्यै मनुष्यः प्रतिदिनं व्यायामं कुर्यात् व्यायामेन शरीरम् आरोग्यं भवति, अजीर्णः नश्यति, जठरानलः दीप्तो भवति। शरीरे अग्निमाद्यादिरोगाः नश्यन्ति मुखमंडलं तेजसा परिवृत्तं शोभते। व्यायामेन शरीरे रक्तस्य संचारो भवति, प्रत्यङ्गं पुष्यति, कार्यं कर्तुं मनः प्रवर्त्तते। व्यायामेन पुष्ट शरीरे रोगाः न आक्रमन्ते। व्यायामं प्रतिदिनं पुरुषः प्रातः कुर्यात्। व्यायामस्य अनेके भेदाः सन्ति। बालाः वृद्धाश्च इतस्ततः भ्रमणं कुर्युः। तेन च शरीरे स्फूर्तिः जायते रक्तस्य संचारो भवति। शरीरे सौन्दर्यं भवति। युवानश्च भारतीय-व्यायामेन वा शरीरं पोषयन्ति। व्यायामेन शरीरं सबलं भवति। बलवतः पुरुषात् शत्रवोऽपि भयं कुर्वन्ति। बलवतां पुरुषाणां सर्वे सुहृदो भवन्ति। व्यायामेन दीर्घायुः भवति। अकथयत् च कश्चित् कविः-

व्यायामपुष्ट-गात्रस्य बुद्धिस्तेजो यशोबलम्।

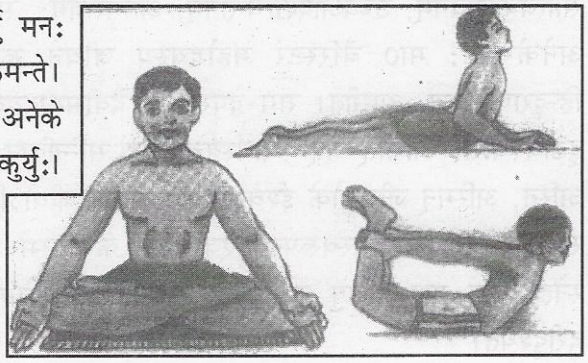

प्रवर्धन्ते मनुष्यस्य तस्माद् व्यायाममाचरेत्।।

एकलव्यस्य गुरुभक्तिः

दिव्या अधिकारी
नवम 'क'

पुरा राजा हिरण्यधनुः नाम एकः भिल्लः अभवत्। तस्य एकलव्यः नाम पुत्रः आसीत्। एकदा सः स्वपितुः आज्ञया धनुर्विद्यां शिक्षितुं पाण्डवानां गुरुः द्रोणाचार्य प्रति अगच्छत्। किन्तु द्रोणाचार्यः तं शूद्रबालकं कथयित्वा धनुर्विद्यां नाशिक्षयत्।

एकलव्यः निराशो नाभवत् तस्य गुरु-भक्तिरपि शिथिला न जाता। सः वने द्रोणचार्यस्य एकाम् मृण्मूर्तिं निर्माय वृक्षस्य अधस्तात स्थापयित्वा धनुविद्यायाः अभ्यासम् अकरोत्। पुनः पुनः अभ्यासात् सः श्रेष्ठ धनुर्धरः अभवत्।

एकदा द्रोणाचार्यः स्वशिष्यैः सह धनुर्विद्यायाः अभ्यासाय गहनं वनम् अगच्छत्। तदैव एकः सारमेयः कृष्णवर्णम् एकलव्यं दृष्ट्वा बुक्किकतुमारभत। अभ्यासे विघ्नमनुभूय एकलव्यः बाणैः तस्य सारमेयस्य मुखं विवहितवान्। सारमेयस्य विहितं मुखं दृष्ट्वा द्रोणाचार्येण सह तस्य सर्वे शिष्याः आश्चर्यचकिताः अभवन्। राजकुमारैः सह द्रोणाचार्य एकलव्यस्य उटजसमीपम् आगच्छन्ति स्म। द्रोणाचार्य दृष्ट्वा एकलव्यः तस्य चरणयोः अपतत्।

द्रोणः – **(हस्तमुत्थाय)** स्वस्ति ते अस्तु वत्स।

एकलव्यः – **(आसनम् आस्तीरयन् नम्रतया)** गुरुदेव!

अद्य कथं माम् अनुगृहीतवान्।

द्रोणः – त्वं धनुर्विद्यां कस्मात् शिक्षितवान्?

एकलव्यः – अहं तु भवतामेव शिष्यः अस्मि। एवमुक्त्वा सः द्रोणस्य मृण्मयीमूर्तिं प्रति संकेतितवान्।

द्रोणः – तदा त्वं महयं गुरुदक्षिणां देहि।

एकलव्यः – **(नतमस्तकं भूत्वा)** आज्ञापयतु गुरुदेव।

द्रोणः – तर्हि दक्षिणहस्तस्य अंगुष्ठं देहि **(मनसि अचिन्तयत्)** शूद्रजातेः जातोऽपि अयं बालकः कीदृशेन सद्गुणेन युक्तः अस्ति।

एकलव्यः – **(सहर्षम्)** गृहणातु गुरुदेव!

सत्वरं अंगुष्ठं कर्तयित्वा ददाति।

गुरुद्रोणः राजकुमाराः च आश्चर्यचकिताः भवन्ति। सर्वे राजकुमाराः एकलव्यस्य गुरुभक्तिं प्रशंसन्ति।

धन्या खलु एकलव्यस्य गुरुभक्तिः। सर्वेषु शास्त्रेषु गुरुभक्तिः उत्कृष्टा उक्तं च गुरोः महत्त्वम्-

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवेनमः।।

***

दान देना ही आमदनी का एकमात्र द्वार है। – स्वामी रामतीर्थ

परोपकारः

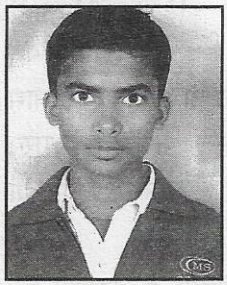

जयन्त मिश्र
अष्टम 'ख'

अस्मिन् संसारे नानाविधाः पुरुषा सन्ति। कश्चित् स्वार्थमेव मुख्यं गणयति अन्यश्च परार्थं कृत्वा स्वार्थमपि साधयति। अपरश्च स्वार्थं व्यक्त्वा परार्थमेव मुख्यं स्वकर्तव्यं मन्यते। वस्तुतः ते मनुष्याः एव धन्याः सन्ति ये सर्वदा स्वार्थं परित्यज्य परोपकारमेव कुर्वन्ति। यतः कश्चित् कविरुक्तवान्- **"परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।"** ये परोपकारं कुर्वन्ति ते पुण्यं प्राप्य इहलोके सुखमनुभूय परलोके अपि सुखम् अनुभवन्ति।

परोपकारिणां सर्वत्र मानं भवति। तेषां सर्वाणि कार्याणि विना प्रयासेन सिद्धयन्ति। मृत्योः पश्चात् तेषां यशः शरीरं तिष्ठति। यः परोपकारं करोति। तस्य हृदयं पवित्रं विनयशीलं सरसं च जायते। तेषां सन्ततिरपि सुखं मानञ्च अधिगच्छति। परोपकारस्तु केवलं धनेन एव न भवति। दधीचिरपि शरीरदानेन देवानामुपकारं कृतवान्। परोपकार भावनयैव महाराजः शिविः, कपोतपरित्राणाय स्वहस्ताभ्यां निजमांसमुत्कृत्य श्येनाय ददौ। स्थावरः वृक्षा अपि स्वशरीरं भस्मीकृत्य मनुष्याणामुपकारं कुर्वन्ति। अतः अस्माभिः अपि यथाशक्ति परोपकारः कर्त्तव्यः। उक्तञ्च-

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।"

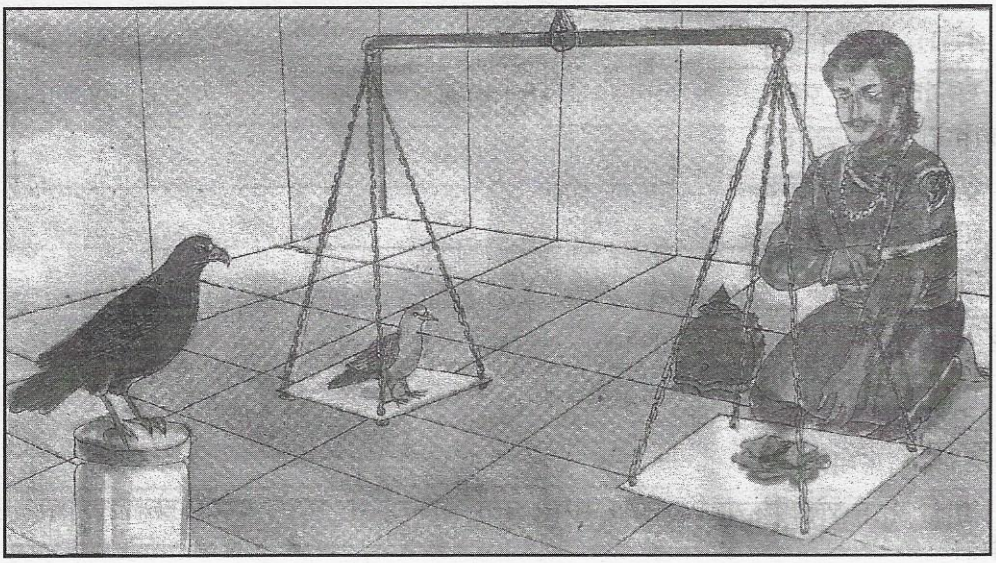

***

शस्त्र राहगीर का मित्र है, जननी स्व-घर का मित्र है और अपने किये पुण्यकर्म ही परलोक के मित्र हैं। - महात्मा बुद्ध

सनातन धर्मस्य ध्रुवीकरणस्य करणम्

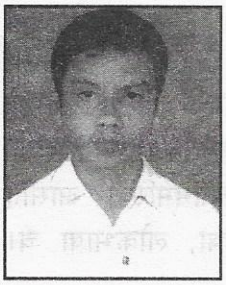

अभिषेक सोनी
अष्टम 'ग'

अस्माकं सनातन धर्मः सर्वेषाम् धर्माणां गुरुतरः अस्ति। अस्मिन् भूमण्डले अनेके धर्माः सन्ति। तेष्वेव सनातन धर्मस्य आयुः चिरमस्ति। विश्वस्य इतिहासं पठित्वा कोऽपिजनः अस्य आयुः स्वरूपं च न्यूनं न करिष्यति। जनाः अस्य स्वरूपं सहजभावेन अनुभव कर्तुम् शक्तिमर्हन्ति। अस्य संस्कृतिः आचारआदर्शाः च अधुनाऽपि अनुकरणीयाः। अस्य प्रमुख प्रतिद्वन्दी मुस्लिम जनाः अपि अनुभवन्ति यत् ते अपि पुरातने अस्य अतीव समर्थकाः आसन्। इस्लाम धर्मस्य जन्मपूर्वे सनातन धर्मस्य समीकाः आसन्। तत्कालीन शंकराचार्यः स्वप्रयासेन भारतस्य नागरिकानाम् स्वधर्म प्रति आकर्षयितुम् समर्थानासन्। बौद्धधर्मस्य प्रादुर्भाव समये यथा महात्माबुद्धः स्वअवतारं स्वीकृत्य तम् पथप्रदर्शक रूपेण अपूजयत्। तदनुसारेण तत्समये मुहम्मद साहबम् अपि स्वधर्मस्य अंकुशः निश्चितमेव शनैः-शनैः अस्तित्वहीनं सञ्जायते। महात्मा बुद्धः अहिंसायाः पाठं बौद्ध धर्मस्य मूल सिद्धान्तरूपेण आप्नोत्। तदनुसारेण अहिंसा अभियोज्य हिंसां निष्क्रियाम् अकरोत्।

*** *** ***

महाकवि माघ

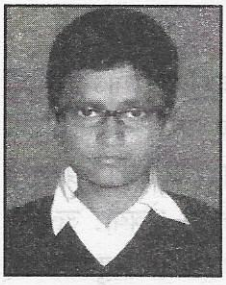

आनन्द मिश्र
अष्टम 'ग'

महाकवि माघस्य पिता 'दत्तकः' अत्यन्त उदार, दानी च पुरुषः आसीत्। सः सर्वान् आश्रयम् अददात। अतएव स 'सर्वाश्रयदाता' इति विख्यातासीत्। अस्य पितामहस्य नाम 'सुप्रभदेव' आसीत् यः वर्मलातः राज्ञः अमात्यासीत्।

महाकविः 'माघः' स्वरचित 'कविवंश वर्णनम्' इहैव अस्य विषये परिचयं प्राप्तः, तस्य विषये किंवदन्ती प्रसिद्धास्ति यत् माघस्य जन्मावसरे ज्योतिष्यानुसारेण महाकवि अत्यन्त निर्धनः भविष्यति। एतद् ज्ञात्वा माघस्य पिता शतलक्षाणि रूप्यकाणि सुवर्ण भाण्डे पूर्णयित्वा पृथिव्या अन्तरे अधारयत् परन्तु महाकवि अत्यन्त दानी आसीत्। विदुषः लक्ष रूप्यकाणि एक बारं अददात् फलतः स वृद्धावस्थायां दरिद्राभवत्। भोजप्रबन्धस्य किंवदन्त्यानुसारेण महाकवि माघ धारानरेश भोजस्य राजकविः प्रधानमन्त्रिश्चासीत्। निर्धनं भवितु स 'कुमुदवनमपक्षि' श्री मदभ्भोजखण्डं त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमान्श्चक्रवाकः इत्यादि पद्यं पठित्वा प्रचुरं धनं अयच्छत् मार्गे माघस्य पत्नी सम्पूर्ण-धनं याचकेभ्यः वितरित कृतवती। गृहं यावत् किञ्चिदपि धनं नावशिष्यते।

अन्ते याचकेभ्यः किंचिद् धनं नासीत्। इति ज्ञात्वा महाकविः अत्यन्त शोकेन स्व प्राणान् अत्यजत्। राजा भोजः माघस्य अग्नि संस्कारम् अकरोत्। माघस्य पत्नी तेन सह सती अभवत्।

कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है। - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

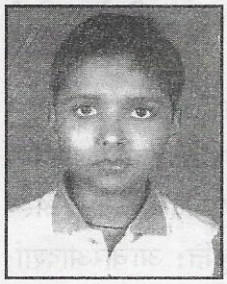

प्राञ्जुल पुरवार
अष्टम 'ग'

संस्कृतभाषा विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। एषा भाषा ज्ञानस्य विचित्राकरोऽस्ति। एषा सर्वासांभाषाणां जननी अस्ति। इयं भाषा देवभाषा, दिव्या, गीर्वाणभारती इति पदमलंकरोति। अस्याः साहित्यं प्रशस्यतममस्ति। आसीत् प्राचीनकले एषा भारतीयानां, राष्ट्रभाषा, जनभाषा, धर्मभाषा, लोकभाषा च। अतएव अस्याः भाषायाः अतीवमहत्त्वमस्ति।

संस्कृतं किमस्ति? यत् परिष्कृतं, परिशुद्धं व्याकरणादिदोषरहितं तत् 'संस्कृतम्'। प्राचीने ऋषिभिः मुनिभिश्च भाषागत दोषपरिष्कारेण अपशब्दादिदोषवारणेन या परिष्कृता भाषा स्वीकृतवन्तः। सा एव "संस्कृत भाषा" संस्कृतभाषा भारतीयानां प्राणरूपिणी जीवनोन्नायिका, सत्पथप्रदर्शिनी, आचारविचार प्रवर्तिनी कर्त्तव्याकर्त्तव्यबोधिनी, लोकद्वयहित सम्पादिनी चास्ति।

भारतवर्षस्य अखिलप्राचीनं वाङ्मयं संस्कृतभाषायामेवास्ति। वैदिक वाङ्मयं, रामायणं, महाभारतं, पुराणानि, स्मृतिग्रन्थाः, दर्शनानि, धर्मग्रन्थाः, महाकाव्यानि, काव्यानि, नाटकानि, गद्य-काव्यानि, नीतिग्रन्थादयः संस्कृतभाषायामेव उपलभ्यन्ते। भौतिक जगति विज्ञानस्य यत् अद्भुतं चमत्कारं दृश्यते। तस्य मूले संस्कृतमेव निहितम्।

स्पष्टरूपेण अवगम्यते यत् ईशवीयसंवत्सरात् पूर्वं संस्कृतभाषा जनसाधारणे प्रचलिता आसीत्। निरुक्तकारोयास्कः संस्कृतभाषामेव व्यवहार भाषा इति निरुपयति। पाणिनिकृतसूत्रैः अपि समर्थयन्ते। गुप्तकाले संस्कृतभाषा राजभाषा इति पदे स्थितास्म।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वं न केवलं भारतीयाः एव स्वीकुर्वन्ति, प्रत्युत, पाश्चात्यविद्वांसोऽपि भृशं प्रशसां कुर्वन्ति। कारणमस्ति यत् कामपि विश्वस्य प्राचीनतमं साहित्यमस्ति स अत्रैव उपलभ्यते। वैदिक साहित्ये, विशेषतः ऋग्वेदः उल्लेखनीयम् यः विश्वज्ञानस्य अगाधनिधिः अस्ति। प्राचीन संस्कृतिसभ्यताश्च कथम् आसीत्? अस्याः जिज्ञासायाः निवारणमत्रैवास्ति। धर्मदर्शनयोः क्षेत्रयोः उत्कर्षः सर्वातिशयी विश्वबन्धुत्व-विश्वसंस्कृत्यादीनाम् आधारतत्त्वज्ञानार्थं संस्कृतभाषायाः अनुशीलनम् अनिवार्यम्।

संस्कृताध्ययनस्य प्रयोजनं किमस्ति? कथयन्ति-विद्वान्सः यत् संस्कृतभाषेव अध्यात्मज्योतिप्रदा, आचारशास्त्रशिक्षिका जोवनोन्नतिकारिणी ज्ञानप्रकाशे अज्ञानान्धकारस्य, सत्पथप्रदर्शिका उत्तमाशक्तिश्च अस्ति।

यदि भारतस्य सर्वाङ्गीण उन्नतिः काम्यते, सर्वसुखदोविकासश्च अभिलष्यते तर्हि संस्कृतस्य प्रचारः प्रसारश्च महती आवश्यकता वर्तते। अनादि कालात् वैदिकवाङ्मयात् उद्भूता इयं संस्कृतभाषा संस्कृतिसमीरः मन्दं मन्दं प्रवहति यम् अनुभूय मानवः परांशान्तिं लब्धुं शक्नोति। एषा भाषा सर्वेषां जनानां कल्याणं काम्यते।

सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःख

कर्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता। - प्रेमचन्द

हिमालयः

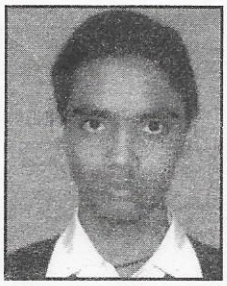

सोनू कुमार
अष्टम 'ख'

भारतवर्षस्य उत्तरस्यां दिशि प्रहरी इव स्थितः उच्चतमः पर्वतः हिमालयः अस्ति। अस्य शिखराणि सदैव हिमेन आच्छादितानि तिष्ठन्ति, अतएव अयं हिमस्य आलयः 'हिमालयः' इति कथ्यते।

अयं सर्वेषां पर्वतानाम् उच्चतमः अस्ति, अतः 'पर्वतराजः' अपि कथ्यते। हिमालयः विश्वस्य विशालतमः पर्वत अस्ति। अस्य पर्वतस्य कन्दरासु तपः कुर्वन्तः मुनयः परां सिद्धिं प्राप्नुवन्ति। अस्य समुन्नतेषु भागेषु मनोहराणि वनानि सन्ति। महाकविः कालिदासः कुमारसम्भवमहाकाव्ये अस्य वर्णनम् अकरोत्-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

'एवरेस्टः' इति अस्य उच्चतमं शिखरम् अस्ति। वर्षारम्भे हिमालयः वृष्टिकारकं मानसूनाख्यं वायुमवरुध्य देशे वर्षणाय प्रेरयति, येन भूमिः शस्यश्यामला जायते, राष्ट्रं च धनधान्यपूर्ण भवति।

एवं हिमालयः अस्माकं संस्कृतेः, समृद्धेः वन-सम्पदश्च आधारः। अतः देशवासिभिः भृशं स्तूयते पूज्यते च।

*** *** ***

नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्

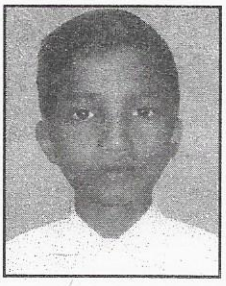

अक्षत
अष्टम 'क'

नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्। सर्व कार्य सुशुभं भूयात्।।

रोगिजनाः नीरोगाः भवन्तु, कपटिजनाः छलरहिताः भवन्तु।
सर्व कार्य सुशुभं भूयात्, नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्।।1।।

बलहीनाः बलशालिनः भवन्तु, धनहीनाः धनवन्तः भवन्तु।
सर्वेषां हृदये करुणा भूयात्, नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्।।2।।

रा गद्वेषेर्ष्यादोषाणां नाशनम्, काम-क्रोध-लोभ मोहानां त्यजनम्।
सर्वत्र ज्ञानस्य प्रकाशः भूयात्, नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्।।3।।

समग्रलोके प्रसरतु संस्कृतम्, भावना सर्वदा विश्वबन्धुत्वम्
जगति सर्वत्र शान्ति भूयात्, नव-नववर्ष मङ्गलं भूयात्।।4।।

मातृत्व का गर्व और आनंद आँखों में संजीवनी-सी भर देता है। - प्रेमचन्द

वन्दना

जय-जय हे भगवति सुरभारति! तव चरणौ प्रणमामः।
नादतत्त्वमयि। जय वागीश्वरि। शरणं ते गच्छामः।
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या! सुरमुनिवन्दित चरणा।
नवरसमधुरा कवितामुखरा! स्मितरुचिरुचिराभरणा।।
ललितकलामयि ज्ञानविभामयि! वीणापुस्तक धारिणि।।
मतिरास्ताम् नो तव पदकमले! अयि कुण्ठाविष हारिणि।।
जय-जय हे भगवति सुरभारति! तव चरणौ प्रणमामः।।

'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः'

*** *** ***

राम-नाम जपु नीच!

मृत्युकाले द्विजश्रेष्ठ रामेतिनामयः स्मरेत्। सः पापात्मापि परमं मोक्षमाप्नोति जैमिने।।
दूता यदि स्मरन्तौ तौ रामनामाक्षरद्वयम्। तदा न मे दण्डनीयौ तयोर्नारायणः प्रभुः।।

*** *** ***

राम स्तुति

रामाय रामभद्राय रामचन्द्रायवेधसे।
रघुनाथाय-नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
रामोराजमणिः सदा विजयते, रामम् रमेशं भजे।
रामेणाभिहता निशाचर चमू, रामाय तस्मै नमः।।
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोस्म्यहं,
रामेचित्तलयः सदा भवतु, मेभो! राम! मामुद्धर।।

*** *** ***

राम महिमा वर्णन

तुलसी-तुलसी सब कहें, तुलसी वन की घास।
हो गई कृपा श्रीराम की बन गये तुलसीदास।।
हम लख हमहिं हमार लख हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहिं का लखै राम नाम जपु नीच।।

'तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति, नान्यः पन्या विद्यतेऽयनाय'

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। - स्वामी विवेकानन्द

... Editorial

Dear Readers

What is this life?

If full of care

We have no time to stand and stare!!

The world having shrunk to a global village, thanks to internet, people today are techno savvy. Mobiles and computers are being used in villages for communication. India is witnessing a technological revolution. But hark!! Are we able to hear the sad music of Humanity' –that Wordsworth referred to , years ago ....the sigh that emanates from Nature at the apathy of Man for another fellow being? Are we able to see the ravages caused by man to this beautiful planet? We are running a mad race for amassing more and more wealth and tender feelings are being trampled upon. No longer do we care for the simple pleasures of life. Filial and family bonds are fast being broken. Friends no longer share lighter moments. The elderly pine away in oblivion. Mothers in urban areas hardly have time for singing lullabies to put their children to sleep. What a cost have we paid for this so called progress! A progress that has turned man into a machine? Ironically man created machines and has now become their slave. People spend hour after hour at social networking sites but have no time for their next door neighbour, their parents ,children or siblings. It is high time we introspect and visualize our role as the supreme creation of Nature and nurture the sweet bonds of human relationships. Let us become more sensitive to our fellow earthlings, let us reach out to people in need and reveal our humane side. Let us not turn a deaf ear to the sobs of Nature. It is time to live in harmony with Nature; only then can we enjoy the beauty of our surroundings, relish the delicious food, appreciate literature, create art, compose music and establish communion with God.

With Best wishes

Mrs. Sharda Rao

As desired by the President of India this paper is for Circulation

Dr. A.P.J. Abdul Kamal
Ex. President of India
Speech in Hyderabad

FRIENDS "I HAVE THREE VISION FOR INDIA"

In 3000 years of our history, people from all over the world have come and invaded us, captured our lands, conquered our minds. From Alexander onwards, the Greeks, the Turks, the Moguls, the Portuguese, the British, the French, the Dutch, all of them came and looted us, took over what was ours. Yet we have not done this to any other nation. We have not conquered anyone.

We have not grabbed their tand, their culture, their history and tried to entorce our way of life on them Why? Because we respect the freedom of others. That is why my first vision is that of FREEDOM. I believe that India got its first vision of this in 1857, when we started the war of independence. it is this freedom that we must protect and nurture and build on. If we are not free, no one will respect us.

My second vision for India is DEVELOPMENT. For fifty years we have been a developing nation. It is time we see ourselves as a developed nation. We are among the top five nations of the world in terms of GDP. We have 10 percent growth rate in most areas. Our poverty levels are falling. Our achievements are being globally recognized today. Yet we lack the self-confidence to see ourselves as a developed nation, self-reliant and self-assured. isn't this incorrect?

I HAVE A THIRD VISION

India must stand up to the world. Because I believe that, unless India stands up to the world, no one will respect us. ONLY STRENGTH respects strength. We must be strong not orgras a military power but also as an economic power. Both must go hand in-hand, My good fortune was to have worked with three great minds. Dr. Vikram Sarabhai of the Dept. of Space, Professor Sathish Dhawan,who succeeded him and Dr. Brahm Prakash, father of nuclear programme. I was lucky to have worked with all three of them closely and consider this the great opportunity of my life.

I SEE FOUR MILESTONES IN MY CAREER

Twenty years I spent in ISRO. I was given the opportunity to be the Project Director for India's first satellite launch vehicle SLV3, the one that launched Rohini. These years played a very important role in my life as a Scientist.

After my ISRO years, I joined DRDO and got a chance to be part of India's guided missile program. it was my second bliss when Agni met its mission requirements in 1994 The Dept. of Atomic Energy and DRDO had this tremendous partnership in the recent nuclear test. on May 11 and 13. This was the third bliss. The joy of participating with my team in these nuclear tests and proving to the world that India can make it, that we are no longer a developing nation but one of them. It makes me feel very proud as an Indian.

The fact that we have now developed for Agni a reentry structure, for which we have developed this new material. A very light material called carbon-carbon.

One day an orthoapedic surgeon from Nizan Institute of Medical Science visited my laboratory. He lifted the material and found it so light that he took me to his hospital and showed me his patients.

There were these little girls and boys with heavy metallic callipers weighing over three Kg. each, dragging their feet around.

He said to me: 'Please remove the pain of my patients'

In three weeks, we made these Floor reaction Orthosis 300 gram callipers and took them to the orthoapedic centre. The children didn't believe their eyes. From dragging around a three kg load on their legs, they could now move around!

Their parents had tears in the eyes. That was my fourth bliss!

Why is the media here so negative? Why are we in India so embarrassed to recognize our own strengths, our achievement?

We are such a great nation. We have so many amazing success stories but we refuse to acknowledge them, Why?

We are the first in milk production. We are number one in Remote Sensing satellites.

We are the second largest producer of wheat. Look at Dr. Sudarshan, he has transformed the tribal village into a self-sustaining, self-driving unit, There are millions of such achievements but our media is only obsessed with the bad news and failures and disasters.

I was in Tel Aviv once and I was reading the Israeli newspaper. It was the day after a lot of attacks and bombardments and deaths had taken place. The Hamas had struck. But the front page of the newspaper had the picture of a Jewish gentleman who in five years had transformed his desert land into an orchid and a granary. It was this inspiring picture that everyone woke up to. The gory details of killings, bombardments, deaths, were inside in the newspaper, buried among other news.

In India we only read about death, sickness, terrorism, crime. Why are we so NEGATIVE?

Another question: Why are we, as a nation so obsessed with foreign things? We want foreign T.Vs, we want foreign shirts. We want foreign technology.

Why this obsession with everythings imported? Do we not realize that self-respect comes with self reliance?

I was in Hyderabad giving this lecture, when a 14 year old asked me for my autograph. I askedher what her goal in life is. She replied 'I want to live in a developed India. -

For her, you and I will have to buiid this developed India. You must proclaim India is not an under-developed nation: it is a highly developed nation.

Do you have ten minutes? Allow me to come back with a vengeance.

Got ten minutes for your country? If yes, then read otherwise choice is yours.

YOU say that our government is inefficient.

YOU say that the municipality does not pick up the garbage,

YOU say that the phones don't work, the railways are a joke,The airlines is the worst in the wortd, mails never reach their destination.

YOU say that our country has been fed to the dogs and is in absolute pits.

YOU say, say and say, What do YOU do about it

Take a person on his way to Singapore.

Give him a name - YOURS. Give him a face - YOURS.

YOU walk out of the airport and you are at your International best.

In Singapore you don't throw cigarette butts on the roads or eat in the stores

YOU are as proud of their Underground Links as they are. You pay $5 (approx, Rs.60) to drive through Orchard Road (equivalent of Mahim Causeway of Pedder Road) between 5 PM and 8 PM.

YOU come back to the parking lot to punch your parking ticket if you have over stayed in a restaurant or a shopping mail irrespective of your status, identity, in Singapore you don't say anything DO YOU?

YOU wouldn't dare to eat in public during Ramadan, in Dubai.

YOU would not dare to go out without your head covered in Jeddah.

YOU would not dare to buy an emptoyee of the telephone exchange in London at 10 pounds (Rs. 650) a month to "See to it that my STD and ISD calls are belied to someon else."

YOU would not dare to speed beyond 55 mph (8Bkm!h} in Washington and tell the traffic cop. "Jaanta hai main kaun hoon (Do you know who I am?) I am so and so's son. Take your two bucks and get lost."

YOU wouldn't chuck an empty coconut shell-anywhere other than the garbage pail on the beaches in Austrailia and New Zealand.

Why don't YOU spit on the streets of Tokyo'?

Why don't YOU use examination jockeys or use fake certificates in Boston??? We are still talking of the same YOU. .

YOU who can respect and conform to a foreign system in other countries but cannot in your own. You who will throw papers and cigarettes on the road the moment you touch Indian ground. If you can be an involved and appreciative citizen in an alien country, why cannot you be the same here in India?

Once in an interview, the famous Ex-municipal commissioner of Mumbai, Mr. Maikar, had a point to make."Rich people's dogs are walked on the streets to leave their affluent droppings all over the p|ace". he said and then the same people turn around to citizen and blame the authorities for inefficiency and dirty pavements. What do they expect the officers to do? Go down with a broom every time their dogs feel the pressure in his bowels?

In America every dog owner has to clean up and nobody asks them to do the job, Same in Japan. Will the Indian citizen do that here'? he's right.

We go to polls to choose a government and after that forteit all responsibility. We sit back wanting to be pampered and expect the government to do everything for us whilst our contribution is totally negative. We expect the government to stop chucking garbage all over the place nor are we going to stop to pick up a stray piece of paper and throw it in the bin. We expect the railway to provide clean bathrooms but we are not going to learn the proper use of bathrooms.

We want Indian Airlines and Air India to provide the best of food and toiletries but we are not going to stop pilfering at the least opportunity. This applies even to the staff who is known not to pass on the service to the public. When it comes to burning social issues like those related to women dowry, girl, child and others, we make loud drawing room protests and continue to do the reverse at home. OUR excuse? "It is the whole system which has to change, now will it matter if I alone forego my son's rights to a dowry "So who's going to change the system?

What does a system consist of "Very conveniently for us it consists of our neighbors, other households, other cities, other communities and the government But definitely not me and YOU. When it comes to us actually making positive contribution to the system we lock ourselves along with our families into a safe cocoon and look into the distance at countries far away and wait for a M. Clean to come along & work miracles for us with at a majestic sweep of his hand or we leave the country and run away.

Like lazy cowards hounded by our tears we run to America to bask in their glory and praise their system. When New York becomes insecure we run to England. When England experiences unemployment, we take the next flight out to the Gulf, when the Gulf is war struck we demand to be rescued and brought home by the Indian Government. Every body is out to abuse and rape the country. Our conscience is mortgaged to money.

Dear Indians. The article is highfy thought inductive, calls for a great deal of introspection and pricks one's conscience too..... I am echoing J.F. Kennedy's words to his fellow Americans to relate to Indians.....

"ASK WHAT WE DO, CAN DO FOR INDIA AND WHAT HAD TO BE DONE TO MAKE INDIA WHAT AMERICA AND OTHER WESTERN COUNTRIES ARE TODAY"

let us do what India needs from us.

Forward this mail to each Indian for change instead of sending jokes and junk mails.

Thank you,

***

Hip-Hip Hurray :
One More Reason to Celebrate for Deendayalites

Dr. Neeru Tandon
Associate Professor
Dept. of English, V.S.S.D. College,
(Hon'ble Member of the Managing Committee)

Education is not just the amount of information that is put into a child's brain undigested, unrelated or unassimilated. Swami Vivekananda once said: "Education is the manifestation of the perfection already in man". The concept of education is that it should help the formation of character expansion of intellect and development of a positive view of the life. it is this man-making character which is the basic object of all education. The management of Deendayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya, deserves accolade from everyone concerned. Transforming the existing school from U P Board to CBSE it was a herculean task accomplished by 'Yati ji'. Like any other educationist he could also understand the pressing demands of Time and did his level best to mould and shape the future of this generation in a better way. Congratulations to students, parents and Teachers of D D U S D Vidyalaya who are also working hard to make this dream come true.

When I was told to write an article for school magazine Neerajan, I found it an opportunity to share my views with teachers, parents and most importantly with students of this institution. it is indeed a privilege to be part of this institution. I happen to meet here many teachers who are trying real hard to make this new venture a real success. As teachers we all believe that a model school should be a mirror of the child's personality wherein education should constitute the inner beauty. Teachers here are striving to identify and nurture innate talents and abilities. Experimentation and creativity through interactive and scientifically developed activities, traditional values with modern knowledge and information, all-round development of the students without any discrimination or prejudices are the basic objectives of this great institution. I am assured that these ideas form the core contents in educational pattern of the school which prepares the young generation to become leaders in whatever career they choose and to contribute positively towards self, family, society, nation and the entire world. I must congratulate the school Principal and the teachers for the continuing good work they are doing. Perhaps this is an opportune moment to say a public 'thank you' for their contribution in the life of many.

For parents I have to submit that child of course is the focal point of our life. But it is said that if there is anything that you can give to your children is TIME, No amount of physical compensations can replace your position or cannot give that happiness that is merely felt by your presence by their side. Your children need your presence more than your presents. When you have brought up kids, there are memories you store directly in your tear ducts. Disciplining is a way of life to nurture and mould talent in a favourable way. Of course it has to be done in a very friendly way. The nurturing has to be done in time or else it is said that small children disturb

Judge a man more by his questions than by his answer.

your sleep, big children your life. So help school teachers to inculcate discipline in your ward. it is increasingly evident that it is the values, the integrity, the character, the ethics, the respect, the attitudes and the love of the parents that will lay the foundation in a child's life. It is possible that the best and most caring school will still fail to mould a child in the correct path if the foundations laid at home were poor or continue to be unstable. It is also my observation that the role of parents seems to have changed over time. There was a time when parents always knew more than their children, simply because they had lived longer and had more exposure and experience. They could even claim greater wisdom simply because they had more knowledge. Today however, children overtake what parents know in many areas even before they leave school. At least in the field of information technology I can safely take a bet, that children take the lead over most parents even before they enter school.

For the students I have to say that you are the future of this country. Please be focussed, have an aim in life and achieve it. Do not be like a free floating balloon that has no destination. Preparation for life and for success starts very young. Always be hungry to know more and more. Be determined to succeed and to succeed you must be determined to work hard. Only work follows success and it is always the same sequence. Dear students remember whatever the mind of man can conceive and believe, it can achieve it as well. Nothing can stop the man with the right mental attitude from achieving his goal; nothing on earth can help the man with the wrong mental attitude." it is necessary for your development. Of course development has to be all round. Participation in curricular activities in a way adds to your personality. Apart from mastering academics, opportunities for debating, dance, music should not be left unexplored as these are methods of self expression and good communication skills.

Academics..excellence.achievement..cocurricular activities. .that should 'be your motto. if this time is wasted . it is going to derail you forever..for these things lead to regret later... a cool sigh... a lost dream ...a disappointment. I do not think anyone deserves it.

Someone had correctly observed that 'Excellence is never an accident; it is the result of high intention, sincere effort, intelligent direction, skillful execution and the vision to see obstacles as opportunities'. But there are also some to whom excellence is an obsession. They want to climb to the top, to get that prize, to get that result, to get that job, to get that reward no matter what or who stands in the way. They are willing to compromise ethical and perhaps even moral standards in getting there and trampling or using anyone they can find. This school never ever teaches you this. Excellence must not be a goal in itself. It is not an end product. It is only a means. Even education can become a fleeting goal, if you are not motivated by what you hope to become as an educated person.

Marks and grades are very important to students these days. It is like air that they breathe, they cannot live without being driven by a number or a target to achieve. This is both good and bad. It is good as a motivator, but bad as it narrows the goals of education. Education to me should create a better person, a better son or daughter, a better Indian, a better citizen to the world. Reaching whatever targets you set for life should only be secondary to that. Just answer two questions to understand the true education and its goal.

The first is to ask if your education enables you to do more for others than what they have done for you. A degree or a certificate may give you marketable skills, but not necessarily an education. It is education that will enable you to think differently than just to offer your time and life in the market place. It is a good education that will enable you to turn down a high paying job in favour of doing a more useful job or a job that gives you more satisfaction or purpose in life. So the question I would like to pose to you today is, will your education change you to become different to what you would have been if not for your schooling?

The second measure is that education must make you able to see what others would not see, hear what others would not hear and indeed understand what others would not understand. That will pronounce a clear distinction between educated and uneducated person. Today education is measured in the certificates, diplomas and degree one can get. They may measure the knowledge you acquire, but do not measure the wisdom you possess. They may measure skill or competency you have achieved but not measure your attitude or your values. Wisdom is therefore to be able to see what you have not been shown and to hear what you have not been told and to get in the habit of making up your mind only afterwards.

I find that Pt. Deendayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya provides early opportunity for its students to mix with other students from different backgrounds. I find that it tries to instil in children respect and appreciation for what is different. I also find that it affirms children in as many different ways as possible and avoids creating unnecessary competition between them. I believe that all schools must be affirmative and encourage students to aspire to develop holistically and become better sons and daughters to their parents, to this country and the world.

I want to conclude by telling the students here, that I think 'that now' is an exciting time to be a young person. There are so many opportunities that are before you- that we did not have in our childhood. But there are also many more challenges before you as well. Your parents and teachers will always do what is within their powers to prepare you to face the challenges and make the right choices. Being a student of this school is in itself an adequate reason to know and to be convinced that you have what it takes to make your life successful and to make it count for others. So, go for it. May your life be a blessing to your family, your friends, your school, your country and the world. May God bless you.

*** *** ***

IAS Rank-2 was less Pleasurable than Deen Dayal Rank-33

Santosh K Mishra, IAS
(All India Rank-2nd in 1999)
District Magistrate & Collector, Ootty
Presently - Secretary Tourism, Chattisgarh

Dear friends,

Today when I was going through the mails, I thought I must share a few lines with you. PTDDUSDV, as we used to deliberately call it, to the great anguish of shri om ji, was a great place.

I think the school was a river ever flowing with zeal and enthusiasm. We all carried from it, what we could, depending upon the size of the pots we took to it. In my case, after I finished 5th from Saraswati Shishu Shiksha Sadan, Colonelganj, an amazing school run by the Kanpur Municipality , at the top of my class, my father was frantically trying to narrow down on schools which were good and yet were within the seriously challenged financial reach of a lab assistant. With great deliberations and budgeting and re-budgeting it was decided that I will be writing two entrance examinations, one for the Rama Krishna Mission Vidyalaya, and the other one for PDDUSDV! Everything else was either out of my league or my father's. Any more entrance examinations and we would have gone hungry for a week to cover up for the exam fee. To cut a long story short I started preparing for the first great challenge of my life. The entrance examination to two of the greatest schools which existed on earth (as far as I was concerned).

And what strain it was! I wanted to get into these schools so badly that I would stay awake in my single room mud house located in the fisherman slum of Purana Kanpur. The light from the dimly lit kerosene lamp would have melted in the darkness and I would lay awake on the only cot we possessed. Father of Prem, my neighbour in the slum and a dredger operator, would come back drunk like a fish, in the dead of the night, hurling choicest abuses at his enemies, both real and imagined, and I would lay awake musing on the finer points in life. The room was big, by my size. I was all of 3 and a half feet and anything more than 6 feet was big for me. The room was too big for me. This room was a drawing-cum-living-cum-kitchen-cum bathroom. The bathroom was a luxurious 3 by 3 cement slab covered green with slippery moss on three sides, but it was a very useful place. Whenever we had guests from the village, in the nights it was converted into a neat little bedroom for me. This was convenient for me also, because this was the only place from under where the rats would not come. Elsewhere the rats would play with your eye-balls if they could lay their hands (read teeth) on them. The rats in my house always had plenty to eat. Their favourite place was the corner where used plates and cooking utensils would be kept soaking in the water for washing in the morning. This was the farthest corner opposite to the cot and that's why I was so attached to my cot in the night. Then there was the "angithi" itself. This was an ingenious device I must say. It was a cylindrical pot of 1 ft dia and 1 ft height.

My father would pack it with the saw dust leaving a cylindrical hole in the middle, which at the bottom turned into an L shaped opening allowing us to put a

thumb thick acacia as firewood. The top will be rammed shut with a circular iron plate. There would always be tasty crumbs around it and the rats feasted on it.

Eventually I would drift away to sleep thinking about the rats, Prem's father and the stuff he drinks, the ghosts in the veranda, how good it will be to go to the new school and how great it would be if it turns out that my father was actually a business tycoon and he was pretending to be poor just to teach his kids the meaning of life .....

Well everyday morning was a war. There was always a fight for the water at the municipality water fountain. Most often I used to be the youngest draft in the battle royal. The fishermen's kids were big and strong and they were generous in giving. I often used to return with the souvenirs of war given by the kind hearted fishermen kids, mostly in the form of broken shirt buttons, dented 4 liter tin can (that was all I could lift and balance without toppling over), bruises and bite marks and occasional black eye. Yet I somehow managed to get my daily quota of water needed for ablutions, enough to bathe and get ready for school, after having left over rice or piece of roti with mustard oil and salt for a topping. The school was good. It taught me to read and I loved reading. I finished my books, my library books and then I started borrowing books from the kids who were in higher standards but kind.

Suddenly it rained in one season and one of our walls collapsed in the night. It was a mud wall and we always suspected that it may collapse. In fact we not only suspected the walls but also the mud roof to collapse. Since we knew it might, we never slept inside our house whenever it rained. Our neighbours were equally attuned to sense danger and like the colony of ants before the rain, we also used to run out of our 100 year old death traps and plant ourselves in the open on a high ground. Therefore when it started raining that night my father pulled me out in the middle of the night and alongwith the neighbours we spread a sheet of polythene in the open, put one on top in the shape of a tent, and I slept off. Next day morning my one room house was open to public scrutiny on the thoroughfare side. For the next one month, we would come home, and I will knead the mud, remove stones from it and my father would lay the wall brick by brick with the mud as cement. The work was rewarding, it protected us from the public gaze, but the downside was that the kitchen cum dining cum living cum bed room became smaller, and the new wall was also crooked. My father was not trained as a mason you see! Since we could not afford a mason he doubled up as a mason and I as his assistant.

Finally, the D-day arrived. I tried to summon all the divine help I could and hopped on to my father's bicycle to arrive at the battlefield. First exam I wrote was for R K Mission school. I fared badly, I thought, and was not very hopeful. The secor exam was for our Great PDDUSDV. This exam, I thought, went well. I was ver disappointed when some of the questions in the GK section were on the famou bollywood flick "kranti". I had not even seen what a cinema theatre looks like and here were questions on who was the playback singer and who was the actor! Anyhow, but I fared OK, I thought. Then started a long wait for the results! What a wait, I never was so anxious ever in my life. I could feel what Booker T Washington felt like when he was asked to clean the room in the school for an entrance exam. I had never again felt so anxious ever in my life so far, not even for IIT JEE results, not even the infamous CAT and not even for the IAS exam. The day of result was etched in my

memory and the countdown meter was ticking away in my mind.

By then we had moved to the Government promoted EWS ghetto (Economically Weaker Section) in kalyanpur, a considerable distance away from the city (I'm talking 1982). With great finance from the World Bank it was sham in the name of housing for poor. We landed in a house horribly designed covering an area of 390 sq feet, infested with snakes, scorpions and innumerable insects of all kinds. Walls were made of poorly baked bricks put together with mud paste and plastered with what was essentially sand with traces of cement. From inside the house one can see the foundation and it seemed as if one sneezed too loudly the walls may give in. This might have been a shock to others but for me it was a sheer delight. Plenty of frogs to play with, loads of insects and vast arid open space with muddy water ponds and pools to wallow in, and a haunted old fort on the edge of the deep gorge which once used to be washed by the holy waters of mighty river Ganges . I instantly took a liking to my new surroundings.

On the judgment day, I toiled hard throughout the day, brought water in small buckets from the far off water source, swept the house clean, sprinkled water to subside dust, and waited with abated breath for the results. It was hot summer day with mercury touching 113F. Intermittent dust storms were the only challengers to the otherwise still noon. Father when coming back from his work in the evening was to cycle past both the schools and I was to know the result when he reached home. I wanted to put on my best behaviour just to ward off any berating or beatings that might come my way if the results were not good. When he came home with a long face my heart sank. I guessed the result and did not have the courage to ask. He did not utter a word. I brought a glass of water from the mud pitcher. He gulped it down and asked for more, I brought it. He looked at me and gave me a pat and smiled and said now you have a choice. I was ecstatic, I made it through in both the schools. I fared well in RKM I got 33 rank of the 90 odd selections and 18"' rank in PDDUSDV. Oh I Phewl What a relief.

And friends on this note I began a very rewarding journey of life. The foundation for which was laid in Deen Dayal Vidyalay, a rather strong foundation I must say. I came as a hungry learner and soaked in quite a lot. I believed in what I got convinced about. Here I met some great people, some very bright people, and some very inspiring people. They all played their parts in the game called life. Even now the game is on. The players have been constantly changing but the stage remains the same.

The rest of the story will be interesting but it will be a while.

*** *** ***

Revolutionary Steps for Abolition of Gender bias from Society

Mrs. Niharika Tripathi
M.A., B.Ed.

"Gender bias is commonly considered to be discrimination or hatred towards people based on their gender rather than their individual merits, but can also refer to any systematic differentiations based on the gender of the individual."

Gender bias can refer to subtly different beliefs or attitudes

The belief that one gender is inferior to or more valuable than the other which is 'Female' or male chauvinism.

The attitude of misogyny (hatred for females) or misandry (hatred for males); as well as the attitude of imposing a limited or false notion of masculinity on males and a limited or false notion of feminity on females or vice versa.

Gender bias beliefs as a part of essentialism, hold that individuals can be understood or judged based solely on the characteristics of the group to which they belong-in this case, their gender group, as males or females. Certain forms of gender discrimination are illegal in many countries, but nearly all countries have laws that give special rights, privileges or responsibilities to one sex or two sexes.

The view that men are superior to women is one form of gender bias. This form is often called "male chauvinism". Chauvinism in a broader sense referring to any extreme and unreasonable partisanship that is accompanied by malice and hatred towards a rival group. A similar term is also **gynophobia,** which refers to fears of females or feminity. Historically, in many patriarchal societies, females have been and are viewed as the "weeker sex". Women's lower status can be seen in cases in which females were not even recognized as persons under the law of the land.

The feminist movement promotes women's rights to end sexism against females by addressing issues such as equality under the law, political representation of females, access to eduction and employment, female victims of domestic violence. "The view that women are superior to men is also a form of gender bias.

Gender bias is used to describe discrimination against women. However Countries like India are making huge efforts in combating this evil by passing and implementing new laws and giving certain privileges to women. But if this evil has to be eliminated from society, men will have to make efforts from their side also, so that women can live in an equally paced world. I am one of them-What about you?

Nature does not discriminate men from women. But women worldwide have been victims of inequality not only in terms of social and political rights but also on ground of employment opportunities. Gender bias also impedes the country's growth.

"According to 2011 census, the female literacy rate was 65.46% compared to 82.14% for males. The underlying thought that educating women is of no value as they will only serve their husbands and family in future makes the parents unwilling to spend on girl's education."

In reference of India : Revolutionary steps were taken for the abolition of Gender bias from society :

* The government has set laws to ban female infanticides and dowry which the bride's family had to give to the groom's family during marriage.
* Also there is an increasing number of feminist groups emerging in India to protest against gender oppression.
* The Hindu succession Act 2005 brings all agricultural land at par with other property and makes Hindu women's inheritance right in land legally equal to men across the states.

At last I can say one sanskrit shlok in conclussion

"Yatra Naryastu Pujyante, Ramante Tatra Devta"

***

Devi not Eve

Mrs. Seema Krishna (Parent)

Being a mother of 2 sons; I always had a desire to have one daughter.

But seeing the present situation of GIRLS, I think that it is most important for the institutions like our **Deen Dayal Vidyalaya** to keep-on giving such SANSKARS and upbringing to all the students of Vidyalaya THAT WE ARE A SOCIETY where there is a THIRD ELEMENT Called DEVI after GOD AND NATURE.

And we are not a society where, there are only 2 elements involved; called ADAM & EVE. The constant-development of these emotions to the students will bring these 3 blessings to all of us and these are :-

1. As an institution, we the family of this Vidyalaya will always, find worth to our very important contributions to the society.
2. By their respectable-deeds, Our students will make us proud.
3. We will bequeath the ancient and most-pious traditions of our ancestors to our coming Generations.

So, Dear readers; we must keep on sharing this eternal - thought with all our Boys and girls that "FEMALES ARE DEVIs not EVEs; and they are Mothers for all of us: so how can we ever think of disregarding any Matr Shakti."

Matrishakti - the power of the Mother goddess

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते; रमन्ते तत्र देवताः।।

*** *** ***

Globalisation of Indian Economy

Mrs. Komal Jain

(Dept. of Social Sc.)

Globalisation is the new catchphrase that has gained currency since the nineties of the last century by which regional economies, societies and cultures have become integrated through a global network of communication, transportation and trade. It in fact, denotes the transformation of local and regional phenomena into global ones the concept of globalisation was first introduced in 1776 by Adam Smith, the father of modern economics in the book titled "Wealth of Nations".

The progression of globalisation not only embraces the opening up of world trade, progress of elegant means of communication internationalisation of financial markets, mounting singificance of multinational companies ()MNLs, population migrations and more commonly increased mobility of goods, capital, data and ideas but also infections, diseases and pollution. The term "globalisation refers to the integration of economies of the world through trade and monetary flows, as also through mutual swap of technology and knowledge."

Globalisation in India has allocated companies to enlarge their base of operations expand their personnel with negligible investment and provide new services to a wide range of consumers. The process of globalisation has been a primary part of the topical economic progress made by India and played a major role in export led growth leading to the enlargement of the job market in India.

Globalisation has helped in raising the living standard, alleviating poverty, assuring food security and generaling buoyant market for expansion of industry and services, and making substantial contribution to the National economic growth, hence I can conclude with the words that "Globalisation has both positive and negative impact on various sectors of Indian Economy".

***

Tagore and Vivekanand

The Shining Stars of the Great Indian Renaissance

(A Tribute)

Mrs. Sharda Rao
(Dept. of English)

The latter half of the 19th century marked the beginning of the great Indian Renaissance. There was an awakening in the social economic, cultural and religious spheres of Indian life.

Bengal emerged as the centre of the great awakening. Many scholars visited European countries and came under the influence of European culture and literature. The French Revolution and the Industrial Revolution had already made a massive impact on the Western ideology. The War cries of "LIBERTY,EQUALITY AND FRATERNITY" had created a mass awakening. Indian social thinkers like Raja Ram Mohan Roy, Ishwar Chandra Vidyasagar, Swami Ram Krishna Paramhans, Swami Vivekanand, Bankim Chandra Chatterjee made an invaluable contribution to society by advocating social reforms.

Both Swami vivekanand and Gurudev Rabindranath Tagore were revolutionaries in their own way and paved the way for India's freedom. Swami ji exhorted the Indians to free themselves from the shackles of slavery by enthusing in them self confidence. He inspired the Indians to realize that they were the inheritors of a rich cultural heritage and that each individual was a part of the Supreme Soul. He toured the nation and realized that Indians were gripped by superstitions, blind beliefs, narrow mindedness and bigotry. He preached that we were the children of Mother India and should get rid of the distinctions of caste, creed and blind beliefs. Vivekanand addressed the world Parliament of religions and gave a glimpse of India's glorious cultural heritage to the world. Even today he is considered a Youth Icon in India.

Tagore too pioneered the a socio-cultural renaissance. He denounced man made distinctions of caste and creed. He visualized India as an ideal nation where people would not be segregated on the basis of class and caste. Tagore's literary genius found a ready expression in his novels, stories, poems and dramas. His aesthetic sensibilities sought relief in painting and music. Tagore's magnum opus GITANJALI brought him and India accolades as he was awarded the Nobel Prize for Literature in 1913. Tagore revolutionized the concept of education in India when he founded the VISHWABHARTI at Shantiniketan. He believed that man's faculties could best be developed in the Lap of Nature. Every child is a gifted child and should be allowed to develop his personality according to his aptitude.

There is a need to understand the teachings of these great visionaries and implement them for the development of our nation so that once again it can be installed on the pedestal of JAGADGURU

Arise, AWAKE and stop not till the goal is reached.

***

Let not the mistakes of yesterday, nor the fear of tomorrow spoil the day.

Workshop for Teacher on Assessment of Speaking and Listening (ASL)

Mrs. Prachi Chandra Srivastava
Dept. of English

A Workshop on "Assessment of Speaking and Listening skills" (ASL) was conducted at Puranchandra Vidyaniketan, Kanpur on 20th December, 2013. Ms. Kanta Vadhera, a lecturer and examiner trainer at CB SE , New Delhi addressed the teachers during the workshop. She said that the students with excellent academic results often miss out on big opportunities just because they lack proper communication skills. The workshop was attended by teachers from the leading CBSE schools.

During the workshop, we learnt how to conduct oral examinations more effectively. We also cleared our doubts pertaining to listening activity to be conducted in the class room. It was informed that as per the curriculum document for secondary schools, there is a provision of 20 marks weightage for assessing ASL in classes 9 and 11. This workshop will help in building the base of students because in present world scenario everything depends on how you represent yourself in front of opportunities. English, in all its aspects, is essential for a successful career. If your communication skills are excellent and up to the mark, you can simply avail yourself of maximum opportunities.

Language Acquisition Vs. Language Learning

There is an important distinction made by linguists between language acquisition and language learning. Children acquire language through a subconscious process during which they are unaware of grammatical rules. This is similar to the way they acquire their first language(or mother tongue). They get a feel for what is and what isn't correct. In order to acquire language, the learner needs a source of natural communication. The emphasis is on the text of the communication and not on the form. Young students who are in the process of acquiring English get plenty of "on the job" practice. They readily acquire the language to communicate with classmates.

Language learning, on the other hand, is not communicative. It is the result ofdirect instruction in the rules of language. And it certainly is not an age-appropriate activity for young learners. In language learning, students have conscious knowledge of the new language and can talk about that knowledge. They can fill in the blanks on a grammar page. Research has shown, however, that knowing grammar rules does not necessarily result in good speaking or writing. A student who has memorized the rules of the language may be able to succeed on a standardized test of English language but may not be able to speak or write correctly.

***

Importance of Time Management in a Student's Life

Mrs. Dipiti Awasthi
Head of Deptt. of Biology

Our life is like a bubble, a short morning dream. Therefore, we should take good care and make the best use of it. In other words, we must understand the value of time. Time management is basically planning and dividing one's time in a constructive way.

For instance, we have a number of activities that have to be taken care of in a particular period of time. So we should be able to plan our activities in such a way that we are able to complete all the work in a given span of time.

It is a fact that if man takes care of his minutes' then the 'hours' and 'days" will take care of themselves. It is said that 'Time is more precious than money'. This is because, money lost in business or otherwise, can be gained or earned again. But time once lost, can never come back.

We all grow in time, live in time and ultimately, perish in time. There may not be an exact definition of time, but we all know what it is and its great value in a person's life. A man has a lot of wants. We all want fame, success, money, happiness, love, etc. There is no end to our desires. However, only a few are successful, prosperous and happy. These few are the ones who realized the value of time. They made the best use of their time and attained an enviable position in the society.

People, who made effective use of time at their disposal, got the best from time. But those who forgot the value of time found to their utter dismay that it was harsh on them later.

In other words, successful persons use time in the best possible manner to achieve their goals. Most of us waste our precious time in unnecessary things such as gossips, roaming-aimlessly, grieving over the past blunders or day dreaming. It must always be kept in mind that, Time and tide wait for none. Time can be spent wisely or foolishly. The choice is ours and so are its consequences.

Life is not a bed of roses. each and everyone of us has to face a number of problems in life. We have to be bold and courageous enough to face them. Problems are faced by men of courage only. Escapist always avoids problems. Hard times teach us a lot. They prepare us for a prosperous and glorious future. If difficult times arrive, they would prepare us for a better life. We would be able to handle problems in future with more maturity, stability and courage.

Basically, time and opportunity once lost can never be recovered. The flow of time is ceaseless and eternal and we all are like small insignificant particles in this endless and continuous flow. Time is eternal and endless but human life is very limited, finite and short-lived. Hence, successful people make the best use of time in their lives. A work done is time earned. A decision taken at an appropriate moment can work wonders. hence, let us strike the iron when it is red hot.

We must make the best use of good times. We must make arrangements for the bad times during the good times. When the bad times knock at our doorstep, we should face them bravely with perseverance. That is how a rational and strong man is supposed to fight his battles of life. Ultimately a seasoned and an experienced human-being would be able to master time with his resources, skills and careful planning.

A proper use of time means the right use of an opportunity. As a very popular saying goes - 'A stitch in time saves nine'. As opportunities in life are few and far between, so is time precious and limited. Those of us who miss an opportunity or waste time, have to

repent all our life. This implies that we must be punctual, disciplined and regular in our work-schedule.

One should inculcate the habit of early rising as one can complete a number of tasks before the day has even started. For this, one must never be plagued with lethargy and bad habits. Some of them are sleeping late at night, laziness, passivity, remaining glued to the television or addicted to certain drugs. etc.

To conclude, it is foolishness to think that we can make up for the lost time There is a popular saying that 'the past is dead and the future is unborn'. There are no tomorrows and yesterdays. It is 'today' which is important. Time is very powerful. It has more power than the mightiest of monarchs. For they come and go, but time remains forever, without an end or a beginning.

*** *** ***

The Annual Cultural Programme

(Senior wing)

Mrs. Sharda Rao

Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya was abuzz with zeal, zest, festivity and cultural fervour on 19th November, 2013. The momentous occasion was' our Annual Cultural Programme organized on the Birthday of The Great Rani Of Jhansi who laid down her life fighting for the freedom of our nation. The Chief Guest was the eminent Kathak exponent Mrs. Bandana Deb Roy who lit the auspicious lamp to mark the opening of this grand cultural evening. The programme was also graced by Dr. Gyan Chand Agrawal Honourable President of the school Managing Committee, Sri Virendrajeet Singh Honourable Secretary of the school Managing Committee, Mr. Yogendra Bhargava Honourable Member of the managing Committee , other Guests of Honour and the Parents fraternity. They were extended a warm and hearty welcome by Principal Mr. Mahesh Chandra Srivastava. Bouquets were presented to the dignitaries by the office bearers of the Students Governing Body.

The Cultural Festival provides a platform to students to show case their talent in various cultural activities. As the sun God's chariot moved towards the West it was time for the magic of the cultural evening to unfold. Blessings of Lord Ganesha were invoked through a Group Dance Choreographed in the indo–Western Fusion style. Then the School choir presented a patriotic number which spoke of the spirit, ideals and aspirations of the school, inspiring students to give their best performance during the cultural festival.

Foot tapping music resonated the air as the stage was set for the Kalbelia Dance. The breath-taking performance won a huge round of applause from the viewers. The chief attraction of the evening was a play staged on the life of the brave Rani of Jhansi as a token of our profound gratitude for her martyrdom for the freedom of our Nation. Beautiful tableaux were presented depicting the kaleidoscopic culture of our country. A thought provoking skit was presented to bring to light the apathy of the common people to the serious problems of our day to day life. The skit was laced with wit and humour that tickled our laughing bones but not without compelling us to ponder over our role as responsible citizens. The cultural evening came to an end with the solemn rendition of Vande Mataram as a fitting tribute to the patriotic sentiments that had mesmerized the viewers and the participants alike.

***

Forgive many things in others, nothing in yourself.

Let us know more about CCE

CCE

CCE stands for Continuous and Comprehensive Evaluation. This is the term given to a fairly new education system in India. CCE has been implemented in classes I to 10th all over India in schools which follow the CBSE guidelines. CCE has been started to improve the quality of education and was meant to lessen the burden of studies on Students. It was implemented in the latter half of 2009 on students of the 9th class at that time.

The system preceding the CCE was the "Board Examination" system. There was one final board examination conducted throughout the country which would be marked by different teachers. This was to be given by all students of CBSE in Class I0. This earlier system has been criticized due to the lack of any real overall assessment and the complete focus being on getting marks in one final exam and not on overall quality education.. CCE has been a measure to relieve the students of tension and stress. CCE has been thought as a better set of innovations and ideas, many of them taken from other Education systems.

The CCE system divides the whole session into two terms. Each term comprises one Summative Assessment (SA) and two Formative Assessments (FAs). Formative Assessments refer to projects, small worksheets, group discussions and practical activities. SAs are simply examinations. SA examination papers are sent to each school by the CBSE.

A major difference between the earlier system and the CCE one is that answer sheets of students are not marked by teachers from other schools, but rather their own teachers. This does mean that the student does not remain anonymous but it has also been said that it is better as the teacher would be able to understand the child's work better while marking.

The class I0 in India is extremely important for students, as this is when they are supposed to opt for their specific streams. Most schools in India offer three streams, which are Humanities, Commerce and Science. These streams are allotted to students on the basis of their marks in each subject.

CCE implies that marks from CCE from Class 9 and Class I0 of the student be combined and reflected in a common mark sheet. This gives equal importance to both the classes. CCE involves Assessments throughout the year which means that students have to work hard throughout the year and not just the exams and this was an important idea behind the CCE system.

The Board examinations which CCE replaced were supposed to be optional, and thus students have been given a choice between SA-2 or Board examinations.

***

The Student Life

Prateek Mishra
XII-B

As we all know that today life is considered as a struggle, a competition and a chase, But, life is a wonderful gift that we have ever received from God.

Life is composed of different phases and student life is one of them. Being a student is a wonderful feeling because this feeling can not be expressed and cannot be experienced in any other phase of life.

Student life is full of mischiefs, actions and a lot of fun. Relating to it I got something to share -

As a child, I always felt good
Because there was always delicious food
How wonderful was my childhood!
I was loved by everbody in the neighbourhood.
Though very clever,
I knew it would not be the same forever.
So my motto was forward ever, backward never.

'Student' life is a phase that exists in every single person's life and it cannot be completed without a 'Teacher'. I have lines regarding that teacher -

I always thought about the future
And this made me always want to listen to my teacher
One day, I told my teacher
about my career aspirations
That I wanted to be an engineer
He advised me to do away with my fears,
Open my ears, be careful with my peers,
and focus throughout the years.

A teacher plays a vital role in a student's life. One cannot imagine this word 'Student' without considering a 'teacher'.

'Teacher" An ideal who always motivates, inspires and treats the students with tender care.

*** *** ***

The Value of Time

Aditya Shukla
VII-C

Time and tide wait for none. The most precious thing in the world is time. Time is a boon. It is the most important thing in life. Students who utilize their time wisely become achievers.

The famous historian Gibbon took 20 yrs. to write the history of the Roman empire. James Watt, Albert Einstein. Thomas Alva Addison devoted much time to their scientific research. Gandhiji stressed upon the need for optimum utilization of time.

We should utilize our time wisely and work diligently to achieve our goals.

***

Best Quotes forever

Gautam Jha
XII - A

* "Heights by great men reached and kept,
Were not attained by sudden flight,
But while their companions slept,
They were toiling upwards in the night."

* "Failures are milestones of success."

* "Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal".

* "To accomplish great things,
We must not only act,
But also dream;
Not only plan but also believe."

* "The woods are lovely, dark and deep,
But I have promises to keep,
And miles to go before I sleep,
And miles to go before I sleep."

* "The highest reward for a person's toil is not,
what he gets for it, but what he becomes by it."

* "Time is nature's way of keeping everything from happening at once."

*** *** ***

Facing competition

Gaurav Kumar
VII-C

Competition is part of life

We live in times when competition is present in many aspects of life : education, sports; making a career or working in a job. This stiff competition is like taking part in a race, where often one moves ahead one must realize that a winner is not who wins every battle but one who remains sober in victory or defeat.

Competition is necessary for achieving

Competition in itself is not a bad thing, and often necessary. In a sports event, for instance, without competition it is not possible to decide the first, second or third position. However, when you prepare for a competition don't let it take control of your personality and never let it dominate you or forget the difference between good and evil. Competition should always be a healthy contest, especially since our, elders tell us that in trying to move ahead, we should not push anyone aside.

***

Incredible India

Ankit Shukla
12th - A

One day when I was on my way home. I came to a crossroad. There was an enormous house in the corner. I was in a pleasant mood. I crossed that house and noticed something that forced me to look back. I saw a youngman that entreated in front of that house. I raised my eyes and looked along with his eyes. He prayed to those rich people who were sitting in the balcony of that house. Six people were sitting overthere - Two ladies, two men and a boy. They were in a jolly mood. But when they saw him they stopped. One of those men looked down and asked about what he wanted. That youngman requested, "Sahab! please help me. I am in great misery. I have never come to you for help and will never come again. But this time I need your help."

It seemed to me that he was a servant or a labourer that worked for them. Suddenly, he took his turban and put it in front of gate and sat down on his knees.

I had never seen such a scene right before me. I could not react at that My legs began to shake. Although, I had seen such scenes many times in movies but this caused a different feeling. I could not stay there anymore, so I turned and walked away.

We people, have many times heard and talked about the progress of our country and clapped for the development but, I consider that development useless until we are able to make each and every man able to fulfil his needs.

That day, when noone will have to beg for his needs, everyone will be happy and able, we will together say- "Incredible India."

*** *** ***

Education These days

Himanshu
VIII-A

Students these days do not want to study
But for play they are always ready
They go to school without any tension
In the class they don't pay attention
They do not care for the examinations
And never do their preparation
They say don't worry
What is the need of so much hurry
Such students must realize
The importance of education in their life
It can be said without any fuss
Education and hard work are the key to success

***

Discipline

Shubham Kumar
VII

Discipline is the law of life, action and speech. It is the law of the universe, too It is essential in each and every branch of life, It is of immense value. It regulates our action and keeps us within bonds of civilized norms. It makes man great, popular and modest. Where there is discipline, there is education as well as peace. It is a brake. If we fail to apply the brake, we have to meet with accidents and lose something important. In this way, discipline develops selfcontrol, strength, communal harmony, unity and character. A man is just like an animal without discipline. His life and actions become aim less. In the present age, indiscipline is a great evil. It is growing in every walk of life. Today crimes and thefts are on the increase. People seem to have forgotten the value of discipline. In fact, discipline is a good thing. It builds character. It is a key to success in life. The higher is the sense of discipline, the better it is for the people and the country.

*** *** ***

Leadership

Sachin Singh
7th - A

Rely on your own strength of body and soul. Take for your star self-reliance, faith, honesty and industry. Don't take too much advice-keep at the helm and steer your own ship, and remember that the great art of commanding is to take a fair share of the work. Fire above the mark you intend to hit. Energy, invincible determination with the right motive, are the levers that move the world.

*** *** ***

Mahatma Gandhi

Nitin Yadav
VI - C

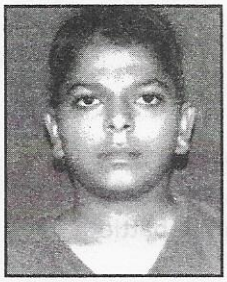

The Birth of Mahatma Gandhi : Mahatma Gandhi is called the Father of Nation. Mahatma Gandhi was the Leader of whole mankind. He is called 'Bapu'. Gurudev Rabindra Nath Tagore was the first to give him the title of "Mahatma". Gandhi Ji was born on 2nd October, 1869 at Porbandar in Kathiawar district of Gujarat. His father was 'Deewan of Porbandar'. His mother's name was Putlibai. She was a simple lady of religious thoughts. His name in childhood was Mohan Das Karam Chandra Gandhi. He was married to Kasturba at the young age of thirteen years.

Satyagraha : He went to England to study law. Having returned from there, he started advocacy. For some legal matter, he went to South Africa. At that time, there was great tyranny against Indians because of racial discrimination. He started Satyagrah against it and went to prison. At last he got tyranny against Indians stopped. It was the first success of Gandhi Ji.

Gandhiji Returned to India : Having returned to India, and seeing the poor conditions of the farmers, Gandhiji started Satyagrah at Champaran. Later on he became active in fighting for the freedom of the nation and the whole country supported him in it.

The English left on 15th August 1947 : Because of the movement pioneered by Gandhiji and his way of truth and non-violence, the English left on 15th August, 1947.

The least important word in life is 'I' and the most important word is 'You".

The Mantra of Patience

Vaibhav Gupta
6th - C

Never ever give up being patient

A person's character is really tested during difficult times. When life is going on smoothly, it is very easy to be happy and cheerful. However, the real test is whether one can face tough times with patience and a balanced attitude.

To quote the famous lines of a poet :-

You do not Fail on falling you should stand up again that's life.

This is where the virtue of patience strengthens your character, giving youth courage to face and over come every challenge in life.

Defeat is not the end, but a new beginning

Sometimes, when you fail or face defeat you may feel sad and low, and even think it's the end of the world. You should never think that, because in todays competitive world you will face failure as aften as you face success. In fact, it is when you experience failure that you actually discover how strong you are, and by overcoming your set back you learn to move forward. Thus, your failure shows you the path to a whole new beginning. If you approach your problem with a calm mind, you will also be able to identify your own weakness.

Patience is the key to future success

Today as a student, you may get disappointed when you score marks well below your expectation. Later in your career, there will be many occasions when you may fail to achieve a target. Ultimately, control of anger, facing challenges, and the mantra of patience are related to each other. Making sure you don't get stressed is the way to ensure you keep cool. All the qualities mentioned especially patience, play a very important role in your life.

*** *** ***

Hail Martyrs!

Gautam Jha
XII - A

Don't ever forget them
Don't let their glory fade
They are our heroes
Follow them

They who led us to freedom
They who sacrificed their lives
So that we may live
They were like rocks
in the face of obstacles and storm

Hail Martyrs! Hail to thee!!

***

Life

Abhinav Patel
12 - B

Life is a not a fairy tale
It is full of struggle

Sometimes it is a battle
And Education and sacraments
Are our weapons in the battle

We face challenges
There can be no excuses
Fame and Name are the
rewards of this game
Try and Try Again

There is so much you can gain
Peace, Content and glory
Bring you everlasting victory.

***

Sweet are the Uses of Adversity

Abhinav Patel
12th - B

"Senior Duke, Who is living in the forest of Arden, consequent upon being dethroned and exiled by his own brother, makes many favourable comments, including the one that forms the title of this topic, on a life of adversity."

Adversity here refers to the adverse cuircumstances of those people who were earlier prosperous. Powerful and prosperous people are always subject to conspiracies and intrigues on the part of those who envy their positions and want to cheat them. They have few friends and benefactors. In adversity, only true friends stand by you.

Again adversity reveals what are the stark necessities of life and what are the luxuries of life. A prosperous man takes his luxuries for necessities and is unable to distinguish between the essentials and nonessentials. Adversity brings out the latent strength of an individual to fight the adverse circumstances and to overcome them. It, therefore, develops the skills, talents and fortitude of a person. The struggle one has to wage while in adverse circumstances equips a man to face hardship and strengthens his body and mind. He gains mastery over environment and acquires self confidence.

It can be said with ever greater justice that a man, who has experienced the adverse circumstances, can enjoy good things of life to the utmost. The sweet uses of adversity tell only one side of the story and overlook the flip side of adversity. Passive acceptance of adversity often fosters an attitude of complacency and abject submission to one's lot such an attitude discourages a person from making efforts to entricate him from poverty and misery.

They should not be deluded by any real on supposed uses of adversity but should be supported by all right thinking people in their struggle against tyranny and exploitation and and also in their endevour to transform their lot from adversity of prosperity.

*** *** ***

Olympic Games

Sumit Singh
VII - C

The history of Olympic Game is about twenty eight hundred year old. First of all, these games were held by the Greeks in 776 B.C. on Mount Olympus in honour of the Greek God Zeus. These games continued to be held every four year until 394 A.D. when they were stopped by a royal order of the emperor of Rome. Besides games and sport, competition were also held in literature, art, drama and music, these games were revived in 1894 by the effort of the French Baron Pierre de Coubertin, and the first Olympic Meet in modern series was held in 1896 in Athens, the Capital of Greece. Since then Olympic Games are being held every fourth year except during the year of the Ist and 2nd World Wars. The 20th Olympic were held at Munich (Germany) in 1972. 21st at Montreal (Canada) in 1972. 29th Olympic Games were held at Beijing in China in August 2008 30th Olympic Games were held at London in England in August 2012.

*** *** ***

The Story of a Martyr

Ekagra Pandey
12th - B

"If death strikes before I prove my blood I swear I will kill death."

It was the intention of a brave soldier, who was posthumously awarded Param Vir Chakra the highest gallantry award of Indian armed forces. He was a brave soul.

He was a young officer of Indian army - Captain Manoj Pandey, a brave heart.

Manoj Pandey was born in Sitapur (Uttar Pradesh) on 25th June 1975 of to Mr. Gopichand Pandey and Mrs. Mohini Pandey. He was a very intelligent and energetic personality. He had a keen interest in boxing. He completed his schooling from "Rani Lakshmi Bai Memorial Sainik School", Lucknow. After completing his school studies he joined NDA (KHADAKWASLA). After graduating 'M' squadron. He was sent at forward post. he was commissioned in 1/11 Gorkha rifles. After serving in Siachen, when his company was to return home the Pak Army was detected at Kargil.

Considering Gorkhas to be the best fighter for terrains they were deployed in Batalik Kargil Sector.

In the Kargil war Capt. Manoj is credited for leading his men to some of the victories of Kargil war. First he won the "Kukarthan" and again he and his "BRAVO" company advanced towards the most strategic Jobar Top. He was the second in command of his company, his commander was Maj. T.S. Shikoria (as described by Hav. Iccha Kumar Rai), Cal. Lalit was his commanding officer. Capt. Pandey led his men in exemplary fashion and displayed extraordinary valour, and in the final attack 2/3 July 1999, he led his men from the front and surged ahead despite the hail of bullets and accurate enemy fire from a commanding position the assault culminated in a hand to hand combat where in he was grievously injured with utter dis-regard for personaly safety he led his men by recapturing the bunker area before succumbing to his injuries sustained during the operation. He cleared many bunkers, he succumbed to the injuries soon after assuring that the Khalulbar has been fully cleared of the enemy.

He was awarded the nation's highest martial honour for upholding cherished ideals displaying raw intelligence under fire.

He was a highly optimistic personality who once said, **"Some goals are so worthy that it's glorious even to fail."** But the word "Fail" was not in this officer's voicabulary and history.

*** *** ***

Words of Wisdom

Sachin Pathak
XI - A

1. Take time to read : It is the foundation of wisdom.
2. Imagination is the highest kite, one can fly.
3. Good actions give strength to ourselves and inspire good actions in others.
4. Everyday is a little life live it to its fullest.
5. You are the sole master of your thought process.
6. Pursue one great decisive aim with force and determination.
7. Let there never be any doubt what you stand for.
8. The job of the leader is not to create followers. It is to create more leaders. Fearlessly.
9. The result of your journey is not the reward. The journey is the reward!
10. Failure is not when you don't reach your goals. It is when you don't have any goal to reach!

Child Labour

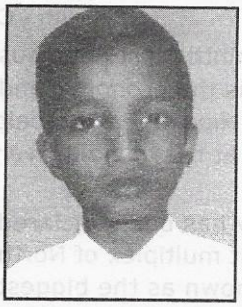

Akshat
8 - A

Although we have been independent for the last sixty five years, yet we have not been able to get rid of some glaring evils of society. Child labour is one of them. Some parents do not send thier children to school. They are forced to work in mills, factories, fields or farms in the harvesting season when the demand for labour increases. Children below the age of 18 are asked to work in the fields. According to the "Convention of the rights of the child" 1980, every child has the right to an adequate standard of living and social security. He has the right to education also. The problem of child labour is directly linked with the problem of poverty. Children of today are the citizens of tomorrow. Play, education and good health are their fundamental rights. It is sad that in our country children are denied these facilities and are made to work.

*** *** ***

Sarojini Naidu

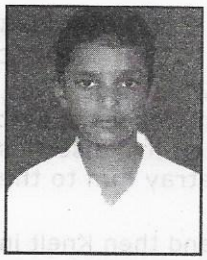

Himanshu Omar
VI - C

Sarojini Naidu was a great woman. She was born in Hyderabad on 13 Feb. 1897, Her father's name was Dr. Aghorenath Chattopadhyaya. Her mother's name was Varad Sundari and Her mother and father came from Bengal and lived in Hyderabad for a long time.

Sarojini Naidu is also known as 'Nightingale of India' and she was a great social reformer and a great poet and orator.

She was bold and fearless. Sarojini saw a mixture of cultures at her home.

*** *** ***

The Milk maid and her Pail of Milk

Suyash Patel
6th - C

Once there was a milk maid. She was very ambitious. She used to build castles the air. One day she was carrying a pail of milk on her head to sell in the market. On the way she began to dream of her future. She thought when she would sell the milk, It would fetch her enough money she would buy hens. Hens would lay eggs. She would sell those eggs in the market. She would become rich. She would buy fine clothes to wear. She would use cosmetics also. People would propose to marry her but she would decline their offer.

Thinking this, she tossed her head in pride. She forgot that she had a pail of milk on her head.

As a result, that pail of milk fell down and all her dreams were dashed to the ground.

***

OUR KANPUR CITY

Monesh Kr. Agarwal
8th - C

Kanpur was spelled as 'Cawnpore City' before 1948 and it's the ninth most populous city in India and the largest within the State of Uttar Pradesh. Kanpur is the economic and industrial capital of Uttar Pradesh. It is the second largest city of the Hindi speaking belt after Delhi. Kanpur has an urban periphey of around 90 Km. It stands at the bank of river Ganges.

Kanpur is one of oldest industrial towns of North India. Our city has been declared the "BOOMTOWN" and is also renowned for Export Excellence. The first multiplex of North India was opened in Kanpur it was named RAVE-3. Our city is also known as the biggest education hub of India. Top class engineering colleges are present in the city IITK and HBTI are the renowned engineering colleges. Now the city is being developed as a metro city like Delhi. But it still needs support from local authorities and specially from State Government.

Bithoor is the most important tourist destination for visitors in Kanpur. J.K. Temple, Nana Rao Park, Kanpur Zoo and lot of other locations are also famous.

*** *** ***

Last Supper of Jesus Christ

Kanishk
6th - C

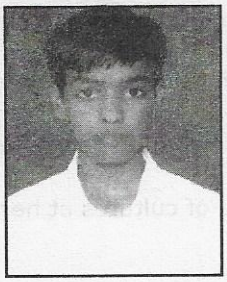

According to the Bible, Jesus Christ ate his meal with his disciples, before his crucifixion. The day on which Christians remember the Last Supper is also known as **Maundy Thursday**. All his twelve disciples were present, including Judas, who was later to betray him to the Romans.

At the supper, Jesus poured water into a bowl, and then Knelt in front of each of the twelve disciples, washing their feet, and drying them with his towel. He blessed the bread and the wine and gave it to disciples. He said 'One of you sitting here will betray me.' His words came true, He was betrayed by his apostle, Judas Iscariot.

*** *** ***

Jokes

Naman Mishra
6th - B

1. Customer : will you help me Out? Bank Manager : just walk out of that door.
2. Rahul : Ramu please call me a taxi Ramu : Yes Sir! you are a taxi.
3. Pappu : Doctor, Doctor I think I am a smoke detector.
   Doctor : Calm down. There's no cause for alarm
4. Ticket checker to Raju : show me your ticket Raju : Take it and see
   Ticket checker : Excuse me, this is the old one Raju : Your train is also old one sir.
5. A man orders pizza in a Restaurant Waiter : What will you have afterwards?
   Customer : Indigestion, I expect.
6. Wife : Oh, honey! The cat ate the dinner. I made for you
   Husband : That is ok we can get a new cat tomorrow.

Words of Wisdom

Aditya Singh
VII - B

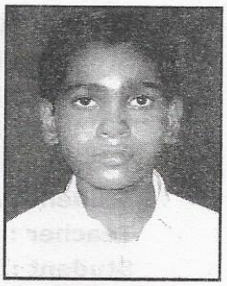

A - Always speak the truth.
B - Beware of false friends.
C - Cut your coat according to you cloth.
D - Do good and think good.
E - Early to be, early to rise, makes you healthy, wealthy and wise.
F - Fight for a noble cause.
G - Good health is above wealth.
H - Hate nobody love everybody.
I - It is no use crying over spilt milk.
J - Jump forward while other hesitate.
K - Keep your body fit.
L - Look before you leap.
M - Man proposes, God disposes.
N - No pains, No gains.
O - Obey your elders.
P - Practice makes a man perfect.
Q - Quarrel not with your friends/neighbours.
R - Respect others only then you will be respected.
S - Self praise is no recommendation.
T - Truth and honesty go hand in hand.
U - Unity is strength.
V - Vows made in storm are forgotten in the clam.
W - Work hard till you succeed.
X - X-mas for preaching divine virtues.
Y - Yearn for success.
Z - Zeal is the spice of life.

*** *** ***

Teachers

Akash Singh
7th - A

Teachers are like beautiful pearls
They take care of all boys and girls
They are very helpful and kind
Everything they teach settles in our mind
They are never rude and shrewd
They never scold or chide
They makes us confident, they make us
bold their minds are intelligent
Their hearts are pure
They are very gentle, they are very nice'
We will not forget them or their advice
They always help us, they always love us
We love our teachers
We sing in chorus
"Listen to your teacher, it will certainly pay in the long run".

Jokes to tickle your laughing bone

Shashank Trivedi
VII - A

1. **Teacher to student :** What is number seven Even or odd?
   Student : Even
   Teacher : How can you make seven even?
   Student : By removing S.
2. **Teacher :** What is an Island?
   Student : A piece of land surrounded by water except from one side.
   Teacher : From one side
   Student : Yes, from the top
3. **The Most practical quote for todays youth :** I love facebook but I hate to face the book

*** *** ***

The Clouds and the Rain

Shekhar Kumar
VII - B

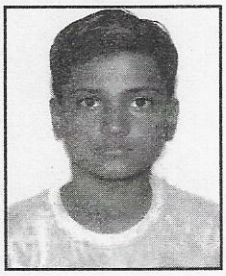

I can see dark clouds across the sky
They tell us that monsoon's here
Dark and floating clouds then pour
Pearly Rain drops every where.
Clouds make lightning flash over our head
And irrigate fields with rain
Dark clouds help spread the fragrance of earth
They bring joy and mirth.

*** *** ***

Relation between A teacher and student

Vibhav Singh
VI - C

* I Want to tell something about the relationship between Teacher and Student.

If teacher is God, Student is priest
If teacher is life, student is breath
If teacher is Guide, student is traveller
If teacher is Gardener, student is flower.
If teacher is Industrious, student is success.
It teacher is Judge, student is Justice.
It teacher is Lamp, student is Light.
If teacher is Poet, student is poetry.

* The student is the child of the teacher. She looks after the student with parental response and leads him to the path of bright and successful future. The teacher is not a person who teaches and gets salary. A teacher is a mentor and beacon of light.

Be true to your word, your work, and your friend.

Wonders of Science

Kratika Bajapi
VIII - B

At present, from morning till night, whatever we use, is the gift of science. In the morning, the tick-tick of the watch makes us awake. We put the light on. We light gas burners and prepare tea. We cook food in pressure-cooker. We enjoy television, cinema and talk through telephone. We travel by three-wheelers or taxies.

All the above mentioned inventions are pleasure giving. The distance has been shortened. Every minute in life has become valuable. We have new ideas and knowledge in our life. If is all due to gifts of science so science is boon for life. It is the duty of scientists that they should not make destructive weapons. They should invent and make such things which would make man's life improved pleasing and without pollution. On the one hand, science has several boons, on the other hand it also has several curses. It has caused fear in our life. Man has become selfish. The spirit of 'live and let others live' has gone. So, science has become curse due to all this.

Conclusion - Science has made Man's life more prosperous, enjoyable and safe than before.

*** *** ***

How should a "Teacher" be?

Harshit Mishra
VI - B

T - Talented
E - Eloquent
A - Adorable
C - Competent
H - Honest
E - Efficient
R - Responsible

How should a "Student" be?

S - Sincere
T - Truthful
U - Undaunted
D - Disciplined
E - Educated
N - Nice
T - Talented

Mother

Naman Mishra
VI - B

Mother is future
Mother is past
And mother is present
Her description is too vast
Mother is happiness
Mother is peace
She is everything
What we can say in Brief
Mother is dedication
Mother is devotion
Mother can be used
As an image of meditation
Mother is Maa
Mother is a mother
She is an angel
She is a goddess
Mother is here
Mother is there
Here love is immortal
For ever and ever
Mother is patience
Mother is forgiveness
We feel delighted
Always in her presence

You must have goals, but the goals should be achievable.

Sachin Tendulkar

Sekhar Kumar
VII - B

Name - Sachin Tendulkar
occupation - Cricketer
Birth Date - April 24, 1973 (Age 40)
Place of Birth - Bombay, India
Full Name - Sachin Tendulkar
Zodiac Sing - Taurus

Birth and Date

Sachin Tendulkar was born on April 24, 1973 in Bombay, India. Given his first cricket bat at the age 11, Tendulkar was just 16 when he became India's youngest test cricketer. In 2005 he became the first cricketer to score 35 centuries in test matches.

Family Information

Professional cricket player, largerly considered circket greatest batsman, Sachin Tendulkar was born in Bombay India, to a middle class family, the youngest of four children. His father was a professor while his mother worked for life insurance company.

Named after his family's favourite music director, Sachin Dev Burman Tendulkar wasn't a particularly gifted student, but had always shown himself to be standout athlete.

Awards & Rewards

1. He won 16 Man of the Series Awards.
2. He was conferred by 'Rajiv Gandhi Khel Ratna' the 'Arjun Award', 'Padma shri', 'Padma Vibhushan' by the Indian Government.
3. He as awarded the 2010 Sir Garfield Sobeers Trophy for cricketer of the year.
4. He became one of the youngest Arjun award after he was conferred the award in 1994.
5. On Oct 6, 2010 - Sachin Tendulkar won his first ICC award.

Record

1. In 2007 Tendulkar reached another major milestone becoming the first player to record 15,000 runs in one day international.
2. He was 11 years old when he was given his first cricket bat and his talent in the sport was immediately apparent.
3. At the age of 18 he scored, a pair of centuries in Australia, then in 1994 racked up a score of 179 in a match against the West Indies.
4. Tendulkar's dominance of his sport has continued, even as he moved well into his thirties. He scored his record-breaking 35th century in test play in December 2005 in a match against Sri Lanka.
5. Just one month later he registered another first a double century in a match against South Africa. That same year he was named the 2010 International cricket council cricketer of the year.

Learn to like the things that need to be done.

We all Love M.S. Dhoni

Naman Mishra
VI - B

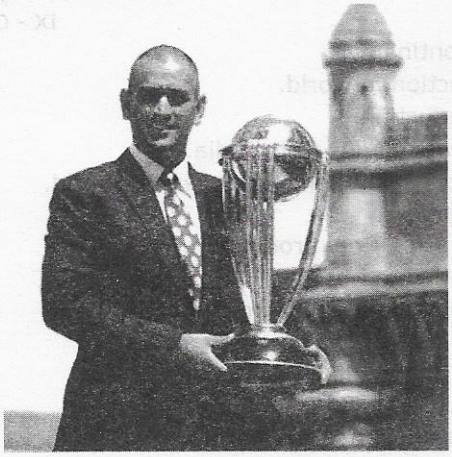

He was born on 7th July 1981. He is an Indian cricketer and the current Captain of the Indian Cricket Team and the Chennai Superking (CSK) team. He made his debut in Oneday International in December 2004 against Bangladesh and a year later played his first test, this time Sri Lanka.

Under his Captaincy India won 2007 ICC World Cup 20-20 and 2011 World Cup.

*** *** ***

Try Try Again

Suyash Patel
VI - C

Failures often break the man. He should not lose heart. It is the coward who accepts defeat. The brave people are not disturbed by their failures. They try and try again. They go on trying till they get success. We all have heard the story of 'King Bruce and the Spider'. After suffering defeats he hid himself. He saw a spider trying to reach its cobweb. It tried seven times. At last it succeeded. This filled King Bruce with courage. He made another attempt, we should not lose heart. We should remember the story of King Bruce and should make efforts. Those who do not get frightened at the difficulties in the beginning and try again with courage reach the highest of glory. Before coming to a conclusion, scientists too try again. Then only they are able to make new inventions. Thus success comes to those who go on trying again and climb higher.

*** *** ***

AIM

Monesh Kr. Agarwal
VIII - C

A life with aim, is like a game. It is a must for you, to achieve much, not fail but to get success. The slogan is the same just try your best, and don't take rest. Till good becomes better, And better becomes the best.

Mistake

When a doctor makes a mistake, It's an operation when a scientist makes a mistake. It's a new creation. When a teacher makes a mistake, It's a revolution. But when a student makes a mistake. It's a mistake only a mistake.

Incredible India

Hritik Pandey
IX - C

* India is the only country which is called a sub-continent.
* India occupies the first position in banana production in world.
* India ranks next to China in world vegetable production.
* 45 per cent of all global production of Cashew Nuts comes from India.
* In India, textile industries command the highest employment rate over the world.
* India is the world's fourth largest producer of rubber.
* India ranks 3rd in the world after China and U.S.A. in Coal production.
* India has the largest network of roads in the world.
* With its fleet of 471 Ships, India ranks 17 in the world in shipping tonnage.
* India has the second largest Army in the world.
* Grand Trunk Road in India is the longest road of the world.
* India has the largest constitution, all over world.
* The digit 0 (zero) was invented by Indian Mathematician 'Aryabhatta'.

*** *** ***

Importance of a Teacher in Student's Life

Nishant Shukla
VIII - C

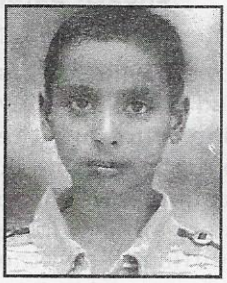

Education is granting the first and the most important role that a teacher plays in every student's life. Some one has rightly said, "A Teacher's purpose is not to create students in his own image, but to develop students who can create their own image." Teacher's place is much higher than parents & God because they are the only ones who tell students this is book, this is apple etc. He makes the students understand the value of life. More than parents, teacher helps students to bring them up. Teachers act as critics when students are led astray. With the blessing of teachers students can achieve their goal very easily in spite of having series of problems.

*** *** ***

Here are Seven Golden Rules to be Happy in Life

Ayushman Sahu
VI - B

1. Never Hate anyone
2. Don't worry about things
3. Live simply
4. Expect little from others
5. Give a lot
   (or give your 100% in everything you do)
6. Have a special friend
7. Always smile in every situation

True - Friendship

Monesh Kr Agarwal
VIII - C

Once in a lifetime
We are blessed with a friend
Who touches not only our heart
But also our soul.
Once in a life time if we are lucky
We find some one
Whom we are comfortable with
Once in a life time
We discover someone
Who stands beside us and supports us
Who talks with us
And laughs with us.
He is our friend Our dear friend.

विज्ञान प्रदर्शनी

PARLIAMENT
HOUSE
GOLDEN
TEMPLE

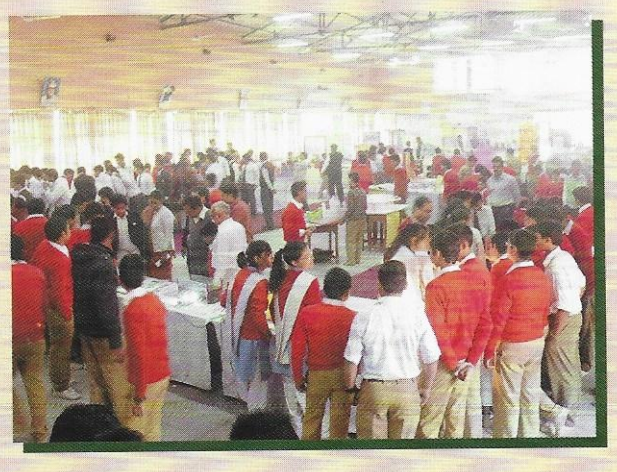

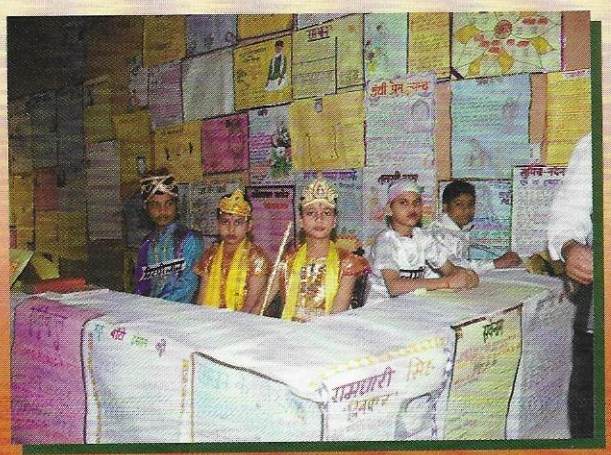

POLLUTION
CAUSES
GLOBAL
WARMING
USA FARM
INDIAN FARM
HUMAN
ENVIRONMENT

विज्ञान प्रदर्शनी

Chemical Analysis

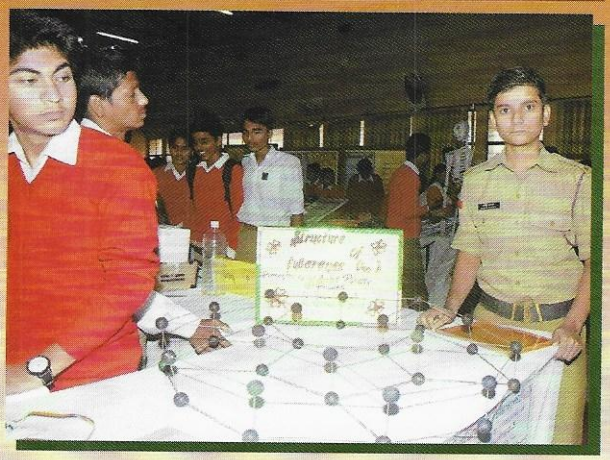

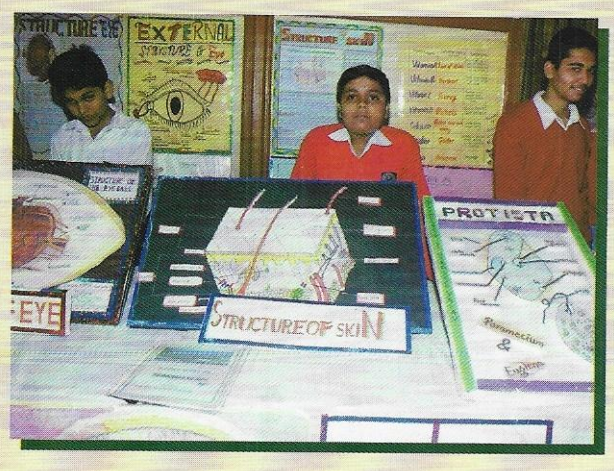
EXTERNAL
PROTISTA
STRUCTURE OF SKIN
EYE

ROTATION OF THE EARTH
REVOLUTION OF THE EARTH
सामा० विज्ञान विभाग

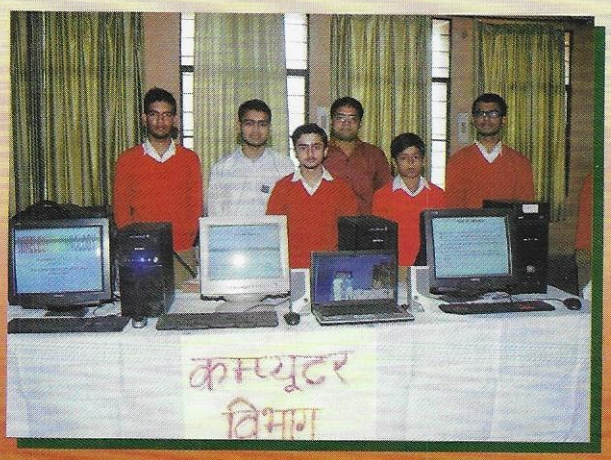
कम्प्यूटर विभाग

वाद विवाद प्रतियोगिता

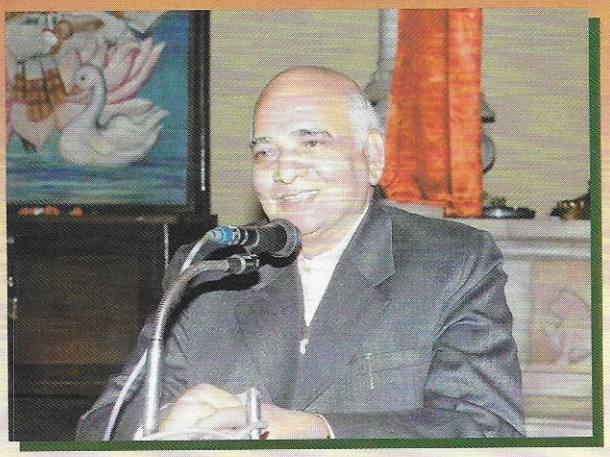

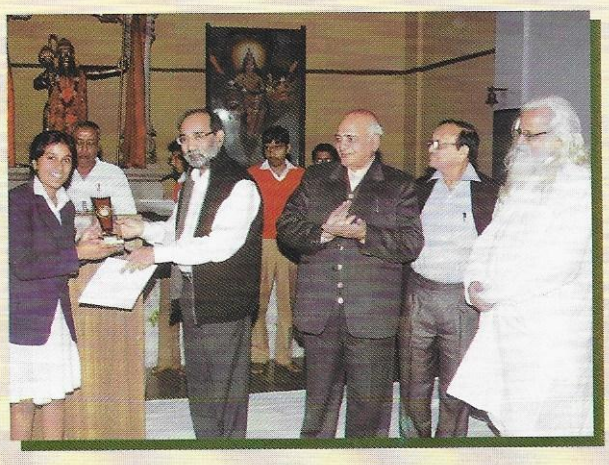

विविध

उत्तराखण्ड त्रासदी सहायतार्थ विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डा0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल से चेक प्राप्त करते हुए कर्नल श्री आलोक मेहरा एवं साथ में हैं श्री वीरेन्द्रजीत सिंह (सचिव), श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव (प्रधानाचार्य) एवं श्री दिनेश सिंह भदौरिया (आचार्य)।

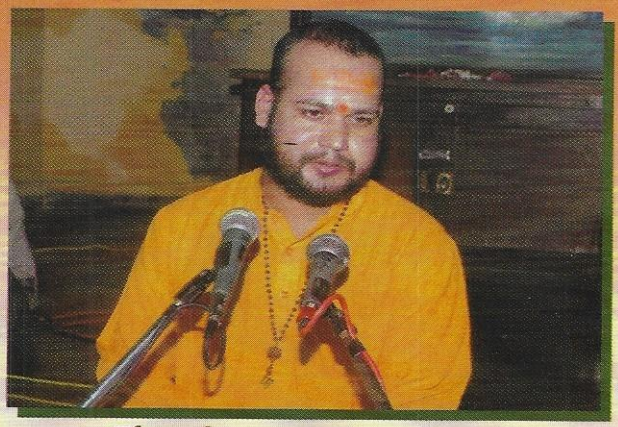

गुरूपूर्णिमा पर्व प्रवचन करते हुए चिन्मय मिशन कानपुर के ब्रह्मचारी जयदेव चैतन्य जी महाराज।

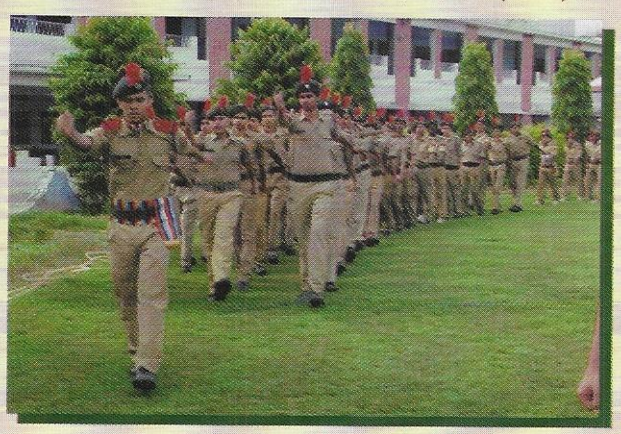

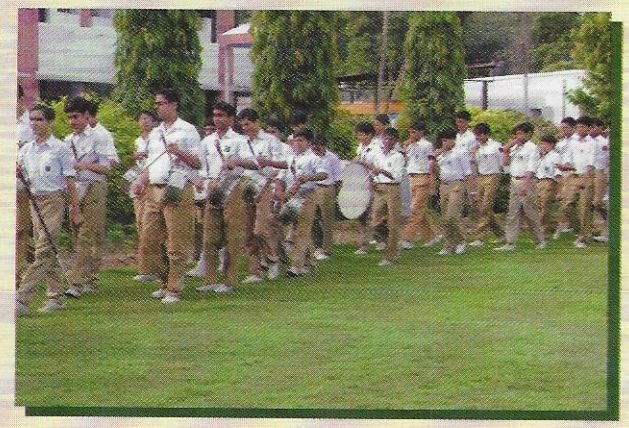

स्वतन्त्रता दिवस में एन.सी.सी. के जवान भैया अरुण राय के साथ पद संचलन करते हुए। घोष के छात्र अपने वाद्ययन्त्रों के साथ घोष वादन कर चलते हुए।

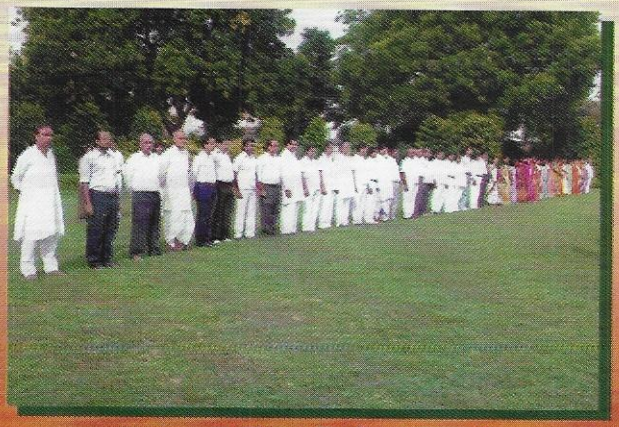

स्वतन्त्रता दिवस में गोल फील्ड में पंक्तिबद्ध आचार्य एवं आचार्यावृन्द।

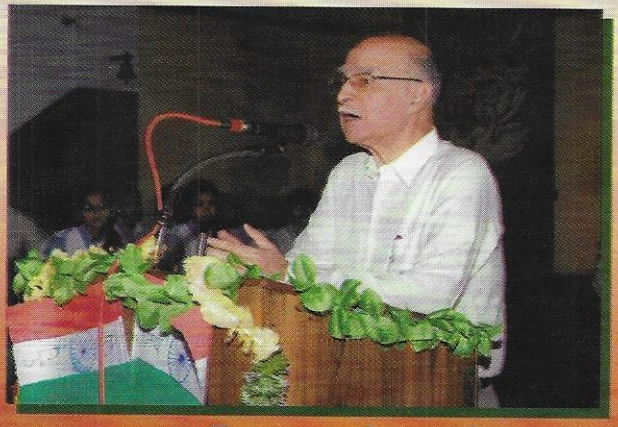

स्वतन्त्रता दिवस पर उद्बोधन करते हुए सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह।

विविध

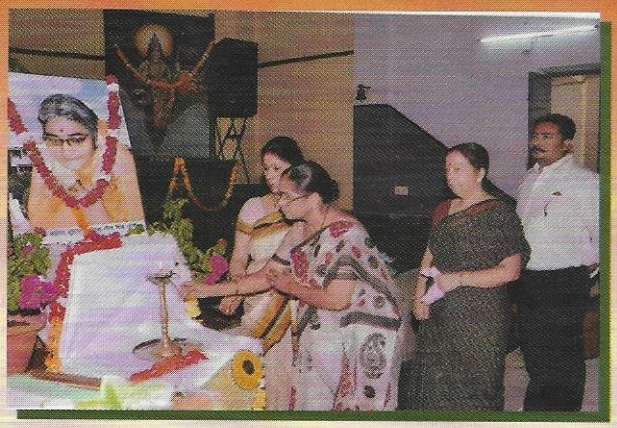

'बूजी' जयन्ती पर गीत गायन प्रतियोगिता का शुभारम्भ करती हुई डॉ. नीरू टण्डन, श्रीमती माधुरी केन्दुलकर, श्रीमती राजेश्वरी ढौंढियाल, श्री संजीव सिंह।

15 अगस्त के उपलक्ष्य में आयोजित लघु नाटिका प्रस्तुत करते चि. अभिजय, कृष्णा एवं उनके साथी

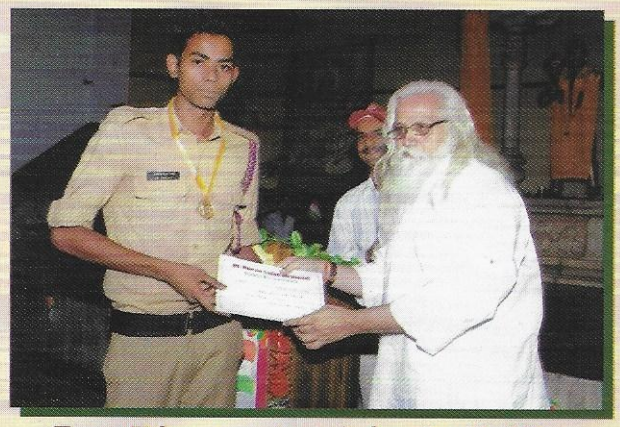

चि0 अभिषेक राज रंजन के तैराकी प्रतियोगिता का पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री दीपक जी।

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का उद्घाटन करती हुई मुख्य अतिथि महोदया साथ में डा0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल

खिलाड़ियों को शपथ ग्रहण कराते हुए भैया रोबिन सिंह

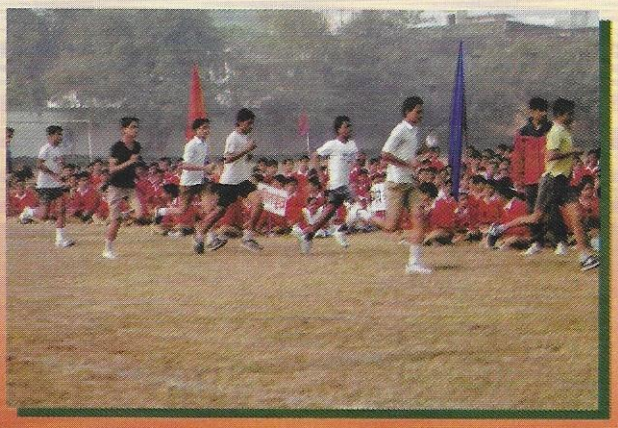

दौड़ प्रतियोगिता में दौड़ते धावक

VISUAL TREAT

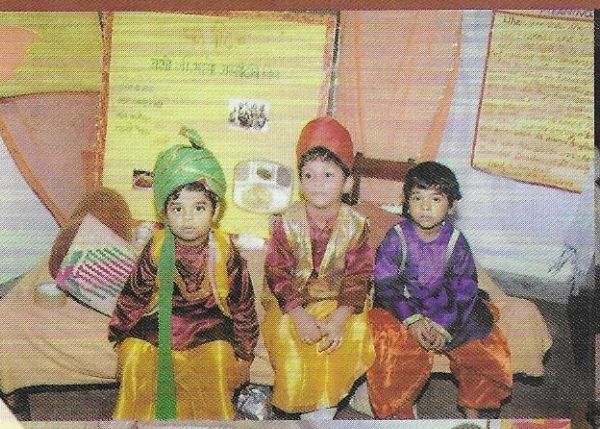

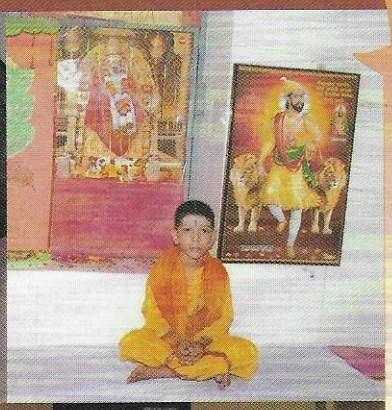

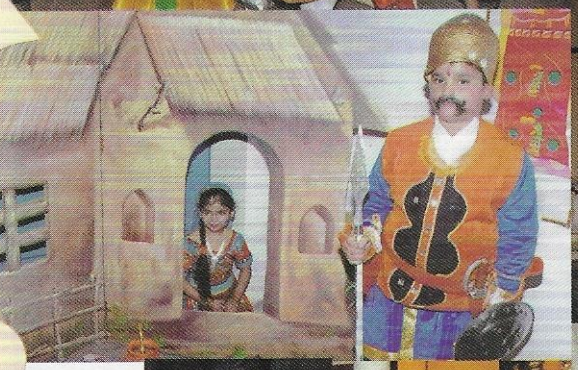

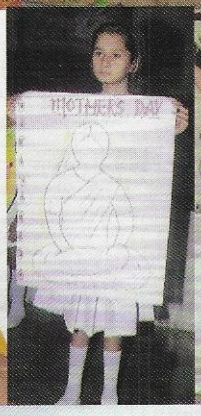

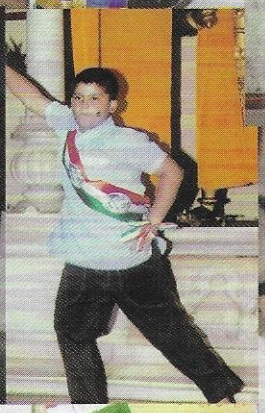

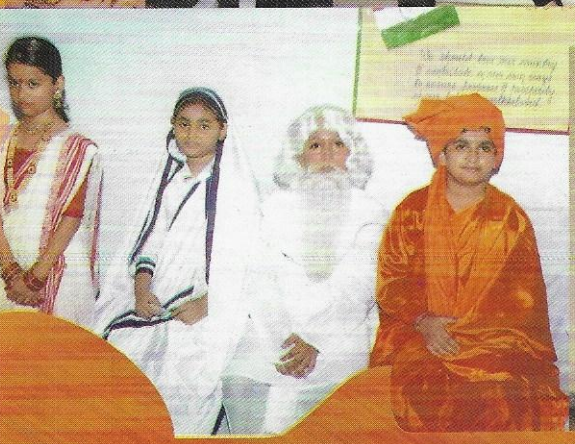

FUN TIME : *All work and no play makes Jack a dull boy*

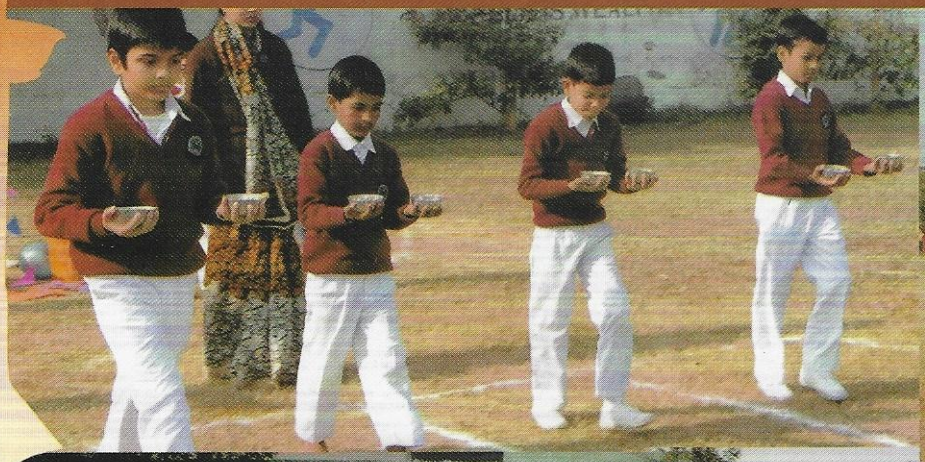

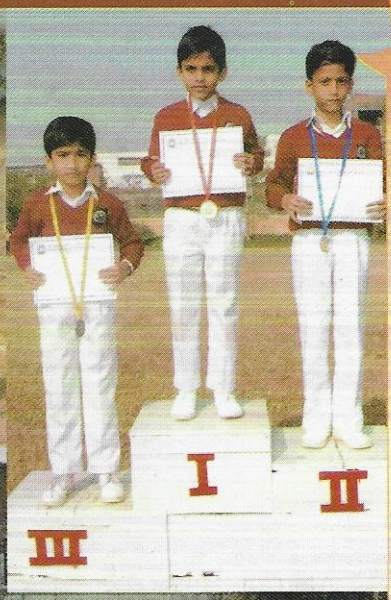

YOGA : *The journey of the self, through the self, to the self.*

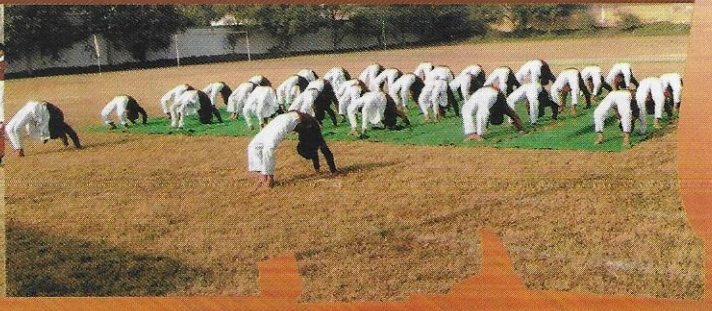

CLASS PHOTOGRAPHS

Class I

Class II

Class III

Class IV

Class V

ICE CREAM PARTY

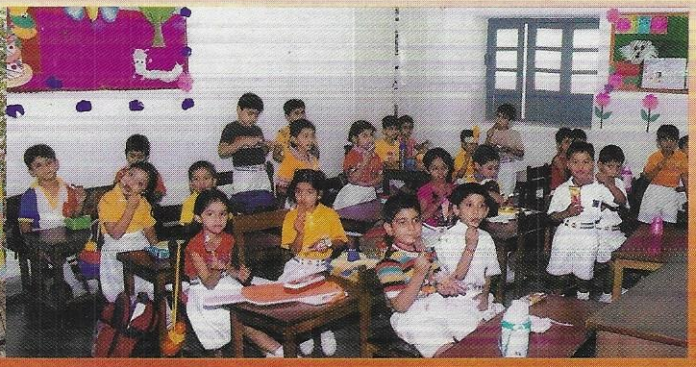

वार्षिक रिपोर्ट प्राइमरी विंग

2013–2014

श्रीमती ज्योति मोहन

किसी भी छायादार, फलदार वृक्ष की शुरुआत एक छोटे से बीज से होती है। वैसे ही देश को मजबूत बनाने के लिए नन्हें हाथों को मजबूत बनाना हमारा काम है, क्योंकि, यही नन्हें हाथ कंधे विशाल भारत को सँवारने, सजाने में तभी सक्षम हो सकेंगे जब उनकी बुनियाद मजबूत और सुन्दर होगी। विद्यालय का प्राइमरी विभाग इस तरफ प्रयासरत है।

नये सत्र की शुरुआत 17 अप्रैल से हुई। कक्षा 1 तथा कक्षा 5 के बच्चों का स्वागत किया गया।

इसी माह 27 अप्रैल को बच्चों की **रंग भरो प्रतियोगिता** आयोजित की गई। नन्हीं कल्पनाओं में इनके मन के भाव साकार हो रहे थे। सभी चित्र इतने सुन्दर थे कि विजेताओं का चयन करना मुश्किल था।

विशेष प्रार्थना सभा की शुरुआत 30 अप्रैल को हुई इसमें कक्षा 5 के नये आए बच्चों ने समय की उपयोगिता को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया।

4 मई को बच्चों द्वारा चयनित क्रियाकलाप में उन्हें सम्बन्धित शिक्षिकाओं, शिक्षकों के पास भेजा गया। प्राइमरी विभाग में संगीत, क्राफ्ट ऑरेगेमी, कैलेग्राफी, नॉन फायर कुकिंग, कत्थक तथा ड्रामा की क्रियाएँ प्रत्येक शनिवार को शुरू की गई। गर्मियों की छुट्टियों से पहले आइस-क्रीम पार्टी का आयोजन किया गया।

11 मई को आयोजित इस **आइसक्रीम पार्टी** में सभी ने आइसक्रीम खा कर खुशियाँ मनाईं साथ ही इस अवसर पर वे **'मदर्स डे'** मनाना नहीं भूले। माँ पर बच्चों ने स्वरचित कविताएँ भी सुनाई।

लम्बी और लू भरी छुट्टियों के बाद प्राइमरी विभाग की कक्षाएँ 3 जुलाई से प्रारम्भ हुईं।

उत्तराखण्ड की त्रासदी का असर बच्चों पर भी था इसके लिए शान्ति सभा आयोजित की गयी।

12 जुलाई को अंग्रेजी की **आशुभाषण प्रतियोगिता** हुई। इसमें बच्चों का प्रयास देखते ही बनता था। कक्षा 1 से 5 तक की सभी कक्षाओं में तीन-तीन बच्चों का चयन किया गया।

13 जुलाई को **सुलेख प्रतियोगिता** हुई इसमें समस्त कक्षाओं के सभी बच्चों ने भाग लिया। हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बच्चों ने लिखा। प्रत्येक कक्षा से सर्वश्रेष्ठ तीन-तीन बच्चों को चुना गया।

15 अगस्त **स्वतंत्रता दिवस** पर कक्षा 3 के बच्चों ने स्वतंत्रता संग्राम पुनः जीवित कर दिया। देशभक्ति से सराबोर इस कार्यक्रम का समापन देशभक्ति गीत से हुआ।

25 अगस्त विद्यालय के लिए महान दिन होता है। विद्यालय की संस्थापिका बूजी जी की जयंती के उपलक्ष्य में **"सद्भावना एक्सप्रेस"** प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कक्षाओं को प्रदेश का रूप दे दिया गया था **कक्षा-1 पंजाब, कक्षा-2 गोवा, कक्षा-3 गुजरात, राजस्थान कक्षा-4 दक्षिण भारत तथा कक्षा-5 पश्चिम बंगाल।** बच्चे भी प्रादेशिक वेशभूषा में आए थे। पूरी प्रदर्शनी को प्लेटफार्म तथा रेल के डिब्बों के रूप में सँवारा गया था। सभी दर्शकों ने इस रेलगाड़ी से पंजाब से कन्याकुमारी का सफर तय किया।

सितम्बर की शुरुआत **'स्पेल-बी'** हिन्दी से शुरू की गई। इसमें मात्राओं को शुद्ध करना, सही शब्द ढूँढ़ना, श्रुतलेख देकर बच्चों में सही शब्द का ज्ञान बढ़ाना था।

गुरु का भी दोष कह देना चाहिए। - स्वामी रामतीर्थ

इसी तरह अंग्रेजी के शब्दों की स्पेलिंग पूछी गयी जिसमें बच्चों ने बढ़कर भाग लिया साथ ही साथ सही स्पेलिंग बताने की होड़ भी लगी रही।

शिक्षक दिवस पर बच्चों ने अपने शिक्षकों के लिए गीत गाए। मुख्य आकर्षण रहा बच्चों द्वारा अपने शिक्षकों के लिए आयोजित खेल। ये छोटे-छोटे खेल जिसमें गुब्बारे फुलाना, कटोरियों को हाथ के पीछे सँभालना, गेंद को बॉस्केट में डालना आदि। सभी ने इस अवसर का आनन्द लिया।

दशहरा- असत्य पर सत्य की विजय तथा माँ शक्ति का पर्व 11 अक्टूबर को धूमधाम से मनाया गया। कक्षा 1 तथा 2 के नन्हें-मुन्नों ने मंच पर रामलीला प्रस्तुत की। इसके पहले माँ के नौ रूपों का आह्वान किया गया। इस अवसर पर रावण-दहन नहीं किया गया बल्कि इसमें खर्च होने वाली धनराशि को **"शिशु भवन"** में देने का संकल्प लिया गया। इसमें बच्चों ने भी अपने कपड़े तथा खिलौनों का दान दिया।

30 अक्टूबर को सारा समान, जिसमें कपड़े, खिलौने, बिस्कुट, दूध पाउडर आदि सामग्री थी "शिशु भवन" पहुँचा दी गई।

नवम्बर का माह **वार्षिक उत्सव** के नाम रहा। इसी माह 14 नवम्बर को 'बाल दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर कक्षा 4 तथा 5 के बच्चों की दो टीमों के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। 6-6 ओवर का मैच 'टाई' के साथ समाप्त हुआ।

19 नवम्बर को विद्यालय का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ इसमें प्राइमरी विभाग के वंदना, समूह नृत्य, अंग्रेजी नाटिका, नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति रही।

11 दिसम्बर को प्राइमरी विभाग के **खेलकूद** सम्पन्न हुए। योग तथा आसनों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। अभिभावकों के सम्मुख सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों के साथ-साथ मुख्य आकर्षण अभिभावकों की दौड़ रही। सभी ने अपना बचपन फिर से जिया। बच्चों के चेहरे भी स्वर्ण, रजत, कांस्य की तरह चमक रहे थे।

21 दिसम्बर को **अंग्रेजी समूह कविता वाचन** का आयोजन किया गया। कक्षानुसार सभी बच्चों ने एक साथ मंच पर अपनी प्रस्तुति दी। कक्षा 1 इसमें प्रथम रही। ये नन्हें-मुन्ने बिना गलती के अपनी कविता बोल रहे थे।

शीतावकाश के बाद **गणतंत्र दिवस** मनाने का उत्साह सभी में जोश भर गया। विद्यालय के प्रांगण में एकत्र सभी राष्ट्रध्वज को स्वतंत्र रूप से सिर उठा कर लहराते हुए देखकर प्रसन्न हो रहे थे। इस अवसर पर बच्चों ने गीत, भाषण प्रस्तुत करके अपनी-अपनी तरह से देश का सम्मान किया। इस अवसर पर बच्चों ने तिरंगे झण्डे स्वयं बनाकर अपने विभाग को सजाया था।

4 फरवरी को **वसंत पंचमी** के अवसर पर माँ सरस्वती का पूजन, अर्चन किया गया। बच्चों ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की तथा वसंत के पर्व का महत्त्व भी बताया।

2013-2014 में ये प्रयास रहा जिससे बच्चों के भीतर छुपी हुई प्रतिभाओं को बाहर ला सकें। ये बच्चे कच्ची मिट्टी के बने हैं जिन्हें सुदृढ़ और कलात्मक, रचनात्मक रूप देने का उत्तरदायित्व निभाते हुए आगे भी प्रयासरत रहेंगे यही प्राइमरी विंग का उद्देश्य है।

***

धैर्य कड़ुवा होता है पर उसका फल मीठा होता है। - रूसो

अविस्मरणीय अवसर

हिमांशु तिवारी
शारीरिक शिक्षा विभाग
(प्राइमरी विंग)

मध्याह्न भोजन के बाद जब 19.10.13 को मुझे अवगत कराया कि 30.10.13 को शिशु भवन जाना है, तो मैं काफी उत्साहित हो गया, क्योंकि इससे पहले मैंने कभी शिशु भवन के बारे में नहीं सुना था।

30.10.13 दिन बुधवार को योजना के अनुरूप मैं अपने विद्यालय के दस बच्चों व आया के साथ बस से 10.40 पूर्वाह्न शिशु भवन पहुँचा।

मैंने शिशु भवन में प्रवेश द्वार पर अपने विद्यालय के बच्चों की उपस्थिति दर्ज कराई।

बच्चों से मिलने के लिए मुझे पाँच मिनट का इंतजार करने को कहा गया। उक्त वक्त के अनुसार जब मैंने प्यारे नन्हें बच्चों को देखा तो मैं एक तरफ आश्चर्यचकित था कि इतने छोटे बच्चों की व्यवस्थित व्यवस्था कैसे सम्भव है? तो दूसरी तरफ उनकी मासूमियत, किलकारी और रोने का कोलाहल, स्पष्ट रूप से किसी पत्थर दिल व्यक्ति को भी मोम की तरह पिघला देने वाला था।

साफ-सुथरे दिखने वाले प्यारे नन्हों में से कुछ अपने दोनों पैरों को दोनों हाथों से पकड़कर अपनी सूक्ष्म अविकसित मांसपेशियों से ताकत का प्रयोग कर अनूठी, अचल शारीरिक क्रियाओं की पुनरावृत्ति करते जबकि कुछ खिलौनों और किलकारियों के सहयोगात्मक अद्वितीय स्वर को प्राकृतिक रूप से एक सामान्य बालक की भाँति प्रदर्शित कर रहे थे। परन्तु उन बच्चों को क्या पता था कि उन्हें जन्म तो मिला परन्तु माता-पिता नहीं।

कुछ इसे पूर्व जन्म का फल तो कुछ, माता-पिता की संस्कृति, शिक्षा, उत्तरदायित्व, सुकर्मों पर प्रश्नचिह्न लगाकर प्रकृति द्वारा की गयी रचना में व्यवधान पहुँचाकर सबसे घोर पाप करने वाले अपराधी के रूप में वकालत करेंगे।

विद्यालय के बच्चों का कुछ ही क्षणों में ऐसे मिल जाना जैसे कि वे अपने छोटे भाई-बहन को खिला रहे हों - इस प्राकृतिक संवेदना ने मुझे कुछ क्षणों के लिए पुरानी यादों को स्मृति में वापस लाने के लिए मजबूर कर दिया। अचानक एक बच्चे ने आकर मेरा पैण्ट पकड़ लिया। उसके स्वर, हावभाव पहचानने में बिना देरी किये मैंने उसे गोद में ले लिया। फिर क्या था, कभी वह बच्चा हँसता कभी मेरा चश्मा पकड़कर खींचता तो कभी जेब में हाथ डालकर कुछ ढूँढ़ने की कोशिश करता और कुछ न मिलने के भाव हाथ हिलाकर व्यक्त करता।

अचानक दो बच्चे और मेरी गोदी में आने की चेष्टा करने लगे। मैंने जब उन दो बच्चों को गोदी में उठाया तो पहला बच्चा रोने लगा। जब मैंने उन तीनों बच्चों को एक साथ गोदी लेने की कोशिश की तो वे एक दूसरे को मेरी गोदी से नीचे उतारने की कोशिश करने लगे। उनकी यह जिद ममता की उपस्थिति दर्ज करा रही थी।

यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है। - स्वामी विवेकानन्द

इसके बाद मैं सिस्टर से मिला, उन्होंने बच्चों की रोज की क्रियाओं के बारे में बताया जिसमें सुबह 5 बजे उठने से सायं 8 बजे सोने तक शामिल था। सिस्टर ने निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला-

- भारत सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है।
- विभिन्न स्कूल, वैयक्तिक संस्थायें वित्तीय सहायता देती हैं।
- स्वेच्छा से कोई भी व्यक्ति कभी भी कोई सहायता दे सकता है।
- बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ने पर उन्हें 7 एअर फोर्स अस्पताल, भार्गव नर्सिग होम में भर्ती करने की व्यवस्था है।
- विभिन्न शहरों में लघु संस्थाएँ हैं जो अनाथ बच्चों को शिशु भवन में लाने में मदद करती है।
- सामान्य रूप से लगभग सभी बच्चे गोद ले लिए जाते हैं। परन्तु कुछ शारीरिक व मानसिक रूप से अयोग्य बच्चों को विभिन्न शाखाओं में भेजकर उनको शिक्षित करने का प्रबंध किया जाता है।

इसके बाद सिस्टर ने सामूहिक रूप से हमारे विद्यालय के बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ने के लिए प्रेरित किया और सफल होने पर शिशु भवन को और विकसित करने के लिए विभिन्न कदम उठाये जाने के लिए संकल्पित होने को कहा।

चलते-चलते शिशु भवन की सिस्टर ने हमारी कोऑर्डिनेटर को इस सहायता के लिए धन्यवाद दिया।

मैं अपने स्कूल के बच्चों को लेकर 12:10 मध्याह्न स्कूल वापस आया।

इस पूरी आकर्षक, अद्वितीय, जीवन के अहम और छिपे यथार्थ को कुरेदने वाली घटना का पात्र बनने, जाग्रत कर सोचने को विवश करने वाली घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी बनने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं अपनी प्राइमरी विंग की कोऑर्डिनेटर को धन्यवाद देता हूँ।

*** *** ***

शिशु भवन

अक्षिता तिवारी, पंचम,
सीमा कुमारी, पंचम,
हिमांशी पाण्डेय, चतुर्थ

दशहरे पर रावण जलाने की परम्परा है पर इस अवसर पर हमारी तृप्ति मैम ने जब ये कहा कि अब की बार हम लोग रावण दहन पर खर्च नहीं करेंगे बल्कि इस धनराशि को किसी अच्छे काम में लगायेंगे, तो पहले कुछ समझ में नहीं आया, पर मन ही मन हम सभी बच्चे इस बारे में सोचते रहे। तब मैम ने बताया कि हम शिशु भवन जायेंगे। हम सभी ने अपने खिलौने, अपने सुन्दर छोटे कपड़े इकट्ठे किये और सोचने लगे कैसा होगा "शिशु भवन"।

30 अक्टूबर को मैम ने हिमांशु सर के साथ हमें शिशु भवन भेजा।

वहाँ पहुँच कर हमने देखा कि वहाँ बहुत छोटे-छोटे बच्चे थे। सभी सात वर्ष से कम थे।

जिन बच्चों को यहाँ लाया गया था उनके माता-पिता नहीं थे पर इन्हें इतने प्यार और साफ-सुथरे ढंग से रखा गया था जिन्हें देखकर लगा कि ये उन तमाम बच्चों से ज्यादा भाग्यशाली हैं जो अनाथ होने के साथ-साथ बद्किस्मत भी हैं। यहाँ के इन बच्चों को ममता का आश्रय तो मिला।

हम सब बहुत देर तक इन बच्चों के साथ खेलते रहे।

यहाँ की सिस्टर ने हमारे द्वारा ले जाई गई सामग्री, जिसमें खिलौने, कपड़े, दूध पाउडर, बिस्कुट आदि थे, उनके लिए मैम को धन्यवाद दिया तथा हमें आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया और तरक्की करके ऐसे बच्चों की आर्थिक और सामाजिक मदद करने को कहा।

हम सब ने ये संकल्प लिया कि हम बड़े होकर ऐसे बच्चों की सहायता तथा सहयोग करेंगे।

हम अपनी तृप्ति मैम को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमें ये अवसर दिया कि हम ऐसी संस्था में जायें और ईश्वर को धन्यवाद दें कि उसने हमें सब कुछ दिया है।

*** *** ***

सत्य वचन

कृष्णा त्रिवेदी
चतुर्थ

1. "बुद्धिमानों की परीक्षा संकट काल में होती है और शूरों की संग्राम में" - **सोमदेव**
2. "जो कायर है, जिसमें पराक्रम का नाम नहीं, वही देव का भरोसा करता है" - **वाल्मीकि**
3. "पापी का उपकार और पाप का प्रतिकार करना चाहिए" - **मैथिलीशरण गुप्त**
4. "प्रवीणता और आत्मविश्वास अविजित सेनाएँ हैं" - **जार्ज हरबर्ट**
5. "ईंट पत्थर के सभी मंदिरों के ऊपर हृदय का मंदिर है" - **साधु वासवानी**
6. "प्रतिक्षण यह शरीर नष्ट होता है, परन्तु दिखता नहीं" - **नारायण पंडित**

हमारा विद्यालय

प्रांशू कटियार
पंचम

पं0 दीन दयाल विद्यालय यह कानपुर की शान है
शिक्षण संस्थानों में इसका ऊँचा अपना स्थान है।
....
पुण्य गंगा सरित का पावन तट श्रृंगार है।
सबके मन को मोह रहा बनकर सुन्दर हार है।
....
वाणी का यह महल मनोहर विद्या का आगार है।
मानों भू की साक्षरता का, स्वप्न हुआ साकार है।
....
अध्यापक सब कुशल यहाँ पर निज विषयों में दक्ष है।
अध्यापक सब चतुर हितैषी छात्रों के प्रति निष्पक्ष है।
....
अनुशासन है श्रेष्ठ यहाँ का चारों ओर सुकाल है।
कभी न कोई झगड़ा दंगा, कभी नहीं हड़ताल है।
....
रहता पूरे वर्ष यहाँ पर शिक्षण का माहौल है।
सब निर्भय स्वच्छन्द यहाँ पर नहीं कहीं पर होल है।

*** *** ***

प्यारी दीदी

अक्षत दुबे
तृतीय

मेरी दीदी प्यारी है,
छोटी आँखों वाली है।।
लम्बे-लम्बे उसके बाल,
लाल टमाटर जैसे गाल।।
हमको खूब पढ़ाती है,
प्रथम क्लास में आती है।
करती है वह मुझसे प्यार,
रहती हरदम मेरे साथ।।
कक्षा चार में पढ़ती है,
सबको टाटा करती है।।

चन्दा मामा

गौरांग सिंह
द्वितीय

चंदा मामा गोल मटोल,
कुछ तो बोल, कुछ तो बोल।
कल थे आधे, आज हो गोल,
खोल भी दो अब अपनी पोल।
रात होते ही तुम आ जाते,
संग-साथ सितारे लाते।
लेकिन दिन में कहाँ छिप जाते,
कुछ तो बोल, कुछ तो बोल।

एक अच्छी सीख

हिमांशी पाण्डेय
चतुर्थ

करें बड़ों का आदर मन से, हिले मिले छोटों से,
ध्यान लगाकर पढ़ने बैठे, दूर रहें हम खोटों से।
कोई काम न ऐसा कर दें, पड़े देखना नीचा,
हमको तो आगे बढ़ना है काम करेंगे ऊँचा।।
वैर-विरोध न कोई होगा, ईर्ष्या को रौदेंगे,
नम्र भाव से मधुर प्यार से, नित नये पौधे रोपेंगे।।

मैच फिक्सिंग

श्री लंका ने भारत पर विजय पाई यह खबर रावण के पास आई। रावण बोला शाबाश! जयसूर्या मै सूर्पनखा की नाक न बचा पाया पर तूने पूरे देश की नाक बचा ली। जयसूर्या बोला महाराज! यह मत समझिये कि हम केवल कोकाकोला कप लेकर आये है पर यह भी देखिये कि हम कुछ विशेष विचित्र खिलाड़ियों के चित्र भी लेकर आये हैं। रावण उन चित्र को देखकर बोला लगता है कि इन बेचारों के साथ कोई दुर्घटना हुई है जयसूर्या बोला नहीं महाराज! इनकी नाक मैच फिक्सिंग में कटी है। रावण बोला इनकी नाक काटने वाले का नाम राम है। जो लक्ष्मण का भाई है। जयसूर्या बोला नहीं महाराज, उनका नाम सी0बी0आई0 है।

*** *** ***

बहना हमारी

संस्कृति श्रीवास्तव
द्वितीय

पापा की, मम्मी की घर भर की प्यारी,
छोटी-सी, नन्हीं-सी बहना हमारी।
चलती है रुन-झुन-झुन पायल झनकाती,
तुतलाती बोली में गाना वह गाती।
कहती है पहनूँगी मम्मी की साड़ी,
छोटी-सी, नन्हीं-सी बहना हमारी।
देख-देख दर्पण को जीभ वह दिखाती है,
खुद को चिढ़ाती है खुद को रिझाती।
कंधों पर पापा के करती सवारी,
छोटी-सी, नन्हीं-सी बहना हमारी।

नया वर्ष

सूरज राणा
द्वितीय

वर्ष नव, हर्ष नव,
जीवन का उत्कर्ष नव।
नव उमंग, नव तरंग,
जीवन का नव प्रसंग।
नवल चाह, नवल राह,
जीवन का नव प्रवाह।
गीत नवल, रीति नवल,
जीवन की नीति नवल,
जीवन की जीत नवल

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। - स्वामी विवेकानन्द

घमंडी कुल्हाड़ा सिंह (चित्रकथा)

दिव्यांशु अधिकारी
पंचम

एक दिन घमंडी कुल्हाड़ा सिंह जंगल में घूमने निकला।

सभी पेड़ों ने विनती की।

लेकिन कुल्हाड़ा सिंह नहीं माना।

उसे देखकर जंगल के सभी पेड़ डर से काँप उठे।

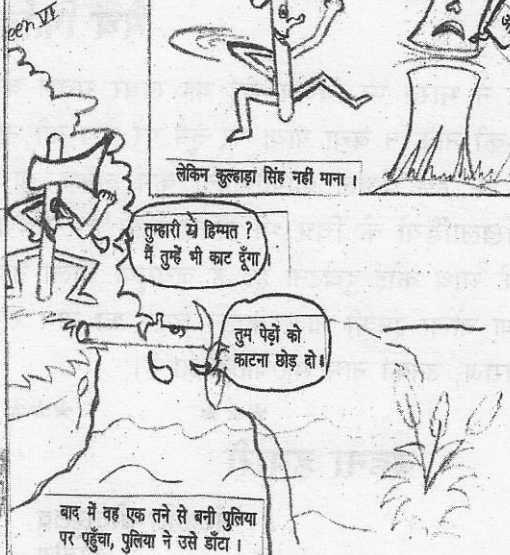

बाद में वह एक तने से बनी पुलिया पर पहुँचा, पुलिया ने उसे डाँटा।

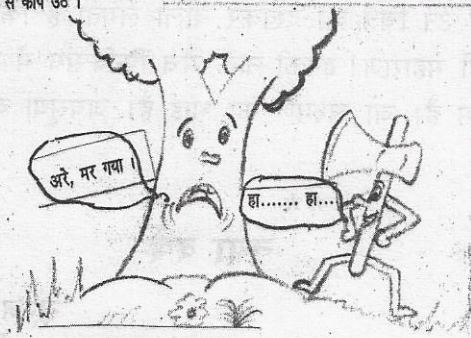

कुल्हाड़ा सिंह एक पेड़ की ओर बढ़ा।

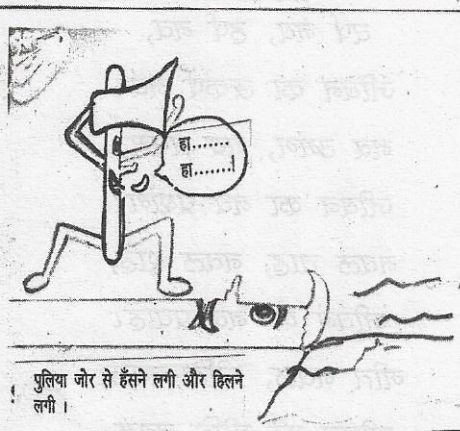

पुलिया जोर से हँसने लगी और हिलने लगी।

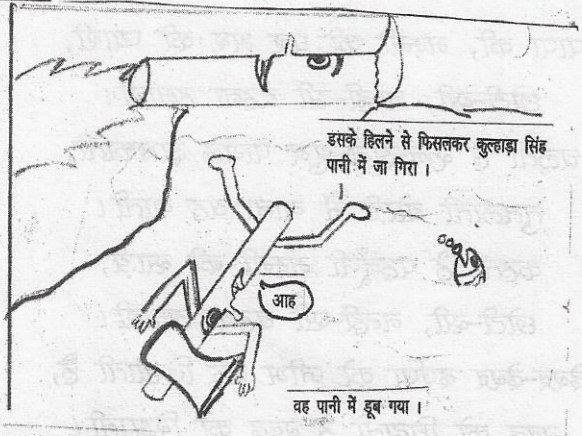

डसके हिलने से फिसलकर कुल्हाड़ा सिंह पानी में जा गिरा।

वह पानी में डूब गया।

बुरे का अंत हमेशा बुरा होता है।

कर्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता। - प्रेमचन्द

कौन क्या कहता है.... क - ज्ञ

कृष्णा त्रिवेदी
चतुर्थ

क	कलेश मत करो	प	पाप मत करो
ख	खराब मत करो	फ	फालतू काम मत करो
ग	गर्व न करो	ब	बिगड़ैल मत बनो
घ	घमंड मत करो	भ	भावुक बनो
च	चिन्ता मत करो	म	मधुर बनो
छ	छल-कपट मत करो	य	यशस्वी बनो
ज	जवाबदारी निभाओ	र	रोओ मत
झ	झूठ मत बोलो	ल	लोभ मत करो
ट	टिप्पणी मत करो	व	वैर मत करो
ठ	ठगाई मत करो	श	शत्रुता मत करो
ड	डरपोक मत बनो	ष	षट्कोण की तरह स्थिर रहो
ढ	ढोंग मत करो	स	सच बोलो
त	तुच्छ मत सोचो	ह	हँसमुख रहो
थ	थको मत	क्ष	क्षमा करो
द	दिलदार बनो	त्र	त्रास मत करो
ध	धोखा मत करो	ज्ञ	ज्ञानी बनो
न	नम्र बनो		

कविता

आदित्य खन्ना
पंचम

** जरूरी नहीं कि पूजा हो हर वक्त,*
और उसमें प्रभु का नाम आये।
जिन्दगी तो खुद ही एक पूजा है,
पर शर्त यह है कि हम किसी के।
बुरे वक्त पर काम आयें।।

* आप जिससे अपनी कमजोरी बाँट रहे हैं, वह कभी-कभी आपकी कमजोरी को आपके खिलाफ उपयोग करने से चूकता नहीं है।

लोक-प्रशंसा प्राय: सभी को प्रिय होती है। - प्रेमचन्द

हंस और राजकुमारी

सीमा
पंचम

एक हंस था। वह किसी तालाब में रहता था। तालाब निर्मल पानी से भरा था। वहाँ बड़े सुन्दर-सुन्दर कमल खिले रहते थे। हंस कमलों के बीच तैरता हुआ, न मालूम क्या सोचा करता था। एक बार कोई राजकुमारी तालाब में नहाने आई। हंस को देखकर वह मुग्ध हो गई। उसने सखियों से कहा- "कितना सुन्दर हंस है! क्या मैं इसे घर नहीं ले जा सकती?" कमलों से आवाज आई- "नहीं-नहीं, ऐसा मत करो! यह परियों की रानी का है।" - "कहाँ रहती है परियों की रानी?" कमल बोला- "आओ, कहती हो तो तुम्हें मिला दें।" वे उसे तालाब के बीच ले गये। पलक झपकते ही वह परियों के महल में पहुँच गई। परियों ने उसे घेर लिया। फिर परियों की रानी ने पूछा- "तुम कौन हो?"

राजकुमारी ने उत्तर दिया- "मैं पूरब की राजकुमारी। आपके हंस को अपने घर ले जाना चाहती हूँ। जो कमल के फूल आपके दरवाजे पर पहरा दे रहे थे, वही मुझे आपके पास लाए हैं।" परियों की रानी ने कहा- "तुम हंस ले जाना चाहो, तो ले जा सकती हो, किन्तु एक शर्त पर।" "क्या?" - पूरब की राजकुमारी ने चौंकते हुए पूछा।

"तुम अपनी सहेलियों को यहाँ छोड़ जाओ।" - रानी बोली।

"नहीं-नहीं, यह कैसे होगा? मैं सहेलियों के बिना कैसे रहूँगी?" - राजकुमारी ने कहा। "तब हंस भी हंसिनी के बिना कैसे रहेगा? वह मर जाएगा।" - परियों की रानी ने कहा। यह सुनकर राजकुमारी सोच में पड़ गयी। उसे पता ही नहीं था कि पशु-पक्षी भी आपस में हिलमिल कर रहते हैं। हंस के मरने की बात से उसे बहुत दु:ख हुआ। वह बोली- "हंसिनी के बिना क्या हंस सचमुच मर जायेगा नहीं नहीं यह नहीं होगा। तब मैं हंस को नहीं ले जाऊँगी।" कहते हुए पूरब की राजकुमारी वापस जाने लगी।

चारों ओर पानी ही पानी था। जाती कैसे? उसे तैरना भी नहीं आता था। उसे सोच में डूबा देख परियों की रानी सब समझ गई। उसे अपनी सीपियों की सुन्दर नाव मँगवाई। राजकुमारी को भेंट में बहुत-से सुगंधित फूल और मीठे फल दे, विदा कर दिया। पूरब की राजकुमारी नाव में बैठकर तालाब से बाहर आ गई।

*** *** ***

हँसते हँसते जीना

दिव्यांशु
चतुर्थ

1. अध्यापक - "रेडियो और टेलीविजन में क्या अंतर है? बलविन्दर - "घर के अन्दर जब पड़ोसी झगड़ा करते हैं, तो रेडियो होता है, और लड़ते-लड़ते घर से बाहर आ जाते हैं, तो टेलीविजन हो जाता है।"
2. राजन - "यू.एफ.ओ. का फुलफार्म बताओ।" रोहित - "उड़ता-फिरता ऑमलेट!"
3. डाक्टर-"जब भी हँसो दिल खोलकर हँसो।" मरीज-"मैंने तो सबको मुँह खोलकर हँसते देखा है।"
4. रीमा - "गाँव में समस्या हो, तो गाँव के लोग कहाँ जाते हैं?"
   पूजा - "किसान के पास, क्योंकि उसके पास हल होता है।"

प्रेम बलिदान है, आत्म-ज्ञान है, ममत्व का विस्मरण है। - भगवतीचरण वर्मा

नेत्रदान है महादान

अभय सिंह
तृतीय

हर कोई दुनिया में अपना नाम जीवित रखने के लिए क्या जतन नहीं करता। कोई अपने नाम का पत्थर लगवाकर अपना नाम जीवित रखना चाहता है, जिससे उसका नाम अमर हो जाए। लोग ऐसा क्यों नहीं सोचते कि नाम तो वंश के जरिए जिन्दा ही रहता है, कितना अच्छा हो यदि लोग मरने के बाद भी किसी पुनीत कार्य के माध्यम से अमर रहें। ऐसा संभव है वह भी एक साधारण से उपाय से, जिसे नेत्रदान के नाम से जाना जाता है।

नेत्रदान महादान यह कोई दो शब्द नहीं बल्कि दूसरों की अँधेरी दुनिया में उजाला लाने का एक बहुमूल्य महामंत्र है। मृत्यु के पश्चात् बेकार हो चुकी हमारी आँखें, ऐसे व्यक्तियों के लिए दुनिया देखने का एक माध्यम बन जाती हैं जिसने दुनिया की प्राकृतिक अद्‌भुत छटा को महसूस तो किया है परन्तु देखा नहीं था। हमारी ये आँखें नेत्रदान के माध्यम से हमारे पश्चात् भी इस ईश्वरीय संसार की निराली छटा को देखने के लिए अमर हो जाती हैं।

नेत्रदान करके मृत्यु के बाद भी दो अन्य व्यक्तियों के जरिए इस दुनिया में जीवित रह सकते हैं।

*** *** ***

नटखट भइया

सृष्टि दुबे
चतुर्थ

मेरा भइया राजा है, भोली सूरत वाला है।
प्यारी सी हैं उसकी आँखें, लाल टमाटर जैसे गाल।।
काले से हैं उसके बाल, ओंठ भी है जी उसके लाल।
हम सबका है वो प्यारा, मम्मी का तो राज दुलारा।।
तीसरी कक्षा में पढ़ता है, कक्षा में प्रथम आता है
सबको बहुत भाता है, पर मुझको बड़ा सताता है।।
फिर भी लगता मुझको प्यारा ,भैया मेरा राज दुलारा।।

*** *** ***

जरा हँस लीजिये

आरती कुमारी
पंचम

1. संता : (बलवान से) - तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?
   बलवान : (संता से) - कम से कम दस
   संता : बस, तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो सुबह पूरे मुहल्ले को उठा देता है।
2. चिंटू : पिताजी, आज मुझे एक लड़के ने मारा।
   पिताजी : क्या तुम उसको पहचान सकते हो?
   चिंटू : हाँ पिताजी, मै उसके दाँत साथ लाया हूँ।

कला का सत्य जीवन की परिधि में, सौंदर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है। - महादेवी वर्मा

मालिक की सहानुभूति

सृष्टि दुबे
चतुर्थ

रामू मालिक के घर काम करते-करते चल बसा। घर के काम-काज के साथ-साथ बाहर का सामान लाना भी उसकी जिम्मेदारी थी। रामू के मरने के बाद मालिक ने सहानुभूति जताते हुए घर पर एक हजार रुपये भेज दिए और इस प्रकार उन्होंने अपने कर्तव्य की समाप्ति समझ ली।

पिता का क्रियाकर्म कर चुकने के बाद बेटा मालिक के पास पहुँचा। उनके सम्मुख हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा कि वे कुछ रुपये उसे दे दें, जिससे वह कोई काम धन्धा शुरू कर सके।

मालिक को दया आई। उन्होंने उसे समझाते हुए कहा 'बेटा! काम-धन्धा शुरू करने में बड़ा लफड़ा है। तू इस चक्कर में मत पड़। देख! सरकार, कर्मचारी की मृत्यु के बाद उसके आश्रित को नौकरी देती है ना, मैं भी तुझे नौकरी देता हूँ, कल से काम पर आ जा तेरे बापू जो काम करते थे, उन्हें तू करने लग।

*** *** ***

पसीने की कमाई

विजया सिंह
पंचम

एक दिन गुरुनानक घूमते हुए उज्जयिनी पहुँचे। उनका नाम सुनकर एक सेठ उनके पास आया। उसके गले में रुद्राक्ष की माला पड़ी थी और माथे पर तिलक लगा था। वह गुरुनानक के लिए तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन का थाल लाया था। गुरुनानक ने थाल की ओर देखा और खाना खाने से इंकार कर दिया। इतने में एक लुहार वहाँ आया। वह जौ की दो रूखी रोटियाँ लाया था। गुरुनानक ने वह रोटियाँ ले लीं और बड़े आनन्द से खाने लगे। सेठ ने आश्चर्य से गुरुनानक की ओर देखा, उसे बड़ा बुरा लगा। कहाँ वह, कहाँ लुहार, कहाँ उसका लाया भोजन और कहाँ लुहार की लाई दो मोटी-मोटी रोटियाँ। जब नानक भोजन कर रहे थे, तो सेठ से न रहा गया। और उसने कहा- "महाराज, यह कहाँ का न्याय है कि मै पहले खाना लाया और इतना बढ़िया लाया, पर आपने उसे लेने से इंकार कर दिया और इस लुहार की रूखी रोटियों को प्रेम से खा रहे हैं।" नानक थोड़े रुके फिर बोले- "इस लुहार की कमाई अपनी मेहनत की कमाई है, पवित्र कमाई है, जबकि तेरी कमाई तेरे पसीने की नहीं है, उसे पवित्र नहीं कहा जा सकता।" सेठ ने कहा- "नहीं जी, ऐसा नहीं। गुरुनानक ने कहा- "तो ले देख।" इतना कहकर गुरुनानक ने लुहार की लाई रोटी को एक हाथ में और सेठ के मालपुए को दूसरे हाथ के बीच में रखकर निचोड़ा तो लुहार द्वारा लाई रोटी से दूध की धार निकली और सेठ द्वारा लाए मालपुओं को निचोड़ने पर रक्त निकला। सेठ को काटो तो खून नहीं। वह लज्जा से वापस चला गया।

शिक्षा- मेहनत की एक रोटी बेईमानी के कई पकवानों से अच्छी है।

प्रेम की कोई जाति नहीं, कोई धर्म नहीं, विचार-विवेक और भलाई-बुराई का उसे कुछ ज्ञान नहीं। - शरच्चन्द्र

How to Motivate Students

Mrs. Tripti Prem
Primary Coordinator

The formative years of a student's life play a pivotal role in the development of his personality. It is at this stage that the parents and teachers need to be very cautious. Learning has to be made fun else it will become monotonous. Mentioned below, are a few effective ways to make children excited about learning.

The first one is to encourage students. We should encourage interactive communication so that children also become a part of the teaching/ learning process and feel important. We should praise our children regularly and acknowledge their efforts. The children will enjoy being in a place where they also are heard, respected and appreciated.

Secondly, we must encourage active participation of each and every student in the class. By assigning small duties to each child, we can ensure that we involve every student. This sense of ownership instills confidence and responsibility in them.

Thirdly, as teachers and parents we must offer incentives. A simple clapping session for hard workers can work as a great booster for them and encourage the average children because they would also like to be noticed. Rewards promote enthusiasm and motivate the students to move in the right direction.

Fourthly, we should avoid monotony, tediousness and wearisomeness. As parents and teachers, we should never be stagnant. We should regularly upgrade ourselves, teach through games and discussions, visual aids, charts etc. We should create a welcoming atmosphere. After all, don't we want the same freshness in our lives?

Primary Wing Annual Report
2013-2014

Mrs. Lalita Rastogi

Many times, being involved in co-curricular activities helps to raise the self-esteem of the children. These activities bring forth the innate talents of the children who are nurtured by the teachers and the parents to the best of their abilities.

We owe our heartfelt gratitude to our leader our coordinator, under whose guidance we have been able to hone the skills of the students and the teachers.

Here is an account of the activities, competitions and celebrations that were held in the Primary Wing from time to time.

The school started its new-session on the 17th of April with a **Welcome Assembly**. The school was decorated with colourful charts and the art work crafted by the students and the teachers. In a special assembly organized by class V, the students expressed their views on the topic 'Importance of Time'. The assembly was appreciated immensely. On the 1st of May, **'Labour Day'** was celebrated. Gifts were given away to our helping staff who work tirelessly and are an integral part of our institution.

Activities like Music, Craft, Origami, Calligraphy, Non-Fire Cooking, Kathak, Dramatics etc. were also held on Saturdays.

On the 11th of May, **Ice-Cream party** was organised and was enjoyed by the students and the teachers. It was great fun watching the students of class I and II dressed colourfully. **Mother's Day** too, was celebrated with great fervour. The students of class V recited lovely poems on 'Mothers'. The term session ended on a happy note. The school reopened on the 3rd of July. **Extempore competition** was held on the 12th of July. The screening was done beforehand as surprisingly number of students wanted to take part in it. Three students each from classes 1 to 5 were chosen for the finale. **English Transcription Competition** was conducted on the 13th of July. The students were very excited to compete with one another. Three students from each class got prizes.

A special assembly was conducted by Class III students on **Independence Day**. A tribute was paid to the freedom fighters by the students, who spoke at length about the martyrs. The assembly concluded with a patriotic song.

To celebrate **'Buji Jayanti'** on the 25th of August, an exhibition was organized. The theme of our exhibition was **'Sadbhavana Express'.** It depicted a train which had five bogies named after five states of India.

Class I students, with the help of their teacher showcased the culture and history of **Punjab**. Jaliawalan Bagh, Swarn Mandir and Bhangra dance were the main attractions of the state. Class II, **Goa and Maharashtra**, had many colourful charts and models.The bollywood film industry for, was efficiently displayed by the class. The beach scene enthralled the visitors. Class III, the state of **Gujarat and Rajasthan** held the famous Pushkar Mela and also had a food corner. Dandiya dance was the main attraction of Gujarat and Rajasthan. Class IV showcased the cultural and historical heritage of South India. Attractive charts and models caught everybody's attention. Class V, as **West**

Bengal depicted the Durga Puja celebrations. The charts and models enlivened the classroom and the senior most class of the Primary Wing left no stone unturned to be their best in displaying the art and culture of West Bengal.

On the 5th of September, **Teacher's Day** was celebrated. The students of class IV conducted a Special Assembly. The students expressed their gratitude for the teachers by reciting poems. The students also conducted fun-filled games for the teachers. The students and teachers enjoyed the games to the fullest.

Hindi **Spell-Bee competition** was held the next day. The same competition was held latter in the month in English too.

On the 11th of October, **Dussehra** was celebrated with enthusiasm. To mark the celebration of good over evil, the excerpts from Ramayana were performed by the students of class I and II. Ram-Ravan battle and the end of Ravan were the highlights of the celebrations. Nine incarnations of Maa Durga were also portrayed by the students. The school decided to give clothes and other essential items of daily need to Shishu Bhavan. The children and their parents contributed heartily. Students from classes 4 and 5 were chosen to visit the Shishu Bhavan and share their collections with those tiny bundles of joy. The children shared their experience of visiting Shishu Bhavan with their peers.

On the 14th of November, **Children's Day** was celebrated with great joy. The children wore colourful dresses and enjoyed themselves. A cricket match was played between two teams comprising classes IV and V. All the students brought special dishes and had a class-party. In the end, chocolates were distributed to the students and the teachers.

On the 19th of November, we had the **Annual Day celebration**. The Primary Wing presented Vandana, Group-Dance, English play, Ganesh Stuti and Nukkad naatak. All the events were very well received by the audience. National integrity was the theme of our various performances.

On the 11th of December the **Sports Day** was held in the school premises. **Yoga Asanas** and **Pranayama** were performed immaculately by the students. Different events like **Chocolate race, Relays, Balloon race** etc. entertained the audience. A race performed by the parents was the highlight of the Sports Day as no prior hint was given to the parents. Reliving one's childhood is a boon for every adult.

On the 21st of December, **'Choral Recitation'** was held in the school. The students put forth their best in the competition. Class I and II bagged the first prize followed by class IV who secured the second position and the third prize went to class III.

The school celebrated its 65th **Republic Day** on the 26th of January. The flag hoisting ceremony was held. The Principal Mr. Mahesh Srivastava and the Chief Guest together unfurled the National flag. Laddoos were distributed. The activity of **flag making** was conducted in the classes and later displayed in and around the classrooms.

On the 4th of February, **'Basant Panchami'** was celebrated. The students of class I, II and IV sang songs in praise of Maa Saraswati. Saraswati Vandana and the **Flower Arrangement Competition** were the highlights of this day.

We hope to continue our endeavours in the next session also with the same zest and zeal, nurturing and moulding our children to be proud citizens of India.

*** *** ***

My Best Friend

Kissna Trivedi
Class II

You are my best friend
A pal on whom I can depend
You make me happy everyday
You share your snacks
You share your best joys
So dear God please don't take
My best friend away.

Thank you Mom

Abhay Singh
Class III

Mother you filled my days with rainbow light
Fairytales and sweet dream nights.
A kiss to wipe away my tears,
Gingerbread to ease my fears.
You gave the gift of life to me,
And then in love, you set me free.
I thank you for your tender care,
For deep warm hugs and being there.
I hope that when you think of me,
a part of you, you'll always see.

Teachers

Harshit Thakur
Class III

Teachers are like beautiful pearls.
They take care of all boys and girls.
They are very helpful and kind.
Everything they teach settles in our mind.
They are never rude.
They never scold.
They make us confident, they make us bold.
Their minds are intelligent.
Their hearts are pure.
They are very gentle, they are very nice.
We will not forget them or their advice.
They always help us, they always love us.
We love our teachers.
We sing in chorus.

Holiday

Tomorrow is a holiday.
I will wake up and run out to play
No dressing up to go to school
No following the golden rule
Tomorrow is a holiday.
"Mummy, can I stay out all day?"
Will come home when it's time for bed.
For then "I'll have an aching head."
Tomorrow is a holiday.

Mother Dear

Mrs. Shubhra Mishra

Mother dear, Mummy dear, O my Mumma dear,
your love is so precious and crystal clear.
O Ma, you are Great as my first 'Teacher',
and surely you are the God's best 'Creature'.
I was like a tiny delicate bubble,
but you taught me to shoot out every trouble.
You never let me down at any price,
for that you're ready to give any sacrifice.
Mumma, you are an ideal 'Statue of Perfection'.
Charmed with divine emotions of love and affection.
You are Mother Teresa and Mother Mary,
but in my dreamland you're a lovely fairy.

My little Pussy

When pussy comes, my little brother is afraid of him. When pussy comes, I am not able to drink my milk. She eats lost of mice from my house and at night she scatters my things here and there. She does many things during the day, but I love that little pussy very much.

Trees

Akshat Dubey
Class III

Trees give us oxygen, Trees give us shade
Trees give us fruits, Trees give us rain
Trees are my friends.

Thanks Ma!

Thanks Ma! for giving me birth
for making me a part of this beautiful earth.
Thanks Ma! for giving me the best education,
you carried your responsibilities well and with devotion.
You scolded me when I went wrong,
but thanks Ma.... for hugging me again.
and not bridging the distance for long,
Thanks Ma! for helping me to become strong.
Thanks Ma! for giving me a proper name,
so that I can earn both respect and fame.
Thanks Ma! for criticizing me and being loud,
when I become a lot too proud.
Thanks Ma! for being the best mother,
I feel proud to call you 'Ma' and be your Son.

The Ganga River

Arti Kumar
Class V

The Ganga is one of the biggest rivers of India. The Hindus call it Mother Ganga. It rises from the Gangotri mountain in the Himalayas. After a long journey in the hills and mountains, it comes down in the plains at Haridwar. It flows down into the Bay of Bengal.

It is considered a holy river. Religious people take a dip in its water. They sing many songs and stories. Many dead bodies are also taken to its banks for cremation. Many sadhus and other religious people also live at its banks. The Kumbh fair is held in Haridwar and Allahabad.

Some people say that Bhagirath brought this river from the Himalayas to the plains. Some believe that if one takes a dip in it, all his sins are washed away. Thus it is considered holy. The Ganga has an important place in the hearts and minds of the Indians. Its water is used for producing electricity and for irrigation. The Ganga should be free from pollution. Our government is taking serious measures to make its water pure.

Good Manners

Vani Negi
Class III

* Good manners can help you get far in life.
* Make eye contact when you talk to someone.
* Greet everybody you meet.
* Wait till all adults are seated before you sit down.
* Remember to say Please' and 'Thank you'.
* Respect and obey your parents.
* Be kind and polite to all those around you.
* Keep your environment clean.
* Say 'I am sorry' if you do something wrong.
* Treat others as you would like them to treat you.

Honesty

Dhruv Singh
Class IV

Honesty is the best policy.
We should do our work with honesty.
We should always teach others to be honest.
A nation which has honest people always achieves prosperity.
Honesty shows the path of success.
Honesty is the best way to give our tribute to our nation.
An honest person never gets afraid of anyone.
Sometimes people face problems because of honesty, but, finally it wins.
Our society always gives a special place to an honest person.

My Classroom

Harshit Thakur
Class III

My classroom is very big.
There are three fans in my classroom.
The teachers teach in the classroom.
We keep our classroom spick and span.
We decorate our classroom with art and craft work.

My Father

Abhay Singh
Class III

Sweet as honey, Dear as money
Delicate as petal, Sometimes hard like metal
Great like the sun, As soft as fun
Playful as a pal, Strong like the great China wall
Cheerful as flower, with lots of patience and power
He is none other than my father.

The evening is coming

Harshit Thakur
Class III

The evening is coming,
the sun sinks to rest.
The birds are all flying,
straight home to the nest.
'Caw' says the crow,
as he flies overhead.
It's time little children,
are going to bed.

100% Discipline

Pranshu Katiyar
Class V

What is Discipline?
Discipline is the backbone of good education. There can be no education without discipline.
Let's see the magic of alphabets and numbers.

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

D + i + s + c + i + p + l + i + n + e =Discipline
4 + 9 + 19 + 3 + 9 + 16 + 12 + 9 + 14 + 5 = 100
= 100% Discipline.

Why children are always the best?

Arsh Bajpai
Class II

As they are :

C - Clever
H - Honest
I - Intelligent
L - Lovely
D - Determined
R - Right
E - Excellent
N - Naughty

A - Ambitious
R - Responsible
E - Enthusiastic

T - Thoughtful
H - Hard working
E - Enterprising

B - Brave
E - Energetic
S - Smart
T - Talented

Dear Cow

Akshat Dubey
Class III

Dear cow you are sweet.
You have soft eyes and black feet.
Your milk is white like the snow.
Mother says,
your milk makes children grow.
She also says big or small,
Milk is good for as all.

My Motherland

Abhay Singh Yadav
Class V

Bharat is my motherland. We call her Bharat Mata. It is also known as India. In olden days we called her Aryavart, Jamboodweep, Bharat Khand etc. Our country is named after Bharat, who was a brave king. He was the son of King Dushyant and Shakuntala. In his childhood he played with the cubs. Bharat is a beautiful country. The Himalayas lie to the north of my country. In the South the Indian ocean washes her feet. There are sacred rivers, and holy temples. In the past, our country was known as Jagat Guru.

Life is an Examination

Vijaya Singh
Class V

God is a great examiner. We are all his students.
The world is an examination hall, and life is an answer sheet.
The time alloted is three hours.
The first bell rings in childhood, the second in youth, the third in old stage, the last bell of the last hour is rung by God.
The examination is over, the copy is snatched.
Don't try to cheat, the examiner will beat.
You must not lose marks by wasting time, and writing nothing.
So you must not say that, the paper was lengthy and time was short.
If we fail, we come back to the small hall.
A new life once more.
And if we pass, we go to heaven, and return no more.

Awards for Academic Excellence

	PROFICIENCY	LEADERSHIP SKILLS	GENERAL IMPROVEMENT	FULL ATTENDANCE
CLASS I	Mansi Bhatt	Aryansh Tiwari	Himanshu Pal	–
CLASS II	Shridhar Shukla	Kartikey Singh	Anjali Kashyap	Agrim Aman Gupta Aryan Katiyar
CLASS III	Akshat Dubey	Priyanshu Bansal	Ayushi Katiyar	Akshat Dubey Akarsh Srivastava
CLASS IV	Shristi Dubey	Dhruv Singh	Sparsh Katiyar	Himanshu Pandey Shristi Dubey Anugrah Jha Divyanshu
CLASS V	Utkarsh Katiyar	Maitri Nigam	Vijaya Singh	–

It's what you learn after you know it all that counts.

Winners of the competitions held in the Primary Wing

COLOURING COMPETITION

Class-I

1. Hardik Roy

Class-II

1. Surbhi Pal
2. Harshita Katiyar
3. Arsh Bajpai

Class-III

1. Dishu Verma
2. Prakhar Srivastava
3. Yogita Jain

Class-IV

1. Shristi Dubey
2. Shruti Mishra
3. Divyanshu Adhikari

Class-V

1. Utkarsh Katiyar
2. Sadhvi Mishra
3. Arti

EXTEMPORE COMPETITION

Class-I

1. Mansi Bhatt
2. Yashraj Gupta
3. Shristi Sharma
4. Aditi Shukla

Class-II

1. Shridhar Shukla
2. Arsh Bajpai
3. Agrim Aman Gupta

Class-III

1. Abhay Singh
2. Akshat Dubey
3. Dhruv Omer

Class-IV

1. Kissna Trivedi
2. Shruti
3. Prakhar Tiwari

Class-V

1. Vishwas Nigam
2. Akshara Tiwari
3. Nakul Dixit

ENGLISH HANDWRITING COMPETITION

Class-I

1. Shreya Pandey
2. Vaibhav Khanna
3. Parth Batham

Class-II

1. Shridhar Shukla
2. Sanskriti Srivastava
3. Niteesh Gautam

Class-III

1. Arjun Gupta
2. Dhruv Omer
3. Prakhar Tiwari
4. Yogita Jain (Consolation)

Class-IV

1. Shristi Dubey
2. Shikhar Dwivedi

Class-V

1. Vishwas Nigam (Consolation)
2. Abhay Singh Yadav (Consolation)

SPELL BEE (ENGLISH)

Class-I

1. Aryansh Tiwari
2. Mansi Bhatt
3. Shristi Sharma

Class-II

1. Shridhar Shukla
2. Niteesh Gautam
3. Pratistha Omer

Class-III

1. Akshat Dubey
2. Ayushi Katiyar
3. Harsh Vardhan

Class-IV

1. Shristi Dubey
2. Kissna Trivedi
3. Himanshu Pandey

Class-V

1. Akshara Tiwari
2. Aditya Khanna
3. Vijaya Singh

FLOWER ARRANGEMENT COMPETITION

Class-I

1. Vaibhav Khanna

Class-II

1. Surabhi Pal
2. Arsh Bajpai
3. Anjali Kashyap

Class-III

1. Dhruv Omer
2. Harsh Vardhan
3. Abhay Singh

Class-IV

1. Kissna Dwivedi
2. Shristi Dubey
3. Rudra Pratap Singh

Class-V

1. Aditya Khanna
2. Utkarsh Katiyar
3. Devansh Gupta

SPELL BEE (HINDI)

Class-I

1. Shristi Sharma
   Mansi Bhatt
2. Shreya Chaturvedi
3. Mehul Bajpai

Class-II

1. Krishanu Shukla
2. Pratistha Omar
3. Niteesh Gautam
4. Shreyash Mishra

Class-III

1. Akshat Dubey
2. Abhay Singh
   Dishu Verma
   Vani Negi
3. Vani Vajpayee

Class-IV

1. Vishal Tiwari
2. Prakhar Pandey
3. Shristi Dubey

Class-V

1. Sintu Kumar
2. Akshara Tiwari
3. Pranshu Katiyar

RAKHI MAKING COMPETITION

Class-I

1. Hardik Roy
2. Ansh Singh
3. Arpit Tiwari
4. Daksh Agarwal (Cons.)

Class-II

1. Agrim Aman Gupta
2. Sanskriti Srivastava
3. Dhruv Dixit

Class-III

1. Akshat Dubey
2. Arjun Gupta
3. Dishu Verma

Class-IV

1. Kissna
2. Divyanshu Adhikari
3. Lakshya Dixit

Class-V

1. Chetan
2. Arti / Seema
3. Akshat Agnihotri

With the new day comes new strength and new thoughts.

CONGRATULATIONS TO THE SPORTS CHAMPIONS!!!

S.No.	Events	Winners
		Class I
1.	Rolling of Mats	1. Tanishq Bajpai
		2. Prateek Mishra
		3. Naitik Agnihotri
2.	Bucket Race	1. Suraj Pal
		2. Tanishq Bajpai
		3. Krishna Chaturvedi
3.	Ball Race	1. Yashraj Gupta
		2. Suraj Pal
		3. Vinamra Roy
4.	Sack Race	1. Om Katiyar
		2. Mansi Bhatt
		3. Shristi Sharma
5.	50m Race	1. Om Katiyar
		2. Yashraj Gupta
		3. Tanishq Bajpai
		Class - II & III
1.	Chocolate Race	1. Harshita Katiyar
		2. Pulkit Bajpai
		3. Abhay Singh
2.	50m Race (Boys)	1. Harsh Vardhan
		2. Ghanist Umrao
		3. Devansh Tiwari
3.	Frog Jump Race	1. Akshat Dubey
		2. Harsh Vardhan
		3. Suraj Rana
4.	50m Race (Girls)	1. Surabhi Pal
		2. Arpita Chaturvedi
		3. Vani Vajpayee
5.	Sack Race	1. Akshat Dubey
		2. Arpita Chaturvedi
		3. Harsh Vardhan
6.	One Legged Race	1. Ghanisth Umrao
		2. Harsh Vardhan
		3. Arpit Gaur
7.	Bottle Filling Race	1. Prakhar Srivastava Dhruv Dixit
		2. Ujjwal Gupta Akarsh Srivastava
		3. Shailja Tiwari Siddharth Tiwari

Failure defeats loosers but inspires winners.

S.No.	Events	Winners
8.	Hamstring Race	1. Arpit Gaur 2. Ghanisth Umrao 3. Suraj Rana
		Class IV & V
1.	Book Balance Race	1. Divyanshu Adhikari 2. Mayank Yadav 3. Vishal Tiwari
2.	100m Race	1. Abhay Singh Yadav 2. Divyanshu Adhikari 3. Saurabh Dubey
3.	Three-Legged Race	1. Sparsh Katiyar Manas Gupta 2. Mayank Yadav Mayank Shamra 3. Chetan Anand Devansh Gupta
4.	Lemon Race	1. Vishal Tiwari 2. Harsh Vardhan
5.	Bowl Race	1. Krishna Trivedi 2. Mayank Sharma 3. Vishal Tiwari
		Class II, III, IV & V
1.	Shuttle Relay Race	1. A. Harsh Vardhan B. Kartikey Singh C. Divyanshu D. Seema 2. A. Shrey Nishad B. Arsh Bajpai C. Abhay Singh Yadav D. Atul Pal 3. A. Ghanisth Umrao B. Akshat Dubey C. Prakhar Tiwari D. Mayank Yadav

Be nice to to people on your way up as you will meet them on your way down.

हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित छात्रों के नाम तथा अनुक्रमांक

(सत्र - 2013-14)

क्रम	नाम	अनुक्रमांक	क्रम	नाम	अनुक्रमांक
1.	चि. अभय शंकर त्रिवेदी	1555050	27.	चि. अश्विनी कुमार	1555076
2.	चि. अभय शंकर त्रिवेदी	1555051	28.	चि. अश्विनी कौशल	1555077
3.	चि. अभय शुक्ल	1555052	29.	चि. अविरल खन्ना	1555078
4.	चि. अभिजीत कुमार	1555053	30.	चि. आयुष भदौरिया	1555079
5.	चि. अभिनव तिवारी	1555054	31.	चि. आयुष पाण्डेय	1555080
6.	चि. अभिनव तिवारी	1555055	32.	चि. आयुष शाही	1555081
7.	चि. अभिषेक गुप्त	1555056	33.	चि. बासू सिंह कटियार	1555082
8.	चि. अभिषेक सिंह	1555057	34.	चि. ब्रह्मांश भरद्वाज	1555083
9.	चि. अभिषेक उमराव	1555058	35.	चि. देवांग पटेल	1555084
10.	चि. अभिषेक यादव	1555059	36.	चि. देवांश बाजपेयी	1555085
11.	चि. अच्युत तिवारी	1555060	37.	चि. देवांश शेखर श्रीवास्तव	1555086
12.	चि. आदित्य कुमार	1555061	38.	चि. देवांशु शुक्ल	1555087
13.	चि. आदित्य पाण्डेय	1555062	39.	चि. दिनेश कुमार	1555088
14.	चि. अखिल कुमार पाठक	1555063	40.	चि. दिव्यांश अवस्थी	1555089
15.	चि. अमन यादव	1555064	41.	चि. गौरव बाजपेयी	1555090
16.	चि. अमित कुमार	1555065	42.	चि. गौरव सिंह	1555091
17.	चि. आनन्द अवस्थी	1555066	43.	चि. गीतांशु सिंह भदौरिया	1555092
18.	चि. अंकुर कटियार	1555067	44.	चि. हर्ष यादव	1555093
19.	चि. अंशुमान त्रिपाठी	1555068	45.	चि. हिमांशु पाठक	1555094
20.	चि. अनुज ओमर	1555069	46.	चि. हृदयेश सिंह	1555095
21.	चि. अनुराग त्रिपाठी	1555070	47.	चि. ईशान मालवीय	1555096
22.	चि. अर्पित कुमार	1555071	48.	चि. कृष्ण दत्त ओझा	1555097
23.	चि. अरविन्द सिंह	1555072	49.	चि. मनीष कुमार	1555098
24.	चि. आशीष कुमार सिंह	1555073	50.	चि. मयंक पाल	1555099
25.	चि. आशुतोष गुप्त	1555074	51.	चि. मयंक शुक्ल	1555100
26.	चि. अश्विनी अग्निहोत्री	1555075	52.	चि. मोहित पाण्डेय	1555101

मन का दु:ख मिट जाने पर शरीर का दु:ख भी मिट जाता है। - वेदव्यास

क्रम	नाम	अनुक्रमांक	क्रम	नाम	अनुक्रमांक
53.	चि. मोहित तिवारी	1555102	81.	चि. सौरभ शुक्ल	1555130
54.	चि. मुकुल पाण्डेय	1555103	82.	चि. सौरव कुशवाहा	1555131
55.	चि. नवोदित सचान	1555104	83.	चि. शाश्वत नरेश दुबे	1555132
56.	चि. निहाल अहमद	1555105	84.	चि. शिखर सेंगर	1555133
57.	चि. परमवीर कुमार	1555106	85.	चि. शिवम	1555134
58.	चि. प्रवण त्रिपाठी	1555107	86.	चि. शिवम कुमार	1555135
59.	चि. प्रांजुल गुप्त	1555108	87.	चि. शिवम मिश्र	1555136
60.	चि. प्रशान्त सिंह	1555109	88.	चि. शिवम निषाद	1555137
61.	चि. प्रेम कुमार	1555110	89.	चि. शुभम चतुर्वेदी	1555138
62.	चि. प्रियांशु सिंह	1555111	90.	चि. सुशान्त शेखर शुक्ल	1555139
63.	चि. पुण्डरीक शुक्ल	1555112	91.	चि. सिद्धार्थ पोरवाल	1555140
64.	चि. पुनीत त्रिवेदी	1555113	92.	चि. सोमेश कुमार	1555141
65.	चि. पुष्कर अग्निहोत्री	1555114	93.	चि. सुकान्त द्विवेदी	1555142
66.	चि. राघवेन्द्र सिंह यादव	1555115	94.	चि. सूरज प्रताप सिंह	1555143
67.	चि. राहुल कुमार	1555116	95.	चि. उज्ज्वल गुप्त	1555144
68.	चि. रमन राजपूत	1555117	96.	चि. उत्कर्ष तिवारी	1555145
69.	चि. ऋषभ सिंह राजावत	1555118	97.	चि. उत्कृष्ट द्विवेदी	1555146
70.	चि. ऋषभ तिवारी	1555119	98.	चि. विकास कुशवाहा	1555147
71.	चि. ऋषभ तिवारी	1555120	99.	चि. विपुल सिंह	1555148
72.	चि. ऋषु पटेल	1555121	100.	चि. विशाल यादव	1555149
73.	चि. रोहन मुकेश शर्मा	1555122	101.	चि. विश्वजीत सिंह	1555150
74.	चि. रोहन वर्मा	1555123	102.	चि. दिव्यांशु तिवारी	1555153
75.	चि. रोहित आनन्द	1555124	103.	ब. ऐश्वर्या मिश्रा	1555151
76.	चि. रोहित कुमार	1555125	104.	ब. अनुकृति शुक्ला	1555152
77.	चि. रोहित कुमार राठौर	1555126	105.	ब. कृतिका मिश्रा	1555154
78.	चि. सागर केसरवानी	1555127	106.	ब. श्रुति गुप्ता	1555155
79.	चि. सलिल सिंह	1555128	107.	ब. सोनम	1555156
80.	चि. सत्यम सचान	1555129			

इण्टरमीडिएट परीक्षा में सम्मिलित छात्रों के नाम तथा अनुक्रमांक

(सत्र - 2013-14)

क्रम	नाम	अनुक्रमांक	क्रम	नाम	अनुक्रमांक
1.	चि. आकाश जायसवाल	1136325	27.	चि. अंकित मिश्र	1136351
2.	चि. अभय द्विवेदी	1136326	28.	चि. अंकित शुक्ल	1136352
3.	चि. अभय कटियार	1136327	29.	चि. अनमोल पाण्डेय	1136353
4.	चि. अभय पाण्डेय	1136328	30.	चि. अनुराग जायसवाल	1136354
5.	चि. अभिनव पाण्डेय	1136329	31.	चि. अनुराग त्रिपाठी	1136355
6.	चि. अभिनव पटेल	1136330	32.	चि. अर्पित बाबू शुक्ल	1136356
7.	चि. अभिनव त्रिपाठी	1136331	33.	चि. अर्पित मिश्र	1136357
8.	चि. अभिनेष पटेल	1136332	34.	चि. अर्पित मिश्र	1136358
9.	चि. अभिषेक कुमार	1136333	35.	चि. अरुण राय	1136359
10.	चि. अभिषेक कुमार प्रजापति	1136334	36.	चि. आर्यन सचान	1136360
11.	चि. अभिषेक सिंह चौहान	1136335	37.	चि. आश्रित सचान	1136361
12.	चि. अचल अवस्थी	1136336	38.	चि. आशुतोष कुमार	1136362
13.	चि. आदर्श पाण्डेय	1136337	39.	चि. अविरल अवस्थी	1136363
14.	चि. अजय सिंह	1136338	40.	चि. आयुष रिन्वा	1136364
15.	चि. आकाश सिंह	1136339	41.	चि. आयुष शर्मा	1136365
16.	चि. अखिल कुमार	1136340	42.	चि. आयुष त्रिपाठी	1136366
17.	चि. अलंकृत गुप्त	1136341	43.	चि. बृजेश कुमार	1136367
18.	चि. अमन गुप्त	1136342	44.	चि. दिव्यांश तिवारी	1136368
19.	चि. अमन गुप्त	1136343	45.	चि. दिव्यांशु कश्यप	1136369
20.	चि. अमन कटियार	1136344	46.	चि. एकाग्र पाण्डेय	1136370
21.	चि. अमरदीप पाण्डेय	1136345	47.	चि. गौरव अग्रवाल	1136371
22.	चि. अमित कुमार सिंह	1136346	48.	चि. गौरव कटियार	1136372
23.	चि. अमोघ तिवारी	1136347	49.	चि. गौरव शुक्ल	1136373
24.	चि. आनन्द राजपूत	1136348	50.	चि. गौतम झा	1136374
25.	चि. आनन्द सिंह	1136349	51.	चि. हर्षित कटियार	1136375
26.	चि. अंकित कुशवाहा	1136350	52.	चि. ऋतिक श्रीवास्तव	1136376

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा। - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

क्रम	नाम	अनुक्रमांक	क्रम	नाम	अनुक्रमांक
53.	चि. जीत कुमार	1136377	81.	चि. राहुल पाण्डेय	1136405
54.	चि. करन गुप्त	1136378	82.	चि. राहुल राजपूत	1136406
55.	चि. केशव तिवारी	1136379	83.	चि. राजकुमार तिवारी	1136407
56.	चि. कुलदीप सिंह	1136380	84.	चि. राजसिंह चौहान	1136408
57.	चि. कुणाल शाक्य	1136381	85.	चि. रजत कटियार	1136409
58.	चि. मयंक शुक्ल	1136382	86.	चि. राकेश कुमार	1136410
59.	चि. मिलिन्द राजपूत	1136383	87.	चि. राम सुन्दर राजभर	1136411
60.	चि. नयन बाजपेयी	1136384	88.	चि. रानू कुमार सिंह	1136412
61.	चि. निहाल दीक्षित	1136385	89.	चि. रवि प्रताप	1136413
62.	चि. निहाल सिंह	1136386	90.	चि. रवि प्रताप सिंह	1136414
63.	चि. निखिल कुशवाहा	1136387	91.	चि. रवि प्रताप सिंह	1136415
64.	चि. नीरज राजपूत	1136388	92.	चि. ऋषभ गुप्त	1136416
65.	चि. नितेश कुमार राजपूत	1136389	93.	चि. ऋषभ मिश्र	1136417
66.	चि. नितीश कटियार	1136390	94.	चि. ऋषभ सचान	1136418
67.	चि. नितीश कुमार गुप्त	1136391	95.	चि. ऋषि कटियार	1136419
68.	चि. पंकज गुप्त	1136392	96.	चि. रोबिन सिंह	1136420
69.	चि. पंकज वर्मा	1136393	97.	चि. रोहित त्रिपाठी	1136421
70.	चि. पीयूष कुमार	1136394	98.	चि. सचिन मिश्र	1136422
71.	चि. पोरष वेदी	1136395	99.	चि. सत्यम प्रकाश	1136423
72.	चि. प्रभात यादव	1136396	100.	चि. सौरभ कटियार	1136424
73.	चि. प्रदीप कुमार पाल	1136397	101.	चि. सौरभ सिंह	1136425
74.	चि. प्रफुल्लित त्रिपाठी	1136398	102.	चि. शशांक निगम	1136426
75.	चि. प्रफुल्ल त्रिपाठी	1136399	103.	चि. शशांक शर्मा	1136427
76.	चि. प्रकाश कुमार सिंह	1136400	104.	चि. शशांक शेखर अवस्थी	1136428
77.	चि. प्रखर तिवारी	1136401	105.	चि. शशांक शुक्ल	1136429
78.	चि. प्रनीत सेंगर	1136402	106.	चि. शशिकान्त मिश्र	1136430
79.	चि. प्रशान्त शर्मा	1136403	107.	चि. शतंजय शुक्ल	1136431
80.	चि. प्रतीक मिश्र	1136404	108.	चि. शिखर दीक्षित	1136432

मूर्खों की मूर्खता से लाभ उठाना पाप ही है। - आचार्य चतुरसेन

क्रम	नाम	अनुक्रमांक	क्रम	नाम	अनुक्रमांक
109.	चि. शीतांशु भदौरिया	1136433	122.	चि. उज्ज्वल श्रीवास्तव	1136446
110.	चि. शिवाजी सिंह	1136434	123.	चि. उत्कर्ष त्रिपाठी	1136447
111.	चि. शिवम मिश्र	1136435	124.	चि. उत्कर्ष त्रिपाठी	1136448
112.	चि. शिवम मिश्र	1136436	125.	चि. वैभव अग्रवाल	1136449
113.	चि. शिवेश कुमार	1136437	126.	चि. वैभव दुबे	1136450
114.	चि. शुभम चौरसिया	1136438	127.	चि. वैभव ओमर	1136451
115.	चि. शुभम यादव	1136439	128.	चि. वसुराज श्रीवास्तव	1136452
116.	चि. श्यामजी यादव	1136440	129.	चि. विनय शुक्ल	1136453
117.	चि. सोमदत्त ओझा	1136441	130.	चि. विपिन कुमार यादव	1136454
118.	चि. सुयश दीक्षित	1136442	131.	चि. विशाल सिंघल	1136455
119.	चि. सुयश गुप्त	1136443	132.	चि. यश द्विवेदी	1136456
120.	चि. स्वर्णिम पाण्डेय	1136444	133.	चि. योगेश सक्सेना	1136457
121.	चि. त्रिलोक सिंह	1136445			

परीक्षा परिणाम
(सत्र - 2013-14)

दशम

कुल छात्र	उत्तीर्ण	ससम्मान	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी
118	118	118	00	00	00

द्वादश

कुल छात्र	उत्तीर्ण	ससम्मान	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी
100	100	98	02	00	00

अल्प में से भी जो दान दिया जाता है, वह सहस्रों-लाखों के दान की बराबरी करता है। - महात्मा बुद्ध

आचार्य परिवार

1.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	प्रधानाचार्य	एम.ए. (गणित, समाजशास्त्र) एल.टी.
2.	श्री हेमन्त शुक्ल	प्रवक्ता	एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान) बी.एड.
3.	श्री कैलाश जोशी	प्रवक्ता	एम.एस.सी. (गणित) एम.एड.
4.	श्रीमती शारदा राव	वरिष्ठ समन्वयकर्त्री	एम.ए. (अंग्रेजी) बी.एड., एल.एल.बी
5.	श्रीमती रेखा निगम	प्रवक्ता	एम.ए. (अंग्रेजी) बी.एड.
6.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	प्रवक्ता	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान) बी.एड.
7.	डा. मनोज कुमार शुक्ल	प्रवक्ता	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) साहित्याचार्य पी-एच.डी.
8.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	प्रवक्ता	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) बी.एड. पत्रकारिता परास्नातक
9.	श्री सुधीर अवस्थी	प्रवक्ता	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान) बी.एड.
10.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	आचार्य	एम.ए. (भूगोल) डी.पी.एड., व्यायाम विशारद
11.	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	आचार्य	एम.ए. (संस्कृत) शिक्षाशास्त्री
12.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	आचार्य	एम.ए. (इतिहास, राजनीति विज्ञान) एम.एड.
13.	श्री जगपाल सिंह	आचार्य	एम.ए. (भूगोल) बी.एड.
14.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	आचार्य	एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान) बी.एड.
15.	श्री मनजीत सिंह	आचार्य	एम.एस.सी. (गणित) बी.एड.
16.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	आचार्य	एम.ए. (अंग्रेजी, इतिहास) बी.एड.
17.	श्रीमती मीना अग्रवाल	आचार्या	एम.एस.सी. (गणित) बी.एड.
18.	श्रीमती पल्लवी अग्रवाल	आचार्या	एम.एस.सी. (वनस्पति विज्ञान), एम.ए. (अंग्रेजी) बी.एड. (Hons Dip. in system Management)
19.	श्री सुनील दीक्षित	आचार्य	एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान) बी.एड.
20.	श्री आलोक द्विवेदी	आचार्य	एम.एस.सी (जैव रसायन विज्ञान) बी.एड.
21.	श्री दुर्गा प्रसाद सिंह	आचार्य	एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान) बी.एड.
22.	डा. मधुलता त्रिपाठी	आचार्या	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) एम.एड., पी-एच.डी.

जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है, तो अभिमान भी सिर झुका लेता है। - सुदर्शन

23.	श्री किशन स्वरूप अवस्थी	आचार्य	एम.ए. (समाजशास्त्र) बी.एड.
24.	श्री वेद कुमार शर्मा	आचार्य	बी.ए., बी.एड., आई.जी.डी. बाम्बे
25.	श्री उमेश कुमार गुप्त	आचार्य	एम.एस.सी. (गणित) बी.एड.
26.	श्री अजय मिश्र	आचार्य	बी.ए., बी.पी.एड.
27.	श्रीमती दीप्ति अवस्थी	आचार्या	एम.एस.सी. (वनस्पति विज्ञान) बी.एड.
28.	श्री पवन कुमार पाण्डेय	आचार्य	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) बी.एड.
29.	श्रीमती कोमल जैन	आचार्या	एम.काम. एल.एल.बी.
30.	श्रीमती निहारिका त्रिपाठी	आचार्या	एम.ए. (इतिहास) बी.एड.
31.	श्रीमती प्राची चन्द्रा	आचार्या	एम.ए. (अंग्रेजी)
32.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	आचार्या	बी.एस.सी., एम.ए., 'ए' लेविल पी.जी.डी.सी.ए.
33.	श्री आशुतोष गुप्त	आचार्य	बी.टेक. (कम्प्यूटर विज्ञान)
34.	श्री अमित गुप्त	आचार्य	बी.एस.सी., पी.जी.डी.सी.ए. 'ओ' लेविल डी.डी.ई. हार्डवेयर
35.	श्री सिद्धार्थ पाण्डेय	आचार्य	एम.एससी., बी.एड., बी.लिस.
36.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	प्राथमिक समन्वयकर्त्री	बी.ए., बी.एड. (Vocational course in Broadcasting and Media, Entrepreneurship, Linguistics and Phonetics)
37.	कु0 प्रीति तिवारी	आचार्या	एम.एस.सी. (पर्यावरण विज्ञान) एम.ए.(अंग्रेजी) एम.फिल.
38.	श्रीमती स्मिता वाजपेयी	आचार्या	एम.काम., बी.एड., एन.टी.टी.
39.	श्रीमती पूजा पुनेठा	आचार्या	एम.ए. (अंग्रेजी) बी.एड., एन.टी.टी.
40.	श्रीमती शुभ्रा मिश्रा	आचार्या	एम.एच.एस.सी. (Foods and Nutrition) बी.एड.
41.	श्रीमती ज्योति मोहन	आचार्या	एम.ए. (हिन्दी, फाइनआर्ट्स) एम.एड.
42.	कु0 दीपिका	आचार्या	बी.एस.सी., एम.सी.ए., बी.एड., एन.टी.टी.
43.	श्रीमती देवोश्री सैनी	आचार्या	एम.ए., बी.एड., बी.पी.एड., एन.टी.टी.
44.	श्री अंकुर दुबे	आचार्य	बी.ए., संगीत प्रभाकर
45.	श्री हिमांशु तिवारी	आचार्य	बी.एस.सी., एम.पीएड.
46.	श्रीमती ललिता रस्तोगी	आचार्या	एम.ए. (संगीत)

कार्यालय

1.	श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त	प्रमुख	बी.काम.
2.	श्री ओंकार नाथ गुप्त	सहायक	बी.ए.
3.	श्री रिण्टू घोष	सहायक	बी.ए., डी.सी.ए.
4.	श्री बी.पी. सिंह	सहायक	एम.ए. (समाजशास्त्र) डिप्लोमा लाइब्रेरी
5.	श्री हिमांशु दास	सहायक	बी.काम., एम.डी.सी.आई.एम.

पुस्तकालय

1.	श्रीमती वन्दना मणि त्रिपाठी	प्रमुख	बी.एस.सी., बी.लिब.
2.	श्रीमती ज्योति मिश्रा	सहायक	एम.ए., एम.फिल.

छात्रावास

1.	श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री	प्रमुख	एम.ए. (हिन्दी) बी.एड.
2.	श्री शैलेश दीक्षित	सहायक	बी.ए.
3.	श्री शिवमोहन सिंह	सहायक	एम.ए., एल-एल.बी.
4.	श्री सुधांशु त्रिपाठी	सहायक	एम.ए. (हिन्दी) बी.एड.
5.	श्री बाबू सिंह बिसेन	सहायक	एम.ए., बी.एड., एल-एल.बी.

हे ईश्वर, मेरी प्रार्थना है कि भीतर से सुंदर बन सकूँ। - सुकरात

विद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल	अध्यक्ष
2.	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	उपाध्यक्ष
3.	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	सचिव
4.	स्व0 यतीन्द्र जीत सिंह	सहसचिव
5.	श्री प्रेमचन्द्र गुप्त	सदस्य
6.	श्री तरुण विजय	सदस्य
7.	श्री हरिकृष्ण सेठ	सदस्य
8.	श्रीमती नीतू सिंह	सदस्य
9.	डॉ0 योगेन्द्र भार्गव	सदस्य
10.	डा0 के0 के0 गुप्त	सदस्य
11.	श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी	सदस्य
12.	डॉ0 दिलीप सरदेसाई	नामित सदस्य सी.बी.एस.ई. बोर्ड
13.	श्री दीपक राजे	नामित सदस्य सी.बी.एस.ई. बोर्ड
14.	डॉ0 नीरू टण्डन	सदस्य
15.	श्रीमती रचना मोहोत्रा	सदस्य
16.	श्रीमती रितू पाठक	सदस्य
17.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	प्रधानाचार्य
18.	श्री मनीष कृष्णा	अभिभावक प्रतिनिधि
19.	डॉ0 मनोज अवस्थी	अभिभावक प्रतिनिधि
20.	श्रीमती शारदा राव	शिक्षक प्रतिनिधि
21.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	शिक्षक प्रतिनिधि